राजनीतिक

भागो नहीं (दुनिया को) बदलो



राहुल साकृत्यायन

किताब महल, इलाहाबाद

Bhago Nahın (Dunia ko) Badlo (Political) : Rahul Sankrıtyayan

प्रथम संस्करण, १९४४
द्वितीय संस्करण, १९४८
तृतीय संस्करण, १९५५
चतुर्थ संस्करण, १९६१
पंचम संस्करण, १९६७
षष्टम संस्करण, १९७२
सप्तम संस्करण, १९७६
अष्टम संस्करण, १९७८

प्रकाशक : किताब महल, इलाहाबाद।
मुद्रक : किताब महल (होलसेल डिवीजन), प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद।

तनिक अरज.

पहिली छाप

इस किताब की भाखा देखके कितने ही पढनेवाल अचरज करेंगे, लेकिन उमेद है, कि वह नाराज नही होगे, चाहेसे कि यहाँ उन्हे ऐसे सैकडो सबद मिलेगे, जिनको उन्होने माँका दूध पीनेके साथ सीखा है और अब भी वह ऐसे ही मिर मीठे लगते होगे। लेकिन मैने इस पोथीको भाखा फैलाने के ख्यालसे नही लिखा। एक बरस पहले जो कोई कहता, कि तुम इस भाखामे एक किताब लिखोगे, तो मुझे बिसवास न होता। मैंने छपरा-बलियाकी भाखा मेआठ छोटे-छोटे नाटक लिखे, और मैंने देखा कि बातोको रखनेमे कोई कठिनाई नही है। उस भाखामे मैं इस पोथी को लिख सकता था, लेकिन फिर वह चार पाँच जिलो ही के कामकी होती। लेकिन इस तरह्की हिन्दीमे लिखना बहुत मुसिकल मालूम होता था। तो भी, मैन सोचा कि जिन लोगोके पास मै अपनी बातो को पहुँचाना चाहता हूँ, उनके लिए ऐसी ही भाखाम लिखनेकी कोसिस करनी चाहिये। पोथी लिखते बखत मेरे दिलम हमेसा इस बातका ख्याल रहा है, कि जिन्होंने प्राइमरी तक हिन्दी पढी है, वह इसे समझ पायें। इस काममे सन्तोखी और दुखराम ने मेरी बडी मदद की है जो यह मेरे सामने न रहते, तो मैं बहक जाता। मेरी जनम भाखा बनारसी (कासिका) है, लेकिन ३१ बरसोंसे छपरामे ज्यादा रहने के कारण मुझे वहीकी भाखाका ज्यादा ग्यान है। बनारसी बालने लिखने मे गलती कर जाता हूँ, तो भी भाखा लिखते बखत मुझे बनारसी और छपरही भाखाओसे बहुत मदद मिली है। किसी समय मै सालसे बेसी बुन्देलखण्डमे रहा था और उस भाखाने भी मुझे जरूर मदद की। इसके बाद सबसे बेसी मदद सिरी सतनारायेन दूबे (सेठवी) से मिली। मै बोलता जाता था, और वह कागज पर उतारते जाते थे। कागज पर उतारनेके साथ-साथ वह सबदोके बारे मे अपनी राय देते जाते थे, जिससे भाखा और आसान बन सकी। वह भी राय देनेमे बहक जाते, जो उनके सामने गाँवकी पुरबहिया (अहिरिन) भौजाई न होती इस तरह फैजाबाद जिले की अवधी भाखासे भी मदद मिली। तो भी हिन्दी पढनेवालो के थोडे से जिलोकी मदद मिली। हो सकता है, इस पोथीमे कुछ ऐसे सबद भी आ गये हो, जो पच्छिमके कुछ जिलो मे न चलते हो। मैंने अपने जान ऐसे सबदोको न लेनेकी कोसिस की।

राजनीतिको थोडे मे पढे-लिखे आदमिया के हाथमे देकर अब चुप बैठा नही जा सकता। ऐसा करनेसे जनताको बराबर नुकसान उठाना पडा। जनताको वोट देनेका अख्तियार दे देनेसे काम नही चलेगा, उसे अपनी भलाई-बुराई भी मालूम होनी

चाहिये और यह भी मालूम होना चाहिये कि राजनीतिके अखाड़ेमे कैसे दाँव-पेंच खेले जाते है। इस पोथीमे इस वातके समझानेकी मैने थोड़ी-सी कोसिस की है। लोगों को, इससे कुछ फायदा होगा या नही इसे मैं नही कह सकता। और इतना बडा काम एक पोथी से हो भी नही सकता। मुझे उमेद है कि मेरे दूसरे भाई अपनी मजबूत कलमसे और अच्छी कितावें लिखेंगे, तब ज्यादा काम हो सकेगा।

हो सकता है किसी-किसी भाईको पोथी पढते वखत कुछ सबद कडे मालूम हो—दुखराम भाईकी कोई-कोई बातें देहमे तीर जैसी लगती है, लेकिन दुखराम जैसे किसान को हम वैसी ही भाखाम बोलते सुनते है। तो भी जो किसी भाईके दिलमें चोट लगे तो मैं छमा माँगता हूँ। मैं किसी एक आदमीको दोसी नही मानता। आज जिस तरहका मानुख जातिका ढांचा दिखाई पडता है, असलमें सब दोस उसी ढाँचेका है। जब तक वह ढाँचा तोडकर नया ढाँचा नही बनाया जाता, तब तक दुनिया नरक बनी रहेगी। ढाँचा तोडना भी एक आदमीके बूतेका नही है, इसके लिये उन सब लोगोंको काम करना है, जिनको इस ढाँचेने आदमी नही रहने दिया।

आखिरमे मैं एक वार फिर सिरी सतनरायेन दूबे (सेठजी) को धन्यवाद देता हूँ कि उन्होने रात-दिन लगाके वारह दिनो (१७ मई—२८ मई १९४४) मे लिख डालनेमे अपनी कलम से मुझे मदद दी ?

प्रयाग

—राहुल सांकिरतायन

तीसरी छाप

तीन वरिस पहिले मैंने इस पोथीको लिखा था। तबस अपने देशमे बहुत बडा फेर-फार हुआ है। उस बखत भी मै देखता था कि लडाईके पीछे हिन्दुस्तानको गुलाम बनाकर रखा नही जा सकता, सो वात अब आँखके सामने है। गुलामी गइ मुदा गरीबी बाकी है। गरीबी दूर करके हिन्दुस्तानको एक बलवान देस बनना है। रूस और अमेरिकाके बाद तीसरी जगह अपन दसको लेनी है। मुदा, यह मुँहसे कहनेसे ही नही होगा। इसकी खातिर समूचे देसमें पचैती खेती, नये ढग की खेती और कल-कारखाने छा जाना चाहिये और जल्दीसे जल्दी। कुल पच्चीस वरिस हमारे पास है। इसी बीच हमे यह कुल मजिल मारना है। यह तभी हो सकता है कि सब जगह सेठोंके "लाभ-सुभ" का हटाकर देसकी भलाईको सामने रक्खा जाय। सेठ और सेठके पायक लोग लम्बी-लम्बी बात करके भरमाना चाहते है और देसकी भलाईका बहाना करके हमे बात नहीं, काम देखना है। काममें देख रहे हैं कि लडाईके वखत भी सेठ लोगोंने दोनों हाथोंसे नफा बटोरा और आज भी उन्हींकी पाँच अँगुरी घीमे है। खाली चीनी-परसे आँकुस (कन्टरोल) उठानेसे कई करोड रुपैया सेठोंकी थैलीमे चला गया। कपडा

और अनाज परसे आँकुस उठानेपर और बहुत करोड रुपैया सेठा और चोरबजारी बनियो की थैलीमे जायेगा। कब तक थोडेसे आदमियोके हाथमे देसका सारा धन और देसकी सारी जिनगी बटुरती जायगी? और, ऊपरसे जो बेसी नफापर बडा एकम-टिकस (इनकम टैक्स) भी सठोपरसे उठा लिया गया है। सेठा के लिए सब काम फुर्ती से हो रहा है, सो हमारे सामने है।

दूसरी ओर जनताकी भलाईके सब काममे आज कल आज-कल हो रहा है। जिमीदारी उठानेकी बात खटाईम पडी हुई है। कमेरोके खिलाफ खूब हथियार चलाया जा रहा है और उनको फोडकर आपसम लडानेकी तदबीर की जा रही है। बाहरसे कमेरोके परघट दुसमन बारयाम उछल-कूद रहे हैं। मुदा, एक ही भरोसा है जिसको सालिगरामको भूनकर खानेमे अबेर नही हुई उसे बैंगन भूनने मे कितनी देर लगेगी? जनता की तागत बहुत बढ गई। जनताके सेवकोकी भी तागत बहुत बढी है। कुछ जनसेवकाको एक होनेका वखत आ गया है। घरके भीतर कमुनिस, सोसलिस, फरवड-बिलाकी, करन्तिकारी सासलिस आपसम चाहे लडो मुदा बूझ लो कि अकेले चना भाड नही फोड सकता। जो सब लोग आपुसम मिलकर काम नही कर सकते है तो कमेराके पचैती राज (समाजवादी प्रजातन्त्र) का सपना दूर बहुत दूर चला जायगा।

लडाईके बाद अब क्या करना चाहिये, यही बात इस छापम बढा दी गई है। और पहले की बहुत सी पाँती और एक समूचा अधियाए निकाल दिया गया है।

परयाग, १६-१-४८

—राहुल सांकिरतायन

चौथी छाप

सात बरस बाद चौथी छाप निकल रही है। पोथीके खतम हो जानपर भी इतना देर लेखक और परकासक दोनाकी ढिलाईके कारन हुई। इस छापम भी बहुत-सी बातें घटा बढा दी गई हैं।

परयाग, ८-१०-५५

१. दुनिया नरक है

और जगह जाने की क्या जरुरत है, सामने देखते नहीं, यह दुनिया नरक नही तो क्या है ?— दुखरामने सन्तोखीसे कहा । अभी दोनोकी बात यही तक थी, कि एक तीसरा जवान आया, जिसे दोनोंने 'आओ भैया' कहकर पास बैठने के लिए कहा । अब फिर उनकी बात शुरू हुई । भैयाने ही पहले कहा—कहो क्या बात हो रही थी, मैं सुनूं ।

सन्तोखी— यही दुखराम दुनिया का रोना रो रहे थे, दुनिया नरक है नरक ।

भैया— तो इसमे कोई सक है ? देखते नहीं हमारे गाँव मे पचास घर हैं, लेकिन उनमे कितने घर हैं, जो पेट भर खा सकते हैं ?

दुखराम—मैं समझता हूं, पांचसे अधिक नही ।

भैया— और वह पांच भी सूखा-रूखा घास-पात खाकर किसी तरह पेट भर लेते हैं, बाकी पैतालिस घरो मे किसी को एक सांझ खाने को मिलता है, किसीको दो दिन पर मिलता है । चैत मे जब फसल कटती है, तो एकाध महीना पेट भर खा लेते हो । छोटे-छोटे बच्चोको देखते नही, कैसे उनका पेट कमरसे सटा हुआ है ! और किसी के लिए होगा कभी कभी सूखा-अकाल, लेकिन हमारे यहाँ के लोगो के लिए तो सदा ही अकाल रहता है, उन्हे सदा ही भूखा रहना पडता है ।

भैया- जानते हो लोग जो इतना बिमार पडते हैं, वह भी भूखे ही रहने के कारन ।

दुखराम—क्यो नही भैया ! पेट मे जब अन्न नही रहता, तो जान पडता है, आग भभक उठी है और सारे शरीर मे लहर बनने लगता है ।

भैया—ठीक कहा दुक्खू भाई ! जब शरीरको अन्न नही मिलता, तो वह दुर्बल हो जाता है । और सुना नही है 'दुर्बलोदैव घातक' । कोई भी आसपास से बीमारी जा रही हो, दुर्बल आदमी को देखते ही उसका मन ललचा जाता है । अकाल मे जितने लोग भूखे मरते हैं, उससे तिगुने बिमारी से मर जाते है । अभी जो बगाल मे अकाल पडा था, जानते हो वहाँ कुछ ही महीनो मे साठ लाख आदमी मरे, जिनमे भूखे मरने वाले २० लाख से ज्यादा न होंगे । मालूम है साठ लाख के अकाल-मरने मे सुनने से तुम्हे वह रोमाचकारी दुख नजर नही आएगा, जो मरने से पहले उनपर बीता ।

—क्या ऐसी बीती भैया ?

भैया—कुछ न पूछो, यदि वह रात को सोते और सबेरे मरे पाये जाते, इतना दुख न होता । लेकिन उन्हे लाज छोडनी पडी । सुना होगा तुमने,

सडको पर पचास-पचास हजार भूखे नर-नारी बाल-बच्चे पडे हुये थे। वह ऐसे लोग नही थे, उन्हे भीख माँगने की बान थी। कितने ही उनमे पढे-लिखे भी थे, कितनी ही औरतें ऐसी थी, जिन्होने घरके चौखट से बाहर पैर नही रखा था।

सन्तोखी—और वह भी घरसे निकल कर शहरकी सडको पर चली आई।

भैया—सारा बडप्पन, सारा पर्दा-पानी तीन ही दिन चलता है, चौथे दिन जब भूख से अँतडियाँ तिलमिलाने लगती हैं, तो सब लाज-सरम इज्जत-पानी हट जाता है। फिर एक-दो आदमी के ऊपर आफत आई हो, तो हो सकता है, लाज-सरम के मारे आदमी घर में बैठा ही बैठा जान दे दे। लेकिन बगाल मे यह एक घर की बात नही, एक गाँवकी बात नही, जिले की बात नही थी, बल्कि एक सूबेके दो-दो, तीन-तीन करोड आदमियो पर यह आफत आई थी। अन्न परान से भी मँहगा था। पहले लोगोने जेवर बेंचकर रुपये-दो रुपये सेर का चावल खरीदा, लेकिन जेवर कितने लोगो के पास था? लोगोने खेत बेंचा। खेत अन्न देते, लेकिन तीन महीने बाद—तब तक घर के लोग जिएँ कैसे? इसलिए लोगो ने अपने खेतो को माटी के मोल बेंचा। बैल, गाय बेंचा, घर भी बेंच दिया, तब भी अन्न दुर्लभ था, खरीदने के लिए पास मे कुछ भी नही था। करोड-करोड आदमी कुएँ, तालाब मे डूबने के लिए तैयार नही हो सकते थे। जानते हो न जीनेका मोह?

सन्तोखी—हाँ भैया! जीने के लिए आदमी क्या नही करता?

भैया—वे लोग जीना चाहते थे। सुना कि कलकत्ता बडा शहर है। वहाँ देस-देसाउर से अन्न आता है। वहाँ जाने से क्या जाने, जीने का कोई रास्ता निकल आए। इसलिए घरके घर खाली हो गए। लोग भूखे-प्यासे कलकत्ता की ओर चल पडे। सारे बगाल के लोग कलकत्ता कैसे पहुँच सकते थे? भूखो के शरीर मे इतनी ताकत कहाँ पर थी, कि साठ-सत्तर मील से ज्यादा चल सकें। कितने ही रास्ते मे मर गए, कितने ही कलकत्ता की सडको पर भी पहुँच गए। जानते हो न कलकत्ता की बरखा?

दुखराम—हाँ भैया! वहाँ तो जान पडता है, बारहो महीने बरखा रहती है।

भैया—लेकिन यह सन् १९४३ के बरखा के महीने थे, जबकि भूखे नर-नारी कलकत्ता की गलियो मे पहुँचे। कितनो के पास तन ढाँकने के लिए कपडा नही था वह शरीर मे फटे बोरे लपेटे थे। मूसलाधार बरखा बरसती रहती थी और सडक पर, पगडडियो पर ये भीगते रहते थे।

सन्तोखी—क्या वहाँ धरमसाला मुसाफिरखाना नही है?

भैया—धरमसाला मुसाफिरखाना दो-चार हजार के लिये हो सकता है, लाख लाख आदमियो के लिए धरमसाला कहाँ तैयार है? कलकत्ता में भी सब को कहाँ खाने को मिलता? लडके और सयाने भी कूडो परसे बीनकर दाना खाते थे, सडक पर फेंके सूखे टुकडो को भी कुत्तो के मुँह से छीन लेते थे। जीवन का लोभ ऐसा ही है। आदमी कैसे भी हो, जीना चाहते हैं। मैं समझता हूँ, नरक मे भी आदमी इसी तरह जीने की इच्छा रक्खेगा।

दुखराम—भैया! इससे बढकर और नरक क्या होगा?

भैया—हाँ, मुर्दे सडकों पर पडे रहते थे, कोई उठानेवाला नही मिलता था।

यह कलकत्ते की बात थी, देहात मे तो और भी बुरी हालत थी, क्योकि वहां कोई पूछताछ करनेवाला न था, न डाक्टरी महकमा, न डाक्टर, न मुर्दों की तस्वीर खीच-कर अखबारो मे छापने वाले । लाखो आदमी दिल मसोसकर चुपचाप अपने गांवो मे मर गए । और जानते हो, कलकत्ता की सडको पर कुत्ते बिल्ली की मौत मरने वाले ये लोग कौन थे ?

दुखराम—नही भैया ! बताओ, बगाली रहे होंगे ।

भैया—हां, बगाली । इनमे थे बाम्हन, इनमे थे कायथ, इनमे थे ग्वाले, इनमे थे सेख, इनमे थे सैय्यद, सब जाति, सब धरम के लोग थे । भूखने सब को एक जैसा पथ का भिखारी बना दिया । इतना ही नही, भूखने उससे इज्जत बेंचवा दी ।

सन्तोखी—क्या कहा भैया इज्जत बेंचवा दी !

भैया—हां, जान पडता है इज्जत भी आदमी तभी रखता है, जब पेट मे दो दाना पडता है । जवान लडकियां, जवान बहुएं और अधेड औरतें एक वक्त के भोजन के लिए अपनी इज्जत बेच रही थी । कलकत्ता की सडको पर इज्जत बेंची जा रही थी, चटगांव, नवाखाली, बरीसाल की गलियो मे इज्जत बिक रही थी, बाजारो मे ही नही हर जगह इज्जत बिक रही थी । अन्न इज्जत से बहुत महँगा था । मां अपनी बेटी की इज्जत का सौदा करती थी । पति अपनी स्त्री की इज्जत बेच कर कुछ दाने का इशारा करता था । कलकत्ता मे कितनी नारियां खानगी (बेसवा) बनने के लिए मजबूर थी, जानते हो ?

सन्तोखी—बहुत होगी ।

भैया—बहुत कहने से वह दिल दहलाने वाला नजारा हमारे सामने नही आता । किसीने हिसाब लगाकर बतलाया था, कि एक समय तीस हजार औरतें अपनी इज्जत से चावल बदल रही थी ।

दुखराम—इससे तो एक ही बार आँख मूंद लेना अच्छा होता ।

भैया—लेकिन यह एक आदमी के आँख मूंदने की बात नही थी, करोड-करोड आदमी कैसे बिना हाथ-पैर हिलाये मरने के लिए तैयार हो जाते । इसी लिए भूखने उनसे इज्जत बेचवाई, जो कभी इज्जत के लिए मरते थे । साठ लाख आदमी मर गए, क्या उससे कम है यह लाखो औरतो का इज्जत बेचना ?

सन्तोखी—यह उससे भी बुरा है ।

भैया—और जब फसल हुई, लोगो को थोडा-थोडा अन्न मिला, तो बरसात बीतने भी न पाई कि मलेरियाने आ घेरा । घर-के घर बीमार पड गए, कोई पानी देने वाला नही रह गया । किसी-किसी गांव मे दो तिहाई आदमी मलेरिया और महामारी मे मर गए । घर के घर सूने हो गए । मुर्दे सात-सात दिन तक घर के भीतर सडा किये ।

सन्तोखी—जीता ही देस मसान हो गया ।

भैया—तो देखा न सन्तोखी भाई ! इससे बढकर नरक कहाँ होगा, जहाँ इस तरह घुल घुल कर आदमी को मरना हो और बइज्जत बे-पानी । वह तो बगाली की बात है, अभी १९४४ मे जान रहे हो, बिहार मे क्या हो रहा था ?

दुखराम—विहार मे भी कुछ हुआ भैया ?

भैया—कुछ नही, बहुत। चम्पारन, मुजफ्फरपुर, दरभगा के सिरिफ तीन जिलो मे और वह भी सिरिफ तीन-चार महीने मे एक लाख से ऊपर आदमी हैजा और मलेरिया से मर गए।

सन्तोखी—मरना-जीना भगवान के हाथ मे है।

दुखराम—जो मरना-जीना भगवान के हाथ मे होता, तो दवा-दारू करने की जरूरत न होती। फिर सन्तोखी भाई ! तुम्हे खाने की जरूरत नही, जो भगवान को जिलाना होगा, तो तुम्हे हवा पिलाकर भी जिला देंगे !

भैया—कोई आदमी बहुत बूढा सरीर से मजबूत होकर मरता है, तो उसके लिए कहा जा सकता है, कि बुढापे को कोई नही रोक सकता, बूढे को मौत से कोई नही बचा सकता। लेकिन बूढो को भी बीमार पडने पर हम भाग के ऊपर छोड नही देते। उसकी दवा करते है, पथ्य देते हैं। बिहार के तीन जिलो मे एक लाख से अधिक आदमी मर गए, वह बूढे नही थे। बीमारी ने इसलिए उन्हे धर दबाया, कि साल-साल तक आधा पेट और भूखे रहते-रहते उनके सरीर मे सकती नही रह गई थी। मलेरिया के कीडा ने जब उनके ऊपर धावा बोल दिया, तो इन्हे रोकने के लिए भीतर ताकत कहाँ रह गई। हैजा के कीडे जब पानी के रास्ते या सास से होकर भीतर पहुँचे, तो उन्हे निकालने के लिए उनके पास कोई ताकत नही बची रही थी। तन्दुरुस्त आदमी न बीमारी कम लगती है।

सन्तोखी—बीमारी न होने से आदमी तन्दुरुस्त होता है ?

भैया—नही सन्तोखी भाई ! यह बात नही है। पुस्टई वाले खान-पान से आदमी तन्दुरुस्त होता है और तन्दुरुस्त होने पर बीमारी उसके पास नही आती।

दुखराम—तो अन्नही मूल हुआ ?

भैया—अन्नही मूल है, अन्नही परान है, अन्न के मिलने से जीवन रहता है अन्न के मिलने से इज्जत बचती है।

दुखराम—तो जो अन्न मिले, तो दुनिया का आधा नरक खतम हो जाएगा।

भैया—हाँ, दुक्खू भाई ! इस बात को गाँठ मे बाँध रक्खो। हम आगे बतलाएँगे, कि क्यो अन्न रहते भी अन्न नही मिलता, पथ्य रहते भी पथ्य नही मिलता, दवा रहते भी दवा मुवस्सर नही होती।

सन्तोखी—'सन्तोख परम् सुखम्' हमने तो यही सुना था।

भैया—तुम्हारे ऊपर भी वह आ सकती है, आती तो देस मे कौन बच सकता ? कल बगाल की पारी थी, आज मिथिला तिरहुत की और बिहार हमारी तुम्हारी भी बारी आ सकती है। 'सन्तोखम् परम् सुखम्' को उसने लिखा होगा जिसे कभी भूख से पाला न पडा होगा। उसका पेट भरा होगा। वह निचित सोया रहा होगा। लेकिन इतने ही से दुनिया का नरक होना पूरा नही हो जाता।

दुखराम—हाँ, खाना-कपडा तो मूल है लेकिन और भी पचासो चिन्ताएँ है पचासो विपदाएँ हैं।

भैया—ठीक है दुक्खू भाई ! चिन्ता की कुछ मत पूछो। माँ-बाप है घर मे चार बीघा खेत है, किसी तरह गुजारा चल जाता है। फिर हो जाते है चार लडके और चार लडकियाँ। अब चार बीघे खेत से दस मुँहो का काम कैसे चल सकता है ? फिर जैसे-जैसे उमर बीतती जाती है, वैसे-वैसे मुँह भी बढ़ते जाते है आहार भी बढता जाता है। लडको का ब्याह करना, गरीब होने पर लडकी खरीदने ही मे खेत बिक जायगा, इज्जतदार होने पर एक ही लडकी के ब्याह मे सारा खेत चला जायगा। फिर परिवार को भी भूखा रहना पडेगा। दो हाथ की चादर सिर ढाँको तो पैर नगा, पैर ढाँको तो सिर नगा।

दुखराम—चार बीघा क्या चालिस बीघा वालो को भी चिन्ता खाये जाती है।

भैया—क्यों न खाएगी ? चार लडके हुए तो दूसरी पीढी मे दस-दस बीघा रह जायगा, मानो उनको जो एक पीढी या पन्द्रह साल के लिए कम कुछ चिंता हुई, लेकिन तीसरी पीढी मे तो फिर दो दो बीघा खेत और आठ-आठ लडके लडकियाँ। जिसके घर मे आज दाल भी है, तो नमक नही है।

दुखराम—और फिर भैया गाँव मे आधे से अधिक तो ऐसे घर हैं जिनके पास खेती पथारी भी नही है। दिन भर मजदूरी करते हैं, शामको जो सूखा-रूखा मिल गया तो लडको-बालो के मुँह मे अन्न पडा। रोज कमाना, रोज खाना। एक दिन गाडी बैठ गई, तो हाहाकार। तीस दिन मजूरी भी तो नहीं मिलती और साल मे छ महीना भी करने के लिए काम नही रहता। सिरिफ बोने, काटने के वक्त काम रहता है।

भैया—मजूर-पेशा आदमियो की तो और आफत है। जेठ, आसाढ सावन का दिन काटना मुश्किल हो जाता है जो महुआ उस साल रहा, तो कुछ अवलम्ब लगा।

दुखराम—और महुआ भी तो अब नोहर (दुलभ) हो गया है। कहाँ पैसे का दो सेर और कहाँ वह भी अब चार आना सेर लग गया। आम की गुठली जमा करके कुछ दिन रोटी पकाते-खाते थे, और अब उसके खाने वाले इतने अधिक है कि सबको गुठली कहाँ से मिलेगी ?

भैया—दुक्खू भाई ! इसे भी क्या कोई जीना कहोगे ? यह नरक की जिन्दगी नही तो और क्या है ? फिर देखते नही, मजूर घरो की क्या दशा है ? फूस की छत भी उन्हे ठीक से मुयस्सर नही। एक बार छा पाये, तो चाहे सड गल जाक और बरसात का आधा पानी भीतर हो जाता हो, लेकिन फिर उनको नया करना मुश्किल है। कितनी छोटी छत, कितना छोटा दरवार, भीतर सीड, बाहर नावदान और कूडे-करकटकी बदबू ! यह क्या आदमियो के रहने लायक घर है ? इन्ही सडी झोपडियो मे बच्चे पैदा होते हैं। जब वह आँख खोलते हैं तो उनके आसपास क्या दिखलाई पड़ता है। गरीबी का नगा नाच, तिलमिलाती अँतडियाँ, सूखा मुँह, नगा बदन !

दुखराम—आजकल के जमाने मे बीस-बीस रुपये की साडी कौन खरीदेगा ? फटा चीथडा भी तो नसीब नही होता। जान पडता है, टाट भी पहिनने को नही मिलेगा।

भैया—हाँ, और बच्चा नङ्गा-भूखा सरीर और वही गरीबी चारो ओर देखता है। सूखे थनो से दूध निकालना चाहता है। इस पर भी जो हमारे देश के आधे बचपन ही मे मर जायें तो बडे अचरज की बात है।

दुखराम—हाँ ! भैया सतमी के बच्चो को नही देखा ? दो तीन बरसो के भीतर उसका लडको से भरा घर खाली हो गया।

सन्तोखी—मैं समझता हूँ, बच्चो के लिए अच्छा ही हुआ ? पेट भर खाना किसे कहते हैं, क्या इसे उन्होंने कभी जाना ? जाडे मे बेचारे जो किसी के कोल्हू आडे मे आग तापन जाते, 'ऊख चुराकर ले जायगा' कह कर दुतकार दिये जाते मानो वह आदमी नही कुत्ते थे। कोदो का पुवाल या ऊख की पत्तियो मे घुस कर रात बिता देते। भूख लगती, तो किसी के द्वार पर खडे होते। दया आई, तो किसी ने एक कौर दे दिया नही तो फिर फटकार। जडैया (मलेरिया) मे सब गिर जाते, तिल्ली बढती, पेट फूल कर कुडा जैसा हो जाता, मुँह पीला और आँखे फूल जाती। फिर एक-एक करके पके पत्ते की तरह झडने लगते ! क्या यह आदमी का जीवन है ?

भैया—अब समझा न, यह नरक का जीवन है। तुम समझते होगे कि सहर के साफ कुर्ता-धोती पहनने वाले बाबू लोग अच्छी जिन्दगी बिताते होगे ?

दुखराम—हाँ भैया ! हम तो ऐसा ही समझते है—वह तो पान भी खाते हैं, सिनेमा भी देखते हैं, हम लोगो को देख कर गन्दा-गँवार कह कर हट जाते है।

भैया—उन सफेद कपडो के भीतर ही भीतर कितना धुआँ उठ रहा है, यह तुम्हे नही मालूम है दुक्खू भाई ! पहिले कभी जमाना था, कि विद्या का मोल जियादा था। इन्ट्रैन्स भी नही पास होते थे, कि लोग वकील, मुन्सिफ, सदरआला हो जाते, लेकिन अब एम० ए०, बी० ए० पास कर साठ-साठ रुपल्ली की नौकरी के लिए इधर-उधर मारे-मारे फिरते है। सेर भर का आटा, सेर भर का चावल, पाँच रुपया सेर घी, तीन रुपया मन ईंधन, बताओ साठ रुपये मे तो अकेले आदमी का पेट भी नही भर सकता। फिर दुकान का किराया तिगुना। पैर पसारने पर इस दीवार से उस दीवार पहुँच जायेंगे, ऐसी-ऐसी कोठरियो का किराया दस रुपया महीना। कपडे का दाम भी चौगुना। फिर बाबू अकेले नही होते - माता-पिता अपने पैर पर खडा करने से पहिले लडके का ब्याह कर देते हैं और पचीस बरस के होते होते बाबू के चार-पाँच बच्चे भी हो जाते हैं। अब बताओ साठ रुपये मे वह क्या अपने खायें, क्या बीबी और बच्चो को खिलाये ? कहाँ से घर भर के लिए कपडा ले आयेंगे ? मकान का किराया कैसे देंगे ? लडको की फीस कहाँ से आयेगी ? यदि लडके-लडकियो को पढाया नही, तो उन्हे भीख भी नही मिलेगी। फिर लडकियो के ब्याह के लिए दहेज का रुपया कहाँ से आये ? उनके घर के घर तपेदिक मे उजड जाते हैं। ठीक से खाना नही, चिन्ता के मारे दिन-रात कलेजा सुलगता रहना है, दवा का भी ठिकाना नही। इतने कमजोर शरीर मे तपेदिक क्यो न घुसे ? ठीक कहता हूँ दुक्खू भाई ! बाबू लोगों के घर साफ हो गये।

दुखराम—मैं तो समझता था भैया ! कि बाबू लोग बहुत अच्छी तरह से होगे, खूब लोगों से रुपया ऐंठते हैं।

भैया—सौमे पाँच तो सब जगह अच्छे मिल जायंगे। जानते नही हो, वकालत पास करके कचहरी मे आधे लोग सिर्फ मक्खी मारने जाते हैं। इधर-उधर से माँग-जाँच के पैसे दो पैसे का पान खाकर मुँह पर रोब और रोशनी लाना चाहते हैं ? लेकिन दुक्खू भाई ! रोशनी मुँह मे खैर-चूना लपेटने से नही आती। जब आदमी को

पेट भर खाने को मिलता है, निश्चिन्त रहता है रोशनी अपने आप झलकने लगती है। तुम समझते होगे कचहरी के मुहर्रिर, थाना के मुंशी जी—जिनसे तुम्हे भी कभी पाला पडा होगा।

दुखराम—हा भैया ! वह तो अपने बाप से भी पैसा लिये बिना नही छोडते, हड्डा पेर कर पैसा निकालते हैं।

भैया—तो उनका ऐसा करना क्या हद दरजे का कमीनापन नही है ? गरीब आदमी किस्मत का मारा न्याय पाने के लिए थाना कचहरी जाता है और उसे जेवर बचकर, खेत रेहन रखकर रुपया लाने के लिए कहा जाता है।

दुखराम—देह बेंचकर देना पडता है भैया ! क्या करें, नही तो जेल भेज दें, मुकदमा खराब कर दें।

भैया—यह तो पाप की कमाई है न दुक्खू भाई ! लेकिन आदमी क्यो ऐसा करता है ? इसीलिए न कि तनखा से उसका पेट नही भरता। उसे अपने बाल-बच्चो को पढाता है और सबसे बडी आफत है आजकल लडकियो का ब्याह करना। बाबू लोगो के लडके बिना पढी लिखी लडकी से ब्याह नही करते, इसलिए लडकी को भी पढाना पडता है।

सन्तोखी—बनारस म हमारी अगरवाल बिरादरीके हैं एक भाई जिनकी लडकी ने एम० ए०, बी० ए० पास किया है।

भैया—हा, कोई-कोई लडकियाँ एम० ए० बी० ए० भी पास कर लेती हैं। माँ-बाप तो चाहते हैं कि बारह-तेरह ही वर्ष मे ब्याह हो जाय लेकिन जानते हो न लडकोंका मोल भाव ? तिलक दहेज नही जुटता आज कल करते दिन बीत जाता है। लडकी पढने मे लगी है, वह कहते है चलो तब तक पढती रहे। फिर जानते हो न विद्दाका चसका। जब आँख पर पट्टी बँधी रहती है तो मरद हो चाहे मेहरी, उसको दुनिया-जहान का कोई पता नही रहता, लेकिन विद्दा आँख खोल देती है। कुछ पढ-लिख लेने पर लडकी को विद्दा के घर म सजाकर रक्खें। जगमग जगमग करते रतन दिखायी देने लगते हैं। उसे खुद और पढने का लोभ होता है और जब बेचारी एम० ए०, बी०ए० पास कर लेती हैं, तो ब्याह होना और मुस्किल हो जाता है।

सन्तोखी—क्यो भैया ? तब बाबू लोगो को बहुत पढी लिखी से ब्याह करने के लिए उतावला होना चाहिये।

भैया—घबराते है घबराते। मेहरी जो एम० ए०, बी०ए० तक पढी होगी, उसके दिमाग मे गोबर नही न भरा रहेगा ? वह खुद अदब से बात करेगी, लेकिन बाबू को भी अदब सीखना होगा। वहाँ ढोल गवाँर सूद्र पसु नारी से काम नही चलेगा, झूठा रोब भी नही गाँठा जा सकेगा।

दुखराम—एम० ए०, बी० ए० की क्या बात कर रहे हो भैया ! हमारी बुधुआ की माई को नही देखते, बलिस्टर बन जाती है बलिस्टर ! मुँह से बात नही निकलने देती। उसके सामने हम क्या ढोल गँवार की बात कर सकते हैं ?

भैया—इसीसे समझ जाओ, ज्यादा पढी लिखी औरतो को ब्याहने से बाबू भैया लोग क्यो घबराते हैं। अभी पचास-पचास बरस तक कुँवारी बैठी रहने मेहरिया देखी जाने लगी हैं, आगे न जाने क्या होगा ?

दुखराम—तो माँ-बाप के लिए भी बडी चिन्ता है।

भैया—फुफुत है कुफुत, तीस ही पैंतिस बरस मे बाबू लोग बूढे हो जाते हैं, इसी सब चिन्ता के कारन। लड़कियाँ तो ब्याहे बिना जवानी बिताने लगती हैं और लडको का जल्दी ब्याह कर देने के लिए लडकी वाले घेरने लगते हैं। बाप को ऐसे ही गिरस्ती चलाना मुश्किल है, ऊपर से लडके की बहू बनकर एक और घर मे पहुँच जाती है।

दुखराम—और वह अकेली भी तो नही रहती।

भैया—बस बरस ही भर बाद से घर मे नये-नये मुँह आने लग जाते हैं। जितने मुँह थे, उन्ही के खाने का ठिकाना न था। अब पोता-नाती और बढने शुरू होते हैं। फिकर की बात क्या पूँछते हो ? हर बखत मन परेसान रहता है, फिर घर मे बिना बात ही का झगडा क्यो न होता रहे ? मेहरी मर्द से लडती है, बाप बेटा से लड़ता है और सब आपस मे लडते है। मार-पीट, गाली-गलौज क्या कोई बात उठा रखते हैं ? सारा मुहल्ला सुनता है, ज्यादा सिर-विर फूटा या किसी ने अफीम-सखिया खा ली, तो जेल की भी हवा खानी पडती है। यह घर नरक नही तो क्या है ?

सन्तोखी—हाँ भैया ! मेरे भी सहर मे कुछ रिस्तेदार हैं। हमको तो गाँव का गँवार समझ कर नाक-भौं सिकोडते हैं, लेकिन मैं जानता हूँ, कि चूनाकली किए उनके सफेद घरो, धोबी के घर से आये बगुले के पर जैसे धुले कपडो के भीतर आग धाँय-धाँय जल रही है, चिन्ता के मारे परेसान हैं, ब्यापार मन्दा, दिवाले का डर, सिर पर महाजन, घर लड़की सयानी। क्या करें बेचारे, यही सोचते हैं कि किसको लूटें, किसको मारें।

भैया—देखा न दुक्खू भाई ! जो सफेद दिखाई देता है, उसके भीतर भी ढोल की पोल है। साठ-सत्तर पाने वाले बाबुओ की बात नहीं, जो चार-सौ पाँच सौ पाने वाले बडे-बड़े हाकिम हैं, उनके घरो मे भी नरक की आग धाँय-धाँय जल रही है।

दुखराम—चार-पाँच सौ रुपया महीना जो पाएगा, उनको क्या दुख होगा भैया ?

भैया—चार-पाँच सौ पाने वाले के घर मे मेहरी बच्चे मिला कर चार-पाँच आदमी तो होंगे। कितना ही बच्चा पैदा करने से हाथ रोकें, लेकिन घर मे इतने से कम परानी कहाँ होंगे।

दुखराम—हाथ रोकने की बात क्या है भैया ! बाल-बच्चा देना भगवान के हाथ मे है।

भैया—भगवान अपने कितने ही कामो से इस्तीफा दे चुके हैं, हमारे सामने नही, उन लोगो के सामने, जो भगवान की नस-नाडी पहचानते हैं। एक बुन्द पुरुष का और एक बुन्द तिरिया का मिलाकर बच्चा पैदा होता है। आजकल बहुत से तरीके निकल आये हैं, जिनके इस्तेमाल से दोनो बुन्द मिलने ही नही पाते। लेकिन अभी हमारे देश मे पुरुखो मे न हो, लेकिन तिरियो मे पूत की लालसा बेसी होती है है। इसलिए चार-पाँच सौ पाने वाले हाकिम के घर मे भी चार-पाँच परानी तो होते ही हैं। बेचारो को आदमीका धरम छोडना पडता है भैया ?

सन्तोखी—धरम क्यो छोडना पडता है भैया ?

भैया—मॉं-बाप ने पढाया लिखाया कि लडका कमाएगा, तो बुढ़ापे मे उसकी भी खबर लेगा। एक उदर से पैदा हुए भाई बहिनो ने समझा था कि ये हमारे हाड-मांस हैं, लेकिन हाकिम बनते ही लडके की आँख बदल जाती है। उसे साहब से हाथ मिलाना है, उसे कलट्टर साहब के सामने पूंछ हिलाना है। अच्छा कोट चाहिए, अच्छा बूट चाहिए, नही तो दरसन मिलना मुसकिल हो जायगा। यही से लिबास और लिफाफा बढना शुरू होता है। पांच सो मे चार सौ तो बॅंगला भाडा, टोप-कोट, घोडा-गाडी या मोटर ही पर खर्च हो जाते है आजकल तो बात ही मत पूछो। फिर बताओ सौ रुपये मे अपने खाएँ, बीबी बच्चो को खिलाएँ या नौकर-चाकर को।

सन्तोखी—तो वहाँ सचमुच लिफाफा ही है।

भैया—लिफाफा मत कहो, सन्तोखी! वहाँ भी नरक की आग धांय धांय कर रही है। बेचारे मां-बाप की भी आशा तोडते हैं, भाई-बहिन की ओर से भी तोता-चसम बनते हैं, सिरिफ अपना और अपने बडे-बच्चे का ख्याल करते हैं। तुम्हीं बताओ बचे सौ रुपये मे वह और क्या कर सकते हैं? वह मजबूर हैं, पढे-लिखे आदमी से जानवर बनने के लिए, लोग कहते हैं कि पहले दरजे की खुदगरजी और कमीनापन है। लेकिन बेचारे करें तो क्या करें? जो लिफाफा मे काम करें तो बडे अफसर घिनकी नजर से देखेंगे, फिर आगे की तरक्की वरक्की की आशा गई। नही तो घूस-रिसवत लें।

सन्तोखी—इतनी-इतनी तनख्वाह पाने वाले हाकिमों को रिसवत नही लेनी चाहिये।

भैया—मैंने लेखा-जोखा बतलाया न? उसी से लेना पडता है? पांच सौ वाले भी लेते हैं, पाँच हजार वाले भी लेते हैं और पच्चीस हजार वाले भी, इस दुनियाँ मे घूंस रिसवत का बाजार ही सबसे तेज है। सब इसे जानते हैं, सब एक दूसरे की आँख मे धूल झोकना चाहते है—कही-कही इस घूंस रिसवत का नाम है बडा-बडा भोज और मेम साहब की अंगुली मे हजारो की अंगूठी, लाखो की मोती रतनमाला।

सन्तोखी—भैया! मैं क्या सुन रहा हूँ?

भैया—चुपचाप सुनते जाओ, बड घरो की बडी पोल, बडी फिकर, बडी दोजख की आग। सब जानते है, घूंस रिसवत बुरी चीज है। कभी-कभी पकडे जाने पर सबसे बडी मछलियो को तो कुछ नही होता, लेकिन छोटी मझोली मछलियो पर हाथ उठाना पडता है, आखिर न्याय का ढोंग तो कुछ दिखलाना ही पडेगा। दुक्खू भाई! तुम खुद समझते हो, जो सौकी आमदनी पर डेढ सौ खर्च करने के लिए मजबूर है और उसे घूंस रिसवत, जैसे भी हो तैसे, पूरा करना चाहता है, उसका चित सान्त होगा या असान्त, वह भयभीत होगा या निरभय?

दुखराम—वह भीतर ही भीतर कांपता रहेगा भैया!

भैया—फिर उसकी जिनगी सुख की जिनगी नही हो सकती, चाहे उसके मुँह पर मुसकुराहट दीख पडती हो, चाहे उसके चारो ओर सुन्दरताई फैल रही हो। इन बडे लोगो के लडके-लडकियां बडे ठाट मे पलते हैं। लडकियो को इन्द्रपुरी की परी बनाने का उदजोग बचपन ही से सुरू हो जाता है। जवानी म पैर रखते-रखते वह अप्सरा भी बन जाती हैं, लेकिन कितना महॅंगा सौदा!

सन्तोखी—सहर मे जाता हूँ, तो मैं भी कभी-कभी इसे देखता हूँ ? मेरी ही जाति के चौधरी है, उनकी ओर उंगली कौन दिखला सकता है। लेकिन जान पडता है सील-सकोच, धरम-करम से उन्हे वास्ता नही।

भैया—लेकिन सन्तोखी भाई ! तुम समझ रहे हो कि वह अपने मनसे ऐसा करते हैं। नही ऐसा नही। बड दामाद चाहिये, दामाद अप्सरायें पसन्द करते हैं, नाच गाना हाव-भाव चाहते हैं। जो यह सब बातें लडकी मे न हो तो उसे कौन पूछेगा ? इतना होने पर भी तो कितनी ही लडकियो को कुँआर ही जिनगी बिता देने के लिए मजबूर होना पडता है।

सन्तोखी—नही भैया ! मैं यहाँ तुम्हारी बातको नही मानता। जो साहब-बहादुर बन जाते हैं, उनमे बराबर एक दूसरे की औरत भगा ले जाने का रोग होता है।

भैया—रोग से तुम्हारा मतलब है महामारी ? लेकिन ऐसी कोई महामारी नही है। यह लोग हैं तो हमारे देसके, लेकिन इनका दिमाग सातवें आसमान पर रहता है। कलट्टर हो गये, पन्द्रह सौ रुपये मे अपनी देह और आत्मा को बेंच दिया, इसके लिए उन्हे सरम होनी चाहिये थी, लेकिन यह हमारे भाई... काले साहब गोरो का भी कान काटते हैं और हम लोगो को जगली, उजड्ड, गँवार समझते है। हम भी आदमी हैं, हम भी समझते हैं, आखिर "हित अन-हित पसु पछिहु जाना" हम उनसे घिना करते हैं।

सन्तोखी—यह बात ठीक कही भैया।

भैया—और जब आदमी के दिल मे घिना हो जाती है, तो सदा छिद्दर ढूँढने लगता है, और जरा भी छिद्दर मिल गया, तो बात का बतगड बना डालता है। मैं मानता हूँ कि इनमे कभी-कभी एक-दूसरे की औरत को भगाने की बात भी देखी जाती है। लेकिन वह भी क्यो ? उन्हे अप्सरा बनाओ, उन्हे बिलायत वालो के लिखे गन्दे-गन्दे उपन्यास पढवाओ या सिनेमा की रामलीला दिखाओ। पुरुखो को तो कचहरी के दफ्तर मे कुछ काम भी रहता है, इनकी तिरियो को तो कोई काम भी नहीं रहता। काम करने लगें तो मक्खन के से हाथ कहाँ रहें ? बेकार रहने का मतलब है, दिल मे हमेशा खुराफात पैदा करना। इसके बाद दूसरे भी लोग होते हैं। किसी के पास दो हजार की मोटर है, तो किसी के पास दस हजार की। किसी के पास इतना पैसा नही, कि नैनीताल-मसूरी जाय और कोई वहाँ जाकर ५० रु० खर्च कर सकता है। किसी के लिए २० रु० की साडी खरीदना मुस्किल है और कोई दो सौ की साडी ले सकता है, जो सिनेमा सुन्दरियो के शरीर पर देखी जाती हैं। यह निठल्लापन, लोभ और उपन्यासो की कामुकता का कारन है, जिनसे तिरियो के भागने की नौबत आती हैं। इनके घरो की लडकियो की तो और दुरदशा है। वह सिरिफ माता पिता के भरोसे पर पति नही पा सकतीं, इसीलिए उन्हे अप्सरा की तरह सजना पडता है।

सतोखी—यह ठीक कहा भैया ! हमने अब तक सुना था, कि महावर पैर मे लगाता जाता है, लेकिन अब सुनते हैं, कि इनके घर की लडकियाँ ओठ मे भी महावर लगाती हैं।

भैया—इनका सारा जीवन नाटक है सतोखी भाई ! और सुख का नाटक सायद सौ मे दो-चार का, बाकी सबका ही दुख का नाटक है। लडकी को पढाया-

लिखाया, बी० ए०-एम० ए० कराया। बसी फकी जा रही है कि कोई कलट्टर, मजिहटर या लाख दो-लाख वाला आदमी फँसे, लेकिन यह सब के भाग की बात तो नही है। उनके लडको की तो और बुरी हालत है।

दुखराम—लडको का मिजाज तो बाप से बढ-चढ कर होता है।

भैया—यही मिजाज तो उनके लिए और घातक होता है। यह पान फूल की तरह पाले पोसे जाते हैं मेम लोगो के स्कूल मे पढने के लिए भेजे जाते है, वह नही हुआ तो देवफोफी-समाज वालो के स्कूलो मे जाते हैं।

दुखराम—देवफोफी-समाज क्या है भैया ?

सतोखी—अरे सखी समाज की तरह कोई होगा ?

दुखराम—यह सखी समाज क्या है सन्तोखी भाई ?

सतोखी—अरे तुम तो गाँव से बाहर कही जाते भी नही।

दुखराम—यही एक बार कलकत्ता गया था, बरस दिन चटकल मे काम किया, बीमार होकर घर पर आया, बचने की उम्मेद नही थी। अब यही पुरखो के गाँव मे मट्ठा पाट-पाट कर चाहे आप पेट खायें, चाहे भूखे रहे।

सन्तोखी—अयोध्या मे एक बार हम गये थे, हमारे बनारस के रिस्तेदार थे, महात्मा का दसरन कराने ले गये। लेकिन महात्मा को देखकर देह मे आग लग गयी। मेहरा की तरह सोलहो सिंगार करके बैठे थे—आँख मे मोटा-मोटा काजल, सिर मे टीका, मटक-मटक कर चलना, मीठा-मीठा बोलना। मैंने उनसे पूछा 'वह महात्मा कहाँ है ? उन्होने मेरा हाथ पकड कर कान मे कहा "चुप, यही तो महात्मा हैं।" पीछे बतलाया कि यह महात्मा रामजी से मिल चुके हैं। रामजी रोज इनके पास आते हैं।

दुखराम—धत्तेरे की ! रामजी राजा रहे, उनको हजार-हजार जोरू मिल जाती, लेकिन सीताजी को छोडकर किसी की ओर नजर उठाकर नही देखा, वह भला इन जनखे मर्दों के पास आयेंगे ! मैं होता, सन्तोखी भाई ! तो कुछ तो जरूर बोल उठता।

सन्तोखी—कुफुत तो मुझे भी हो गई थी, क्या करता रिस्तेदार का ख्याल करके चुप रह गया। ये लोग अपने को सखी कहते हैं।

दुखराम—तो यही है सखी समाज, और देवफोफी समाज भी इसी तरह का क्या कोई है भैया ?

भैया—कुछ फरक है, सखी समाज काले भाई लोगो की करतूत है और देव-फोफी समाज गोरे लोगो की।

सन्तोखी—किरिस्तान का धरम तो नही है ?

भैया—नही सन्तोखी भाई ! वह सतनजा है सतनजा। कुछ हिन्दू धरम-से लिया, कुछ किरिस्तान से लिया, कुछ मुसलमान से लिया ! लेकिन इतना ही रहत तो कुछ काम चल जाता।

सन्तोखी—तब तिननजा ही न रह जाता। सतनजा कैसे बना भैया ?

भैया—अरे इन्होंने ओझा-सोखा, भूत-परेत, चुड़इल-डाइन सब मिलाकर बहुत बड़ा धरम खड़ा कर दिया।

दुखराम—बहुत बड़ा धरम, वह तो ताड़ से भी बड़ा धरम होगा। तो पढ़े-लिखे लोग यह ओझा-सोखा, भूत-परेत वाली बात मानते हैं ?

सन्तोखी—देवफोफी सुना नहीं है, देवता लोगों से बात करने को फोफी है, इसलिए न भैया ! नाम देवफोफी पड़ा है ?

भैया—नाम तो वह लोग थेयोसोफी कहते हैं, लेकिन मतलब वही देव-फोफीका।

सन्तोखी—देवफोफी का भी अपना स्कूल है भैया ?

भैया—देवफोफी के स्कूल में मामूली घर के लड़के थोड़े ही पढ़ सकते हैं, बड़े घर के लड़के जाते हैं। हवा-बतास धूप-घाम से बचाकर उनको रखा जाता है।

दुखराम—तब तो एक ही झकोरा में मुरझा जायेंगे।

भैया—मुरझा तो जाते ही हैं। हाकिम के लड़के हैं तो हाकिम भी तो हजारों हैं और सब के घर में दो-दो चार-चार लड़के हैं। एम० ए०, बी० ए० तो किसी तरह ठोंक-पीटकर खुशामद-बरामद करके बना लिए जाते हैं लेकिन सबको नौकरी कहाँ से मिले !

सन्तोखी—तब बैठे-बैठे मक्खी मारते होंगे।

भैया—मक्खी मारना भी तो इन्होंने नहीं सीखा। लड़की होते तो शायद कभी भाग भी खुल जाता। राजकुमारों की तरह पाले गये, मिजाज आसमान पर रहा। पढ़ लिखकर तैयार हुए, तो बड़ी नौकरी मिली नहीं। पचास-पचीस की मुहर्रिरीपर मन ही नहीं जाता। बापके मत्थे खाये। पेंसिन ले ली, तो घर का चलाना और मुस्किल और दो-चार बेटा-बेटी में लटक गये बस।

दुखराम—जीते ही नरक।

सन्तोषी—तो मालूम होता है सब जगह यही हाल है।

दुखराम—हम तो अपना ही दुख देखकर दुनिया को नरक कहते थे।

भैया—नहीं दुक्खू भाई ! नरककी आग घर-घर जल रही है, किसी का घर आज बचा हुआ है तो कल नहीं बच पायेगा।

सन्तोखी—सायद राजा-महराजा लोग अच्छी हालत में होंगे, उनके पास बहुत धन...

भैया—बहुत रानी-महरानी, रंडी-मुंडी, नौकर-चाकर होते हैं, इसीलिए उनके यहाँ बैकुंठ है, यही न कहते हो सन्तोखी भाई ? लेकिन जानते हो न ? इन्दौर निकाले गये, अलवर के महाराज निकाले गये, नाभावाले न जाने कहाँ जाकर मरे। और अब तो सभी गद्दी से अलग।

दुखराम—बिलाइत के बादसाह तो बहुत सुख से होंगे भैया ?

भैया—मैं कब कहता हूँ कि सौ में दो-चार आदमी भी सुखी न मिलेंगे। लेकिन कल के लिए निश्चित, ऐसा सुख तो दोरंगी दुनिया में कहीं नहीं है। तुमने सुना नहीं है दुक्खू भाई ! अभी बहुत दिन की बात तो नहीं है, बिलायत के बादसाह एडवर्ड निकाल दिये गये।

सन्तोखी—हाँ, हाँ। आजकल जो बादसाह हैं, इन्ही के तो बडे भाई थे और सिर्फ ब्याह करने के कसूर मे।

दुखराम—ब्याह करने मे कौन कसूर था ?

भैया—कसूर तो नही था। बेचारा कुंआरा था, अपने मनकी स्त्री से ब्याह करना चाहता था।

दुखराम—साहब लोग तो अपने मनका ब्याह करते ही हैं, फिर इसमे क्या बुराई थी ?

भैया—साहब लोग कर सकते हैं, लेकिन बादसाह नही।

दुखराम—कलकत्ता मे सुना था कि टोप टोप सब एक जाति होती हैं।

भैया—विलायत मे राजा का खून दूसरा होता है और परजा का दूसरा।

दुखराम—तो राजा का खून लाल नही सुनहले रगका होगा ?

भैया—खून तो सबका ही लाल होता है लेकिन कोई समझता है हमे भगवान ने दाहिने हाथ से बनाया है और दूसरे को बाएँ हाथ से।

सन्तोखी—तो साहब लोगो मे भी बेकूफों की कमी नही है ?

भैया—चालाको की कमी नही है कहो, इसे मैं पीछे बताऊँगा। जैसे हमारे घर घर मे नरक बन गया है, वैसे ही विलायत मे भी है।

सन्तोखी—सुनते है कि अरबो रुपया हर साल हिन्दुस्तान से दूर विलायत जाता था, फिर वहाँ के लोग इतने तकलीफ मे क्यो ?

भैया—वह सब रुपया विलायत के चारो करोड आदमियो मे नही बाँटा जाता। वहाँ पाँच सौ छ सौ परिवार है जो करोडपति, अरबपति हैं। ताल-तलैया, ऊसर-डाबर, नदी-नाला, सबका पानी बहकर समुद्र मे चला जाता है, वैसे ही दुनिया के बहुत से भाग का और हिन्दुस्तान का भी धन पाँच सौ-छ सौ परिवारो के पास चला जाता है। विलायत मे तो गरीबी और असह हो जाती है। १९३०-३१ मे तीस-तीस, चालीस चालीस लाख आदमी बेरोजगार हो गये थे, दस-पाँच लाख आदमी तो वहाँ बराबर ही बेरोजगार रहते है। वहाँ बेरोजगार रहने का मतलब और भी साँसत। बाहर आने मे जहाँ एक प्याला चाय और एक टुक्का रोटी मिले, वहाँ नाते-दार-रिश्तेदार भी कैसे किसी की खातिर कर सकते है। लोग बुरी तरह मरते हैं।

दुखराम—जैसे बगाल मे साठ लाख आदमी मर गए।

भैया—नही, वैसा हो तो दूसरे ही दिन उन छ सौ परिवारो के महलों दरबारो को लोग जमीन से खोदकर फेक दें। इक्के-दुक्के करके हजारो आदमी मरते हैं। कोई रेल के नीचे कटकर मरता है, कोई गैस का पाइप खोलकर नाक पर रखकर मर जाता है कोई टेम्स नदी या समुन्दर मे अपने कूद मरता है। छ सौ परिवार और उनके साथी समाजी घबडा कर खैरात बांटने लगते है।

दुखराम—खैरात खाके जीना तो और बुरा है।

भैया—बुरा है, वह भी नरक का जीवन है, लेकिन जीवन बहुत प्रिय है, नरक वाले भी जीवन को छोडना न चाहते होंगे।

दुखराम—तो घर-घर मट्टी का चूल्हा है, किसी के यहाँ सोने का चूल्हा नहीं है ?

भैया—हाँ वैसी मट्टी का चूल्हा है, और जिनके पास आज सोने का चूल्हा है, उनके बेटे-पोतो के लिए ठिकाना नही है कि मट्टी का चूल्हा मिलेगा।

दुखराम—तो मैंने ठीक कहा न दुनिया नरक है ?

भैया—नरक है लेकिन, बनाने से नरक बनी है।

दुनिया क्यो नरक है ?

दुखराम—सन्तोखी भाई, कल रात तो बहुत देर हो गई थी, लेकिन भैया ने बात खूब बतलाई।

सन्तोखी—हम लोगो को दुक्खू भाई ! दुनिया जहान का क्या पता है। हम तो गूलर के कीडे है, हमारी दुनिया बस उतनी ही बडी है। लेकिन भैया राजबली कितना समझा-समझाकर बतलाते हैं। नरक-नरक तो हम सुनते चले आए थे।

दुखराम—लेकिन सुना न भैया ने क्या कहा था ?

सन्तोखी—हाँ, कि दुनिया नरक बनाने से बनी है। अच्छा अब सावधान हो जाओ भैया आ गए !

भैया—कहो, दुक्खू भाई ! रात को तो सोने का बखत बहुत कम मिला होगा।

दुखराम—बखत ही कम मिला था भैया ! फिर दो घडी दिन गिरे तक हल चलाते रहे, हल छोडकर एक घटा सो लिए हैं। तुम्हारी बात सुनने का बहुत मन रहता है भैया।

भैया—मैं किस्सा-कहानी नही कहता दुक्खू भाई ! दुनिया नरक है, यह तो बहुत दिन से सुनते आए हैं, लेकिन अब जानना है कि यह दुनिया नरक क्यो बनी है ? किसने बनाई ? इसके बाद हम यह भी जानना होगा, कि दुनिया अच्छी कैसे बनाई जा सकती है।

सन्तोखी—हाँ भैया ! हम वही सुनना चाहते हैं, और हमारी ताकत क्या है, लेकिन जो बन पडेगा करेंगे। सुना है, जब कन्हैया जी ने गोबरधन उठाया था, बाल गोपालो ने भी अपनी-अपनी लाठी लगा दी थी।

भैया—कन्हैया जी का गोबरधन नही है सन्तोखी भाई ! यह है दुक्खू भाई का छान (छप्पर)।

दुखराम—दस-पाँच का हाथ लगने से छान भी उठ जाती है भैया।

भैया—बस यह बात है सन्तोखी भाई ! लाखो हाथ लग जाएँगे, तो बिगडी दुनिया बन जायेगी। लेकिन पहले तो यह देखना है कि दुनिया नरक कैसे बनी है ! घाघकी कविता सुनी है न।

"गेहूँ के रोटी जडहने के भात।
गल गल नेमुआ औ घिउ तात।
तिरछी नजर परोसे जोय।
ई सुख सरग पैठिले होय।"

दुखराम—हाँ भैया ! गेहूँ की रोटी, महीन चावल का भात, गरम घिउ हरख-प्रसन्न से अपनी इस्त्री परोसकर खिलाए, नेमूं न भी रहेगा तो भी यही दुनिया बैकुंठ हो जायेगी।

भैया—तो दुनिया को बैकुंठ बनाने के लिए कौन चीज की जरूरत है ! पेट भर खाने को मिले अच्छा अन्न, घर भर को लाज ढाँकने, जाडा-गर्मी से बचने के लिए कपडा मिले, धरती के मुंह पर चिन्ता और फिकिर की छाँह न पडे। इतना हो जाने पर दुनिया नरक नही रह जायगी ?

दुखराम—चिन्ता न रहे, घर भर को सुन्दर कपडा-खाना मिले, फिर क्या चाहिये भैया ?

भैया—दुक्खू भाई, हमारे गाँव के बगल मे यह गडही है न ?

दुखराम—हाँ भैया ! यह भी नरक है। अब माघ-फागुन में पानी सूख जाता है, तो गाँव भर के पाखाने की जगह बन जाती है, गाँव भर की छुतहर हाँडी और सब गन्दी-गन्दी चीज इसी मे फेंकी जाती है, असाढ मे पानी जो खूब जोर का नही बरसा, तो सब बज-बज करने लगता है।

भैया—अभी हम बज-बज की बात नही कहते, यह गढही बनती क्यो है ?

दुखराम—हम लोग घर बनाने के लिए मट्टी जो निकालते हैं।

भैया—तो यह जो पास मे ऊँचे-ऊँचे घर खडे हैं। इसीलिए न यह जमीन गडही बन गई ? इसी तरह तुमको जो खाना नही मिल रहा है, नगा रहना पडता है वह क्यों ? तुम जितना गेहूँ अपने खेतो मे पैदा करते हो, जो सब तुम्हारे पास रह जाय तो गेहूँ की रोटी मिलेगी कि नही ?

दुखराम—मिलेगी ! हम एक साल की कमाई दो साल तक खाएँगे। लेकिन हमारे पास गेहूँ रहने कहाँ पाता है ? खलिहान मे उतनी बडी राशि देखते हैं, लेकिन बैसाख बीतते-बीतते घर मे चूहे डड पेलने लगते हैं, न जाने कहाँ वह रासि अलोप हो हो जाती है ?

भैया—कहाँ अलोप हो जाती है, क्या तुम जानते नही हो ? जो सब रासी तुम्हारे पास रहे, तो कुछ गेहूँ को मुक्खू अहीर को देकर तुम घी भी ले सकते हो, कुछ से अपने लिए कपडा भी खरीद सकते हो ! लेकिन आधे से बेसी को तो तुम मालगुजारी भी नही दे पाते, फिर जमीदार की हर हुकूमत, ज... तलबाना, पटवारी-मुन्सी को घूंस रिसवत, थानेदार को माल-मलीदा, कचहरी

वकील-मुख्तार को मुँह-सुँघाई, और सैकड़ों तरह के दूसरे खर्च किये बिना तुम्हारी जान नही बचेगी।

दुखराम—और आजकल तो और पचास तरह के डंड लगे हुए हैं। सरकार को चन्दा दो, नहीं तो तहसीलदार साहब आँख निकाल लेंगे, थानेदार एक सौ दस मे चालान करने की धमकी देंगे। एक आफत है हम लोगों के सिर पर ?

भैया—तो तुम्हारे सामने की परोसी थाली खींच ली जाती है न ?

दुखराम—हाँ भैया ! यही कहना चाहिये। परोसी थाली तो खींच ली ही जाती है।

भैया—दुनिया मे जितना धन है, उसको पैदा करते हैं कमेरे लोग। किसान न हों तो मट्टी का सोना कौन बनावे ?

दुखराम—हाँ, गेहूँ सोना से भी बढकर है। अनाज न रहे तो सोना खाकर कोई नही जी सकता है, न सोना पहनकर जाडा काट सकता है ?

भैया—मजूर न रहे तो चटकल-पटकल मे सूत कौन कतेगा ? ताँत (करघा) कौन चलाएगा ? किसान कपास पैदा करता है, उसी का भाई मजूर कपड़ा तैयार करता है। लेकिन दोनो को तन के ढाँकने के लिए कपड़ा भी नही मिलता।

दुखराम—बीस रुपया जोड़ा धोती कौन खरीदेगा भैया ?

भैया—बीस रुपया नही कुछ ही दिन पहले तीस रुपया जोड़ा धोती बिकती रही है ! आध सेर कपास लगा होगा, किसान को बारह आना दे दिया। मजूर ताँत पर दिन में दो जोड़े से भी बेसी कपड़ा बुन सकता है। मँहगाई मिला के साठ रुपया महीना मिलने पर धोती के दामो मे से उसे एक रुपया मिला।

सन्तोखी—बारह आना, एक रुपया, एक रुपया तो भैया ! बीस रुपया के धोती जोड़ा मे पौने दो रुपया न मजूर किसान को मिला बाकी सवा अठारह रुपया ?

भैया—बाकी का हिसाब समझ लोगे तो पता लग जायगा कि इस दुनिया को नरक किसने बनाया। लड़ाई से पहिले यह धोती जोड़ा साढे तीन-चार रुपये मे मिलता था, उस वक्त किसान मजूर को दस-बारह आना मुश्किल से मिलता था, बाकी तीन सवा तीन रुपया उड जाते थे।

सन्तोखी—पहले तीन सवा तीन रुपया उड जाते थे, अब अठारह-अठारह रुपये और धोती के बनाने वाले हैं मजूर-किसान !

भैया—किसी चीज के पैदा करने मे जो देह चलाता है, खून-पसीना एक करता है, वह है कमकर, कमेरा, कारीगर। घर के लोग काम कर रहे हो और कोई आदमी छाँह मे होवे, तो उसे क्या कहेंगे दुक्खू भाई।

दुखराम—जाँगरचोर कहेंगे, कामचोर कहेंगे, देहचोर कहेंगे और क्या कहेंगे भैया ? घर के लोग खून-पसीना बहा रहे हो और वह छाँह मे बैठा सोवे, वह भी कोई आदमी है ?

भैया—और, दुक्खू भाई ! जो वह वही सझाको आकर कहे कि हम तो बासमती का भात खायेंगे, दाल मे एक छटाँक घी डालकर, और उसके साथ आधसेर

सजाव दही भी चाहिये, नेबुआ भी चाहिए, और छम छम करके कोई गोरी परोसने के लिए आए। तब क्या कहोगे दुक्खू भाई ?

दुखराम—कहने की बात पूछ रहे हो भैया ? उस कामचोर से एक भी बात नहीं कहेंगे, उसका दोनों कान पकड़ेंगे, गाँव के सिवाने के बाहर ले जाएँगे और गाल पर खूब जोर से दो-दो थप्पड़ लगाएँगे। फिर कहेंगे—'कामचोर, जा मुँह काला करके चला जा, फिर हमारे घर की ओर मुँह नहीं करना।"

भैया—तुम्हारा बेटा जीवे दुक्खू भाई। तुमने ठीक किया और ठीक कहा। किसान मजदूर, कमकर हैं, कामचोर नहीं हैं, उनके पल्ले पड़ा एक रुपया बारह आना और सवा अठारह रुपया कामचोर के हाथ में गया जो बासमती का चावल खाते हैं, जिनकी थाल में गोरी छम छम करके घी और सजाव दही परोसती है। वह तुमसे माँगने नहीं आते, तुम्हारे सामने हाथ नहीं पसारते कि तुम उनका कान पकड़ कर गाँव की सीमा के बाहर कर आओ।

सन्तोखी—भैया ! हम लोग तो छोटी छोटी दौरी-दुकान करते हैं, रुपये पर एक पैसा मिल गया तो उसी को बहुत समझते हैं। लेकिन एक असली काम करने वालों का दो रुपया कमाकर अठारह रुपया अपनी जेब में रख लेना यह रोजगार नहीं है भैया ! यह तो सीधी लूट है !

भैया—लेकिन यह अठारहो रुपया एक आदमी की जेब में नहीं जाता सन्तोखी भाई ! इसमें बहुत लोगो को हिस्सा मिलता है।

दुखराम—चोरी का माल अकेले नहीं न पचता।

भैया—अच्छा तीन का हिसाब बताएँ कि तेरह का ?

दुखराम—तीन-तेरह क्या भैया ?

भैया—अरे यही लड़ाई के पहले एक-एक जोड़े पर तीन रुपये की लूट थी और अब तेरह की।

दुखराम—पहिले तीन के ही बारे में बतलाओ भैया। पहिले हथौड़े की मार सह लें फिर घन की सहेंगे।

भैया—तीन रुपये म जाते तो सभी कामचोर के पास हैं, लेकिन उनमें से चार आना चला जाता है कल मशीन बनाने वालो के पास ! जानते हो न ? कल मशीन बिलायत से बनकर आती है ?

दुखराम—तो यह चार आना कल मशीन बनाने वाले मजदूरो के पास चला जाता है ?

भैया—दुक्खू भाई ! क्या तुम समझ रहे हो, बिल्लाइत मे सतयुग चल रहा है ? दुनिया भर म सबसे जियादा जो परान देकर काम करते है, वही सबसे जियादा भूख नंग रहते हैं। बिलायत के मजूरो की तनखाह बेसी है उनको एक दिन का दस-पन्द्रह रुपया मिल जाता है।

दुखराम—तनु हमारे यहाँ का एक महीना और वहाँ का एक दिन बराबर है।

भैया—तो तुम समझते हो कि उनके पास रुपया रखने की जगह भी नहीं जाती होगी ?

दुखराम—हाँ भैया। दो-दो, ढाई-ढाई सौ रुपया महीने मे जिसके घर आता हो, उसके घर में तो तोड़े का तोड़ा रुपया गंज जाता होगा।

भैया—तोड़ा गाँजने वाले दूसरे हैं, वे सब विलायत के कामचोर हैं। मैंने बतलाया नहीं था, कि बारह आना मे तो वहाँ एक प्याला चाय और एक टुकड़ा रोटी मिलती है, और यह लड़ाई से पहले की बात कह रहा हूँ।

दुखराम—तो क्या बेचारो के पास बचता होगा?

भैया—तो धोती जोड़े का चार आना जो विलायत जाता है। उसमे से एक आना कल बनाने वाले मजूदरो को मिलता है, और तीन आना वहाँ के कमजोरों की जेब में।

सन्तोखी—तीन रुपये मे चार आने का हिसाब तो मालूम हुआ, बाकी पौने तीन का?

भैया—चार आना और देना-पावना सूद-साद मे चला जाता है, आठ आना-में सरकारी टिकस, खुदरा बेचने वालो के नफाको रख लो, बाकी दो रुपया सीधा पटकल के मालिक के जेब में जाता है।

दुखराम—तब भी भैया! बहुत है। मैं तो किसान हूँ, एक साल कलकत्तामे पटकलमें काम करके मजूदरो के भी दुख को जानता हूँ। कमेरो को दस-बारह आना मिले और सेठ लोग दो रुपया अपनी जेब मे रख लें, यह क्या कम लूट है, लेकिन तेरह रुपये की लूट के सामने तो यह कुछ भी नहीं है। यह कैसे हुई भैया!

भैया—लड़ाई के पहले जिस धोती जोड़े का दाम चार-साढ़े चार रुपये था, अब चौदह हो गया। यह इस तरह से हुआ, सरकार ने कल वाले मालिकों से कहा, कि बहुत भारी लड़ाई हमारे सर पर आई, उसके लिए हमे खर्च चाहिए, लड़ाई के कारन तुम्हे भी बहुत ज्यादा नफा होगा, इसलिए हम तुमसे टिकस लेंगे।

सन्तोखी—एकम टिकस न भैया!

भैया—हाँ इनकम टिकस, लेकिन लड़ाई वाला एकम टिकस। सरकार ने कहा कि रुपये मे पौने पन्द्रह आना हमारा और पाँच पैसा तुम्हारा।

दुखराम—लेकिन यह सोरहो आना तो हम लोगो के ही मत्थे न पड़ा?

सन्तोखी—जो-जो कपड़ा पहिनता है, उसी के मत्थे पड़ा, इसमे भी कोई पूँछने की बात है।

भैया—सरकार ने यह तो कह दिया कि सोलह आने में पौने-पन्द्रह आना हमारा और पाँच पैसा तुम्हारा लेकिन यह नहीं हुकुम दिया कि धोती ४) जोड़ा ही बेंचनी पड़ेगी।

सन्तोखी—तो मिल वालो का हाथ खुला छोड़ दिया?

भैया—चार रुपये की धोती बेंचते तो साढ़े-उन्नीस आना सरकार के पास चला जाता; और पटकल वाले को मिलता दस पैसे। उसने धोती जोड़े का दाम आठ रुपया लगा दिया। अब उसको मिलने लगा पाँच आना। फिर उसने सोचा कि जितना ही दाम बढ़ाओ, उतना ही हमारा पैसा ज्यादा होगा। सोलह रुपया करने मे

उसको दस आना मिलता। सरकार को भी नुकसान नही था, उसे भी सात रुपया छ आना मिल जा सकता था।

दुखराम—अब मालूम हुआ भैया ! कैसे कपड को इतना महँगा कर दिया।

भैया—लासा या रबड तानेसे बढता है, लेकिन उसकी भी हद होती है ! कोस-दो-कोस तक कोई लासा को थोडे ही तान सकता है ?

दुखराम—कोस दो कोस क्या हाथ दो हाथ भी नही खीच सकते।

भैया—कारखाने वाले नफा कमाने के लिए चीजो का दाम चौगुना-पचगुना कर दिया। अब तुम्ही बताओ, सोलह रुपया जोडा खरीदने मे एक छोटी-मोटी भैस बेचनी पडती न ? दस सेरका गेहूँ बेंचते तो चार मन गेहूँ घरसे निकालना पडता। किसान गँवार होते हैं, उनको समझ नही होती सब कहा जाता है, लेकिन जब वह देखते हैं, कि बजार मे जिस चीज पर भी हाथ लगाते हैं, उसी-का दाम चौगुना-पचगुना है, तो वह गेहूँ को दस सेर का कैसे बेचते ? गेहूँ का दाम भी महँगा होने लगा। जब ढाई-दो सेरका होने लगा, तो पहिले उन लोगों मे घबराहट हुई, जो कि न किसान हैं, न सेठ हैं, न सरकार। अनाज महँगा होना उसके लिए उतना बुरा नही होगा, जिसको देना-पावना बेबाक करके खाने भरको घर मे अन्न रह जाता है। लेकिन जिसके घरमे बैसाखमे ही अन्न नही रह जाता, वह क्वार तक कैसे काटेगा ? बगाल मे यही हुआ, चावल रुपये का दो सेर, नहीं बैसाख मे दो रुपये सेर हो गया। अब तुम बताओ, जिसके पास बैसाख मे ही अनाज खतम हो जाता है, वह दो रुपये सेर अनाज खरीद कर कितने दिनो तक खा सकता है ?

दुखराम—घर मे दस परानी हुए तो पेट जिलाने के लिए भी तीन सेर चावल चाहिए। छ रुपया रोज लगाने पर तो असाढ ही तक हल-बैल, घर-दुआर, जर-जमीन सब बिक जायेगी।

भैया—सब बिक जायेगी, तब घरवाले क्या करेंगे ?

दुखराम—वही भैया जो तुमने कहा है, लाज-सरम भी चली जायेगी, इज्जत भी बिक जायेगी, और तब भी नैया पार होगी कि नही, इसमे भी सक है।

भैया—तो जो साठ लाख आदमी बगाल मे मर गये, उसका कारन तुम्हें मालूम हुआ ? उनका खून किसकी गर्दन पर है ?

दुखराम—कारखाने वालो और सरकार के ऊपर, उन्होंने ही अन्धेर-गरदी की तभी न अन्न का दाम बढ़ा।

भैया—दो गरदन तो तुमने ठीक बतलाई लेकिन एक गरदन अभी और बाकी है। नही बल्कि एक मद कहो, यह चोरबाजार का मद है।

सन्तोखी—हाट्ट लोगकी बाजार लगती है यह तो सब जानते हैं क्या चोरी की भी बाजार होती है भैया ?

भैया—होती है और सरकार बहादुर के राज मे दिन दहाडे लग रही है। कपडे के कारखाने वालो ने देखा, यह तो दस आना हमारे हाथ मे छ आना सरकार ले लेती है, क्यो न हम अपने माल को चोरी चोरी बेच लें।

गाँठो को बेचने का सवाल था सेर दो-सेर चीनी नही थी कि लुका छिपा के काम चल जाता।

सन्तोखी—लेकिन सरकार ने तो कारखाने वालो का हाथ खुला छोड दिया था ?

भैया—खुला छोड दिया था कि जितना चाहे दाम रखें, लेकिन दाम को बिक्री खाते मे लिखना पडता फिर धोती पीछे दस आना और सात रुपये छ आनाका हिसाब रहता। मालिकोंने सोचा, बिना खाता-बही पर लिखे माल बेंच डालो।

दुखराम—न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।

भैया—उन्होंने जाली बही-खाते रखे, बहुत अधिक माल को चोरी चोरी बेंचा इसी को कहते हैं चोर-बाजार। तुम कहोगे बही-खाता जाली बनाना और सरकारी टिकिस अदा करने मे धोखा देना यह तो बहुत भारी कसूर है। लेकिन जहाँ करोडो का वारा-न्यारा हो वहाँ लाखो की घूस रिसवत चलती है। फिर कौन है जो घर आई लक्ष्मी को लौटायेगा ? हजार दो-हजार नही एक लाख एकमूठ घूस दिया जाता है। बताओ कितने मिलेंगे इन्कार करने वाले ? कालो हीके बारे मे नही कहता, गोरे साहबो की भी बात पूँछ रहा हूँ।

सन्तोखी—तब ता भैया! सब का इमान धरम डिग गया होगा ?

भैया—लाख ही नही सन्तोखी भाई! करोडका भी घूस चला है उसने हिमालय की सबसे ऊँची चोटियो तक को भी ढाँक दिया है। लोग टुक टुक देखते रहे सब जानते हुए भी, लेकिन करें क्या किसके पास फरियाद ले जाएँ ?

दुखराम—चोर-बाजार वालो ने कहर किया भैया!

भैया—इन कपडे और दूसरी चीजो के कारखाने वालो ने करोडो रुपये बनाए, मालामाल हो गये। कितनो ने तो पाँच सौ पाने नायब नौकर पन्द्रह सौ रुपये रक्खा पाँच सौ उसे दिया डेढ हजार की रसीद लिखाई और एक हजार अपनी जेब म रख लिया। बताओ इन करोडपतियो को कौन पकड सकता है यहाँ कागज-पत्तर भी ठीक है। फिर अनाज के चोरी के अपराध को तो कोई भूल ही नही सकता।

सन्तोखी—अनाज चोरो ने क्या किया भैया ?

भैया—जानते हो न! चैत म गेहूँ तैयार हुआ या अगहन मे धान। घर आया, दो महीने के भीतर ही खाने या भूखो मरने के लिए जो कुछ अन्न घर म रह गया, वह रह गया नही तो सब झार-बूरकर बनिए के पास चला गया। सन्तोखी दास! तुम भी अनाज खरीदते हो, बताओ उसे कितने महीने तक अपने घर म रखते हो ?

सन्तोखी—महीने और घर मे रखना! हमारे पास तो उतना पैसा भी नही होता। किरानावाल बडे-बडे सेठ हैं हम उनके लिए अनाज खरीदते हैं। रुपये पीछे पैसा दो-पैसा बच गया तो बहुत है।

भैया—तुम्हारे सेठ लाखवाले होंगे।

सन्तो.जी—हाँ, यही लाख दो लाख का रोजगार होगा और क्या ?

भैया—किराना के असली मालिक लाख-दो लाख नहीं पाँच दस करोड़ का रोजगार करते हैं। पैन म तुमने खरीदा, तो बैसाख-जेठ मे वह अनाज करोड़पति सेठा का हो जाता है। असाढ़-सावन मे आठ सेर के भाव स खरीदा और दो सर तीन सेर कर दिया। अब यह दुगना तिगुना नफा किसके पट म गया ?

सन्तोखी—उन्हीं करोड़पति सेठो के मुँह मे।

दुखराम—लेकिन भैया ! अन्न तो जीव का अहार है। अन्न को महँगा करके यह तो लोगो का जबह करना है। सरकार एक आदमी के खून करने पर फाँसी चढ़ा देती है फिर लाख-लाख के खूनपर चुप क्यो है ?

भैया—जब आदमी मरने लगे, हाय हाय मचने लगी, तो सरकार ने भाव पक्का किया। लेकिन भाव पक्का करने से क्या होता है ? अनाज तो करोड़पतियों के हाथ म था। जो एक करोड़ नफा हो तो बीस लाख घूस रिसवत कौन नहीं दे देगा।

सन्तोखी—तो छोटे छोटे बच्चो के बिलख बिलख कर मरने का ख्याल नहीं किया, पट के लिए औरतो की इज्जत बेचने का ख्याल नहीं किया, ख्याल किया तो एक अपन ही नफे का ? छी ! धिक्कार है। ऐसे पापियो को ! !

भैया—धिक्कार मत कहो सन्तोखी भाई ! वे बड़े धर्मात्मा है। उनके बड़े बड़े मन्दिर है तीर्थों मे सदाबरत और धरमसाला चलती है, गोसाला मे चन्दा देत है। साधु-सन्त और पंडित-पाधा लोग सेठ की जय-जयकार मनाते हैं मौलवी लोग सौदागर के लिए दुआ माँगते है।

दुखराम—तो इन कसाइयो म हिन्दू मुसलमान दोनो है ?

भैया—हाँ, सब अपने-अपने धरम के चौधरी है। हिन्दू सेठ दोनो साँझ ठाकुरजी का दरसन कर चरनामिरित लेते है, मुसलमान सेठ पाँच बेर नमाज पढ़ते है।

दुखराम—भैया रजबली ! यह क्या है ?

भैया—मुँह म राम बगल म छूरी और क्या ? लाखो औरतो ने अपनी इज्जत बेची, खानगी बनीं, लाखो बच्चो ने तड़प-तड़प कर जान दी, साठ लाख आदमी मर गये, लेकिन इन मोटी तोंदवालो के कानपर जूँ भी न रेंगी।

सन्तोखी—इनके कानपर न जूँ रेंगी, तो भगवान के कानपर तो जूँ रेंगनी चाहिए थी ? राछछ आततायी ! साठ-साठ लाख आदमियो को तड़पा-तड़पा कर मार डालें ! भगवान अब भी अवतार न लें तो कब लेंगे ?

भैया—भगवान बहुत दूर रहते हैं सन्तोखी भाई ! कौन समुन्दर म रहते हैं मुझे तो याद नहीं आता।

सन्तोखी—छीर समुन्दर मे भैया ! सेसनाग के ऊपर सोते है और लच्छिमी चरन दबाती है।

भैया—एक तो दूर बहुत दूर छीर समुन्दर न जाने कहाँ है भूख के मारे कान भी न सकने वाली इन लाखों आदमियो की सिसकी की आवाज वहाँ तक पहुँचनी भी कैसे ? फिर वह सेस नागपर सोये हैं गुलगुल बिछौना पर नींद जल्दी आ जाती है ? तिस पर से अपने नरम नरम हाथो म लच्छिमी जी चरन दबा रही हैं तो क्या मामूली नींद आएगी ?

सन्तोखी—लेकिन भैया ! प्रहलाद के ऊपर गाढ पडा, तो तुरन्त खम्भ फाड-कर निकल आये, ध्रुव ने पुकारा, तो तुरन्त दरसन दे दिया। द्रौपती की चीर खींची जाने लगी तो आके उसमे समा गये !

भैया—प्रहलाद और ध्रुब राजा के लड़के थे, द्रौपती रानी थी। राजा रानी कोई मरता तो जरूर भगवान की नींद टूट जाती, वह नगे पैर दौड पडते।

सन्तोखी—भगवान का राजा रानी के साथ इतना प्रेम क्यो है भैया ?

दुखराम—मूर्ख चपाट ! तुमको इतना भी पता नही ? हमारे तुम्हारे बूते का है कि भगवान के लिए मन्दिर बनवा दें। जो उनके लिए बडे-बडे मन्दिर बनवाता है, छप्पन परकार का भोग बनवाता है दान दच्छिना देता है, भगवान उनके लिए अवतार न लेंगे तो क्या तुम्हारे-हमारे लिए लेंगे ?

भैया—दुक्खू भाई ! तुमने बडी कडी बोली मारी !

दुखराम—बोली की चोट गोली से भी बढ़कर होती है भैया ! लेकिन सतोखी भाई का हम पैर पकडते है, वह हमारा अपराध जरूर छिमा कर देंगे ?

सन्तोखी—नाही दुक्खू भाई ! हम तुम्हारे ऊपर भला नाराज होंगे ? हम दोनो लड़कपन के सघतिया।

भैया—तनिक कडा कहा लेकिन दुक्खू भाई, कहा तुमने बावन तोला पाव रत्ती ठीक ही।

दुखराम—भैया ! और तनिक आँख खोलो, चारो ओर मालूम होता है किसी ने जकडबन्द कर दिया है, साँस लेने की भी छुट्टी नही है। उधर सेठ लोगो की धरमशाला और सदाबरत, इधर अजोधिया जी का सखी समाज, फिर छीर सागर के भगवान जो राजा रानी के लिए नगे पैर दौडे-दौडे आवें, पचास-पचास लाख गरीब कुत्ते की मौत मार डाले जायँ, और वह सुगबुगाएँ भी नही।

भैया—लेकिन दुक्खू भाई ! यहाँ हमारे सामने भगवान नही हैं कि उनको गाली फदीहत दें। भगवान बेचारे का दुनिया के बनाने बिगाडने मे कोई हाथ नही है।

दुखराम—तो वह हैं किस वास्ते ?

भैया—अभी हमे यह जानना है कि दुनिया को नरक किसने बनाया।

सन्तोखी—हाँ, ठीक तो है दुक्खू भाई ! रजबली भैया ने तो कह दिया कि भगवान का दुनिया के बनाने बिगाडने मे कोई हाथ नही। हम लोगो को यह जानना चाहिये कि दुनिया को नरक बनाया किसने ? भगवान को लेकर हम क्या करें।

दुखराम—सच ही कह रहे हो सन्तोखी भाई ! मुझे तो मालूम होता है कि भगवान-वगवान कोई नही है, वह केवल धोखा की टट्टी है।

भैया—भगवान के बारे मे फिर किसी दिन पूछना, दुक्खू भाई ! आज दुनिया को नरक बनाने वाले की बात सुनो। साठ लाख आदमिया को किसने मारा ? कमेरा-कमकरो, किसान-मजूरो ने ? या कामचोरो ने ?

सन्तोखी—कामचोरो ने मारा। किसान मजूरा ने तो अन्न-कपड़ा तैयार रखे रख दिया था, लेकिन इन सेठो ने, इन घूसखोरों ने और अधी घालची सरकार

ने यह सब कहर किया । लेकिन इन कामचोरों के ऊपर साठ ही लाखों का खून नहीं चार हजार बरस से इनके दाँत में बेकसूरों का खून लगा हुआ है ।

दुखराम—चार हजार बरस से न जाने कितने करोड़ कितने अरब बेकसूरों का खून किया ?

भैया—इन्हीं के जुलुम से यह दुनिया नरक हो गयी है । मैंने पहिले ही नहीं पूछा था कि हमारे गाँव के पास में गड़ही कैसे बन गयी ? जो बड़े-बड़े कोठे-अटारी, मोटर-हाथी, लाव-लसकर, नौकर-चाकर और छप्पनछुरी का नाच तुम देख रहे हो, यह धन कहाँ से आता है ? लाख रुपया महीना लाट साहब और दो लाख रुपया महीना दिल्ली के बड़े लाट पर जो खरचा होता है, यह कहाँ से आता है । पाँच-पाँच साल में एक चीनी की मिल खोलकर दस-दस लाख रुपया कमा लेना, यह कहाँ से आता है ? यह चिकने-चिकने गाल और लाल-लाल ओठ किसके खून से रँगे जाते हैं ?

सन्तोखी—कहते हैं, धन-बैभव भगवान देते हैं ।

दुखराम—सन्तोखी भाई ! देखो हमारी-तुम्हारी बिगड़ जायेगी । चाहे तो पहिले ही भगवान के बारे में फैसला कर लो, नहीं तो भगवान का नाम अभी मत लो ।

भैया—झगड़ो मत दोनों जने । सन्तोखी भाई जो कहते हैं, वह दूसरों की सुनी-सुनाई बात है । अच्छा दुक्खू भाई ! जो हमारे गाँव में यह घर-दीवार उठी है, इसके बारे में कोई आकर कहे, कि यह सब माटी भगवान ने दी है; तो क्या जवाब दोगे ?

दुखराम—पहिले जवाब नहीं दूँगा भैया, पहिले देखूँगा कि उसके आँख है कि नहीं । और आँख जो हुई, तो कान पकड़ कर ले जाऊँगा गड़ही के पास और कहूँगा—'देख आँख के अंधे, यह जो जमीन गड़ही बन गई है, वह इन्हीं घरों के कारण, यहाँ की माटी वहाँ गई है ।'

भैया—सन्तोखी भाई ? किसी के आँगन में सोने का पेड़ नहीं है कि हिला दिया और आँगन भर गया । किसी के घर में हम सोने की बरखा होते नहीं देखते; फिर हम कैसे मान लें, कि जो यह भोग-बिलास करोड़-करोड़ पानी रुपये पर पानी फेरना हो रहा है, वह भाग और भगवान की ओर से उनके पास आता है ? किसान ऊख पैदा करता है, मिलवाले ऊख का दाम कितना मन देते थे दुक्खू भाई ?

दुखराम—एक बार तो चार आना मन भी नहीं दे रहे थे, फिर हम सब किसानों ने एका किया तब कुछ हल्ला-गुल्ला हुआ, रजबली भैया ! तुमने ही तो मदद की थी ? तब जाकर आठ आना मन हुआ था ।

भैया—मन भर ऊख में जानते हो कितनी चीनी होती, चार सेर ।

दुखराम—तो हमें आठ आना थमा के चार सेर चीनी ले लिया है ? डाकू कहीं का ।

भैया—तुम्हें भी लूटा और जो यह चार-चार आना मजूरी पर दस-दस घंटा खटते हैं, इन मजूरों को भी लूटा । उसका दस-बारह आना से बेसी नहीं खर्च हुआ ।

सन्तोखी—और बेचा था डेढ़ रुपये पर न ? जनु दूना का नफा ।

दुखराम—जो जेठ-बैसाख की धूप में खून-पसीना एक करे, जो मशीन में हाथ-पैर कटावे, और देह भर कोइया-कालिख लगावे, उसको तो चार आना और आठ आना मिले और यह ठडे-ठडे घर में बैठे बिना हाथ-पैर डुलाये आधा हमारा लूट लें।

भैया—और जानते हो; वह लूट रहे हैं दस-दस बीस-बीस हजार किसानों को, सैंकड़ो मजूरो को सब न एक-एक साल में दो-दो तीन-तीन लाख का नफा करके रख देते हैं ? जो यह कहे कि यह तीन लाख रुपया भगवान ने छीर सागर से भेजा है, तो यह मानने की बात है ?

दुखराम—नहीं भैया ! यह हमी लोगों के खून को पीकर मोटे होते हैं।

भैया—यह जोक है जोक दुक्खू भाई !

दुखराम—जोक ! ठीक कहा भैया ! यह जोक ही है और कितनी होशियार जोक हैं कि लाखो आदमी का खून पी रहे है और किसी को पता भी नहीं लगता। एक बात कहूं रजबली भैया ! मैं तो समझता हूँ कि जोकों के छिपाने के लिए ही भाग-भगवान को किसी ने गढा है।

सन्तोखी—मैंने भगवान का जब नाम लिया, तो दुक्खू भाई ! तुम नाराज हो गये ?

दुखराम—अच्छा सन्तोखी भाई ! जीभ छुटपुटा गई, छिमा करना। हम पीछे यह बात पूछेंगे।

भैया—जब से आदमियों में जोक पैदा हुई, तभी से यह दुनिया नरक बनी।

दुखराम—जोक माने कामचोर, जांगरचोर, सेठ, राजा, नवाब यही न ?

भैया—हाँ, इन्होंने खून चूस-चूस कर किसानों को, मजूरो को गरीब बना दिया, उनको किसी लायक नही रहने दिया। सरकार में सब जगह यही कामचोर बैठे है; पलटन, पुलिस सब जोको की रच्छा के लिए बनी है।

दुखराम—जिसमे अपनी देह मे लगी जोक को भी हम निकाल कर फेंक न सकें।

भैया—जोको को निकालकर फेंक दोगे, तो वह जियेंगी कैसे ? उनके हाथ-पैर भी नहीं, वह घासपात भी नही खाती। उन्हें चाहिए तुम्हारा गरम-गरम खून ! इसीलिए तो यह सब सरकार-दरबार बनाया गया है, यह लाव-लसकर रखी हुई है, कि जिसमे तुम जोको को निकाल कर फेंक न सको। जिस दिन तुमने जोको को निकाल फेंका, उसी दिन यह दुनिया नरक से सरग हो जायगी।

दुखराम—भैया रजबली ! अब आंख कुछ-कुछ खुलती है, कितना बड़ा पट्टर बांधा हुआ था।

भैया—एक पीढी का नही डेढ सौ पीढी का पट्टर; और हर पीढ़ी में जोको ने नया-नया पट्टर तुम्हारी आँखो पर चढ़वाया।

दुखराम—हाँ भैया, यह पट्टर उखाड फेंके बिना काम नही चलेगा।

सन्तोखी—इतनी जोकें जिसके शरीर पर लगी हो, उसके पास कहाँ से खून बना रहेगा ?

भैया—और जोकें दिन पर बढ़ती गईं सन्तोखी भाई ! पहिले एक अंगुली की थी, फिर दो अंगुली की और अब तो हाथ-हाथ भर की हो गई हैं।

दुखराम—पूरी भैंसिया जोंक, देख के डर लगता है, जब भैंस को लग जाती है तो यह नहीं कि पेट भर खाके छोड़ दे।

भैया—पेट भी तो उनका सरीर के छोटे से कोने-अँतरे में नहीं होता।

दुखराम—हाँ, भैया, जोंक का तो सारा सरीर ही पेट होता है। जितना पीती हैं, उससे भी ज्यादा खून तो बाहर गिरा देती है। लेकिन भैया एक अँगुल की जोंक एक हाथ की कैसे बन गई ?

भैया—बतलाता हूँ, लेकिन यह भी मन में रखना, कि जैसे-जैसे जोंकें बढ़ीं, वैसे-वैसे दुनिया और नरक बनती गई। लेकिन एक समय था दुक्खू भाई जब आदमियों में जोंकें नहीं थीं। और अब भी दुनिया का चौथा भाग है, जिसमें जोंकें नहीं है।

दुखराम—तब तो वहाँ नरक नहीं होगा भैया, लेकिन कैसी जगह है वह जहाँ जोंकें नहीं हैं।

भैया—रूस का और चीन का नाम सुना है न ?

दुखराम—हाँ भैया, रूस का चीन का, नाम किसने नहीं सुना होगा ? वही रूस न जहाँ गाँव का आदमी पीछे पाँच बीघा (३ एकड़) खेत और गाय बाँटी गयी थी ?

भैया—हाँ वही, लेकिन बाँटने की बात शुरू-शुरू में रही, पीछे तो उन्होंने गाँव के गाँव का सारा खेत साझे में जोतना शुरू कर दिया।

सन्तोखी—वही न भैया, जहाँ की लाल सेना की वीरता की खबर रोज अखबारों में सुनते रहे।

भैया—हाँ सन्तोखी भाई ! जो लाल सेना नहीं रही होती और रूस बेजोंक-वाला राज न रहा होता, तो आज दुनिया भर में रावन का राज हो गया होता। लेकिन रूस और रावन के बारे में फिर किसी दिन बात करेंगे। आज तो अभी जोंकों के बड़ा होने की बात थोड़ी सुन लो।

दुखराम—हाँ सुनाओ भैया !

भैया—हम जानते हैं रात ज्यादा हो गई है, फिर कतिक की भीड़ है। कल फिर दुक्खू भाई, हल नाधना पड़ेगा। पहिले जोंकें नहीं थीं, यह बहुत पुरानी बात है, लेकिन लाख दो लाख बरस नहीं, किसी देश में जोंकों को पैदा हुए दो हजार बरस हुआ, किसी देश में चार हजार और ज्यादा से ज्यादा सात-आठ हजार समझ लो।

सन्तोखी—तो सात आठ हजार बरस से पहिले दुनिया में जोंकों का कहीं नाम नहीं था ?

भैया—बिल्कुल नाम नहीं था। जब आदमी इतना ही कमा पाता था कि दिन भर खाने से निश्चिन्त हो जाय, तो जोंक कैसे पैदा हो ? कलमुँहा और लालमुँहा बानरों को तुमने देखा है न दुक्खू भाई ?

दुखराम—कलमुँहा बानर तो हमारे गाँव में बहुत हैं।

भैया—तो देखते हो न बानर पेड़ तोड़कर या जमीन से खिनकर अपना पेट भरता है, वह जमा नहीं कर पाता। इसीलिए दूसरे की पैदा की हुई चीज को हड़पने वाली जोंकें वहाँ नहीं।

दुखराम—हाँ भैया ! उनमे जो सबसे बलिष्ठ हनुमान होता है, उसे हम लोग खेखर कहते है। लेकिन खेखर को भी आहार के लिए उतनी ही मेहनत करनी पडती है, जितनी दूसरे बानर-बानरियो को ?

भैया—लेकिन जिस समय आदमी मे जोक नही थी, उस समय भी उसमें और बानरो मे अन्तर था। आदमी अपने लिए पत्थर, सीग या लकडी का हथियार बनाता था। इन हथियारो से वह अपने शत्रुओ से लडता और अपने लिए सिकार या फल गिरा कर आहार जमा करता।

दुखराम—तो भैया ! उस समय लोहे का हथियार नही था ? तीर-धनुख भी नही था।

भैया—लोहाको तो दुनिया मे पैदा हुए चौंतीस सौ बरस से ज्यादा नही हुआ।

दुखराम—और भैया, उससे पहले खाली सीग, लकड़ी पत्थर का हथियार चलताथा ?

भैया—नही लोहा से पहले आदमी को ताँबे का पता लग गया था, लेकिन उसे भी पाँच हजार बरस से ज्यादा नही हुआ। और यह भी दुनिया भर मे एक ही बार सब जगह नही हुआ, अकबर के दादा बाबर के हिन्दुस्तान में आने के पहले हमारे यहाँ बारूद का कोई हथियार नही था, दूर तक मार करने के लिए सिर्फ तीर-धनुख था। तीर के मुँहपर तिकोना लोहा लगा रहता जिसको लोग बिख से बुझाकर रखते थे। लेकिन जब तोप बन्दूक आई तो तीर-धनुपका रिवाज उठ गया, लेकिन भील-संथाल लोगो मे अब भी तीर-धनुप चलता है।

सन्तोखी—हाँ भैया, यह तो हम भी सथाल परगना मे देख आए हैं।

दुखराम—तो पहले लोग सिकार और फल से ही गुजारा करते थे क्या ?

भैया—हाँ दुक्खू भाई ! पहिले सिकार-फल फिर लोग पशु पालने लगे।

दुखराम—गाय, घोड़ा, भेड, बकरी ?

भैया—हाँ, पशु पालने लगे। और जानते हो सिकार एक दिन से ज्यादा रखा नही जा सकता। फल भी बहुत महीनो तक नही रह सकता। लेकिन पशु-धनको सालो तक रखा जा सकता है और जितने दिन रक्खें, वह उतने ही दिन और बढते जाते है।

दुखराम—सूअर तो भैया साल मे एक से बीस हो जाती...

सन्तोखी—और दूसरे साल बीस से चार सो ?

भैया—जो खाये-पकाये से बच जाये या मरे-वरे नही। हाँ, तो जब आदमी के पास पसु-धन हुआ, जो बरसो तक उसके पास रह सकता है; तब पहिले-पहल जोक पैदा हुई। वलुक वह पूरे रूप मे जोक नही थी, वह बहुत कुछ आदमियों जैसी ही थी।

सन्तोखी—यह कौन जोक थी भैया, राजा या सेठ या कौन ?

भैया—अभी न राजा थे, न सेठ थे। वह पहिली जोक थी पुरखा या पितर। जब आपस मे झगड़ा-झमट होता, तो एक पंचायत देखनेवाले की जरूरत पड़तीथी। जब बाहर से झगडा होता, तो पल्टन चलाने के लिये एक नेता की जरूरत होती। यह दोनों काम जो आदमी करता, उसे पितर या महा-पितर कहते थे। अभी उसके

सिरपर मुकुट नही था, अभी भी वह चटाई पर साथ बैठने वाला बिरादरी का चौधरी था। लेकिन उसके पास धीरे धीरे पसु बढ़ रहे थे, धन बढ़ रहा था।

सन्तोखी—तो भैया पसु-पालने से पहिले ज्यादा दिन रहने वाला धन तो किसी के पास था नहीं, फिर धनी गरीब का फरक भी नही रहा होगा ?

भैया—पसु-पालने के जुग से पहिले मेरा-तेरा का सवाल ही नही था। एक जगह रहने वाले लोग साथ मिलकर सिकार मारते, साथ मिलकर फल जमा करते और साथ ही खाते-पीते थे।

दुखराम—माँ-बाप, बहिन भाई, चाचा-चाची, सब न साथ रहते होंगे ? कितना बड़ा कुनबा रहता होगा।

भैया—अभी बाप नही बना था दुक्खू भाई !

दुखराम—बाप नहीं था, इसका क्या मतलब भैया ?

भैया—ब्याह का रवाज नही था। माँ को सब जानते थे।

दुखराम—माँ को क्यो नही जानेंगे ? माँ के उदर से बच्चा पैदा होते देखा जाता है।

भैया—तो जगल मे गाय, घोड़े, भेड़, बकरी रहा करते थे, उन्ही से कुछ को लोगो ने पालतू बनाया। आखिर रोज रोजका सिकार मिलना तो आसान नहीं था। पसु पालने का काम मर्दने शुरू किया, उससे पहले परिवार की मुखिया माँ होती थी। अब अधिक धनवाला पुरुख मुखिया हो गया।

दुखराम—जनुक तिरिया के राज की जगह मरद का राज, माता के राज की जगह पिता का राज शुरू हुआ।

भैया—अभी इतना ही समझो, कि नारी को हटाकर मरद मुखिया बन गया ! लेकिन अभी जोक नही तैयार हुई थी। जब पसुधन और बढ़ा, भीतरी और बाहरी झगडे और बढे, तब मुखिया का जोर बढ़ा, और कभी-कभी घर बैठे लोग उसके पास खान-पान पहुँचाने लगे। बस छोटे रूप मे जोक शुरू हो गई। मैंने बतलाया था न, कि जोंको ने दुनिया को नरक बनाया।

दुखराम—हाँ भैया।

भैया—तो जोको का अवतार कैसे हुआ यह मैंने तुमसे कहा। लेकिन पूरा जोक-पुरान आज नही कह सकता।

सन्तोखी—हाँ भैया, आज रात बहुत हो गई है।

भैया—कल रात को इसी बखत जोक-पुरान की कथा होगी।

३ जोक-पुरान

सन्तोखी—भैया। बेचारा दुखराम आज बडी देर तक हल चलाता रहा। कातिक की भीड़ है न, आता ही होगा।

भैंया—वह देखो पेट पर हाथ फेरते दुक्खू भाई आ रहे हैं। कहो दुक्खू भाई! आज बहुत डकार लेते आ रहे हो।

दुखराम—क्या पूँछते हो भैया, आज मलकिन ने पूरी व खीर बनाई थी, हम गरीबो को छठे-छमाहे कभी कुछ अच्छा खाना मिल जाता है, तो अपने को धन्य-धन्य समझने लगते है।

भैंया—जो जोके न रहे तो छठे-छमाहे क्यो रोज अच्छा-अच्छा भोजन मिल सकता है और तेल की पूरी और गुड की बखार नही खालिस घी की बनी पूडी और दूध-चीनी की बनी खीर।

दुखराम—हाँ भैया ? यह हो सकता है, इतनी-इतनी जोके जा हमारे गेहूँ, घी-चीनी को छोड देंगी, तो क्यो नही हम मौज से खाये-पियेंगे ?

भैंया—तो कल हमने जोको का जनम बतलाया था ? अब उसकी बाललीला जवानी और मरने की घडी की बात सुनो।

सन्तोखी—मरने की घडी भी ? क्या भैंया जोको के मरने की घडी आ गयी ?

भैंया—मैंने बतलाया नही कि दुनिया के चार भाग मे से एक भाग रूस मे अब जोके नही हैं। रूस मे जोको के मरने की घडी आज से सत्ताईस बरस पहले बीत चुकी, चीन मे अभी-अभी लेकिन बाकी तीन भाग मे जोकें अब भी हैं और बडे जोर से। यही समझ लो सिर्फ एक सूबा मे पाँच-छ महीने के भीतर साठ-साठ लाख आदमियो की जान लेना बतला नही रहा है, कि वह कितनी भयकर है।

सन्तोखी—हाँ भैया ! हम तो भगवान से रोज मनाते है कि कब-यह जोके जाएँगी !

दुखराम—फिर सन्तोखी भाई, तुमने भगवान का नाम लिया।

सन्तोखी—दुक्खू भाई, नाराज मत हो। न हमने भगवान से अवतार लेने के लिए कहा और न पाव-पियादे दौडने के लिए। भैया की बात हमे ठीक मालूम होती है, भगवान इतनी गाढी नीद में सोये हैं कि लाख दो लाख बरस में भी उनके जागने की उमेद नही है।

दुखराम—वह सदा के लिए सो गये हैं सन्तोखी भाई ! मै तो यही मानता हूँ।

भैया—तो दुक्खू भाई जोको की बाल-लीला और पहले की कथा मैं बहुत सक्षेप मे कहूँगा, पीछे की कथा को तुम्हे ज्यादा सुनना चाहिए।

दुखराम—हाँ भैंया, पीछे ही की जोको से तो हमे पाला पडा है।

भैंया—मैंने बतलाया था कि पहिले इसतिरी मुखिया होती थी, सारा परिवार उसका होता था, सबको ठीक रखना, सबकी देखभाल करना उसी का काम था। पचीस पचास या सौ का जो भी परिवार होता, उसकी मुखिया या महामातर इसतिरी होती थी। कभी दो-दो परिवारो मे खून-खराबी भी होती थी।

दुखराम—खून-खराबी क्यों होती थी भैंया, वहाँ तो जाके नहीं थी।

भैंया—जगल के लिए झगडा हो जाता था। जिसका परिवार बढ जाता, उसे अधिक सिकार, अधिक फल बटोरने की जरूरत पडती थी।

भैया—पहिले जो मरद मिलता, सबको मारते, जो औरत हाथ आती, उन्हें अपने मे बाँट लेते।

दुखराम—तो मरद कोई नही बचने पाता था ?

भैया—हाँ, मरद का परान नही छोडते थे। लेकिन पीछे खेती के काम के लिए, चमडे-जूते के काम के लिए, कपडा-मिट्टी का बर्तन बनाने के वास्ते आदमियों की अधिक जरूरत पडने लगी।

दुखराम—बेसी माल तैयार हुआ तो बदल कर खूब बेसी हाथ लगेगा यही सोचकर न भैया ?

भैया—हाँ, इसीलिए पहिले लडाई मे हारे सत्रू को कैदी बनाते थे, कौन उसे घर बैठाकर खिलाता। लेकिन जब देखा कि आदमी हाथ से मेहनत करके अपने खाने से दुगुना-तिगुना पैदा कर सकता है, तो हारे मरदो को कैदी बनाने लगे। इन्ही को दास या गुलाम कहा जाता था।

दुखराम—तो यह गुलाम दूसरे लोगो मे बाँट दिये जाते होंगे ?

भैया—हाँ, अच्छे-अच्छे दास और दासी महापितर को मिलते, बाकी को और लोग बाँट-चोट लेते।

सन्तोखी—तो यह दास-दासी भी ढोर की तरह ही हुए ?

भैया—वह भी मालिक के धन थे, वह मालिक के लिए काम करते थे। यह जुग हुआ गुलामी का।

दुखराम—जनु तबसे गुलाम बनाने का रिवाज हुआ।

भैया—गुलाम को मालिक खाना-कपडा देता था। नही देता तो वह मर जाता, फिर उसका नुकसान होता। जानते हो न दुक्खू भाई ! गुस्सा होन पर बैल को मारते हैं, लेकिन इतना नही मारते कि वह मर जाय।

दुखराम—हाँ भैया ! कौन अपना नुकसान करेगा ?

भैया—गुलामो के आने से अब कम्बल, जूता-चमडा और कई तरह की चीजें बहुत इफरात बनने लगी। लोग उन्हें आपस में बदलने लगे। बदलने के सुभीते के लिए हाट लगने लगी। सब लोग अपना-अपना माल ले आते थे और जिसको जो लेना होता, उसे अपनी चीज से बदल लेते थे। लेकिन कभी-कभी हाट मे, आदमी को अपने काम की चीज जल्दी नही मिलती या अपनी चीज के ख्वाहिसमद नहीं मिलते तो आदमी को बहुत हैरान होना पडता। सब काम-धन्धा छोडकर दो-दो, तीन-तीन दिन हाट अगोरना पडता। फिर लोगो ने गाँव पीछे एक-दो आदमी के जिम्मे अपनी चीज लगा के छुट्टी ली। जो आदमी हाट अगोरता उसने दूसरो के लिए भी अपना काम-धन्धा छोडा, इसलिए सब लोग अपने माल में से उस आदमी को कुछ दे देते थे।

दुखराम—जैसे भंडभूजा को भूनने के लिए हम लोग थोडा-थोडा अनाज दे देते हैं।

भैया—हाँ, तो पहिले तो हाट अगोरने वाला अपने गाँव के दो-चार घरो की जिम्मेबारी लेकर बैठता था और सो भी कभी-कभी। फिर वह गाँव भर की जिम्मे-

वारी लेने लगा, और बराबर हाट मे बैठा रहता। उसका रूप अब कुछ कुछ बनिया जैसा था। लेकिन अभी दो आदमियो की चीजो की अदला बदली मे वह खाली एक ओर का बिचवई था, फिर वह दोनो ओर का बिचवई बन गया। जब उसके पास बेसी नफा जमा हो गया, तो वह हर तरह की चीज को अपने पास रखने लगा। इन चीजो को महँगा किया और दूसरी चीजो को सस्ते मे खरीदा, अब वह पूरा बनिया हो गया।

सन्तोखी—लेकिन रोजगार तो था चीज से बदलना ही न ?

भैया—लेकिन जब ताँबा मिल गया, लोगो ने देखा कि उसकी धार पत्थर और हड्डी से ज्यादा तेज है, उसकी मार आदमी और पेड को काटकर गिरा सकती है, तो सभी लोग ताँबे के हथियार रखना चाहने लगे। लेकिन ताँबा पैदा होता था थोड़ा, चाहने वाले ज्यादा थे। एक दूसरे ने चढा-ऊपरी करके ताँबा का दामा चढ़ा दिया। दस मन गेहूँ के लिए दस सेर ताँबा काफी समझा जाने लगा। अब बहुत से लोग दस मन गेहूँ ढोकर ले जाने की जगह दस सेर ताँबा ले जाने लगे। एक छटाँक ताँबा भी पास रहने से अढाई सेर गेहूँ ढोने का काम नही था।

सन्तोखी—तो ताँबा पैसे-रुपये का काम देने लगा।

भैया—हाँ, पहले-पहल पैसे-रुपये ने इसी रूप मे औतार लिया। महापितर गुलामो के कमाये धन से और मोटी जोक बन गया और इधर बनिया दूसरी जोक तैयार हो गया।

दुखराम—उस बखत जोकें न पैदा हुई होती भैया ?

भैया—तो बहुत बुरा हुआ होता दुक्खू भाई ! गाडी ही रुक जाती। आदमी पत्थर और सीग के हथियार ही चलाता और हारे दुसमन को बीन-बीन कर मारता रहता।

सन्तोखी—तो जोको ने कुछ फायदा भी किया था ?

भैया—जो फायदा न पहुँचाया होता, तो जोक पैदा ही नही होती। लेकिन देख रहे हो न, जोको की दो जाति अब तैयार हो गई।

दुखराम—गिरोह का सरदार और बनिया, यही दोनो न भैया ?

भैया—ठीक ! गुलामो के जुग से हम और आगे बढे। महापितर या सरदार तो भी अभी साथ चटाई पर बैठने वाले चौधरी थे, लेकिन उसके पास धन ज्यादा था, लौंडी-गुलाम ज्यादा थे। वह खिला पिला के बिरादरी के लोगो से भी कितने हीको फोड लेने मे सफल हुआ। वही आगे चलकर राजा बन गया।

सन्तोखी—तो अब राजसी ठाट और हजार रनिवासों का युग आ गया।

भैया—अब बडी मोटी और भयकर जोक तैयार हो गई। वह सभी छोटी-बडी जोको को अपने छतरछाया मे रखने लगी। लेकिन लोग तो समझते थे कि यह कल तक हमारी बिरादरी का चौधरी था, एक साथ चटाई पर बैठता था। राजा ने समझा कि हमारी नीव अभी मजबूत नही है। जाति का चौधरी होने मे तैंतीसा कोटि देवता के सामने बलि देना, पूजा करना, महापितर ही का काम था। वह ओझा भी था, पुरोहित भी था और जाति का चौधरी भी।

भैया—पहिले जो मरद मिलता, सबको मारते; जो औरत अपने मे बाँट लेते।

दुखराम—तो मरद कोई नही बचने पाता था ?

भैया—हाँ, मरद का परान नही छोडते थे। लेकिन पी लिए, चमडे-जूते के काम के लिए, कपड़ा-मिट्टी का बर्तन बनाने की अधिक जरूरत पड़ने लगी।

दुखराम—ऐसी माल तैयार हुआ तो बदल कर खूब मे सोचकर न भैया ?

भैया—हाँ, इसीलिए पहिले लड़ाई मे हारे सतरू को उसे घर बैठाकर खिलाता। लेकिन जब देखा कि आदमी हाथ खाने से दुगुना-तिगुना पैदा कर सकता है, तो हारे मरदो को की दास या गुलाम कहा जाता था।

दुखराम—तो यह गुलाम दूसरे लोगों मे बाँट दिये जा

भैया—हाँ, अच्छे-अच्छे दास और दासी महापित्तर को लोग बाँट-चोट लेते।

सन्तोखी—तो यह दास-दासी भी ढोर की तरह ही ह

भैया—यह भी मालिक के धन थे, वह मालिक के जुग हुआ गुलामी का।

दुखराम—जनु तबसे गुलाम बनाने का रिवाज हुआ

भैया—गुलाम को मालिक खाना-कपडा देता था जाता, फिर उसका नुकसान होता। जानते हो न दुख भा को मारते हैं, लेकिन इतना नही मारते कि वह मर जाय।

दुखराम—हाँ भैया ! कौन अपना नुकसान करेगा

भैया—गुलामो के आने से अब कम्बल, जूता-चमड बहुत इफरात बनने लगी। लोग उन्हें आपस में बदलने लिए हाट लगने लगी। सब लोग अपना-अपना माल ले लेना होता, उसे अपनी चीज से बदल लेते थे। लेकिन वर्षा अपने काम की चीज जल्दी नही मिलती या अपनी चीज तो आदमी को बहुत हैरान होना पड़ता। सब काम-धन्धा दिन हाट अगोरना पड़ता। फिर लोगो ने गाँव पीछे एक-दो चीज लगा के छुट्टी ली। जो आदमी हाट अगोरता उसने काम-धन्धा छोडा, इसलिए सब लोग अपने माल में से उस

दुखराम—जैसे भँड़भूजा को भूनने के लिए हम देते हैं।

भैया—हाँ, तो पहिले तो हाट अगोरने वाला अपने जिम्मेवारी लेकर बैठता था और सो भी कभी-कभी। फिर

भैया—व्यौपारी, कारीगरो किसानो के पैदा किए हुए धन को दुगुने-तिगुने दामपर दूर-दूर देशो मे ले जाकर बेंचने लगे। गङ्गा मे बडी-बडी नाव, समुन्दर मे बडे-बडे जहाज चलने लगे। बढिया कपडा, गहना और सौक की हजार तरह की चीजो की माँग बढी। कमेरो, मजूरो, किसानो को इतनी ही मजूरी मिलती, जिसमें उनका बस खतम न हो जाय, लाख दो लाख भूखे मर जायँ, तो उसकी कोई परवाह नही, लेकिन देसके देसमे कोई दिया-बत्ती जलाने वाला न रह जाय, इस बात को जोकें पसन्द नही करती। जब जोकें परजापर दया करने की बात कहती है, तब उनका मतलब यही है कि चिराग न बुझ जाय।

सन्तोखी—उनका अपना मतलब पूरा होना चाहिये, दुनिया जाय चूल्हा भाड मे।

भैया—व्यौपार से बनियो को खूब फायदा होने लगा, जिसमें राजा को भी भाग मिलता। हर राजा अपने बनियो की सहायता करने के लिए तैयार रहता था। काठ के बडे-बडे जहाज कपडे के बडे-बडे पाल उडाते समुन्दर को छान डालते थे। नफा की कुछ न पूछो। ढाका का मलमल विलायत मे जाकर दुगुने-तिगुने नफा मे बिकता था। योरुप के बनियो ने देखा कि इस व्यौपारसे हमे भी नफा उठाना चाहिए। पहिले इटलीवाले व्यौपार करने लगे, फिर पुर्तगाल वाले बनिये चढ दौडे। उसके बाद हालैंड भी, फास भी इग्लैंड भी कैसे पीछे रहते। सब जगह के बनियो ने अपनी अपनी गुट्ट बनाई। उनके राजाओ ने मदद दी। वह काले लोगो के देसकी ओर दौड पडे। लेकिन जो समुन्दर मे जहाज दौडाने और मोल-तोल करने की ही चतुराईसे ही काम चल जाता, तो हिन्दुस्तान के बनिये भी पीछे नही रहते।

सन्तोखी—तो गोरो के पास और कौन सी बात थी भैया, जिससे वह दुनिया के राजा बन गए?

भैया—उनके पास बारूद का हथियार था, अच्छी-अच्छी तोपें बन्दूकें, तमन्चे।

दुखराम—क्या हमारे देस के लोग बारूद नही जानते थे?

भैया—हमारे देसवाले तो नही जानते थे, लेकिन हमारे पडोसी चीनवाले जानते थे।

सन्तोखी—तो चीनवालोंने क्यो नही बारूदसे काम लिया?

भैया—वह समझते थे कि यह आतिसबाजीके खेलके ही सामग्री है। चगेजखाँ नामका एक मगोल सरदार था, उसने अपने घुडसवारोकी मददसे चीन को जीत लिया। बारूदकी बन्दूक पहले-पहल उसीने बनवाई। उसकी फौज दुनियाको जीतती हुई योरपमे घुस गई। मगोलोंसे ही योरपवालोंने बारूद का भेद पाया, उन्हींसे ही योरपवालो ने किताब छापने का ढग सीखा?

सन्तोखी—तो किताब छापने की विद्या योरपवालोको पहले नही मालूम थी?

भैया—चीन छोडकर किसीको नही, हिन्दुस्तानको भी नहीं मालूम थी। हमारे यहाँ भी उल्टा अच्छर खोदकर लोग अपनी अपनी मुहर बनाते थे, लेकिन उन्हें यह सूझ नही आई कि पूरी किताबको लकडीपर उल्टा खोदकर छापा जा सकता है।

दुखराम—ओझा भी था ! जोंक ओझा भी हो जाय, तो खैरियत नही।

भैया—ठीक कहा दुक्खू भाई ! महापितर अपने काम की जो कोई बात करवाना चाहता, तो आँख लाल-लाल करके सिर हिला देवता के नाम से कह देता। और उस समय आजकल से बेसी देवता थे।

दुखराम—लोग भी बहुत सीधे-सादे रहे होंगे भैया ?

भैया—बहुत सीधे-सादे लेकिन जब लड़ पड़ते, तो उनका दिल भी बहुत कठोर होता। लेकिन महापितर या जाति का बड़ा चौधरी एक खून की बिरादरी का ही अगुवा होता था। राजा की ताकत ज्यादा थी, हथियार भी चोखे थे। वह अपने धन का लोभ दिखा बिरादरी में बेसी फूट डलवा सकता था। उसको एक बिरादरी पर सतोख नही हुआ, वह कई बिरादरियों को हराकर उनका राजा बन गया।

दुखराम—तो जमात बढ़ती ही रही ?

भैया—हाँ, भाई से महाभाई की जमात बड़ी थी, महाभाई से पितर की जमात बड़ी थी, पितर से सैकड़ो गुलाम रखने वाले महापितर की जमात बड़ी हुई। महापितर से भी बड़ी जमात राजा की बनी। लेकिन महापितर तक कुछ भाई-चारा था। अब राजा ने बिरादरियों से अपनेको ऊपर कहना शुरू किया। लेकिन लोग कैसे मान लेते, इसलिए उसने ओझा-सोखा से मदद ली। किसी बड़े होसियार ओझा को अपना पुरोहित बनाया। उसने देवता के नाम से राजा को देवता बनाना शुरू किया। इसके लिए राजा पुरोहित को भेंट चढ़ाने लगे।

दुखराम—तो भैया ! पुरोहित एक और बड़ी जोंक पैदा हो गया।

भैया—देखा न दुक्खू भाई ! कैसी हमारी-तुम्हारी आँख पर एक के बाद एक नए-नए पट्टर बाँधे जाने लगे।

सतोखी—जोंको ने चारो ओर अपना जाल फैला दिया।

भैया—और कमेरे उस जाल मे फँसने लगे। उनका बल घटने लगा। कमेरे देस भर में बिखरे हुए थे। उनका कोई मजबूत दल नही था। राजा ने लोभ देकर कमेरो के बहुत से लड़कों को सिपाही बना लिया।

दुखराम—इसी को कहते हैं काँटे से काँटा निकालना। कमेरे जिसमे कान-पूँछ न हिलाएँ, इसलिए उन्ही के लड़को के हाथ में तलवार दे दी।

भैया—दुनिया मे राजा लोग खूब मजबूत होने लगे। अपना राज बढ़ाने के लिए, और बेसी लोगो का खून चूसने के लिए एक दूसरे से लड़ने लगे। फिर बड़े-बड़े राज कायम हुए। दूर-दूर के देसो पर हाथ फैलाए। पुरोहितो का बल और धन भी बढ़ा, ब्योपारियों का ब्योपार भी खूब चमका। इसी बीच मे लोहा निकल आया और खूब तेज-तेज तलवारें बनने लगी। पत्थर के रूप मे पड़ा सोना-चाँदी भी अलग करके निखालिस रूप मे तैयार होने लगा। असरफी, रुपया और ताँबे का पैसा बनने लगा। ब्योपार में और तरक्की हुई। लखपती सेठ जगह-जगह दिखलाई देने लगे। सेठ, पुरोहित और राजा का खूब गठबंधन था।

दुखराम—चोर-चोर मौसियाउत भाई, सभी जोंकें मिलकर कमेरोंका खून चनमनगीं।

भैया—व्यौपारी, कारीगरो-किसानो के पैदा किए हुए धन को दुगुने तिगुने दामपर दूर-दूर देशो मे ले जाकर बेंचने लगे। गङ्गा मे बडी-बडी नाव, समुन्दर मे बडे-बडे जहाज चलने लगे। बढिया कपडा, गहना और सौक की हजार तरह की चीजो की माँग बढी। कमेरो, मजूरो, किसानो को इतनी ही मजूरी मिलती, जिसमे उनका बस खतम न हो जाय, लाख-दो लाख भूखे मर जायें, तो उसकी कोई परवाह नही, लेकिन देसके देसमे कोई दिया-बत्ती जलाने वाला न रह जाय, इस बात को जोकें पसन्द नही करती। जब जोकें परजापर दया करने की बात कहती है, तब उनका मतलब यही है कि चिराग न बुझ जाय।

सन्तोखी—उनका अपना मतलब पूरा होना चाहिये, दुनिया जाय चूल्हा भाड मे।

भैया—व्यौपार से बनियो को खूब फायदा होने लगा, जिसमे राजा को भा भाग मिलता। हर राजा अपने बनियो की सहायता करने के लिए तैयार रहता था। काठ के बडे-बडे जहाज कपडे के बडे-बडे पाल उडाते समुन्दर को छान डालते थे। नफा की कुछ न पूछो। ढाका का मलमल विलायत मे जाकर दुगुने-तिगुने नफा में बिकता था। योरुप के बनियो ने देखा कि इस व्यौपारसे हमे भी नफा उठाना चाहिए। पहिले इटलीवाले व्यौपार करने लगे, फिर पुर्तगाल वाले बनिये चढ दौडे। उसके बाद हालैड भी, फ्रास भी, इग्लैंड भी कैसे पीछे रहते। सब जगह के बनियो ने अपनी अपनी गुट्ट बनाई। उनके राजाओ ने मदद दी। वह काले लोगो के देसकी ओर दौड पडे। लेकिन जो समुन्दर मे जहाज दौडाने और मोल-तोल करने की ही चतुराईसे ही काम चल जाता, तो हिन्दुस्तान के बनिये भी पीछे नही रहते।

सन्तोखी—तो गोरो के पास और कौन सी बात थी भैया, जिससे वह दुनिया के राजा बन गए?

भैया—उनके पास बारूद का हथियार था, अच्छी-अच्छी तोपें बन्दूकें, तमन्चे।

दुखराम—क्या हमारे देस के लोग बारूद नही जानते थे?

भैया—हमारे देसवाले तो नही जानते थे, लेकिन हमारे पड़ोसी चीनवाले जानते थे।

सन्तोखी—तो चीनवालोंने क्यो नही बारूदमे काम लिया?

भैया—वह समझते थे कि यह आतिमबाजीके खेलके ही कामकी है। चंगेजखाँ नामका एक मगोल सरदार था, उसने अपने घुडसवारोकी मददसे चीन को जीत लिया। बारूदकी बन्दूक पहले पहल उसीने बनवाई। उसकी फौज दुनियाको जीतती हुई योरुपमे घुस गई। मगोलोसे ही योरुपवालोंने बारूद का भेद पाया, उन्हींसे ही योरुपवालो ने किताब छापने का ढग सीखा?

सन्तोखी—तो किताब छापने की विद्या योरुपवालोको पहले नही मालूम थी?

भैया—चीन छोडकर किसीको नही, हिन्दुस्तानको भी नही मालूम थी। हमारे यहाँ भी उल्टा अच्छर खोदकर लोग अपनी अपनी मुहर बनाते थे, लेकिन यह सूझ नही आई कि पूरी किताबको लकडीपर उल्टा खोदकर छापा जा

सन्तोखी—तो चीनी लोग लकडीपर उल्टा अच्छर खोदकर किताब छापते थे।

भैंया—हाँ, फिर यूरपवालोंने सोचा कि एक लकडी एक किताबको उल्टा खोदने से अच्छा यह होगा कि एक-एक अच्छर उल्टा बनाकर रख लिया जाय और उतने ही अच्छरोंके जोडनेसे तो बडी पोथी बन जाती है, इस तरह एक बारके बनाये उल्टे अच्छर• बहुत सी किताबोके छापनेका दाम देंगे। लकडीका अच्छर टिकाऊ नही होता, इसी वास्ते उन्होने सीसेका अच्छर बनाया।

सन्तोखी—तो योरुपवालोने दूर तक सोचा ?

भैंया—बारूदके हथियारो के बारे मे भी योरुपवालो ने बहुत दूर तक सोचा और अच्छे-अच्छे हथियार बनाए। आज-कलके इतने अच्छे अच्छे हथियार तो नही। लेकिन उस समय जो हथियार दुनियामे बनते थे, उनसे यह बहुत अच्छे थे।

दुखराम—तो भैंया, पत्थर-लकडीके हथियार से ताँबे की तलवारो का जमाना आया, फिर लोहेकी तलवारें, तीर और भाले, फिर बारूदकी तोपें ढलने लगी ?

भैंया—लेकिन दुक्खू भाई ! ताँबे, लोहे और बारूद के हथियारोंपर जोंको ने ही पूरा कब्जा किया।

दुखराम—तभी तो हजार आदमीकी नकेल एक आदमी के हाथ मे है।

भैंया—विलायत के व्यौपारी भी हिन्दुस्तानके व्यौपारी के साथ व्यापार करने लगे। खूब दुगुना-चौगुना नफा कमाने लगे। हमारे यहाँके राजा, नवाब आपसमें लड रहे थे। उन्होंने विलायतवालोंने हथियारोको बहुत मजबूत देखा। वह गोरों को लडने के लिए किरायेपर रखने लगे। गोरे व्यौपार भी करते थे और किरायेपर लडते भी थे।

सन्तोखी—हमारे देसवाले अपने ही क्यो नही उन हथियारो को बनाने लगे ?

भैंया—हमारे यहाँ तो सनातन धरम चलता है न ? जो चीज जितनी ही पुरानी है, उतनी ही ठीक है। जब नाक तक पानी आ जाता है, तब सनातन धरम का नसा टूटता है ? लेकिन "अब पछताये होत का जब चिडियाँ चुग गई खेत"। हिन्दुस्तान वालो को एक दूसरे के साथ खूब लडते देखा, फिर विलायती बनियो की कम्पनी ने व्यौपार के साथ-साथ देश जीतने का काम भी अपने हाथ मे ले लिया !

सतोखी—तो इस तरह हिन्दुस्तान मे कम्पनी बहादुर का राज कायम हो गया ?

भैंया—हाँ विलायती बनियों के गुटको कम्पनी बहादुर कहते हैं।

दुखराम—मैं तो समझता था कि कम्पनी बहादुर कोई राजा है।

भैंया—कम्पनी कहते हैं, गुट्टको दुक्खू भाई। १७५७ ई० से अंग्रेजो ने हिन्दूस्तान मे अपने राज की नीव मजबूत कर ली।

दुखराम—राजा भी जोंक, बनिया भी जोंक, और जब वह आदमी राजा और बनिया दोनो हो, तो देश मे कहाँ से खून बच पाएगा।

भैंया—आज सौ बरस हुए, मरक्स बाबा ने लिखा था कि हिन्दुस्तान के छ करोड़ आदमी जो कुछ साल भर मे कमाते हैं, वह सब विलायती कम्पनी विलायत ढो ले जाती है।

सन्तोखी—छः करोड आदमी की सारी कमाई ।

भैया—उस समय हिन्दुस्तान मे बीस करोड़ से कम ही आदमी रहते थे; इस लिए हर तीन आदमी मे एक आदमी विलायत वालो के लिए कमाता था । और इस रकम मे वह धन सामिल नही था, जो कम्पनी के नौकर घूस-रिसवत, चोरी-ठगी से जमा करते थे ।

दुखराम—यह मरकस बाबा कौन हैं भैया ?

भैया—मरकस बाबा के बारे मे दुक्खू भाई ! फिर हम किसी दिन बतायेंगे । मरकस बाबा हीने जोंक-पुरान का परदा खोला । उनके ही परताप से कमेरों की आँखका पट खुला । उन्होने ही बतलाया कि दुनिया को नरक बनाने का कारन यही जोंकें है । उन्होने ही रास्ता दिखलाया कि कैसे जोंको से पिण्ड छूटेगा, और दुनिया नरक से सरग बनेगी ।

सन्तोखी—तब तो मरकस बाबा कोई औतार हैं भैया ?

दुखराम—किसके औतार है सन्तोखी भाई ?उन्ही के तो नही जो छीर सागर मे सदा के लिए सो गए है ।

भैया—सन्तोखी भाई का मतलब है कि बाबा बहुत भारी पर-उपकारी जीव रहे हैं और उनकी सूझ ऐसी रही, जैसा कि और आदमियो मे देखनेमे नहीं आती ।

सन्तोखी—हाँ भैया ! यही मतलब है, क्या करें जो लबज लोग बोलते हैं, जान पडता है उसी मे बहुत खामी है ।

दुखराम—खामी ही नहीं बहुत धोखा है सन्तोखी भाई ! और यह सब धोखा जोंको का फैलाया हुआ है । अपने जान जोंको ने हमे साँस लेने का भी कोई रास्ता नही छोडा था । लेकिन उनको क्या पता था कि कमेरो का पच्छ करने वाले मरकस बाबा दुनिया मे पैदा होगे । भैया ! तो जो तुम हम लोगों के आँखका पट्टा खोल रहे हो, यह सब मरकस बाव हीने बताया है ?

भैया—हाँ, दुक्खू भाई ! दुनिया मे इतना बड़ा नबज पहचानने वाला कोई बैद नही हुआ । उसने दुनिया के रोग का कारण बतलाया, फिर दवाई भी बतलाई । उस दवाई को दुनिया के चौथे भाग के लोगो ने खाया, वह आज निरोग हो गए हैं । मरकस बाबा ने यह भी बतलाया कि अब तक जितनी जोंकें पैदा हुई थी, अब उन सब की कान काटनेवाली सबसे बडी जोंकें दुनिया मे आ गई । इसको दो घड़े खून से सन्तोख नही हो सकता, इसके लिए समुन्दर का समुन्दर खून चाहिए ।

सन्तोखी—वह सबसे बडी जोंक कौन है भैया ?

भैया—पहले जनम होता है तब नाम रखा जाता है । सुनो जनमकी बात । बिलायती बनिये हिन्दुस्तान मे राज और ब्योपार दोनो करने लगे—बल्कि राज भी वह ब्योपार हीके लिए करते थे । हिन्दुस्तान का माल वह खरीद-खरीदकर और बहुत कुछ नजर-सौगातमें ढो-ढोकर विलायत ले जाने लगे । हिन्दुस्तानका कपड़ा सौ बरस पहिले भी विलायत बहुत जाता था । हिन्दुस्तान के धनसे विलायत कितना धनी हो गया, यह इसीसे समझ सकते हो, कि जहाँ १८१४ ई० मे विलायतकी सारी सम्पत्ति ३० अरब रुपया (२३० करोड पौण्ड) थी, वहाँ ६१ साल बाद १८७५ ई० मे बढ़कर ११ खरब ५ अरब रुपया (८५०० करोड़ पौण्ड) हो गई । इस धनकी जो इतनी

बढती हुई, उसमे थोडा ही बहुत और जगह से आया, बाकी अधिक भाग हिन्दुस्तान-से गया।

दुखराम—माने अरब-खरब रुपया हमी लोगोंके देहका खून न खोच करके गया ?

भैया—इसे भी क्या पूछना है। कम्पनी बहादुरने धरम कमाने के लिए थोडे ही हिन्दुस्तान को अपने हाथ मे लिया। बङ्गालमें कम्पनी का राज्य कायम होनेके बाद १७६४-६५ ई० में जहाँ १ करोड ६ लाख ३४ हजार रुपया (८ लाख ८१ हजार पौण्ड) मालगुजारी आई थी, वहाँ दूसरे ही साल वह दस गुना कर दी गई (१४ लाख ७० हजार पौण्ड) और कम्पनीके ९३ वर्षो के राज्यमें मालगुजारी बीस गुना बढ गई। और जानते हो इसका फल ? अकाल हर दूसरे-तीसरे साल दौडने लगे। कम्पनी बहादुरके राज कायम होने के छठवें ही साल (१७७०) मे बङ्गालमे एक करोड आदमी भूखों मर गये।

दुखराम—भैया। तुम चाहे कुछ भी दबाओ और सन्तोखी भाई कितना ही नाराज हो, मैं तो समझता हूँ कि भगवान कही भी नही है, छीर सागरमे भी नहीं हैं। कभी पैदा भी हुए हो तो उनको मरे-मिटे हजारो बरस हो चुके।

सन्तोखी—इतना तो मैं भी कहूँगा दुखू भाई, कि एक-एक साल मे एक एक करोड या साठ-साठ लाख आदमियो को जोकें चूसकर मार डालें, फिर भी भगवान अवतार न लें, तो उनके सब औतारोकी कथा झूठी है।

भैया—हिन्दुस्तान से जो धन दुहा जाता था, उसमे कपडेका भी बहुत भाग रहता था। बिलायत के कुछ व्यौपारियोंने सोचा कि यदि हम हिन्दुस्तानसे भी सस्ता और अच्छा कपडा दे सकें, तो उन्टी गगा बहा देंगे।

सन्तोखी—माने कपडेके नइहरमे कपडा बनाकर भेजेंगे।

भैया—इतना ही-नही, नइहरकी रुई लेकर, क्योकि बिलायत मे कपास नही पैदा होती है। विचार करनेवालो ने बुद्धि लडानी शुरू की। अठारवी सदीके अन्त पर भाप के इजनका पता लग गया और कपडे बुननेके करघे भापसे चलाए जाने लगे। मशीनकी चीज हाथकी बनी चीज से सस्ती होती है।

दुखराम—यह क्यो होता है भैया। हम देखते है कि मिलकी बनी चीज देखने मे बुरी नही होती, मजबूत भी होती है, फिर सस्ती क्यो होती है ?

भैया—आदमी का जाँगर (परिश्रम या मेहनत) जितना लगता है, चीजका दाम भी उतना ही होता है। गाढा कपडा सस्ता होता है और बनारसी किमखाब बहुत मँहगा, क्योकि गाढेमें आदमी का उतना जाँगर नही लगता जितना कि किमखाबमे। अब हाथके करघेपर पुराने ढगसे कपडा बुनने मे एक आदमी पाँच गज मे ज्यादा कपडा नही बुन सकता है और वह भी हाथ मवा हाथ अरजका और कपडेकी मिलमे एक आदमी दो से चार करघे तक सँभाल सकता है।

दुखराम—हाँ भैया, उसमे हाथसे ढरकी थोडा ही चलानी पडती है। सब तो अपने ही आप होता है, कही सूत टूट जाता है, तो उसे जोड देना होता है।

भैया—बुनाई कितनी तेजीसे होती है ? एक दिन मे एक आदमी करघो के मुताबिक सौ, डेढ़ सौ, दो सौ गज तक कपडा बिन सकता है। १०० गज लेने पर भी हाथके करघेसे जितना काम १० आदमी करेंगे, मशीन पर उतने काम के लिए सिर्फ एक आदमी चाहिए। अब तुम्ही बतलाओ १० आदमी के जाँगरसे बना कपडा सस्ता होगा या आदमी के जाँगर से बना उतना ही कपडा।

सन्तोखी—एक आदमीके जाँगरवाला भैया। क्योकि उसमे मजूरी कम देनी पड़ेगी।

भैया—कलवाले कारखानोने हाथकी कारीगरीको तबाह कर दिया, इसीलिए कल लगाने से थोडे ही आदमी ज्यादा काम कर सकते हैं। कुछ दिनो पहले जानते हो न, चीनी और गुड करीब-करीब एक भाव बिकते थे। यह इसीलिए कि मिलो मे चीनी बनानेमे बहुत कम आदमी लगते हैं। देखा नही है, एक ओरसे बोझाका बोझा ऊख खीची जा रही है और पच्चीसो कलोमे होते दूसरे छोर पर दानादार सफेद चीनी बोरे मे बन्द होती जा रही है।

दुखराम—कल-मशीन से भैया, यह चीज बहुत सस्ती तैयार होती है, यह तो हम रोज देखते हैं।

भैया—सस्ती ही नही दुक्खू भाई ! वह इतनी इफरात होती है कि अगर मिलवालो को सस्ती पड जाने से घाटा होने का डर न होता, तो थोडे ही जोर लगाने से आदमी पीछे एक मन चीनी हर साल हिन्दुस्तान मे बाँटी जा सकती है। कल-मशीन ने आदमी के खाने, पहिनने, रहने की चीजो को इतना इफरात कर दिया है, कि जो जोकें बाधा न डालें, तो दुनिया मे एक भी आदमी भूखा-नगा नही रह सकता लेकिन इस बात को अभी हम आगे कहेंगे दुक्खू भाई! अभी तो यही हम बतला रहे थे कि सबसे बडी जोक कैसे पैदा हुई। जब कल-मशीनो को दिमाग वालो ने सोचकर बनाया, तो ब्योपारी तुरन्त दौड पडे। उन्होने सोचा कि अब धुनिया, जुलाहा, लुहार के पीछे दौडने की हमे कोई जरूरत नही, हम रुई खरीद कर कारखाने मे लाएँगे और कल उसका सूत कातकर कपडा बना देगी। इसी समय रेल और जहाज वाले इजन भी बन गये, इसलिए माल एक जगह से दूसरी जगह भेजना भी सस्ता हो गया। ब्योपारियो के पास करोडो की पूँजी थी, उन्होने दिमाग वालो की सोची चीज को तुरन्त ले लिया और सब तरह के लाखो कारखाने खोल दिये। अब नफाका क्या ठिकाना ? किसान से रुई खरीद रहे हैं, उससे भी कारखाने वालेंको नफा रेल से भेजते हैं, रेल भी कारखाने वालो की है उसको भी नफा। जहाज से सामान विलायत भेजते हैं उसका किराया लगता है, जहाज भी कारखाने वालो का, फिर कपडे की मिल भी कारखाने वालो की है, उसका भी नफा है उन्ही को। उसके बाद कपडा हिन्दुस्तान को लौटता है, वहाँ भी हर जहाज और रेल मे हर जगह पूँजीपति का नफा धरा हुआ है। पुराने ब्योपारी इतना नफा नही कमा सकते थे क्योकि वह सिर्फ तैयार माल को एक जगह से दूसरी जगह भेजते और आजके यह पूँजीपति कच्ची रुई मे हाथ लगने से लेकर पग-पग पर नफा कमाते हैं।

सन्तोखी—यह ठीक कहा भैया ? हम लोग रुपया पीछे पैसा दो पैसा बहुत समझते हैं और यह तो बारह आनेके कपास मे बीस रुपये की धोती बेचते हैं, फिर इनके नफे का क्या पूछना।

भैया—विलायत वाले पूँजीपति...

दुखराम—पूँजीपति क्या है, सो अच्छी तरह नही समझा भैया ?

भैया—पूँजी तो समझते हो, दुक्खू, भाई ?

दुखराम—रुपया-पैसा, जमा-पूँजी यही न भैया ?

भैया—हाँ यही रुपया पैसा, लेकिन जो रुपया पैसा कल-कारखाने मे लगा है, जिसके कारण पूंजी वाला बारह आने की कपास को बीस रुपया में बेचता है, उसे पूँजी कहते है। और जो अपनी पूँजी से इन कल-कारखानो को खडा करते हैं, उन्ही को कहते हैं पूँजीपति। पूँजीपतियो के नफे के सामने ब्यौपारियो का नफा कुछ नही हैं।

सन्तोखी—ठीक कहा भैया ! जो मारवाडी सेठ लोग खाली ब्यौपार करते थे, अब सब अपने चीनी मिल, जूट-मिल, सीमेन्ट मिल, कागज-मिल, खोलते जा रहे हैं। अब उनका ध्यान कोई दूसरी ओर जाता ही नही।

भैया—बिडला, डालमिया, सिंघानियाँ एक ही पीढी पहले खाली ब्यौपारी थे, दूसरे कारखाने का माल खरीद कर बेचते थे, थोडा-सा उन्ह भी नफा हो जाता था। लेकिन अब देख रहे हो न ? बिडलाकी कितनी ही चीनी की मिलें, कपडा और जूट मिलें, हिन्द बाइसिकिल कारखाना और मोटरका भी कारखाना है। पूंजीपति के नफे के सामने ब्यौपारी का नफा कुछ भी नही है दुक्खू भाई !

दुखराम—मैंने तो एक ही बात गाँठ बाँध ली है। जो बारह आने के कपास को लेकर उसे २०) की धोती बना सकता है, उसके नफे के बारे मे क्या कहना है।

भैया—विलायत वाले पूँजीपति दुनिया भर का धन लूटकर अपनेमें गाँज रहे थे, इसे देखकर दूसरे मुल्कवाले कैसे चुप रहते ? फ्रास ने भी कारखाने खोले, अमेरिका ने भी कारखाने खोले, रूस ने भी कारखाने खोले।

सन्तोखी—जापान ने भी कारखाने खोले ?

भैया—हाँ जापान ने भी खोले लेकिन अभी हमको जो समझाना है, उसमे जापान का उतना काम नही है। विलायतने कारखाना खोला था। पहिले तो दुनिया मे और किसी मुल्क मे कारखाना खुले ही न थे, इसलिए 'चारो मुलक जगीरी मे' उसीके था ? लेकिन जब फ्रास ने कारखाना खोला तो दुनिया मे जिन जिन मुल्को को फ्रासीसियो ने अपना गुलाम बनाया था, वहाँ फ्रास के कारखाने का ही माल बिक सकता था। अमेरिका के पास अपना ही बहुत मुल्क है, इसलिए कितने ही साल तक माल बेचने के लिए उसे ग्राहक ढूँढने की जरूरत नही थी। जर्मनी के लिए आफत थी। वह सबसे पीछे कारखाना खोलने लगा, लेकिन अपनी विद्या बुद्धि से वह तेजी से बढा। माल टालका टाल जमा हो गया, बेचने के लिए दुनिया मे जहाँ भी जाते, जवाब मिलता है—हटो-हटो यह हमारा राज है। अफ्रीका में जाते यही बात, हिन्दुस्तान में आते यही बात। अब तुम्ही बतलाओ, जो चुप लगा जाए तो उसका क्या मतलब होगा ?

सन्तोखी—कारखाने बन्द हो जायेंगे, पूंजीपतियो का दिवाला निकल जायगा और क्या होगा ?

भैया—और यह समझो कि अब दुनिया मे राजाओ का राज नही है ?

दुखराम—क्यों भैया, राजाओ का राज नही है तो किसका राज है ?

भैया—पूंजीपतियो का राज है, कल-कारखाने वाले करोड़पतियो का राज है। आज से तीन सौ बरस पहले (३० जनवरी १६४९ ई०) को विलायत के व्यौपारियो ने अपने राजा चार्लसका सिर कुल्हाड़े से काट डाला था, उसी दिन से प्रभुता व्यौपारियों के हाथ मे चली गई, लेकिन कारखानो के खुलने और पूंजीपतियो के पैदा होने मे अभी डेढ सौ साल और लगने वाले थे। व्यौपारियोमे से ही पूंजीपति पैदा हुए और पूंजीपतियो को सिर काटने भरसे सन्तोख नही हो सकता था, बल्कि वह सिर काटने को नुकसान की बात समझने लगे ?

दुखराम—नुकसानकी बात क्यो मानने लगे ?

भैया—जोंक हैं न ! जोंको को बहुत परदा की जरूरत होती है, नही तो—'उघरे अन्त न होहि निबाहू'। राजा के रहने पर खूब बड़ा-बड़ा दरबार लगेगा, झंडा-पताका निकलेगा, सहर सजाया जायेगा, हीरा-पन्ना जड़े मुकुटोको दिखलाकर लोगो की आंख चौंधियायी जायगी, राजपुरोहित भगवान के नाम से उसके सिर पर मुकुट रखेंगे और अबूझ कमेरो की आंख मे धूल झोंककर बतलाया जायगा कि यहाँ कोई जोंक नही है, यह सब भगवान की दाया-माया है।

सन्तोखी—पूंजीपतियो ने माटी की मूर्ती बनाके रखना चाहा।

भैया—हाँ, देखा नही आठवे एडवर्ड को किसने निकाला ? यह बाल्डविन था बाल्डविन।

सन्तोखी—बाल्डविन कौन था भैया ?

भैया—बाल्डविन इङ्गलैंड का महामन्त्री था। लेकिन उससे भी बढ़कर वह था गेस्ट, कीन आदि बड़ी-बड़ी कम्पनियो का करोड़पति, पूंजीपति।

दुखराम—तब तो भैया राजा कोई रहे, विलायत के असली राजा तो यही पूंजीपति हैं।

सन्तोखी—और उस समय के हिन्दुस्तान के असली राजा ?

भैया—जब विलायत के राजाको ही उन्होने गुड़िया बना दिया, तो हिन्दुस्तान के बड़े लाट, छोटे लाट, हैदराबाद, बड़ौदा, मैसूरके बारे मे क्या पूछना है ? यह सब उन्ही के बरदान पर हिल-डुल रहे थे।

दुखराम—यह तो कठपुतली का नाच मालूम होता है।

भैया—ठीक दुक्खू भाई ! है यह कठपुतली का नाच ही। सब सूत्र विलायत के छ. सौ परिवार पूंजीपतियो के हाथ मे और 'सबहि नचावें राम गोसाई।' तो मैं बतला रहा था कि जर्मनीने अपने यहाँ कारखाने ठीक किये। माल को बेचने के लिए जिस देशमे भी गये, वहाँ धक्का मिला। वहाँ के पूंजीपति चुप कैसे रहते ? उन्होने कहा कि जो खुशी से दरवाजा नही खोलोगे तो हम दरवाजा तोड़कर भीतर घुसे आवेंगे। यही कारन था जो १९१४ मे जर्मनी ने लड़ाई छेड़ दी। उसने सोचा था कि दुनिया के चार हिस्सा मे एक हिस्सा भूमि और आदमी अंग्रेज लोगोंके हाथमे हैं। जो इनको खतम कर दिया, तो सब जगह हमारा राज होगा, हमारा माल [illegible] फ्रांस ने भी दुनिया का बहुत-सा हिस्सा घेर लिया है, उसके खतम होने पर [illegible] माल के लिए और भी बाजार मिलेगी।

दुखराम—तो भैया ? गया मे पण्डे बन गये । जैसे वह् जजमान के लिए लड जाते हैं, वैसे ही ग्राहको के लिए ये लोग लड गये ।

भैया—हाँ, यह ग्राहको के लिए लडाई हुई । जितना ही अधिक ग्राहक मिलेंगे, उतना ही अधिक माल बेचेंगे और जो ग्राहक अपने ही गुलाम हुए, तब उनसे खाली कपास पैदा कराना जैसा सस्ता-सस्ता काम करायेंगे, और बारह आने का बीस रुपया बनायेंगे, पूंजीपति तभी इच्छा भर खून पीने पायेंगे। बल्कि इच्छा भर मत कहो, जो समुन्दर भर भी खून मिले, तो भी इन जोको की इच्छा पूरी नही होगी । और इन जोको के प्यास के लिए पहली लडाई मे इतने लोग मरे और घायल हुए—

	मरे	घायल
अँगरेजी राज्य	१०,८९,९१९	२४,००,९८८
फ्रास	३०,९३,३८८	४०,९०,०००
जर्मनी	२०,५०,४६६	४२,०२,०३०
अमेरिका	१,१५,६६०	२,०५,७००

दूसरी महालडाई मे ससार मे ढाई करोड नागरिक और २ करोड ७० लाख सैनिक मारे गये, जिनमे सिर्फ जर्मनी मे ३३ लाख नागरिको और साढे बत्तीस लाख सैनिक मरे । रूसमे ७० लाख नागरिको और १ करोड ३६ लाख सैनिको ने परान दिये । पहिली लडाई मे ६६ लाख जोको के लिए बलि चढे, तो इस लडाई मे ५ करोड २० लाख ।

जोक-पुरानके इन दो भयानक अध्यायो से अभी उन्हे सन्तोख नही है, वह तीसरे महालड़ाई को अणुबम से लडना चाहती हैं, जिनकी ताकत हिरोसीमा वाले बमसे २० गुना से भी अधिक है । एक बम से दस लाख नरनारी तो वही खतम हो जायेंगे ।

४ जोको के दुसमन मरकस बाबा

दुखराम—आज तो भैया मरकस बाबाके बारे मे कुछ बताओ ।

सन्तोखी—हाँ भैया, जोको की बात सुन करके तो हमारा दिल खौलने लगा। उनके सामने गाय भैंस की देह मे लगने वाली जोकें तो कुछ भी नही ।

भैया—देखा न सन्तोखी भाई, जोको की सकल-सूरत चाहे कितनी ही देखने-मे सुन्दर हो, उनके आस-पास कितनी ही दया-धरमकी बात चलती हो, लेकिन चारो ओर की धरती खून से लथपथ रहती है ।

सन्तोखी—इनके बडे-बडे महलो के नीचे न जाने कितनी जिन्दा लासें पडी हुई हैं और पग-पगपर उनके खून की प्यास बढती ही गई है ।

भैया—हाँ, पहिले बिरादरी-बिरादरी की छोटी-मोटी लडाई होती थी, फिर राजाओ की बडी-बडी लडाई हुई । लेकिन इन जोको की लडाइयो के सामने तो पहले की

लड़ाइयाँ कुछ भी नहीं। अभी जो इतनी बड़ी लड़ाई हो चुकी है सो भी उन्हीं जोंकों के कारण। जबसे जोंकों का जाल बना, तभी से [illegible] रहने वाले [illegible] सोचने लगे, कि कैसे दुनिया का दुख कटे। उन्होंने सोचा कि जब तक धनी-गरीब रहेंगे, तब तक लोगों को सुख-चैन नहीं मिलेगा, क्योंकि धनी होते ही हैं बहुतसे लोगों को गरीब बनाकर। जो धनी-गरीब का भेद मिटा दिया जाय, तो दुनिया से इतना दुख नहीं रह जायगा।

दुखराम—क्यों भैया, ऐसे महात्मा लोग दुनियामें पहिले भी पैदा हुए हैं?

भैया—पैदा हुए, लेकिन उन्हें ठीकसे सफलता नहीं मालूम हुई। वह रोगके असली कारनका पता नहीं लगा सके।

दुखराम—कारन का पता नहीं लगेगा तब दवा कैसे बतावेंगे?

भैया—खून के भीतर के रोग को पानीसे धोनेसे क्या होता है? अढ़ाई हजार बरस पहले हमारे देस मे बुद्ध नामके महात्मा हुए थे।

सन्तोखी—वही बौधावतार भैया?

दुखराम—बस सन्तोखी भाई! मालूम पड़ता है कि औतार तुम्हारे मुँहसे नहीं छूटेगा। कौन औतार? किसका औतार? कहीं उसका पता भी है? विलायती बनियोंने एक बरस मे एक करोड़ आदमियोको मार डाला, लेकिन औतार का कहीं पता नहीं! जोको ने साठ लाख आदमियो को तड़पा-तड़पाकर मार डाला, लाखों तिरियोंसे इज्जत बेंचवाई, तब भी उस औतार का पता नहीं! छोड़ो औतार की बात। औतार होता है राजाओं-रानियो के लिए। दुनिया भर की जोकोंको बचानेके लिए हमें औतार से कोई मतलब नहीं।

भैया—लेकिन दुक्खू भाई! बुद्ध ने अपनेको किसीका औतार नहीं कहा, वह मानुख थे और मानुखोका हित चाहते थे। उन्होंने सोचा कि सारी दुनियाको धनी-गरीब का भेद मिटाने के लिए तैयार करना मुश्किल होगा, राजा और सेठ दोनों बड़ी-बड़ी जोकें खिलाफ हो जायेंगी; इसलिए उन्होंने चाहा, जो थोड़े से सदाचार और त्यागी आदमी अपने भीतरसे धनी-गरीब का भेद मिटाकर अपने सुन्दर जीवनसे दिखला दें, तो क्या जानें दूसरे लोग भी पसन्द करें और उसी रास्ते पर चलें।

सन्तोखी—तो बुद्धने ऐसे लोगोकी जमात बना ली थी, जिसमें धनी-गरीब का कोई भेद न था!

भैया—हाँ, ऐसे औरत-मरदोंकी जमात बनाई थी, जिसमें न कोई धनी था न गरीब। उनका घर-द्वार, खटिया-बिछौना, खाना-पीना सब साझेमें रहता। बाँभन हो या चमार, उनके भीतर कोई जात-पाँतका भेद न था, सब एक साथ खाते, एक साथ सोते और एक दूसरे के दुख-सुख में सरीक होते।

दुखराम—बड़ी सुन्दर जमात बनाई थी भैया!

भैया—लेकिन जोकोंका इससे क्या बिगड़ा। बड़ी-बड़ी जोंकोंने इस जमात के लिए बड़े-बड़े महल बनवा दिये, गाँव और जमीन दे दी, खाने-पीने का भारी प्रबन्ध कर दिया। फिर कहने लगे, यह तो महात्मा लोग हैं, संसार त्यागी भिक्खु संन्यासी हैं इनमें सब सामरथ हैं।

सन्तोखी—माने उनके चारो ओर दीवार घेरकर उसीमे उनको बन्द कर दिया, जिसमे उनके आचरनका दूसरोपर कोई असर न पडे।

भैया—और असर नही पडा क्योकि लोग समझने लगे, ऐसा जीवन तो साधू सन्यासी ही बिता सकते है, वह सारी दुनिया के लिए सम्भव नही। इस तरह बुद्ध की दवा सारी दुनिया के लिए नही रह गई और फिर जोकोने उस जमात को बिगाडना शुरू किया। बुद्ध ने कहा था कि जिस किसीको कुछ दान देना हो तो सारी जमात (सघ) को दे, एक आदमीको नही। लेकिन बुद्धके देह छूटने के बाद जोकोने बडा-बडा दान जमात के नाम नही, आदमीके नाम देना सुरू किया। जमातमे फूट पड गई, धनी-गरीब का भेद फिर सुरू हो गया, जोकोका बाल भी बाँका न हुआ। जैसे बुद्धने हमारे देश मे किया, वैसा दूसरे देशो—चीन, ईरान, यूरपमे भी कितने ही महात्मा पैदा हुए, जिन्होने धनी-गरीब का भेद मिटाना चाहा, पर कोई सफल नही हुआ। अन्तमे कल-मसीन की विद्या का पता लगा। व्यौपारियोने कारखाने खोल लिये। एक एक कारखानेमे एक छत के नीचे हजार-हजार, दो-दो हजार मजूर काम करने लगे। कारीगरोका रोजगार कलोंने चौपट कर दिया। धुनिया, जुलाहा, बढई, लोहार, रगरेज, कुम्हार, लहेरा, ठठेरी कलकी चीजोके सामने सबको हार माननी पडी, सब का घर उजडा और कारखानेमे मजूरी करना छोड जीने का कोई रास्ता नही दिखाई दिया। लाखो मजूर बिलायतके कारखानो मे मजूरी करने लगे। मालिक तो मजूर नही चाहते, गुलाम चाहते हैं। गुलामो को चाहे मारो-पीटो, उसको कही ठौर नही है। उसकी देह तो मालिकके हाथ मे बिक चुकी है। मजूरो के साथ भी मालिक ऐसा ही सलूक करना चाहते थे। जब चाहा किसीको नौकर रख लिया, नराज हुए तो निकाल दिया। लेकिन कारखाने वाले मजूरो का घर तो पहले ही उजड गया था, अब मालिक निकालने पर जायँ तो कहाँ जायँ? अपने भाई मजूरके ऊपर जुलुम करते देखा, दूसरे मजूरोका भी दिल पसीज गया। वह भी समझने लगे जो आज इसकी गति है, वही कल हमारी होगी। मजूरो म एका होने लगा, उन्होने कहा कि हमारे भाई को कामसे निकालना ठीक नही, निकालोगे तो हम काम नही करेंगे।

दुखराम—हडताल करेंगे।

सन्तोखी—हडताल क्या दुखू भाई?

दुखराम—सब तुम्ही समझ लोगे? मजूर कारखानेका काम छोड देते हैं, इसी को हडताल कहते है।

भैया—पूँजीपति जोकोंको यह पता नही था। उन्हाने समझा, कि जिनका घर-द्वार नही, ठौर ठिकाना नहीं, उनकी क्या मजाल है, कि हम आँख दिखायें। लेकिन उन्हे यह नही समझमे आया, कि जिन कल-कारखानोने उनके घरोंमे करोडोकी बरसा की, उन्होंने इन हजारो मजूरोको एक जगह कर दिया, एक नाव मे बैठा दिया अब सबका अच्छा-बुरा भाग एक ही तरह का था। एक के ऊपर सकट पडनपर दूसरे चुप कैसे रह सकते थे? मजूरोकी बिरादर बन गई। उन्होंने हडतालें की। हडताल करने पर उनके बाल-बच्चोको भूखा मरना पडता, लेकिन मालिकका भी लाखो का नुकसान होता। सरकार भी मालिकोकी, पुलिस और पलटन भी पूँजीपतियोकी। सबने मजूरोको एक ओरसे दबाया। कितने ही गोली से मरते, कितना ही को

जेलखाना भेजा जाता और कितने ही भूख के मारे तडपते, लेकिन यह एक दिन की आफत तो नही थी, कि मजूर सिर नवा देते। 'बुढिया के मरने का डर नही था, डर था जमके परच जानेका'। हारते, तकलीफ सहते भी मजूरोकी बहुत-सी माँगोको पूँजीपति मानने के लिए मजबूर थे। यह अठारह सौ ईसवीसे कुछ पहिले और कुछ पीछेकी बात है। इसके बाद ही आज से सवासौ वर्ष पहले (५ मई १८१८ ई०) मरकस बाबाका जनम जर्मनी में हुआ। राइनलैंड इलाकेके ट्रेवेज नगर में उनके पिता एक यहूदी वकील थे। मारकस यह खान्दानका नाम था। बाबाका नाम था कारल।

दुखराम—पूरा नाम कारल मारकस हुआ न भैया ?

भैया—हाँ लेकिन दुनिया मे मारकस नाम ही को सब जानते है।

दुखराम—और यहूदी क्या है ?

भैया—यहूदी एक जाति है, जिसमे बडे-बडे पूँजीपति भी है, बडे-बडे पडित भी है, लेकिन सबसे अधिक मजूर हैं। ये दुनिया मे हर जगह बिखरे हुए हैं। १९५१ बरस पहले कुछ यहूदियो ने चुगली करके ईसामसीहको फाँसी चढवा दिया, इसी वास्ते ईसामसीहके मानने वाले किरिस्तान लोग यहूदियोसे घिनाते है। मरकस बाबाके पिता वकील थे। जब मरकस बाबा छ ही बरस के थे, तभी उनके पिता यहूदी धरम छोडकर कर ईसाई हो गये थे। मरकस बाबा लडकपन ही से बुद्धिके बडे तेज थे।

दुखराम—तेज न होते, तो जोकोके चार हजार बरस के जाल को तोड पाते ?

भैया—मरकस बाबा अपने सहरके इसकूल मे पढे। कभी-कभी अपने पिता के मीत एक तालुकदारसे सतसग होता। तालुकदार विद्वान थे और विद्या का आदर करते थे। इसकूल की पढाई खतम करके सतह बरसकी उमरमे वह बोन सहर के विस्सविद्यालय मे वकालत पढने लगे। लेकिन एक साल बाद मरकस बाबा का मन उचट गया। तब वह जर्मनीके सबसे बडे सहर बर्लिन के विस्सविद्यालय मे चले गये। वकालत पढना छोड दिया, अब वह पढने लगे इतिहास, कविता और दरसन।

दुखराम—दरसन क्या है भैया ?

सन्तोखी—दरसन भी नही जानते ? रोज हम लोग दरसन-परसन करते है ?

दुखराम—तो इस दरसन परसनमे पढना क्या है ? यह कोई दूसरा ही दरसन होगा। सखी समाज वालो को जैसे भगवान दरसन देते हैं, वैसे दरसन तो नही है भैया।

भैया—हाँ, कुछ वैसा ही है। है तो यह अँधेरी कोठरी मे काली बिल्ली का पकडना, बलुक खाली अँधेरी कोठरी मे काली बिल्ली का पकडना। लेकिन इसको लोग समझते हैं कि वही पहुँचकर विद्या का ओर होता है।

दुखराम—यहाँ भी तो जोको की माया नही है। भैया ?

भैया—बहुत भारी माया है। दरसन वाले कहते हैं, कि दुनिया सब माया है।

दुखराम—उनके सामने जब थाली परोस कर रख दी जाती है, तो वह अपना हाथ उधर फैलाते हैं कि नही ?

भैया—फँसाते हैं, खाते हैं, मौज करते हैं।

दुखराम—बस-बस हो गया भैया ! यह भारी धोखा है। जोकोका बडा भारी जाल है। जोकोका छप्पन परकार तो छिनाएगा नही। उनका सराब और परियो का नाच चलता ही रहेगा। वह लोगोका खून पी पीकर साल मे करोड-करोड आदमी मारते रहेंगे। उनके भोग-विलास मे यह दरसन कोई दखल नही देगा। वह बस यही चाहता है, कि जोको के जुलुम को लोग माया समझें। दुनिया को नरक बनाने का सारा कसूर जोको का है लेकिन वह लोगो को बतलाना चाहते हैं कि यह सब माया है।

भैया—तुम्हारा कहना ठीक है दुक्खू भाई ! लोगो को भूल भुलैया म डालने के लिए हिन्दुस्तानमे दरसन वाले ग्यानी पैदा हुए, यूरुपमे भी पैदा हुए। मरकस बाबाने जवानीमे दरसन पढा, तो अच्छा ही किया। जब मरकस बाबा उन्नीस सालके थे, तभी काट और फिखटे जैसे चोटीके पडितोका दरसन उन्हे थोथी कल्पना मालूम होने लगा। फिर मरकस बाबा को एक और दरसनके पडित हेगलकी किताब पढनेको मिली। हेगलकी यह बात मरकस बाबाको बहुत पसन्द आई, कि दुनिया जो यह चित्तर विचित्तर दिखाई दे रही है, वह इसीलिए कि वह हर छन बदल रही है। दुनियाकी कोई चीज छोटीसे छोटी या बडी ऐसी नही जो न बदले। हमारे यहाँ भी हेगल से चौबीस सौ बरस पहले बुद्ध महात्माने यही कहा था।

दुखराम—चौबीस सौ बरस पहले ! और बुद्ध महात्मा भी तो धनी गरीबका भेद मिटाना चाहते थे। वह भगवानको मानते थे कि नही भैया।

भैया—नही बिलकुल नही। वे कहते थे कि है कहकर जिसे हम पुकारते हैं, वह सभी चीजें छिन छिन बदलती हैं। जो बदलती नही, ऐसी दुनियामे कोई चीज नहीं है।

दुखराम—बुद्ध महात्मासे जो सन्तोखी भाई पूछत कि भगवान है कि नही तो क्या जवाब देते ?

भैया—पहले सन्तोखी भाई से पूछते कि भगवान बदलते हैं कि नही, माने बिल्कुल मर जाते हैं कि नही और फिर उनकी जगह कोई दूसरा बिल्कुल नया भगवान पैदा होता है कि नही ? पहले बुद्ध महात्मा सन्तोखी भाईसे यह सवाल करते।

दुखराम—सन्तोखी भाई बताओ तुम क्या जवाब देत ?

सन्तोखी—जो भगवान को मानता है, उम्हे जनम-मरनसे मानता है।

भैया—तो ऐसी चीजके बारेमे बुद्ध महात्मा कहते, कि वह अफीमचीकी पिनक है। ऐसी चीज दुनियामे कोई नही हो सकती ?

दुखराम—तो सब चीज बदलती रहती है, दुनियामे न बदलनेवाली चीज कोई नहीं है, यही बात मरकस बाबाको पसन्द आई न भैया ?

भैया—हाँ, बरलिनसे फिर मरकस बाबा जना सहरके विस्सविद्यालय म चले गए और तेईस बरसकी उमरमे विद्या-पारगत होनेके लिए उनको डाकटरीकी पदवी मिली।

दुखराम—दवाई देनेवाले डाक्टर भैया ?

भैया—ग्यान के डाक्टर दुक्खू भाई ! मरकस बाबाने ग्यान तो सब पढ लिया, लेकिन दुनियामे देखा, सब जगह नरक की आग धाँय धाँय जल रही है । उनकी कलममे बजरकी ताकत थी । उनकी नजर इतनी पैनी थी कि गहरीसे गहरी जगह म घुस जाती थी । विस्सविद्यालयसे पढ कर निकलनेके बाद मरकस बाबा एक अखबारके सम्पादक हो गये ?

दुखराम—सम्पादक क्या है भैया ?

भैया—अखबार के सब लेखो के परखने और रास्ता दिखलानेके लिए मुक्ख लेख लिखनेकी जिसपर जिम्मेदारी हो, उसे ही सम्पादक कहते हैं। इसी सम्पादक के रहत समय मरक्स बाबाको मजदूरोकी दुख-तकलीफ जाननेका और मौका मिला । फिर दो साल तक उन्होने उसके कारन ढूंढने और दवाईका पता लगाने के लिए खूब सोचा, खूब पढा, खूब गुना । जब मरकस बाबा पच्चीस बरस (१८३५) के थे तभी अपने एक दोस्तको खत लिखा था—'बटोरने और व्योपार करनेका जो ढग दुनिया मे चल रहा है, मानुख जाति को गुलाम बनाने और खून चूसनेका जो ढग चल रहा है, वह सारे समाजकी जडको भीतर ही भीतर जल्दी जल्दी कुतुर रहा है, जितनी जल्दी-जल्दी आदमियोकी तादाद बढ रही है उससे भी जल्दी-जल्दी वह कुतुर रहा है । इस घाव को पुराना (जोकोवाला) ढग भर नही सकता, क्योकि उसके पास भरने की कोई ताकत ही नही । वह (जोकोवा ढग) तो सिरिफ भोग करना और अपने जीना बस इतना ही जानता है । मरकस बाबाने उसी साल अपन पिताके दोस्त तालुकदारकी लडकी, जेनीसे ब्याह किया ।

दुखराम—जोक की लडकीसे विवाह किया ?

भैया—जोक आदमी से पैदा हुई है । और जोको मे भी कोई कोई आदमी पैदा हो सकता है कि नही ?

दुखराम—हो सकता है भैया !

भैया—जेनी उसी तरहकी आदमी थी । जोकोके घरोम उसने जन्म लिया । तेईस चौबीस बरस तक जोकोके सुख और भोग मे पली, लेकिन बाकी सारा जीवन उसने कितनी तपस्या की, कितना कस्ट सहा उसको सुनकर रोआँ खडा हो जाता है । पच्चीस बरसके ही मरकस बाबा हो पाये थे कि जर्मन सरकार उनके विचारोको जानकर घबराने लगी । जानते हो न दुनिया भरकी सरकारें जोको की सरकार है । जोको के स्वारथको बचाना ही उनका सबसे पहला काम है । जर्मन सरकार ने मरक्स बाबा को जेहलम डाल देना चाहा । लेकिन बाबा और जेनी दोनो उनके हाथ मे नही आये, वे फ्रास की राजधानी पेरिसमे चले गये ।

दुखराम—साबस (शाबस) ! बाबा जर्मन जोको के पजे से बच गये ।

भैया—लेकिन जर्मन जोको की सरकारने फ्रांस की सरकार पर दबाव डालना शुरू किया, और डेढ-दो साल बाद फासकी सरकार ने उन्हें अपने देससे निकल जानेका हुकुम दिया । बाबा को वहाँ से (१८४५ मे) बेल्जियम के सहर ब्रूसेल्स मे जाना पडा । दो बरस बेल्जियमम रहे । बडी गरीबीकी जिन्दगी बिताई । जेनी को

मब काम अपने हाथ करना पडता, बाबा खाली जोको से कमेरो की मुक्ति कैसे हो, इसीपर सोचते और लिखते रहे। १८४३ मे "न्याव वालो की सभा" (जिसे पहले ही विदेसमे भागे जर्मन मजूरो ने कायम किया था) की बडी सभा लन्दन मे हुई, उस सभा मे मरकस बाबा और जिनगी भरके साथी, ऐङ्गल बाबा भी बुलाये गये। मरकस बाबासे वही सभावालो ने कहा, कि हम लोगो का एक ढिढोरा-पत्तर (घोषणा-पत्र) लिख दीजिए, जिससे जोकोको भी पता लग जाय, कि कमेरे क्या करना चाहते हैं; और दुनिया भरके कमेरोको भी पता लगे, कि दुनिया के इस नरककी ढहाने के लिए उनको क्या करना है, जोको को देह से छुडाने के लिए कौन-सा रास्ता पकडना है। मरकस बाबाने बत्तिस साल की उमरमे यह ढिढोरा-पत्तर लिखा, जो हिन्दी मे भी 'कमूनिस्ट घोषणा' के नामसे छप गया है। बीस-पच्चीस पन्ने की इस छोटी सी पोथीमे जो ताकत है, वह दुनियाकी किसी बडी-सी-बडी किताबमे भी नही देखी गई। दुनियामे कमेरो की आँख खोलने मे इस ढिढोरा-पत्तर जितना काम किसीने नही किया। किताब खतम करते हुए बाबा ने कहा "कमेरो! अपने पैर की बेडियो को छोडकर तुम्हारे पास गवाने के लिए रक्खा ही क्या है? (जोको को खतम कर देने पर) यह सारा ससार तुम्हारा है। सभी देसोके कमेरो! एक हो जाओ।"

दुखराम—वाह रे बाबा, आज तू मिलता, तो अपने आँसुओसे तेरे पैर पोछता।

भैया—अगले साल (१८४८) फ्रासमे बडे जोक राजा के तखतको उलट दिया गया। दुनिया के मुकुटधारी काँपने लगे। फ्रास के लोगो ने पचायती राज कायम किया। मरकस बाबाको सरकारके मुखिया ने (१ मार्च १८४८ को) बडे आदर-भावसे आनेके लिए बिनती की। बाबा पेरिस सहर मे आये। जर्मनी मे भी कमेरोने जोकोके खिलाफ बगावत की। उसके एङ्गल बाबा और दूसरे कई साथियोको बाबाने जर्मनी भेजा और अपने भी राइनलैण्ड इलाके मे पहुँच गये। वहाँ से कमेरोको रास्ता दिखलाने के लिए एक अखबार निकाला। जोकोकी सरकार दब गई थी, इसलिए मरकस बाबाकी ओर उसने हाथ नही बढाया। डेढ बरस अखबार निकालनेमे बाबाकी और जेनीमाईके पास जो कुछ भी कौडी पैसा था, सब चला गया। जर्मन जोकोकी सरकारका फिर कुछ हौसला होने लगा, इसलिए बाबा और जेनी पेरिस चले आये। लेकिन पेरिसके कमेराने जोकोके स्वभावको ठीकसे पहचाना नही। उन्होने जोकोको अंगूठेसे दबाया। खून निकल जानेमे वह सुटुककर पतली हो गई। कमेरोने समझा, अब कुछ नही कर सकती, इसलिए उन्हे उठाकर फेंक दिया।

दुखराम—जोकोका जीव बडा कडा होता है भैया! उनको जब तक गलर-गत्तर काट चीथकर न फेंका जाय, तब-तक वह मरती नही।

भैया—पेरिसमे फिर जोकोंका जोर बढ गया और १८४९ में मरकस बाबाको फ्राससे निकल जानेका हुकम हुआ। बाबा और जेनी कमेरोकी भलाईके लिए सब दुख सहनेके लिए तैयार थे। घर छूटा, देश छुडाया गया और जिस देसमे भी जाते वहाँ की जोकें उनके पीछे जाती। अब वह लन्दन चले गये। १८३९ से १८८३ तकके लिए (चौतीस बरसो के लिये) लन्दन ही मरकस बाबाका घर बना।

दुखराम—लन्दन तो सबसे बडी-बडी जोकोकी राजधानी है, वहाँ मरकस बाबाको कैसे जगह मिली?

भैया—जोक सरकारोका आपसमे भी झगडा है, यह तो सैंतीस साल पहले वाली लडाई और पिछली लडाईसे तुम्हें मालूम है। इसलिए भी अपने मुद्दई जर्मनी और फ्रान्सकी जोकोंके दुसमन मरकस को अपने यहाँ रहने देने मे उन्हे कोई हरक्कत नही मालूम हुई, और सारे अंगरेजोके गुलाम देसोका इतना अधिक धन आता था कि अपने यहाँके मजूरो को वह कुछ दे दिवाकर सन्तुष्ट कर देते थे। मरकस बाबाने बडी-बडी पोथियाँ लिखी। दुनिया भरके कमेरोपर उनकी नजर रहती थी।

दुखराम—हिन्दुस्तानके रहनेवाले हम कमेरोके बारे मे बाबाने कुछ सोचा और लिखा ?

भैया—हाँ दुक्खू भैया ! बाबाके सामने आजसे ९१ साल पहले भी हिन्दुस्तान का कोई रोग छिपा नही था। बाबाने उस वक्त लिखा था—काहे अंगरेज हिन्दुस्तान के मालिक बन गये ? मुगल सुबेदारोंने मुगलाई राज सगठन तोडा। सूबेदारो की ताकतको मराठोंने तोडा। मराठोकी ताकतको (पानीपतकी लडाईमे) अफगानोने तोडा और जब यह सभी सबके खिलाफ लड रहे थे, तो अंगरेज चढ दौडे और उन्होने सबको दबा दिया। (क्यो दबा सके ?) यह देस सिर्फ हिन्दू, मुसलमानो मे ही बँटा नहीं, बल्कि खोम-खोम और जाति जातिमे बँटा है। यहाँ के समाजका ढाँचा इस तरह कसकर बाँधकर रखा गया है, कि आदमी आदमीके बीच बिखराव और बेमेलपन फैला है। जो देस, जो समाज ऐसा हो वह हारके लिए, गुलाम होनेके लिए नही बना तो किस लिए बना। चाहे हिन्दुस्तानका पुराना इतिहास हम न भी जानते हो, तो भी इस बातमे तो कोई दो मत नही है कि इस छन भी हिन्दुस्तान अंगरेजोकी गुलामीमे जकडबन्द है। और उस जकडबन्दीका काम करती है हिन्दुस्तानी फौज जिसका खर्च भी हिन्दुस्तान ही देता है। ऐसा भारत गुलाम होने से कैसे बच सकता है ?

दुखराम—भैया ? बाबाने सचमुच हम लोगो के रोगको पहिचाना।

भैया—बाबाने एक और भी बात लिखी है। उन्होंने हिन्दुस्तानके पुराने जमाने के गाँवका जो पचायती इन्तिजाम था, उसके बारेमे कहा, ये सुन्दर (गाँवके) प्रजातन्त्र सिर्फ पडोसी गाँवस अपने गाँवकी सीमाकी रच्छाके लिए मुस्तैदी दिखा सकते थे, लेकिन अपने राजाओकी मनमानीको रोकनेकी उनमे जरा भी ताकत नहीं थी।

दुखराम—क्यो भैया ! गाँवका पचायती राज क्या बुरा था ?

भैया—पचायती राजको बुरा कोई नही कहता। बाबाने भी यही कहा। जो पनैलाकी कोई जमीन या तालपोखरीका हक भदया छीनने लगे, तो कनैला वाले कितना मनसे लडेंगे ?

दुखराम—भैया ! गाँवका बच्चा-बच्चा लाठी लेकर दौड पडेगा। भला कोई घर बैठा रह सकता है ? न जाने कितनी बार कनैला नरेहतासे लडा, उसने उमरपुरका दाँत खट्टा किया, भदयाको सिवानामे घुसने नही दिया।

भैया—बाबा यही कहते हैं, कि जब देसमे इतना बिखराव हो जाता है कि लोगों को सारा देस तो भूल जाता है याद रहता है सिर्फ अपना गाँव, तो गाँव की सीमाकी रच्छा भले ही हो जाय, लेकिन देसकी सीमाकी रच्छा नही हो सकती। क्योंकि लोग अपनेको उतना ही मनसे देसका वासी नही समझते, जितना मनसे कि

गाँवका वासी समझते हैं। इसीलिए हिन्दुस्तानकी सीमाकी रच्छाकी जिम्मेदारी सिर्फ राजाओंकी रह गई। राजाओंका जुलुम और मनमानापन लाखो गाँवोंके पचायती राज्योंमे बँटे हिन्दुस्तानी लोगोंके रोकनेकी चीज नही रह गया। गाँवकी पचायतोंने कारीगरो को हजारो बरस पुराने वसूलो और रुखानियोंसे चिपके रहने दिया किसानोंको हँसुओ फलोसे एक कदम भी आगे नही बढने दिया जबकि दूसरे मुलुकवाले अपने जुल्मी राजाओंकी गरदन कुल्हाडेसे काट रहे थे, उस वक्त सब जुलुम, सब अन्याय बरदास करते हिन्दुस्तानी लोग कहते थे—'कोउ नृप होइ हमैं का हानी।" इससे वह यही दिखलाते थे, कि हमारा हाथ-पाँव बँधा हुआ है, हम कुछ नही कर सकते। हमारे इस गाँव गाँवके बिखराव, जाति-जाति के बिखराव, धरम धरम के बिखरावने हमें बिलकुल कमजोर बना दिया। हम हिल-डोल नही सकते। हम समय देखकर अपनेको बदल नही सकते। हम अचल मुरदा बने रहना चाहते थे। लेकिन जो कोई दूसरा न छेडता तब न? मुसलमानोंने राज किया, उससे पहिले उसको और यूना नियोंने भी राज किया था, लेकिन हिन्दुस्तानके समाजके पुराने ढाँचो, गाँव-गाँवके अलग बिलग सगठनो और जाति पाँतिको कोई नही तोड सका। लेकिन वह काम अँगरेजोंने किया। उन्होने मुरदेको खूब झकझोरा। वह बिलकुल मुरदा नही था। उन्होंने हजारों बरससे चले आये हमारे चरखोंको तोड डाला, पुराने करघेको बिदा किया। यह सब कैसे किया? अपने यहाँके मिलके बने सस्ते कपडोंको भेजकर। बाबा ने लिखा—"अँगरेजोंने कपासकी जनम भूमिमे कपडे की बाढ ला दी। १८१८ मे उन्होंने जितना कपडा भेजा था, उससे ५२ गुना कपडा १८ बरस बाद १८३३ मे अँगरेजोंने हिन्दुस्तान भेजा। १८३७ मे मुस्किलसे दस लाख गज बिलायती मलमल हिन्दुस्तानमे आया था, लेकिन दस ही बरस बाद १८४७ मे ६ करोड ४० लाख गजसे ऊपर मल मल हिन्दुस्तान आया। लेकिन इसी बीचमे ढाका सहर उजड गया। वह डेढ लाखकी जगह सिर्फ २० हजारकी बस्ती रह गया। इस तरह अपनी कारीगरीके लिए दुनिया भरमे मसहूर हिन्दुस्तान के सहर बरबाद हो गये।'

दुखराम—जोकोंने बडा जुलुम किया भैया?

भैया—बाबाने भी लिखा था—'यह सब देखकर आदमीका दिल बियाकुल हो जाता है। हिन्दुस्तान जो अनगनित पचायती गाँवमे सान्तीके साथ जिन्दगी बिता रहा था, उसके सारे संगठनोंको जोकोंने तितर बितर कर दिया, लोगोंको कस्टोंके समुन्दरमे झोंक दिया। पीढियोंसे चले आते जीविका कमानेके रास्ते बन्द कर दिये। यह ठीक है, कि गाँवोंका पुराना पचायती सगठन बहुत सुन्दर था, देखनेमे (दुधमुँहे बच्चेकी तरह) बहुत ही भोला भाला था। लेकिन यह भी याद रखना चाहिये, कि पूरबी देसोंमे (जोकोंको) मनमानी करनेमे सबसे बडी मदद इसी भोले भालेपनने दी। इसने आदमीके दिमागको नन्ही-नन्ही कोठरियोंमे बन्द कर दिया। गप्पों और झूठे बिस्वासोंको चुपचाप माननेके लिए वहाँके लोगोंको तैयार किया, उन्हें पुराने रवाजोंका गुलाम बनाया। हमे यह भी नही भूलना चाहिये, कि एक छोटी-सी जमीनकी टुकडीमे ही जब सारी ममता बटुर गई हो, तो बिसाल देसका धियस क्यो नही होता? इसी छोटी ममताने लोगोंका कितना जुलुम सहने के लिए मजबूर किया। बडे-बडे सहरोंमें भयकर हत्या करवाई (जिसमें लाखो बालक-बूढे, नर-नारी गाजर-मूलीकी तरह काट डाल गये) हमे यह भी नही भूलना चाहिए, कि यह अपमान भरा जीवन, मुरदे

कीड़े-मकोड़े का जीवन ही, बिलकुल, जड़ जीवन ही था, जिसको देखकर जगलियो, अत्याचारियो, सत्यानासियोको वैसा करनेकी हिम्मत हुई। हमे यह न भूलना चाहिए, कि भारतकी यह (गाँव-गाँवमे) बिखरी छोटी छोटी जमात भी सैकड़ो जातोमे बँटी थी, गुलामीके रोग मे फँसी थी। जहाँ मानुखका काम है ऊपर उठकर जो भी रास्तेमें बाधाएँ आएँ उनको परास्त करना, वहाँ हिन्दुस्तानियोको परिस्थितियोका गुलाम बनना पड़ा। उसीके कारण मानुख समाजको जहाँ बहती गगाकी धाराकी तरह बराबर बढते रहना चाहिए था, वहाँ वह अचल बनकर जमानेके हाथकी कठपुतली बन गया। मानुख अन्धे जमानेका दास हो गया। जिस मानुखको जमानेका राजा बनना था, वह इतना पतित हुआ कि बानर हनुमान और कपिला गायके सामने घुटने टेकने लगा।"

सन्तोखी—क्यो भैया! बाबाको हनुमानजी की पूजा और गोमूत पीनेकी बात मालूम थी।

दुखराम—खूब मालूम थी सन्तोखी भाई! और बाबाने हम मूढोके गालपर खूब चपत लगाया। लेकिन यह चपत ऐसे माँ बापका था, जिसका हृदय भीतर ही भीतर रो रहा हो।

भैया—बाबाने और कहा हिन्दुस्तानमे अगरेज जो समाजमे उलट-पुलट कर रहे हैं, उसके पीछे उनका एक बहुत ही नीचा स्वारथ छिपा हुआ है। लेकिन हम पूछेंगे, कि क्या एसियावासियोके समाजको बिना उलटे पुलटे मानुख जाति अपने पहुँचनेकी जगह पहुँच सकती है? अगर नही पहुँच सकती तो अगरेजोने चाहे जितना भी पाप किया, उन्होंने अनजाने ही इस हितकारी उलट-पुलटको करनेमे सहायता की, फिर चाहे (हिन्दुस्तानमे) टूट-टूटकर गिरती हुई पुरानी जिन्दगीको देखकर हमारा दिल कितना ही विकल क्यो न हो जाय, उसके खिलाफ हमारे दिलमे कितनी ही आग क्यो न लग जाय, लेकिन उसने उलट-पुलट करके हिन्दुस्तानका नया इतिहास बनानेमे मदद की है।'

दुखराम—बात तो भैया? बाबाने सच्ची सच्ची कह डाली, चाहे किसीके गले उतरे या न उतरे।

भैया—बाबाने एक ओर जुगोसे चले आये हिन्दुस्तानको लाखो गाँवोमे छिन्न-भिन्न देखकर उसे पूरा कहा, गाँव सगठन और उलट पुलटको आगेकी भलाईके लिए जरूरी बतलाया। साथ यह भी कहा—अगरेजोने तलवारसे हिन्दुस्तानके ऊपर जो एकता जबर्दस्ती लाद दी है, उसे बिजलीके तार और भी मजबूत और बहुत दिन तक रहने वाली बना रहे हैं। अगरेज सरजन्ट जो हिन्दुस्तानी सेनाको परेड सिखला रहे हैं, उसका सगठन कर रहे हैं, वही हिन्दुस्तानी सेना विदेसियोके हमलेसे ही देसको नही बचाएगी, बल्कि वह देसको छुटकारा दिलानेका काम भी करेगी। अखबार और छापाखाना नया हिन्दुस्तान बनानेके बड़े ही जबर्दस्त हथियार हैं जो हिन्दुस्तानी अगरेजोसे पच्छिमी विद्या सीख रहे हैं, वह राज चलानेके काम और पच्छिमके साइस मे भी चतुर हो रहे हैं, यह भी हित करनेवाला है। भापके इजनने हिन्दुस्तानसे यूरोप के साथ आने जानेमे सहायता की है। हिन्दुस्तान के मुख्य मुख्य बन्दरगाह इगलैंडके बन्दरगाहो से जुड़ गए हैं, जिसके कारन अब हिन्दुस्तान अलग-बिलग नही रह सकता और वह जड़ताईको जड़मूल से उखाड़ फेंकेगा। वह दिन दूर

नही है,जब भापसे चलनेवाली रेल जहाज मिलकर इंगलैंडको आठ दिनके रास्ते पर ले आ देंगे। उस समय हिन्दुस्तान भी पच्छिमी देसोका पडोसी देस बन जायगा। बिलायतकी राज करनेवाली जमातने हिन्दुस्तानमे जो कुछ तरक्कीका काम किया है, वह अनजाने और सिरिफ अपने स्वारथसे किया। बिलायती सरदार हिन्दुस्तानको जीतना चाहते थे, विलायती थैलीसाह (बनिये) उसे लूटना चाहते थे और मिल साह (पूँजीपति) गलाकट्टी कर रहे थे।...अब मिलसाह सारे भारतमे रेलों का जाल बिछाना चाहते हैं और ऐसा करके रहेंगे। ...मैं जानता हूँ कि अगरेज मिलसाह (पूँजीपति) हिन्दुस्तानमे रेल सिरिफ इसीलिए बिछाना चाहते हैं कि बहुत थोडे खर्चमे हिन्दुस्तानके कपास और दूसरे अच्छे मालको अपने कारखानो मे ले आएँ, अगरेज ऐसे देसमे कल-मशीनको ले जा रहे हैं जहां कोयला और लोहा मौजूद है। फिर कोयला-लोहाके धंधेको आगे बढनेसे कौन रोक सकता है?...हिन्दुस्तानियोमे ऐसे बहुत लोग है जो कल-मशीन के इलिमको समझ सकते हैं, वह पूँजी भी जमा कर सकते हैं, उनमे बडा दिमाग भी है, यह इसीसे मालूम है कि गिनती (हिसाब) जैसे इलिममे वे बहुत चतुर होते हैं, उनकी बुद्धि बडी तेज है।"

दुखराम—बाबाने देख लिया था कि हिन्दुस्तानी लोगोकी आँख जरूर खुलेगी और वह अपनी विद्याको अपनी भलाई, अपनी मुकतीके लिए इस्तेमाल करेंगे।

भैया—बाबाने यह भी सोच लिया था कि हिन्दुस्तानको आजाद करने मे, उसके आगे बढनेमे विलायतके कमेरोकी-भी सहायता जरूरी होगी।

दुखराम—बिलायतके कमेरोमे भी क्या बाबाके माननेवाले लोग हैं?

भैया—बाबाने उनकी भी आँख खोल दी है दुक्खू भाई! बिलायतमे एक लाख तो बाबाके पार्टीके खास लोग हैं। वहां की जोकें उस समय बहुत घबरा रही हैं कि लडाई खतम होते कही उनका भी तखता न उलट जाय। बाबाने ९१ बरस पहले लिखा था— जब तक खुद बिलायत मे वहाँ के कमेरे अपने जोक-राजको हटाकर अपना राज न कायम कर लें या खुद हिन्दुस्तानी ही इतने मजबूत न हो जायँ कि अंगरेजोंके जुएको उतार फेंके (तब तक हिन्दुस्तानके लिए वह सुन्दर दिन नही आ सकता)। चाहे कुछ भी हो थोडे हो, या अधिक, दूसरे समयमे वह दिन जरूर आएगा, जब बिसाल मनोहर हिन्दुस्तान देशका नया जनम होगा। वह देस जिसके नरम सुभाव वाले निवासियोमे आजकी गुलामीमे भी एक तरहकी साति और अभिमान है। आलसी से दिखाई देने पर भी जिन्होंने अपनी बहादुरी से अगरेजोको चकित कर दिया। जिनका देस हमारी भाखाओका, हमारे धरमो का मूल स्रोत रहा; जिसके जाट अपनी बहादुरीमे पुराने जर्मनो जैसे हैं, जिसके बाम्हन ग्यानमे पुराने यूनानियो जैसे हैं, उस देसका जरूर उद्धार होकर रहेगा।"

सन्तोखी—बाबा क्या हिन्दुस्तानमे आये थे भैया?

भैया—हिन्दुस्तान नहीं आये थे लेकिन सैकडो बरसोसे अँगरेज लोग हिन्दुस्तानके बारेमे लिख-लिख कर जो ढेर किये थे, उस सबको बाबाने पढा, हिन्दुस्तानसे जानेवाले आदमियोसे बातचीत की; उसीसे उनको सब बातें मालूम हुई। हम कहते थे, कि बाबाको असली रोग और दवाका पता लगा। उन्होने समझा कि रोग हैं यही जोंकें, जिनमे सबसे बडी हैं यह पूँजीपति, मिलमालिक, कारखानेवाले जो ७५

पैसे का २०)बनाते हैं और दुनिया पर राज करते हैं। बिलायतके मजूरोंने इन जोंकोसे लड़ाई ठानी। जब पेट काटा जाय, बेकसूर आदमी निकाल बाहर किये जायें, तो भला वह कैसे चुप रहे? जोंकोका अपार धन, उनकी पलटन, पुलिस, धरम और पुरोहित सब कमेरोको पीस देना चाहते थे, लेकिन वे तीस-चालिस बरसस बराबर लड़ते रहे। तोंद पचकती देख जोंको को कितनी बातें माननी पड़ी। कमेरोका बल घटनेकी जगह और बढ़ता गया। बाबाने समझा जोंकोंकी असली दवा यह कल-कारखानेके मजूर हैं। जो वह हजारो लाखो गाँवो मे बिखरे रहते, तो जोंकोका मुकाबिला नही कर सकते। अपने कारखानोको चलाने के लिए जोंकोने उन्हे सहरोम एक जगह जमा कर दिया। यह बडी ताकत है। जोंको ही ने मजूरो को अपने स्वारथ के लिए इकट्ठा किया और वही जोंको को तबाह करेंगे।

दुखराम—हाँ भैया? पटकल-पटकलमे लाखो मजूर काम करते हैं। जब मालिक कोई जुलुम करने लगते हैं तो सब एका करते हैं। दस-दस बीस बीस दिन काम छोड़ने पर मजूरोंको तो तकलीफ बहुत होती है, लेकिन मालिकाको झुकना पड़ता है।

भैया—झुकना क्यो न पड़े, जो मजूरोका एक रुपया जाता है, तो जोंको का १९ रुपया। लेकिन बाबाने कहा कि मजूरी बढवाने और छोटे-मोटे जुलुमको हटवाने से काम नही चलेगा, दुनिया भरके किसानो मजूरो—सभी कमेरोको एका करके जोंको का राज खतम करना होगा। पुलिस-पलटन, अदालत-कचहरी, कल कारखाना सबको जोंको के हाथसे छीन लेना होगा। हवा-पानीकी तरह धरती-धन सब कुछ को सबका साझेका करना होगा, तब जाकरके दुनियाका यह नरक खतम होगा।

सन्तोखी—हाँ भैया? बाबाने बड़े कामकी बात बतलाई।

भैया—अब सुनो बाबाका बाकी जीवन चरित्तर। ३१ सालकी उमरमे बाबा कहाँ-कहाँकी जोंक-सरकारोंसे बचते लन्दन पहुँचे। और वही ६५ बरसकी उमरमे बाबाका देह छूटा। बाबाने अमरीका, यूरप सब जगहके मजूरोंकी जोंकोंसे लड़ने मे मदद दी, रास्ता बतलानेके लिए किताबें लिखी। कोलोनके कमूनिस्टोके ऊपर मुकदमा चल रहा था।

दुखराम—कमूनिस्ट कौन हैं भैया?

भैया—बाबाके चेला लोगोंको, बाबाके पार्टीवालोको कमूनिस्ट कहते हैं। दुनिया भरकी जोंक कमूनिस्टोंसे बहुत डरती हैं। कमूनिस्टोंने कमेरो की लड़ाइयाँ खूब बहादुरीसे लड़ी हैं, अपना सरबस होम दिया है। रूससे जोंकोका राज उन्होंने ही खतम किया।

दुखराम—तो भैया? हमारे देसमे भी ऐसे कमूनिस्ट होने चाहिएँ। बाबाके चेला हम लोगोंको रास्ता नही बतलाएँगे, तो हम कैसे लड पाएँगे।

भैया—हमारे यहाँ भी बाबाके चेला हैं दुक्खू भाई? लेकिन ४० करोडकी आबादी मे कुछ हजार कमूनिस्ट तो बहुत कम होते हैं न? सरकारने अब भी दो-तीन हजार कमूनिस्टोको जेलमें बन्द करके रखा है और जोंक और पुलिस दोनो उन्हे फूटी आँखसे भी नहीं देखना चाहती, लेकिन वह रकतबीजकी तरह बढते रहेंगे। सहर दिहात सबमे छा जायेंगे। बाबाका पथ कौन कमेरा है, जिसको न होगा?

दुखराम—हाँ भैया ! यह अभागा ही होगा। बाबाने सब दुख-तकलीफ सह-कर हमारे ही फायदाके लिए न काम किया।

भैया—बाबाने कमूनिस्टो के मुकदमेके लिए किताब लिखी, लेकिन छापनेके लिए कागज नही था। उनके पास एक कोट बच रहा था, उसे भी उन्होंने बंधक रख दिया।

दुखराम—तो बाबा बिना कोट होके रह गए ? सुनते हैं, बिलायतमे हाथ चीरनेवाला जाड़ा पड़ता है।

भैया—बाबा कष्ट सहने को तैयार थे। और जेनी माईकी तकलीफको सोचो दुक्खू भाई ! एक तालुकदारकी लड़की, बड़ी लाड़-प्यारमे पली, वह भी बाबाके साथ गली-गली मारी-मारी फिरती रही; लेकिन उसने एक दिन भी अफसोस नही किया। बाबा इतने पंडित थे, कि हजार दो हजार कमा सकते थे और अपने बाल-बच्चोको आराममे रख सकते थे, लेकिन बाबाने कमेरोकी सेवाके लिए अपना जीवन दे दिया था। बाबाके दो लड़के चार लड़कियाँ हुई; लेकिन दोनो लड़के और एक लड़की ज्यादा दिन नही जी सके। बीमार पड़ते तो दवाई और पथका खाना मुश्किल होता। बाबाने कमेरोके लिए गरीबीके जिन्दगी बिताई, जोकें उनको फूटी आँखों नही देखना चाहती थी। गरीबीके कारन बाबाके तीन बच्चे मर गये; लेकिन बाबाने सोचा, हजारो बरसोसे जोंकें कमेरोके करोड़ो बच्चो को मार चुकी हैं, उन्ही बच्चोमे मेरे भी तीन बच्चे गये।

सन्तोखी—बाबा-जैसी तपेस्सा कौन करेगा भैया ? दूसरे तपेस्सा करने वाले तो जोकोकी जड़मे पानी डालते हैं, जोकोको मजबूत करते हैं।

दुखराम—बाबाने भी जोकोकी जड़मे पानी डाला, लेकिन खूब खौलाकर गरम-गरम पानी।

भैया—बाबाके साथी एङ्गल बाबाने भी बड़ी तपेस्सा की। उन्होंने ब्याह नही किया, और कमा-कमाकर हर साल साढे तीन सौ गिन्नी मरकस बाबाको देते गये। जो एङ्गल बाबाने यह तपेस्सा न की होती, तो बाबाके ऊपर और आफत आती। बड़े बाबाने एङ्गल बाबाको एक चिट्ठीमे लिखा था—'तुम्हारे बिना मैं कभी अपने कामको पूरा न कर सका होता। सिर्फ मेरे लिए तुमने अपनी जबरजस्त बुद्धिको बेकार जाने दिया और गलाघोटू ब्यापारी जिनगी अपनायी।'

सन्तोखी—क्या एङ्गल बाबा ब्योपारी थे भैया ?

भैया—हाँ, उनके बापका कारखाना था, उसीको एङ्गल बाबाने सँभाला, लेकिन वह कितना ऊब गये थे, यह उनकी इस चिट्ठीसे मालूम हो जाता है—"मैं किसी चीजको उतना नही चाहता, जितना कि इस ब्योपारी की जिनगीसे भाग निक-लनेको।" बाबाके जीवनमे ही (१८ मार्च १८७१ मे) पेरिस के कमेरोंने वहाँसे जोकोका राज कुछ महीनोके लिए उठा दिया। कमेरो की ताकत अभी उतनी मजबूत नहीं थी, इसलिए जोकोंने फिर हजारो मजूरोको कतल करके अपना राज जमा लिया। लेकिन पेरिसके कमेरोंने जितना अच्छी तरहसे अपना राज चलाया, उससे यह पता लग गया, कि कमेरे जोको को हटा सकते हैं और अच्छी तरह राज चला सकते हैं।

पेरिसके कमेरोंने क्या गलती की थी, इसे बाबाने लिख दिया था। फिर ४६ वर्ष बाद जब रूसके कमेरोंने जोंकोका राज उलटा, तो उस बखत बाबाकी यही सिच्छा बड़े काम आई। ४१ साल तक कमेरोंकी लड़ाई लड़ते बाबाने आखिर ६५ सालकी उमरमे (१४ मार्च १८८३ को) देह छोड़ा। लन्दन के हाईगेटके कबरिस्तानमे अब भी बाबाकी समाधि है। कौन होगा जो बाबाकी समाधि पर फूल चढ़ानेकी लालसा न रखता हो? बाबाके मरनेपर एङ्गल बाबाने लिखा था—"मानुख जातके पास जितने दिमाग हैं, उनमे सबसे बड़ा दिमाग आज खो गया। कमेरा-दलकी लड़ाई चलती रहेगी, लेकिन वह दिमाग चल बसा, जिसकी ओर फ्रास, रूस, अमेरिका, और जर्मनीके कमेरे गाढ़के समय आँख दौड़ाते थे और वह दिमाग सदा बहुत साफ दो-टूक सलाह देता था।"

दुखराम—धन्न है भैया! मकरस बाबा धन्न है, सती है जेनी माई।

भैया—सती जेनीकी तपेस्साकी बहुत-सी बातें हैं, जिनको सुननेपर आँसू रोकना मुसकिल है। अब दुक्खू भाई, बाबाकी मोटी-मोटी सिच्छा सुनो।

दुखराम—हाँ भैया! जरूर सुनाओ।

भैया—बाबाने पहली बात यह बतलाई कि रोटी, कपड़ा, घर, आदमीको सदासे जरूरी रहे हैं, इनको पैदा करना मानुखका सबसे पहला काम रहा है। मानुख इनके पैदा करनेके लिए नये-नये हथियार, नये-नये ढग सोचता रहा है, जिससे रोटी-कपड़ा, घरके पैदा करने का ढग बदलता रहा है। वह पहले सिकार करके जीता था, फिर खेती करने लगा, खेतीसे फिर कारीगरोकी ओर बढ़ा, कारीगरीसे व्योपार होने लगा, व्योपारसे कारखानेके ढगपर चला आया। पैदा करनेका ढग जैसे-जैसे बदलता गया, वैसे-वैसे मानुखकी जमात भी बदलती रही और पहिली जमातबन्दी टूटती गई। सिकार और फल जमा करके जीविका करते समय माईका राज और सबका एक परिवार चलता था। लेकिन जब खेती आई, ताँबा आया, तब वह पुराना ढाँचा नही चल सकता था। रोटी-कपड़ा वगैरह पैदा करनेके ढगके बदलनेके साथही मानुख समाजके ढाँचेको बदलने से रोका नही जा सकता। और जब ढाँचा बदलता है तो उसका कानून आचार-विचार सब बदलता है, आदमीका मन तक बदल जाता है। बाबाने एक जगह लिखा है कि रोटी कपड़ा इत्तादिके पैदा करनेका ढग बदल गया। और जहाँ मानुख पुराने ढर्रे को छोड़ना नही चाहता, पुराने ही तरहका मालिक मिल्कियत का ख्याल रखता है वहाँ तो दोनो का संग्राम छिड़ जायगा।

दुखराम—भैया! थोड़ा समझा के कहो।

भैया—देखो, जब कपड़ा चरखा और करघासे बनता था, घर घरमे लोग चरखा चलाते थे और गाँवका जुलाहा कपड़ा बुन देता था, उसी तरह बढ़ई, लोहार भी अपना-अपना काम करते थे। तब गाँव अपने काम की करीब-करीब सभी चीजोको पैदा कर लेता था, सबको चीज भी मिल जाती थी, सबको काम भी मिल जाता था। यह उस समयकी बात है, जब रोटी-कपड़ाके पैदा करनेका ढग सिरिफ हाथसे किया जाता था। इसके बाद भापकी कल मसीन बनी। कल-मसीनने इतना सस्ता कपड़ा और चीज तैयार किया, कि हाथकी कारीगरी चौपट हो गई।

दुखराम—यह तो देखा है भैया! हमारे देसके सब जुलाहे करघा के चटकल-पटकलमे भाग गए।

भैया—तो अब पौनी परजा, मालिक-जजमान ओगैंरहवाला गाँवका ढाँचा टूटने लगा कि नहीं ?

दुखराम—बहुत टूट गया भैया ! और टूटनेके लिए लोग हाय-हाय करते हैं, कल जुगको दोख देते हैं। लेकिन जान पड़ता भैया ! यह किसीका दोख नहीं है। पाथर, ताँबा, लोहा, कल-मसीन जैसे-जैसे नई चीज, नया ढग आदमी के हाथमें आता गया, वैसेही मानुख-जातिका ढाँचा भी बदलता गया। टिटिहिरीके पैर रोपनेसे आसमान ऊपर नहीं टँगा रहेगा।

भैया—इसी तरहका एक और भी सकट आया है। कल-मसीनसे अन्न भी बेसी पैदा किया जा सकता है। रूस और अमेरिकामे नई-नई खाद और मोटरका हल लगाकर बिगहा पीछे चालिस-चालिस, पचास-पचास मन अनाज पैदा करते हैं और एक-एक खेतमें नहीं समूचे देसमे। इसी तरह चीनी, कपडा, लालटेन दुनियाकी खाने-पहनने और रहनेकी सभी चीजें कल-कारखानों मे इतनी पैदा की जा सकती हैं कि सारी धरतीके दो अरब लोग एक सालकी उपजसे दो-दो साल तक खूब आरामसे रहे। लेकिन हो क्या रहा है ? दुनियामे गरीबी बढ रही है, लोग और ज्यादा नंगे-भूखे रह रहे हैं।

दुखराम—इसका कारण तो जोंके ही हैं भइया ?

भैया—हाँ, जोंकें ही हैं दुखू भाई ? लेकिन उसको इस तरह समझो। अब एक-एक बढई लोहार अपना-अपना हथौडा-बसूला लेकर अलग-अलग काम तो नहीं कर सकता। कारखानोंके कारण अब सभी साझेमे एक दूसरेसे मिलकर करना होता है। यह छोटी-सी सुई जो बनकर आती है वह भी सैकडो हाथोसे तैयार होती है। काम साझेमे—सबको मिलकर करना होता है, लेकिन चीजो की मालिक है जोक। जोक कहती है, यह हमारी चीज है, इसलिए हम २०) की चीज बनानेवाले मजूरको ७५ पैसे देंगे, किसानको उसके कपासका १) देंगे। और बाकी दामको वह अपने पास रखना चाहता है। लेकिन सुईवाली जोक नफेमे सुई अपने पास नहीं रखना चाहती। वह चाहती है कि उसका सब माल बिक जाय। लेकिन बिकनेके लिए पैसा चाहिए। किसानको उसने १) दिया, मजूरको ७५ पैसे दिया, कमेरोके हाथमे कुल मिलाकर पौने दो रुपया गया। अब बताओ २०) की चीज वह कैसे खरीदें ?

दुखराम—तो भैया ! यही न हुआ कि जोकें हमारे पास पैसा भी नहीं आने देती और बेसी माल पैदा करके खरीदनेको कहती हैं।

भैया—हाँ, इसलिए तो जोकोका दिवाला निकलता रहता है। जब माल बेसी हो जाता है और खरीदनेवालोके पास पैसा नहीं रहता, तब भारी सस्ती लग जाती है। याद है न बीस-इक्कीस बरस पहलेकी बात ?

दुखराम—मत कहो भैया ! उस वक्त तो अनाज इतना सस्ता लग गया था कि बेंचकर जमीदारको मालगुजारी भी हम बेबाक नहीं कर सकते थे। कितनोकी जमीन नीलाम हो गई। बडी साँसत हुई।

भैया—एक ओर लोग सस्ती होने पर भी पैसे बिना कपडा नहीं खरीद सकते थे और दूसरी तरफ कपडा गोदाममें सड रहा था। जब पहिले हीका कपडा गँजा हुआ है, तो नया कपडा क्यो बनाया जायगा ? जोकोंने उस मन्दीके दिनोंमे मजूरोको कामसे निकाल दिया। कारखाने बन्द हो गये।

सन्तोखी—तब तो भैया ! इन करोडो मजूरोंके पास भी पैसा नही रहा कि मालको खरीदें। इससे तो माल गोदाम हीमें सडेगा न, कौन उसे खरीदेगा।

भैया—इसीको कहते हैं कबीर साहबकी उलटबाँसी 'पानीमे मीन पियासी'। एक ओर उसी अमरीकामे बेरोजगार होनेसे करोडो मजूर भूखे मर रहे थे, दूसरी ओर अमरीकाकी जोकोंकी सरकारने १९३३ मे पचास लाख सूअर खरीदकर मरवाकर फेंकवा दिये—भूखोंको खानेके लिए नही दिया।

दुखराम—आततायी ? जोंकोंको क्या दाया-माया होगी ?

भैया—डेनमार्क देसमे हर हफ्ता १५०० गाएं मारकर उनका मास जमीनमे गाड दिया जाता था। अरजनतीन देसमे लाखो भेडोंको मारकर नस्ट कर दिया गया ?अमेरिकामे लाखो मन गेहूँको आगमे झोंक दिया गया, जहाजों मे भरी नारंगियाँ समुन्दरमे फेंक दी गई।

सन्तोखी—भैया ! क्या दुनिया बौरा गई।

भैया—दुनियाकी बात मत कहो, सन्तोखी भाई ? दुनिया तो भूखो मर रही है। यह जोकोंका कसाईपन है। वह सोचते थे कि दो रुपया मन गेहूँ है जो पचास लाख मन गेहूँ और बजारमे चला आया, तो वह और सस्ता हो जायगा ? फिर नफा कहाँसे मिलेगा, इसलिए पचास लाख मन गेहूँ या पचास लाख सुअरो को बरबाद कर दिया गया, जिसमे कि बाजारमे बाकी जो चीजें वह भेजेंगे, उसका दाम ज्यादा मिलेगा।

सन्तोखी—हाँ भैया ? बाजारमें माल कम और गाहक ज्यादा हों तो दाम चढ जाता है।

भैया—यही दाम चढानेके लिए जोकोंने आदमीके मुँहका आहार, तनका कपडा सब चीज बरबाद किया।

दुखराम—और नये गाहक ढूंढनेके लिये जमन जोकोंने सैंतीस साल पहिले लडाई छेडी।

भैया—और पिछली लडाई भी जोकोंने उसी मतलबसे छेडी है दुक्खू भाई ! बाबाने कहा था, कि जैसे दुनिया भरकी चीजें सब मिलकर पैदा करते है, उसी तरह सबको मिलकर उन चीजोंका मालिक बनना चाहिए, तभी दुनियामे सुख-सान्ती होगी।

दुखराम—मिलकर मालिक बनना कैसे होगा भैया ?

भैया—जैसे दुक्खू भाई ! तुम्हारे घरमे पचास परानी है कोई खेती देखता है, कोई गाय भैंस देखता है, कोई रसोई बनाता है, मतलब कि परिवारका हर आदमी रोटी-कपडा आदिके लिए कोई न कोई काम करता है। घरमे तो कायदा है न, कि सब लोगोंके खाना-कपडा इत्यादिका काम किया जाय। अब तुम ऐसा कायदा चलाओ नही —हम तो सबके कामकी मजूरी देंगे और दो रुपयाके कामकी चार आनासे बेसी नही। अब इसका फल क्या होगा ? जितना काम लोगोंने किया है उसका आठवाँ ही हिस्सा मजूरीमे उनके पास होगा, वह सब चीजको खरीद नही सकेंगे। अब यही जोकोंवाली बलाय आएगी कि नही ?

दुखराम—हाँ भैया ! आठ भागमे सात भागको खरीदनेके लिए किसीके पैसा ही नही होगा, तब वह चीज सडेगी कि नही। लेकिन ऐसा परिवार कहाँ

भैया—हाँ, यह जोकें ही कर सकती हैं। मरकस बाबा कहते हैं, कि यह नफाकी बात उठा देनी चाहिए और लोग एक परिवार की तरह साथ ही चीज पैदा करें और साथ ही भोगें।

दुखराम—तब जोकें कहाँ रहेंगी भैया ?

भैया—इसीलिए तो बाबा कहते हैं, कि जोकोंका काम खतम हो गया, उन्होंने राजाओ की ताकत को नस्ट करके कल-कारखानों का रास्ता दिखला दिया; अब उनका एक दिन भी जीना करोडो आदमियोंको भूखो मारने और लडाइयो मे खतम होने के लिए होगा।

दुखराम—यह बात बहुत पक्की है भैया।

भैया—दूसरी बात बाबाने बताई, कि मानुख जातिमे जबसे जोकें पैदा हुईं, तभीसे जोकों और कमेरोंका झगडा शुरू हुआ और यह तब तक बन्द नहीं होगा, जब तक कि जोकें खतम न हो जाएँगी। जोकें अहिंसा और दयाका ढोंग भले ही करें, लेकिन वह अहिंसा-दया पर कभी विश्वास नही करती। सौमे पचानबे कमेरे (मजूर) हैं और पाँच जोकें हैं। उन्होंने पचानबे आदमियो को पुलिस-पलटन-जेल के बल पर दबाकर रक्खा है। एडी से चोटी तक जोकें हथियार से लैस हैं, उनका सारा राज-पाट, हिंसा, खून, लूट, झूठ और धोखापर हैं। वे किसी साधु-महात्माके बचनमे आकर गलेमे कण्ठी बाँध लेंगी, यह सोचना पागलपन है। जोकोंको और बडे हथियारसे और बडे संगठनसे और बडे त्याग से, कल-बलसे पछाडना होगा, उनका हथियार छीनना होगा और पूरी तरह मीस मास देना होगा।

दुखराम—देखता हूँ भैया। मरकस बाबा ने जो भी कहा है, वह एक-एक बात मेरे दिलमे घुसती चली जा रही है। बाबा ने धोखेवाली बात नही कही है। सुनते है महात्मा गाधी तालुकदारो-जमीदारो, सेठो साहूकारोको कंठी पहिनाना चाहते थे और कितने लोग तो कहते फिरते, कि गाधी महात्माने सेर-बकरी को एक जगह पानी पिला दिया। लेकिन मुझे यह बात तो धोखाकी मालूम होती है। बच्चा जब नही सोता है, तो माँ लोरी गाती है, जिससे वह सो जाय। मुझे तो यह लोरी ही जैसी मालूम होती है।

भैया—गाधी महात्मा के रास्तेके बारेमे मैं फिर कहूँगा दुक्खू भाई! और गाधी बाबाने कोई बात नही कही। महात्मा-बुद्ध, ईसामसीह और भी सैकडों महापुरुष कण्ठी बाँधकर सेरको भेड बनानेकी कोसिस करते रहे, लेकिन कोई सफल नही हुआ। जोकोंको कही कण्ठ भी है, कि उसमे कण्ठी बाँधी जायगी ? घोडा घाससे यारी करेगा तो जिन्दा रहेगा ? जोकोंको खतम कर देना बस यही एक रास्ता है।

वह देस जहाँ जोकें नही हैं

दुखराम—सन्तोखी भाई! देख रहे हो न कैसी-कैसी बात सुननेमे आ रही है। हम लोग समझे थे, कि धनी-गरीब भगवानने बनाया है; अब मालूम हो रहा

है कि यह सब जोकोंका जाल है। इस जाल-फरेब से जोकोको ही फायदा है। बढ़िया खाना खाते और बढ़िया कपड़ा पहनते हैं, और हम लोग जो ढेला फोड़-फोड़कर मर जाते हैं, भर पेट अन्न भी नही मिलता।

सन्तोखी—हम लोग छोटी-छोटी दुकान खोलकर जो दिन-रात चिन्तामे रहते हैं, यह भी तो जोकोकी ही ताबेदारी है। दिन-रात फिकरमे हम मरते हैं और सब नफा जोकोंके पास चला जाता है। जो चारकी धोती चौदह रुपयापर दूकानदार बेंचता है, तो गिरस्त समझता है कि सब हमे लूट रहे हैं। सब गाली हम लोग सुनते हैं और जिसके पास पौने चौदह रुपया चला जाता है, उसको कोई नही पूछता।

दुखराम—यह तो कलकत्ता-बम्बईमे बैठे हुए हैं, उनसे कौन पूछने जायगा? लेकिन मजूर उनकी भी खबर ले रहे हैं। अब मोटी ताद ज्यादा दिन नही चलेगी। अच्छा, भैया रजबली आ गये।

भैया—दुक्खू भाई? कमेरोकी जीतका रास्ता बहुत टेढ़ा-मेढ़ा है, उसको समझना-समझाना और भी मुस्किल है। मैं जो कुछ कहता हूँ, जो सोलह आनामें आठ आना भी तुम्हारी समझमे आ जाय, तो बड़ी बात है।

दुखराम—आठ आना नही भैया, मैं तो पन्द्रह आना समझ रहा हूँ। बात तो सब याद नहीं रहेगी, लेकिन एक-एक चीज दिलमे बैठती जा रही है।

भैया—याद होनेकी जरूरत नही है, बस दिलमे बैठना चाहिए। मरकस बाबाने बतला दिया था, कि पूँजीपतिके राजमे हर दसवें साल भाव गिर जाना, मन्दी पड़ना, करोड़ो मजूरोका बेकार होकर भूखो मरना, करोड़ो किसानोका अनाजके सस्ता होनेसे उजड़ जाना, और सबके ऊपर ससार भरको लड़ाईमें झोक देना यह बाते रोकी नही जा सकती। इन सबसे बचनेका उपाय यही है, कि जोकोकी सरकार को हटाकर कमेरोकी सरकार बैठाई जाय, और देस भरको एक परिवार बना दिया जाय। बाबाने जो रास्ता दिखलाया था, उसीसे चलकर पेरिसके कमेरोने जोकोको उलट दिया। लेकिन पेरिसके मजूरोने यह नही समझा, कि किसानोको भी वही दुख तकलीफ है, उन्हे भी हमे अपने साथ मिलाना है। किसान ज्यादा भोले-भाले होते है, गाँव मे एक कोनेमे रहते हैं, दुनिया जहानका उन्हे पता नही रहता। अलग-बिलग रहनेसे उनका एक करना भी मुस्किल होता है। उनको पचास तरहसे भड़काया जा सकता है। जोकोने इसी तरह भड़काया। मजूर बड़ी बहादुरीसे लड़े, लेकिन जोकोने सारे फ्रांस भरकी पल्टनको उनके ऊपर झोक दिया। उसी समय (१८७०-७१) जर्मन जोकोने फ्रांसीसी जोकोकी सरकारको हरा दिया था, लाखो सिपाहियोको कैदकर लिया था, लेकिन जैसे ही मालूम हुआ, पेरिसमे मजूरोंने अपना राज कायम कर दिया, तो वह घबरा गई। जर्मन जोकोंने फ्रांसके सभी कैदी सिपाहियोको छोड़ दिया, जिसमें कि वह पेरिसमे जाकर मजूरोके राजको बरबाद कर दें।

दुखराम—एक दूसरे के खूनकी प्यासी जोकें आपसमे मिल गईं, जैसे ही उन्हें कमेरोका डर मालूम होने लगा?

भैया—सैंतीस साल पहले जो महाभारत जर्मनोने छेड़ा था, पता है— जर्मन जोकोके फायदाके ही लिए। इस वक्त तक मरकस बाबाके एक ५१... लेनिन पैदा हो गए थे।

दुखराम—लेनिन कौन थे भैया—कहाँके थे ?

भैया—लेनिनका जनम रूसमें हुआ था। मजूरों-किसानोंको उन्होंने मरकस बाबाका रास्ता बतलाया। मजूरोंके ऊपर होनेवाले जुलुमके लिए वह जोकोंसे लडते रहे। जोकोंकी सरकार और पुलिसने उनके बड़े भाईको फाँसी चढाया, और उनको भी काला-पानी भेज दिया। लेनिन जहाँ भी रहते, वहाँसे कमेरोंको रास्ता बतलाते रहते। जेहलखाना और काला-पानीमें रखकर भी जोकें उन्हें रोक नहीं सकती थीं। ४६ बर्स पहिले (१९०५) लेनिन अगुआ बने और कमेरोंने जोकोंके खिलाफ तलवार उठाई। उस बक्त इनकी ताकत उतनी मजबूत नहीं थी, इसलिए जोकोंने दबा दिया। हजारोंको गोली से उड़ा दिया, उनसे भी ज्यादा जेलोंमें ठूँस दिये गये। जोकें जीत गईं, कमेरे हार गए। लेनिन जोकोंका एक बारका हारना उनका सदाके लिए खतम हो जाना है कमरोंका एकबार हारनसे कुछ नहीं होगा, वह तो धूल झाड़कर फिर-फिर लडते रहेंगे। कमेरे लड़ते हैं रोटी-कपड़े के लिए रोटी-कपड़ेका जब दुख मिटेगा, तभी न वह लड़ाई करना छोड़ेंगे ?

दुखराम—जोकोंके राजमें रोटी-कपडा सबको कहाँ से मिल सकता ?

भैया—लेनिन महात्माको रूसकी जोकें जो पकड़ पातीं, तो फाँसी चढा देतीं, इसलिए वह रूससे बाहर चले गये, लेकिन उनके बहुत से साथी देसके भीतर रहकर कमराम काम करते थे। लेनिन उसको रास्ता बतलानेके लिए किताबें लिखते थे और लाग जोखिम उठाकर उन किताबोंको रूसके भीतर ले जाते थे।

दुखराम—जोखिम क्या भैया।

भैया—पकडे जाते तो फाँसी डामलकी ही सजा होती।

दुखराम—किताब कौन इतने खतरेकी चीज थी, भैया।

भैया—मरकस बाबा और उनके चेला लोगोंकी किताबोंसे जोकें तोप-बन्दूक-से ज्यादा डरती। वह समझती हैं, गोला गठा तो गरीबोंके लडकोंके ही पास रहता है। जोकोंके लडके थोड़े ही पन्द्रह रुपये के सिपाही बनते हैं ? इसलिए जोकें समझती हैं, कि जिस दिन गरीबों और उनके लडकोंको जोकोंके पापका पता लग जायगा, उस दिन फिर खैरियत नहीं। जब लेनिन महात्मा रूससे बाहर कभी लडन, कभी फ्रांस कभी स्वीजरलैंड इत्यादि देसोंमें मारे-मारे फिर रहे थे, उनके साथ उनकी स्त्री कुरुपसकाया (क्रुप्सकाया) भी दुख झेल रही थी। उसी वक्त १९१४ म जर्मन जोकोंने अपना माल बेचनेका, कहीं रास्ता न देखकर दूसरी मोटी मोटी जोकोंपर धावा बोल दिया। इंगलैण्ड, फ्रांस, और रूस और पीछे [illegible] और [illegible] एक ओर हुए। जर्मन जोकें कमजोर रहीं [illegible], हमे जावोंके हारने जीतनेकी बात नहीं समझा[illegible] यह [illegible] लेनिन महात्मा और उनके कमेरे साथियोंने जोक[illegible]

दुखराम—हाँ भैया ? यह हमारे [illegible]

भैया—रूसकी [illegible] जर्मन [illegible] था, लेकिन लडन[illegible] ही [illegible] है, उसी तरह [illegible] देसने [illegible]

मुँहमे झोकने लगी। लेनिन जर्मन ज्यादा मजबूत थे। वह रूसियोको हराने लगे। रूसी जोकें घबराने लगी, उन्होंने और कमेरोको और उनके बच्चोको लडाईमे भेजा। कितनोको तो बन्दूक भी नही दिया।

सन्तोखी—बन्दूक बिना लडते कैसे भैया ?

भैया—जोकोंने कहा कि, वहीं जाके, जो सिपाही मरें उनकी बन्दूक ले लो। जोकोंके वह अपने लडके नही न थे गरीबोके लडकोको भाडमे झोकने से क्यो हिचकिचाते ? गरीबोंके बच्चे समझने लगे, जोकें उनके साथ चाल चल रही हैं। उधर लेनिन महात्मा भी किसानो मजूरो और उनके लडके सिपाहियो की आँखें खोलने लगे। जोको जोकोकी लडाईमे नाहक गरीबोका बध कराया जा रहा है। लेनिन महात्माने कहा कि जवानो ? तुम्हारे दुसमन बाहर नही तुम्हारे घर की जोकें है। बन्दूकें खूब हाथमे आ गई बन्दूकोका मोहडा फेर दो और घरकी जोकोको खतम कर दो।

दुखराम—मरकस बाबाके चेला लेनिन महात्मा भी कम नही थे ?

भैया—लेनिन महात्मा बाबाके बडे लायक चेला थे दुक्खू भाई ? हाँ, तो मजूर किसान उठ खडे हुए। उन्हीके लडके सिपाही थे सबको वह तेईस बरससे समझा रहे थे। अब (नवम्बर सन १९१७ मे) उनकी बात समझमे आ गई। उस वखत पेतरोग्राद सहर रूसकी राजधानी रहा। उसीका नाम पीछेसे बदलकर लेनिनग्राद हो गया। लेनिन महात्माने पेतरोग्रादमे कमेरोकी सरकार कायम की। पेतरोग्राद मे लाखो मजूर कारखानोमे काम करते थे। वह लेनिन महात्माको खूब जानते थे और परानसे भी अधिक प्यार करते थे। जब मजूर बन्दूक लेकर अपना लाल झडा गाड रहे थे तो जोकोने पलटन पर-पलटन उनके खिलाफ भेजी। लेकिन सिपाही अपने भाई बहनोको पहचानते थे वह जोकोकी बातमे नही आये। वह अपनी बन्दूक लिये दिये कमेरोके साथ मिल गये। पलटनके अफसर जोकोके लडके थे। लेकिन हजार सिपाहीमे दस अफसर क्या करते ? अफसर सिपाही बन गये और उन्होंने कमेरोकी पलटनपर गोली चलाई लेकिन गोली जल्दी खतम होगई और वह भी ठडे हो गये। फिर जोकोंने लडाईके मैदानसे पलटनें मँगवाई, और उन्हे कमेरोके साथ लडनेके लिए भेजा। पचास-पचास हजार पलटन कूच करती चली आती, लेकिन जहाँ पेतरोग्राद राजधानीकी सीमामे पहुँचती जेठकी दुपहरियामे मक्खनकी तरह पिघल कर लोप हो जाती।

सन्तोखी—लोप कैसे हो जाती भैया ?

भैया—लोप हो जानेका मतलब है कि सब सिपाही कमेरोकी पलटनमे मिल गये अफसरोमे जिन्होने तीन पाँच किया वह वही मार दिये गये बाकी भाग निकले। कमेरोके राज सँभालनेकी खबर जहाँ जहाँ पहुँची, वहाँ वहाँ जोको और कमेरोका दो दल हो गया और सब जगह जोकोंको निकाल बाहर किया गया। कमेरोकी सरकारने तुरन्त कानून बना दिया कि जितने तालुकदार-जमीदार, राजा-नवाब हैं उनकी सारी जमीदारी आजसे सारे रूसके कमेरो की हुई। जितने कल-कारखाने हैं आजसे जोकें उनकी कुछ नही हैं, अब सारे कमेरे उनके मालिक है। जितने रेल, जहाज वगैरह की कम्पनियाँ है वह सब अब कमेरोकी हैं, जितनी कोयलेकी खाने तेलकी खानें,

हर तरहकी खानें है, वह सब कमेरोकी हैं। जितने बक और उनके पास करोड़ो-अरबोंका खजाना है, वह कमेरोका है। जोकोंके जितने महल-कोठा, अटारी, बाग, बँगले हैं, वह सब कमेरोके हैं।

दुखराम—तो मरकस बाबाने जो बात बतलाई थी, उसे लेनिन महात्माने पूरा कर दिया।

भैया—हाँ, पूरा कर दिया। पेतरोग्रात राजधानीमें आधेसे करीब-करीब लोगोंके रहनेका कोई ठौर-ठिकाना नहीं था। लोग सड़ी-गन्दी गलियोमें रहते थे। लाखो मजूर तो फटे टीन और कनस्तरकी छतो-दिवारोंवाली सूअरकी खोभार जैसी छोटी-छोटी झोपड़ियोमें रहते थे। पाँच हाथ लम्बी, चार हाथ चौड़ी झोपड़ियो में दस-दस आदमियोका परिवार रहता था। रूसका जाडा बहुत कड़ा तिसमें पेतरोग्रात तो और ज्यादा, सरदीके मारे वहाँ नदी, समुन्दर सब जमकर बरफ हो जाते हैं।

सन्तोखी—पत्थर जैसी बरफ?

भैया—सन्तोखी भाई? जो तुम जाडामें वहाँ पहुँच जाओ, तो साँस लेनेसे जो भाप नाकसे बाहर निकलेगी, वह पहले पानी बनकर तुम्हारी बड़ी-बड़ी मूँछोंमें समा जायगी और छन भर ही मे मालूम होगा कि तुम्हारी मूँछें सीसेके भीतर जमी हुई है। इतनी सरदीपर भी मजूरोको उन्ही टीनोकी खोभारोंमें रहना पड़ता। उनके पास आग जलानेके लिए कोयला भी नही रहता।

दुखराम—जोकोका कदम जहाँ गया, वहाँ नरक छोड़ और क्या होगा?

भैया—कमेरोकी सरकारने तुरन्त हुकुम निकाला और जोकोके बड़े-बड़े महलो और कोठोको कमेरोंके लिए खोल दिया। उन्होने जोकोसे कह दिया कि जो कमेरोंकी सरकारके खिलाफ हैं, उनके ही ऊपर हम हाथ उठायेंगे। जो जोकका धरम छोड़कर आदमी बननेके लिए तैयार हैं, उनको हम भाई मानेंगे और काम देंगे। जोकोमे जो मानुख बन गये, उनको उन्हीके घरोकी एक कोठरी दे दी और बाकी मकानमे सूअरकी खोभारसे निकालकर कमेरोंको ला बसाया। कमेरोंका राज कायम होते ही रानियो, तालुकदारनियो और सेठानियोंकी लौडियाँ काम छोड़कर अलग हो गई।

सन्तोखी—जब जमीन, मकान, बकका रुपया और कल-कारखाना सभी छीन लिया गया, तो लौडियोंको कैसे रखती।

भैया—नौकर-चाकर भी जोकोको छोड़कर हट गये।

दुखराम—अब रानी भरती होगी पानी!

भैया—बिना देह हिलाये हरामका पैसा थोडे ही मिल सकता था? कमेरोकी सरकारने सबको काम देने का इन्तिजाम किया। जब इङ्गलैण्ड, फ्रास, अमेरिका, जापान और दूसरे देसोकी जोंकोको पता लगा, तो उनकी नीद हराम हो गई। रूस छोटा-मोटा देस नही है, दुनिया के छ भागमे एक भाग रूसका है। उसके पूरबी किनारेसे पच्छिमी किनारे तक डाकगाडीसे जायँ तो १५ दिन १५ रात लगती है।

दुखराम—बम्बईसे परयाग तो भैया? एक दिन एक रात हीमे चले आते हैं, रूस बहुत भारी देस होगा।

भैया—हाँ, हिन्दुस्तान ऐसे सात देसोंकी धरती इकट्ठा जोड़ी जाय, तो रूसके बराबर होगी। इसलिए बाहरी देसोंकी जोंकें बहुत घबराईं, लेकिन साल भर तक वह बहुत नहीं कर सकीं, जब जर्मनी हार गया, तो जीतनेवाली सारी जोंकें इतनी घबराईं, जितना कंस भी कन्हैयाके पैदा होनेसे नहीं घबराया होगा। उन्होंने अपनी फौज, गोला-बारूद सब लेकर बोलसेविकोंके ऊपर धावा बोल दिया।

दुखराम—बोलसेविक कौन हैं भैया?

भैया—रूसमें मरकस बाबाके चेलोंको बोलसेविक कहा जाता है।

दुखराम—तो बोलसेविक भी कमूनिस्तोंकी तरह हम कमेरोंके आदमी हैं?

भैया—बोलसेविक और कमूनिस्त एक ही हैं। चर्चिल उस वक्त विलायतका युद्ध-मंत्री था, वह तो बोलसेविकोंको कच्चा खा जाना चाहता था।

दुखराम—यही चर्चिल न भैया? जो लड़ाईके समय विलायतका महा-मंत्री था।

भैया—हाँ वही जो चाहता था, कि परलय तक हिन्दुस्तानकी छाती पर कोदो दरें। उसने भी अपनी पलटन और गोला-बारूद रूसमें उतारी। फ्रांसने भी अपनी पलटन भेजी। अमेरिका ने भी। जापानने भी। चौदह बादशाहों ने अपनी-अपनी पलटन कमेरोंकी सरकारको बरबाद कर डालने के लिए रूस भेजी? क्यों भेजा? क्या रूसके कमेरे किसी की एक अंगुल भी जमीन लेना चाहते थे?

दुखराम—दुनियाँ भरकी जोंकों ने समझा, कि जो धरती के छः भागोंमेंसे एक भाग की जोंकों को खतमकर कमेरों ने अपना राज्य कायम कर लिया, तो बाकी पाँच भाग के कमेरोंका भी मन बिगड़ जायगा, फिर बकरी की माँ कै दिन खैर मनायेगी?

भैया—बड़े संकट की बेला थी। दुनिया भर की जोंकें गला फाड़-फाड़कर चिल्ला रही थीं, अखबारों में छाप रही थीं, कि बोलसेविक अधरमी हैं, बच्चों को मार डालते हैं, बूढ़ोंको नहीं छोड़ते। उन्होंने सभी औरतों को बेसवा बना दिया, मसजिदों-मन्दिरों को तोड़ दिया, हराम-हलाल की बात उठा दी इत्यादि हजारों झूठ फैलाये जाने लगे।

दुखराम—हिन्दुस्तानमें भी भैया वह यही बात करेंगे, जोंकें समझती हैं कि कमेरे मूरख-अनपढ़ होते हैं, उन्हें झूठ-साँच कहकर मरकस बाबाके रास्तेके खिलाफ देंगे। भैया! हम लोगों को बहुत सजग रहना होगा। तुम भगवानकी बात को दबा देते रहे, अब उसका फायदा मुझे मालूम हो रहा है। भगवान और धरम से हमें पहले नहीं झगड़ना है। पहिले हमें जोंकों से निपट लेना है। कमेरे भाई बहुत दिनों से जाल में फँसे हैं, हम लोग धरम और भगवानके खिलाफ बोलनेमें ही ताकत लगा देंगे, तो जोंकें उन्हें बहकाने लगेंगी।

भैया—हाँ दुक्खू भाई! सबकी जड़ यही जोंकें हैं, जड़ काटना अच्छा है कि पत्ता नोचना अच्छा?

दुखराम—जड़ काटना अच्छा है भैया?

भैया—लेकिन जोकें सभी कमेरो की आँखो मे धूल नही झोक सकती, विलायत के मजूरोको जब मालूम हुआ कि हमारे देसकी जोकें रूस के कमेरा राजका सत्यानास करने के लिए तोप-बन्दूक, गोला-बारूद भेज रही हैं, तो उन्होने जहाज पर माल लादने से इनकार कर दिया। खलासियो-मल्लाहोने जहाज छोड दिया। फासकी पलटनें लडने के लिए रूस पहुँची और सभी कमेरोने जान जोखिममे डालकर फासीसी सिपाहियो के पास पहुँच सब बात कही, तो पलटनें बिगड चली। अँगरेजी पलटनोमे भी यही बात दिखाई देने लगी। रूसी कमेरे अब जोको के लिए नही अपने लिए लड रहे थे, इसलिए जानपर खेलना उनके लिए खेल था। बाहर की जोक सरकारो ने समझ लिया, कि अपनी पलटन को जो वहाँ लडने के लिए भेजा, तो बोलसेविकोकी बीमारी हमारे देस मे चली आयेगी। उन्होने अपनी पलटनें लौटा ली। लेकिन हाथपर हाथ धरकर बैठते कैसे ? रूसी जोकोके कितने ही जरनैल और बच्चे कमेरो के राज से जहाँ-तहाँ लड रहे थे। बडे-बडे महन्त भी तो जोक ही हैं न ? उन्होने धरमके नाम पर कितने ही किसानो को बहकाया। विलायत और दूसरे मुल्कोकी जोक सरकारोने सोचा, कि रूसी जोक जरनैलो और उनके आदमियो के ही सिखण्डी बनाकर टट्टीकी आड मे सिकार करें। चर्चिल और दूसरे भी देशो के जोकराजोके मन्त्रियोने जोकें-जरनैलोको रुपये-पैसे, गोला-बारूद, हवाई जहाज आदि से खूब मदद की। जोकें आखिर रूसमे रह न सकी, लेकिन चलते-चलते भी उन्होने रूसको भयानक नरक बना दिया, सहर और गाँव तबाह कर दिये। जोक जरनैलोने औरतो और बूढोपर दिल खोल कर हाथ साफ किया।

दुखराम—वह तालुकदारो, राजा-नवाबो, सेठ-साहूकाराके लडके थे न ? वह सोच रहे होंगे कि अब हमे महल और अप्सराएँ फिर कहाँ मिलेंगी ?

भैया—हाँ, और यह बात सभी जगह दुहराई जायगी। जोकें जल्दी हार नही मानेंगी। जोक-जरनैलोने खेती बरबाद कर दी, अनाज जला दिया। बाहरके किसी मुलुकसे कमेरोकी सरकार कोई चीज न मँगा ले, इसके लिए विलायत और दूसरे मुलुकोंके जहाज पहरा देते थे और जहाँ कोई जहाज कमेरोंके लिए आता या जाता दिखाई देता उसे डुबा देते। जितने लडाईमे नही मरे थे, उससे कई गुना ज्यादा आदमी-बच्चे-औरतें भूख के मारे मर गये—एक करोड से ज्यादा आदमी मरे।

दुखराम—जब बिना लडाईमे बगालमे साठ लाख आदमी बलि चढ गये, तो वहाँ के बारेमे क्या पूछना है।

भैया—पाँच बरस तक (१९१७-२२) रूसके कमेरोंने अपने यहाँकी जोको और बाहरवाली जोकोके साथ लोहा लिया। लाखोने हँस-हँस कर जान दी, अन्त मे जयमाला कमेरोके गलेमे पडी। लाल झण्डा अचल हो गया और लाल पलटनके नामसे जोकें घबडाने लगी।

दुखराम—लाल झण्डा और लाल पलटन क्या है भैया ?

भैया—लाल झण्डा तुमने देखा नही है दुक्खू भाई ! कलकत्तामें मजूर भी जब कोई अपना जलसा या सभा करते हैं, तो लाल झण्डा ही लेकर चलते है।

दुखराम—देखा तो था भैया, लेकिन मैंने समझा था महाबीरो झडा है।

भैया—तुम्हारी बटकलके मुसलमान मजूर उस झंडे के साथ-साथ थे कि नहीं ?

दुखराम—थे भैया ! जुम्मन काका तुकरू भैया बहुतने थे। और अब मुझे समझ में आता है कि उस झंडे पर महावीरजीकी मूरत नहीं थी।

भैया—कमेरोंका झंडा लाल और चौकोर होता है। रूसके झंडे पर हँसिया और हथौड़ा का चिन्ह बना रहता है। हँसिया है किसानो का हथियार और हथौड़ा है मजूरोंका। झन्डेका लाल रंग कमेरो का खून है।

दुखराम—अब मालूम हुआ लाल झन्डे का मतलब। हमें भी अपने झंडे को खून से लाल करना होगा। भैया, यह लाल रंग कमेरोंका अपना लाल रंग है न ?

भैया—हाँ, अपना रंग है। इसी वास्ते कमेरोंकी पलटनका नाम है लाल पलटन।

दुखराम—उस दिन भैया ! तुमने अखबार मे पढ़कर सुनाया, कि लाल पल-टनके सामने भागते-भागते जर्मन जोंकोंकी फौजें अपने घर में घुस गईं।

भैया—हाँ, लाल फौज उनके घर में घुसकर जोंकों और उनकी सेनाका सहार करती रही है। रूसमें १८२ कौमें बसती हैं।

दुखराम—तो वहाँ एक खोम नहीं है।

भैया—एक खोम नहीं है, लेकिन कमेरो का राज्य है न, इसलिए सभी १८२ खोमें मेल से रहती हैं। बाहरकी जोंकोंने बाकी खोमोंको बहकाने मे कोई कोसिस नहीं बाकी रखी। किसी को मुसलमान कहके बहकाया, किसीको किरिस्तान कहकर, किसी को यहूदी कहकर, किसीको बौद्ध कहकर अलग करना चाहा, लेकिन कमेरे-कमेरे सब एक हो गये। लेनिन महात्माकी पारटीने लड़ाईसे पहिले ही बात पक्की कर दी थी, कि रूसमे १८२ खोमें हैं, १८२ भाषा हैं, चार-चार धरम हैं, काले लोग भी हैं, गोरे लोग भी हैं, लेकिन कोई छोटा-बड़ा नहीं है, सब बराबर हैं। जमीन-मकान, कल-कारखाना, रेल-खाना सब १८२ खोमोंके हैं। जो किसी खोम को दबाया जाय, तो वह जब चाहे तब अपना देश अलग कर सकती है।

दुखराम—दिल साफ था भैया ! छल-कपट की कोई बात नहीं थी।

भैया—इसीलिए दुक्खू भाई १८२ खोममेंसे किसी ने अलग होने का नाम नहीं लिया। बल्कि पाँच खोम बाहर से आकर मिल गईं।

दुखराम—बड़ा भारी परिवार है भैया।

भैया—बीस करोड़ का परिवार है और सब एक दूसरे के वास्ते परान देते हैं। लड़ाई-झगड़ा करना खून चूसनेवाली जोंको का काम है, कमेरो को तो खूब मेहनत करके अधिक अन्न उपजाना, अधिक कपड़ा पैदा करना, अच्छा घर बनाना, सबके पढ़ने-लिखने का, दवाई-दरपन का इन्तिजाम करना है।

दुखराम—जिसमे सब खुसी रहें, कहीं नरकका निसान न रह जाय। दुनिया भरकी जोंकोंके मुँह पर कालिख पुत गया न भैया।

भैया—कालिख तो पुत गया, और उनका दिल भी थरथर काँपने लगा समझने लगीं, कि जब तक रूसमें कमेरो का राज रहेगा, तब तक हमारी ..

वक्त खतरेमे है। लेकिन महात्मा पर उन्होंने गोली चलवाई, घाव तो भारी था, लेकिन उस वक्त वह बच गये, तो भी वह दिन पर दिन कमजोर होते गये, और कमेरोंके राजके कायम होनेसे सात बरस बाद (जनवरी १९२४) मे मर गये।

दुखराम—हत्यारे पापी।

भैया—लेकिन दुक्खू भाई मरक्स बाबाका रास्ता इतना कच्चा नही है, कि एक नेताके मार देनेसे वह खतम हो जायेगा। लेनिन महात्माने रूस के कमेरोंको सिच्छा दी थी कि एक-एक कमेरा नर या नारी को राज चलानेका ढंग सीखना होगा। कमेरे लेनिन महात्माकी एक-एक बात पर जान देनेके लिए तैयार थे। रूसकी जोंकोंको तो अब कोई आसा नही रह गई थी, इसलिए बाहरी देसोंकी जोंकोंने दूसरा रास्ता लेना चाहा। रूसके कमेरो की बातको सुनकर हुँगरी देसमें भी कमेरो का राज कायम हुआ। लेकिन इगलैण्ड, फ्रास और अमेरिकाकी जोंकोंने उसे दबा दिया। इटलीमे भी जब कमेरोने जोर लगाया, तो राजा-तालुकदार, सेठ-महाजन काँपने लगे। उन्होंने एक गुण्डेकी पीठ ठोकी, जिसका नाम मुसोलिनी था और राजकी लगाम उसके हाथमे दे दी। मुसोलिनी ने कमेरोका पच्छ लेनेवाले एक-एक आदमीको चुन-चुनकर मारा। बिलायती जोंकें खूब खुश हुई, उनके बड़े-बड़े मन्त्री तक मुसोलिनीको बधाई देने इटली गये। मुसोलिनीने लाखो कमेरो और कम्युनिस्टोके खूनकी होली खेली, लेकिन दुनियाकी जोकोने मुसोलिनीको महापुरुष और क्या कह-कह कर तारीफ की। जर्मनीके भी कमेरे जोकोंके पीछे पडे। इसको देखकर भीतर और बाहरकी जोंकें खूब घबराई, वह चारो ओर आँख फाड-फाडकर सहारा ढूंढने लगी। जब जर्मनीमे भी मुसोलिनी की तरहका एक दूसरा गुण्डा हिटलर पैदा हो गया, तो जोकोका दिल ठंडा हुआ। बिलायतकी जोकोने हिटलरकी हिम्मतको खूब बढ़ाया। हिटलर कहता था कि दुनिया भरके सबसे बडे दुसमन यही बोलसेविक हैं।

दुखराम—दुनिया भरके दुसमन नही, जोको के दुसमन हैं ?

भैया—लेकिन दुक्खू भाई ? सच्ची बात वह कैसे कहता ? जर्मनी के करोड़-पति पूँजीपतियो ने हिटलर के लिए थैली खोल दी, तालुकदार पहले कुछ सन्देह करते थे।

सन्तोखी—तालुकदार क्यो सन्देह करने लगे ? पूँजीपति और तालुकदार तो एक ही तरहकी जोकें हैं।

भैया—विलायतमे जैसे बडे-बडे जमीदार, बडे-बडे पूँजीपति, कारखानेदार भी हैं, जर्मनी मे अभी उतना नही हो पाया था। जर्मनीमे नवाब-तालुकदार अपनी अकडमे रहते थे और उनमेसे बहुत कम कारखानेदार बनना चाहते थे। कारखानेदार पूँजीपति हिटलरकी पीठपर थे, इससे वह समझने लगे कि कहो पूँजीपतियो का पलरा भारी न हो जाय। पूँजीपतियोके पास जो करोडोके कारखाने थे, उनके पास रुपये का बल था, तो जर्मनी के तालुकदार नवाबोंके हाथमे सारी सेना थी। जर्मनी फौजके बडे-बड़े अफसरोमे सभी और छोटोंमे से भी अधिक तालुकदार घरानेके लडके थे। इधर पूँजीपतियो और तालुकदारोमे अभी गठबन्धन नहीं हो पाया था, उधर कम-करोकी ताकत बढ रही थी। बाहर की जोकोंने भी समझाया, तालुकदारोंने भी हाथ

मारा, और कमेरोके भारी खतरे को देखकर जर्मनीके प्रेसीडेन्ट एक बडे तालुकदार हिन्डनबर्गने हिटलरके हाथमे राज दे दिया। अब गुण्डा-राज पूरी तौरसे अपना रूप दिखलाने लगा। कमेरो की सभाओं और जमात-बन्दीको खूनी हाथो पे बन्द कर दिया गया। गोली और फाँसीसे मारे जानेवालोको गिनती नही हो सकती थी। हजारो हजार मरद मेहरारू नरकसे भी बुरे जेला मे डाल दिये गये, जहाँ उनमेसे अधिक भूखे रहकर या पागल होकर मर गये।

दुखराम—तो हिटलर सबसे बडा खूनी निकला भैया! और एक दिन एक सफेद टोपीवाले बाबू हिटलरको देवता बना रहे थे।

भैया—वह क्या, दुनिया भरकी जोकें हिटलरको देवता बना रही थी। यह तो अँगरेज, फ्रासीसी और अमेरिकावाली जोकोपर जब हिटलरने हल्ला बोल दिया, तब उसे गाली देने लगे। लेकिन हिटलर को मजबूत करनेमे सबसे बडा हाथ विलायतकी जोकोका था। उन्होंने उसे खालकर धन और बरदान दिया।

सन्तोखी—तो भैया, सिउजीसे बरदान पाकर भस्मासुर उन्हीके सिरपर हाथ रखने चला?

भैया—हाँ, सन्तोखी भाई! हिटलर ने जर्मनीके लोगो का कान भरना शुरू किया कि भगवानने नीली आँखो और भूरे बालोवाली जातिको ही दुनिया मे राज करने के लिए पैदा किया। ऐसी जाति जर्मनीसे बाहर कही नही। जर्मनी ही यह आर्य जाति है, जिसे भगवानने दुनियाका राजा बनाया।

सन्तोखी—तो हिटलर अपने को अरिया कहता है भैया।

भैया—हाँ, वह अपनेको अरिया कहता है और (सतिया) (स्वास्तिक) का चिन्ह अपने झडे पर लगाता है।

सन्तोखी—अब पता लगा, उस दिन महासय भडार्मसिह उपदेसक बडे जोर-जोरसे कह रहे थे, कि जर्मनीने भी अरिया धरमको मान लिया।

भैया—लेकिन महासय भडार्मसिहको यह मालूम नही है कि हिटलर हिन्दुस्तानियोको काला पसु जैसा मानता था, उसने अपनी किताब मे लिखा कि हिन्दुस्तानी लोग सिरिफ गुलाम रहने के लिए पैदा भये हैं। वह तो फ्रास और इगलैंड जैसे गोरे-गोरे लोगोको भी बरनसकर कहता था।

दुखराम—बडे बडे बहे जायें गरहा कहै कितना पानी, भडार्मसिह अरिया समाजी हैं और हिटलर अरिया है। छि! छि!! भडार्मसिह समझा होगा कि हिटलर और जर्मनीके अरिया बनानेकी बात कहनेसे सारा हिन्दुस्तान अरिया समाजी बन जायगा।

भैया—हिटलर जर्मनीके लोगोकी आँखोंमे धूल झोंकने के लिए यह झूठी-मूठी बात गढी थी। पहली लडाईमे जर्मन हार गये थे, हिटलर ने हजारो स्वयसेवकोको भूरी उरदी पहनाकर सडकोपर परेड कराना शुरू किया। जोको और उनके पिटठुओंने सोचा, कि राजा विलियम तो दुम दबाकर भाग गया, क्या जाने अब हिटलरके हाथसे जर्मनीका भाग फिर पलटे। इसमे कमेरोंके नेताओंने विश्वासघात करके मदद दी।

दुखराम—कमेरोंके नेताओंने कैसे धोखा दिया भैया ?

भैया—इसमे हमेसा खतरा रहता है दुक्खू भाई ! मरकस बाबा और लेनिन महात्मा दोनो कह गये हैं, कि कमेरोको अपने नेताओंकी सदा परख करते रहना चाहिए। जोंकोंके पास करोड़ोंका धन है, वह लाखोंका घूस-रिसवत दे सकती हैं। इसलिए जो कमेरे सजग नहीं रहेंगे, तो बेईमान नेता उनको धोखा दे देंगे। बिलायतमे ऐसा ही हो रहा है। मजूर-नेताओंको हिन्दुस्तानके कमेरोंका ख्याल होना चाहिए था, क्योंकि हिन्दुस्तान और बिलायत दोनो जगहके कमेरे एक ही नाव पर बैठे हुए थे। जो बिलायतके कमेरोंने अपने यहाँ जोंकोंका राज खतम किया, तो उनके पिट्ठू हिन्दुस्तानमे राज नहीं कर सकते। जो हिन्दुस्तानपर जोंकोंका राज मजबूत रहा तो बिलायतके कमेरे आजाद नहीं हो सकते। चौदह ही बरस पहले हमने असपेन देसमे देखा कि जब वहाँके कमेरे जोंकोंका राज खतम करने लगे, तो असपेनकी गोरी जोंकोंने मराको (अफरीका) की काली फौज लेकर असपेन कमेरोंपर धावा बोल दिया और जोंकोंका राज फिर कायम किया।

सन्तोखी—तो भैया ! तुम समझते हो, कि जो कभी बिलायतके कमेरे अपने यहाँसे जोंकोंका राज नहीं हासिल करते तो बिलायती जोंकें यहाँसे हिन्दुस्तानी फौजको अपने भाइयोंके साथ लड़नेके लिए ले जाती ?

भैया—कमेरे जोंकोंके भाई-बन्द नहीं हैं। जहाँ वे अपना महल, कल-कार-खाना, करोड़ो रुपया हाथसे निकलते देखेंगी, तो जानते हो वे चुप बैठी नहीं रहेंगी। वह कोई बात उठा न रक्खेंगी।

दुखराम—हाँ भैया ! जोंकोंको न कोई लाज-सरम न दया-माया, उनके लिए तो टका ही भगवान है।

भैया—जर्मनीके कमेरोंके नेताओंमे कुछने तो अपनेको जोंकोंके हाथमे बेच डाला, और कुछ हिजड़े थे। वह मरकस बाबाके नाम की माला जपते थे, इसलिए बहुतसे कमेरे धोखेमे पड़ गये। एक बार कमेरोंके हाथमे राज आ गया तो उनको चाहिए था कि जोंकोंका सब कुछ छीन लेते, उन्हे पीस-पीस कर रख देते लेकिन नकली सियारोंने कहना शुरू किया कि जल्दी मत करो, बहुत खून-खराबी होगी। धीरे-धीरे सब हो जायगा। जर्मनीमे कमूनिस्त भी थे, लेकिन कमेरोंके दूसरे नेताओंने कमेरोंके भीतर फूट डाल दी थी। सब एक नहीं हुए, लोग कितने बरस तक इन्तजार करते !

दुखराम—और बीचमे जोंकें चुप नहीं रही होंगी भैया !

भैया—चुप कैसे रहतीं ? उनके मरने जीनेका सवाल था। उधर हिटलरने जोंकोंके पैसेसे अपना बल बढ़ाया, इङ्गलैंडकी जोंकोंसे खूब मदद मिली। अन्तमे तालुकदारोंने भी राज उसके हाथोंमे दे दिया। राज हाथमे आते ही उसने अपनी सेना और हथियार बढ़ाना सुरू किया। उसने कहा—मक्खन खानेसे बन्दूक रखना अच्छा है। फ्रांसकी जोंकें कुछ घबराईं क्योंकि पिछली लड़ाईमे जर्मनीने उनका बहुत नुकसान किया था, लेकिन बिलायतकी जोंकोंका हाथ बराबर हिटलरकी पीठपर रहा। उनको यह ख्याल नहीं था कि कहीं हिटलर हमारे ऊपर न दौड़ आये। हिटलरने राज

सँभालते ही कमेरोको बेदरदीसे दबा दिया लेकिन बिलायतकी जोकोंकी नजर रूसके कमेरोंपर थी। उन्होंने समझा था कि जर्मनीमे सात-आठ करोड़ आदमी रहते हैं, जो हिटलरने सबको तैयार करके रूस पर हमला कर दिया, तो बोल्सेविकोंका राज नस्ट हो जानेसे दुनिया भर की जोंकें चैनकी बन्सी बजायेंगी। लेकिन रूसके कमेरोंका नेता इस्तालिन वीर गाफिल नही था।

दुखराम—इस्तालिन वीर कौन है भैया!

भैया—लेनिन महात्माका सबसे लायक चेला। लेनिन महात्माके मरनेपर उसीको रूसके कमेरोने अपना अगुआ माना। इस्तालिनका मतलब है, लोहा फौलाद।

दुखराम—तो इस्तालिन वीर फौलाद ही जैसा होगा भैया!

भैया—उसका मनसूबा फौलाद ही जैसा है दुक्खू भाई! और उसके ऐसा दूर देखनेवाला तो आज दुनियामे कोई नही। उसने रूसके कमेरोंसे कहा, दुनिया की जोकें चार बरस तक आपसमे लडकर बहुत कमजोर हो गई, उन्होने कमेरोंके राजाको खतम करना चाहा, लेकिन वह उसे कर न सकी। तो भी जैसे ही मौका मिलेगा वैसे ही वह कमेरोंके राजका गला घोटने लिए एक होकर दौड पड़ेंगी।

सन्तोखी—फिर इस्तालिन वीरने क्या इन्तिजाम किया भैया?

भैया—रोटी, कपडा और पढ़ने लिखनेके साथ-साथ अपने देसका कल कार-खानोंसे इतना मजबूत कर दिया, जिसमे जोकोके हमला करनेपर बाहरका मुँह ताकना न पड़े। पहिले तो राज हाथमे लेते ही लेनिन महात्माने और कामों के साथ यह काम जरूरी समझा कि रूसमे जितने नर-नारी हैं उनमे कोई अनपढ न रह जाय। लेकिन पढाई कौन भाखामे हो। दूसरेकी भाखामे पढाई हो तो भाखा ही सीखनेमे बहुत दिन लग जायेंगे। लेनिन महात्माने कहा कि हमारे यहाँ १८२ खौम हैं। सौमे नब्बे, पचानबे अनपढ हैं, लेकिन कोई खौम गूँगी नही है।

दुखराम—एकाध आदमी गूँगा हो सकता है, सारी की सारी खौम गूँगी कैसे होगी?

भैया—हाँ, उन्होंने कहा कि एकसौ बयासी खौमोंकी सबकी अपनी बोली है। बस जो बोली जो बोलता है, उसे उसी बोलीकी किताब पढाना चाहिए। कमेरा राजसे पहले पाँच छ खौमों को छोडकर किसीकी बोलीमे कोई किताब नही लिखी गई, न उनका कोई अच्छर था। पंडितोंने हरेक अवाजके लिए अच्छर चुना और फिर इसके बाद किताब लिख लिखकर छापने लगे।

दुखराम—अपनी भाखा हो, तब क्या सीखनेमे देर लगेगी भैया! दूसरेकी भाखामे पढाई करनेका नतीजा देख रहे हो न, हम चार दरजा हिन्दी पढे हैं? लेकिन घरमे तो हिन्दी बोलते नहीं, हमारी अपनी बोली है, उसीको बोलते हैं। और बडी मीठी बोली है भैया! हम लोग जो बोली बोलते हैं, इसका नाम क्या है भैया?

भैया—आजमगढ़, गाजीपुर, बनारस, मिर्जापुर जौनपुर, ये सब पुराने जमानेमे कासी-देश कहा जाता था। इसलिए हमारे यहाँकी भाखाको कासिका कहना

दुखराम—हमारे यहाँ भी भैया, कासिका बोली मे पढाई होने लगे, कोई अनपढ रह जायगा? खाली अच्छर सीखना है। और अच्छर तो

दिनमे सीख सकता है, लेकिन महतिमाने ठीक कहा भैया ! कि कोई बोल गूँगी नही है। लेकिन हम लोगोको गूँगा बना दिया गया । हँसते, रोते, बोलते, गाते हैं हम अपनी कासिकामे और हमको पढाई जाती है अरबी-फारसी भाखा।

भैया—हिन्दी पढना खराब नही है दुक्खू भाई ! लेकिन सुरुहीसे अपनी भाखाको छुडाके हिन्दी पढानेका यही नतीजा होता है कि लडके मिडिल पास कर जाते है, लेकिन तो भी न सुद्ध हिन्दी लिख सकते हैं न हिन्दीकी बडी-बडी किताबें समझ सकते हैं। आठ बरस पढना अकारथ ही गया न ?

सन्तोखी—अपनी भाखा मे पढाई होगी तभी भैया, कोई मरद-औरत अनपढ नही रहेगा और सब किताब, अखबार पढ समझ लेंगे।

भैया—लेकिन महात्माने सोचा कि अब हमारा राज जोंको का राज नही है। कमेरा लोगोको अपना राज चलाना है और जो कमेरा मरद-औरत अनपढ रहेंगे, तो राज काज कैसे चलायेंगे ? इसीलिए उन्होने पडितोंको इस कामके लिए बैठा दिया। उन्होंने रामन अच्छर क-ख बनाया और किताबे छाप छाप कर स्कूलोमे भेजना सुरु किया। लेनिन महात्मा और इस्तालिन बीरका कहना सुनते ही समूचे ही देसके लोग विद्दारथी बन गये। सत्तर सालके बूढे-बूढियो तकने अपने पोतो के साथ बैठकर अच्छर सीखा।

दुखराम—अपनी बोलीमे जो पढनेका इन्तजाम नही हुआ होता, तो बूढे-बूढियो को छोड जवानोको भी पढनेकी हिम्मत न होती। हमारे यहाँ देखो न, अपनी भाखाको तो कोई पूछता ही नही, हिन्दी पढाई जाती है, लेकिन वह भी नाम करने के लिए, नही तो बडी-बडी पढाई तो अँगरेजी मे होती है।

भैया—और अँगरेजी चौदह बरस पढनेके बाद भी बहुत थोडे ही आदमी लिख-बोल सकते हैं ?

दुखराम—हमको तो मालूम होता है, जोकें हमे पढने देना नही चाहती। अपनी भाखामे पढाई हुई तो सब मरद-औरत पढ जाएँगे, तब वह दुनिया जहानकी बात जानने लगेंगे, फिर उनकी आँखोमे धूल कौन झोंकेगा ? हम लोग तो भैया, अपने ही देसमे पराए हो गए हैं। न थानामे हमारी बोली, न कचहरी मे, न स्कूलमे, न इस्टेसनमे, वैसी तो अँगरेजी ही है। फिर जो हिन्दी-उर्दू है, उसमे जो चार आना भी हम लोग समझ जायें, तो धन भाग है। रूसमे तो ऐसा नही होगा भैया !

भैया—वहाँ चार आना नही सोलहो आने समझ जाते हैं दुक्खू भाई ! जौन इलाकामे जो बोली लोग बोलते हैं, वहाँ उसी बोलीमे इसकूल लगता है। थाना, डाकखाना, कचहरी, इस्टेसन सब जगह वही बोली चलती है। अखबार भी उसी बोलीमे छपते है, सिनेमा भी उसी बोलीमे चलता है। जो कोई दूसरी बोली भी सीखना चाहता है, उसके सीखनेका इन्तिजाम है। १८२ भाखा बोलने-वाले सभी कमेरे तो अब सगे भाई हैं। इसीलिए वह एक दूसरेसे बात भी करना चाहते हैं, इसके लिए रूसी भाखा को पढना चाहिए, उसका भी इतिजाम है।

दुखराम—उसी तरह जो हमारे यहाँ हिन्दी पढना हो, तो कोई हरज नहीं। हम लोग सब कुछ अपनी कासिका भाखामे पढें, ऊपरसे हिन्दी भी कुछ सीख लें, तो अच्छा ही है; दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता जानेपर बातचीतमें सुभीता होगा।

भैया—अपनी बोलीमे पढनेका यह फायदा हुआ, कि आठ ही नौ बरस के भीतर वहाँ एक भी आदमी अनपढ नही रह गया।

दुखराम—हिन्दुस्तानसे सात गुना बडा देस है न भैया ? और बीस करोड आदमी बसते हैं। तो सारे रूसमे सब कोई मूरख बेपढ नही है न ?

भैया—इस बातको तो कई बरस हो गये।

दुखराम—यह बहुत बडा काम है भैया, अन्धेको आँख देना है।

भैया—जोंके लोगोको अन्धा रखना चाहती है। जितने कल-कारखाने लडाईके वक्त टूट गये थे, जितनी रेलकी सडकें और खाने बिगड गई थी इस्तालिन बीरने सबको फिरसे तैयार करने को कहा। रूसके सारे मर्द औरत सभी मिसतिरी इन्जिनियर जुट गये और कमेरा-राज कायम हुए दस साल भी नही बीता, कि कल-कारखाना, रेल खाना सब पहले इतना माल पैदा करने लगे। खेत भी फिरसे आबाद हो गये, और उतना ही अनाज पैदा होने लगा। अब इस्तालिन बीरने कहा, कि पैर बढाके चलनेसे काम नही चलेगा, अब सारे देसको दौडना होगा, जिसमे हमारे देसमे सब जगह हजारो नये बडे-बडे कारखाने खुलें, तेल, कोयला, लोहा इतना पैदा हो, कि कोई जोंकोंका देस हमारा मुकाबला न कर सके। गाँव गाँवमे बिजली और पानीका नल लग जाय। और खेतमे दिनमे दस बिस्वा (कट्ठा) जोतनेवाले हल नही तीस बीघा जोतनेवाले मोटरके हल चले। सिचाईके लिए जहाँ नदीसे नहर निकल सके वहाँ नहर निकलें, जहाँ धरतीमे पाइप गाडनेसे पानी निकले, वहाँ पाइप गाडकर सीचनेका इन्तजाम किया जाय।

दुखराम—लकडीके हलकी जगह मोटरका हल ! और वह इतना बेसी खेत जोतता है भैया ?

भैया—मोटरके हलके सात सात फार होते है और फार एक एक हाथ गहरी जुताई करता है। तुम्हारे खेतम जितनी जगली घास—कुसकास जमती है उसकी जड खोदकर देखे कि वह धरतीमे कितने नीचे तक गई है फिर फालको उतना ही बडा लगा दें। एक बार खेत जोत देनेपर सब घास जड मूलसे निकल जाएगी, और तीन बरस तक खेतम कोई जगली घास नही निकलेगी। गहरी जुताईका यह भी फायदा है कि सीड बनी रहती है, गेहूँ चनकी जड धरतीमे नीच तक पैठती है और बरसा-बुन्दी कम भी हो, तो भी नीचेकी सीडसे काम चल जाता है। नई-नई तरहकी खाद तैयार करनेके लिये भी इस्तालिन बीरने हजारो कारखाने खुलवाये। उन्होने किसानो को समझाया कि हजारो टुकडोमे बँटे गाँवके खेतोमे मोटरका हल नहीं चल सकता।

दुखराम—३० बीघा रोज जोतनेका मोटरवाला हल छोट-छोटे कोलेमे कैसे चलेगा भैया ?

भैया—इसीलिए इस्तालिन बीरने किसानोसे कहा—गाँव भरका खेत इकट्ठा कर दो, मेड तोड दो, गाँव भरके लोग एक परिवारकी तरह मिलकर साझीमे खेती करें।

सन्तोखी—किसीके पास कम और किसीके पास बेसी खेत होता है भैया ?

भैया—इस्तालिन बीरने कहा, कि जो साझेकी खेतीमे नही सामिल होते, उनको खेत अलग दे दो और गाँवके जितने लोग इकट्ठा खेती करना चाहते हो उनके खेतोको एक जगह कर दो, और धरतीसे खेत बनानेका हक उन्हीको हो। जियादा खेतवाले किसान कुछ समय अलग जोतते-बोते रहे, लेकिन उनके पास चार अगुल खुरचनेवाला सतजुगसे चल आया हल था। उनके पास खाद और सिंचाई का उतना इन्तिजाम नही था जबकि उनकी बगलके बडे-बडे खेतोमे मोटरके हल चल रहे थे, पाइपसे सिंचाई होती थी कल खेत काटती और दाँवती थी। उन्होने देखा कि बेसी खेत रहनेपर भी हम उतना नही पैदा कर पाते जितनी साझीवाले किसानको मिलता है, फिर वे किसान भी आकर पचायतके पैरो पडे।

दुखराम—रूसम सब काम पचायतसे होता है भैया ?

भैया—रूसम लोग अपने देसको अब रूस नही कहते, अब उसे सोवियत सघ कहके पुकारा जाता है। सोवियतका मतलब वही है जो हमारी भाखामे पचायतका। वहाँ एकसौ बयासी खोमे बसती हैं उनमेसे एक है रूसी खोम, इसीलिए इस्तालिन बीरने कहा कि हम कई तरह के खोमोवाले देसको किसी खोमके नामसे नही पुकारना चाहिये। दुक्खू भाई! हम आसानीसे समझनेके लिए रूस रूस कहते रहे, नही तो अब उसका नाम है साम्यवादी समाज वाले पचायती-प्रजातन्त्र सघ।

दुखराम—सामवादी क्या है भैया ?

भैया—मरकस बाबाने जो सिच्छा दी है न, कि देस भरके अमेरोका एक साझा परिवार हो और देस भरकी धन धरतीका मालिक कोई एक आदमी नही बल्कि वही बडा परिवार। इसी सिच्छापर जो चले उसे सामवादी कहते हैं।

दुखराम—पचायती तो हम समझ गये लेकिन परजातन्तर क्या ?

भैया—जहाँ राजाका काम न हो, पर प्रजा ही अपना राज चलाती हो, उसको प्रजातन्त्र कहते हैं ?

सन्तोखी—और सघ तो जमातको कहते हैं न भैया ?

भैया—हाँ, वहाँ साम्यवादी पचायती प्रजातन्त्र एक एक खोमका अलग-अलग है, और सब प्रजातन्त्र एक जमात बन गया। इसीलिए सघ कहा गया।

दुखराम—तो वहाँ पक्का पचायती राज है।

भैया—गाँव, जिला, देस और सारे १८२ खोमोके, मुलुकका, इन्तिजाम पचायतें करती हैं। मरद हो चाहे औरत, सहर हो चाहे गाँव, अठारह बरसम बेसी जिसकी उमर है वह वोट देकर पचायत (सोवियत) चुनता है। गाँवके पचायतमे पच्चीस-तीस या चालिस मम्बर चुने जाते हैं। फिर इन मम्बरो की पाँच छ छोटी पचायतें बना ली जाती हैं। इन छोटी पचायतो मे किसीका काम होना है आपमी झगडोंका फैसला करना और पुलिसका इन्तिजाम देखना किसीका काम होना है असपताल और बीमारोका ध्यान रखना, किसीका काम होता है इसकूल, सिनेमा, पुस्तकालय आदिका परबन्ध करना। किसीका काम होना है खेतीबारीका इन्तिजाम करना।

दुखराम—तो भैया ! सोवियतवालोंने इस कहानीको झूठ कर दिया 'साझेके सुई संगडानेसे उठे'। भैया ! मुझे तो मालूम होता है, कि जोकोंने जान-बूझकर ऐसी-ऐसी कहावतें गढकर कमेरोंके भीतर फैला दीं। कमेरोमे एकके पास उतना धन और नौकर-चाकर है नही, कि उसके बलपर कोई बडा काम उठावें, साझेका काम करनेसे उनका बल बढता उसीको ताडनेके लिए जोकोने कहावत गढी छोटी-सी सुई भी साझेकी होनेपर बडे-बडे बाँससे उठानेकी तदबीर सोची जाती है।

भैया—हाँ दुक्खू भाई ! कमेरोको पैर फूंक फूंक कर रखना है। हजारों बरसोंसे जोकें राज कर रही हैं। उन्होंने हर जगह अपना जाल बिछा रखा है।

दुखराम—भैया ठीक कह रहे हो। मैंने ही न जाने कितनी बार दुहराया होगा और मैं समझता था कि यह कोई विधि-ब्रह्माका वचन है, लेकिन अब न मालूम हो रहा है, कि जोकोंने इसे गढकर हमारे भीतर फैला दिया जिससे मिलकर हम कोई काम कर न सकें।

भैया—जुलाहा अकेले ही न कपडा बुनता था, और खटकल-पटकलमे कितने सौ जुलाहे एक साथ काम करते है। देखो साझेवाला काम कितना जोरसे चल रहा है और अकेले काम करनेवाले जुलाहे उजड गये।

दुखराम—तो भैया ! सोवियत देसके किसानो और उनके गाँवोकी सकल ही बिलकुल बदल गई होगी ?

भैया—पहिली बात तो यह है, कि वहाँ अब छोटे-छोटे खेत नही रह गये हैं। तीन-तीन सौ चार सौ बीघाके खेत हैं, जिनको जोतने के लिए पाँच लाखसे ज्यादा मोटरहल और डेढ लाखसे ज्यादा काटने दाँवनेवाली कल हैं।

दुखराम—और यह मोटर और कल कहाँसे आती है भैया ?

भैया—१९२८ ई० से पहिले रूसमे एक भी मोटरहल नही बनता था, जोकोंके राजके समय कोई मोटर कारखाना नही था। लेकिन इस्तालिन बीरने कहा, कि हमे सब चीजें अपने यहाँ बनानी होंगी, नही तो किसी वक्त बाहरकी जोकें गला दबाकर हमे मार डालेंगी। आज खाली एक गोरकी सहरके कारखानोमे हर साल एक लाख मोटरें बनती है। मोटरलारी, मोटरहल, हवाई जहाज, सब सोवियतके कारखानोंमे बनते हैं। हर बारह-बारह चौदह-चौदह गाँवपर एक-एक मसीन-मोटरहलका इस्टेसन, उसे बडा गाँव समझो दुक्खू भाई ! उस गाँवमे जितने लोग हैं सब मोटर मसीन चलाना, उनकी मरम्मत करना, बस यही काम करते हैं। गाँवकी पचायत अपने गाँव का लेखा करती है, कितना बीघा खेत एक हाथ गहरा खोदना हैं, कितना बीघा पौन हाथ और कितनी बार जोतना है ? इसका हिसाब करके मोटर स्टेशनमे जाते हैं। जोताई आदिकी दर बँधी हुई है, दोनो ओरसे कागज-पत्तरपर दसखत हो जाती है, फिर मोटरवाले आकर खेत जोत-बो देते हैं। छोटे-मोटे कामके लिए एकाध मोटरहल गाँवमे भी होता है ?

दुखराम—तो गाँव भरकी साझे मे खेती होती है। और काम कैसे बँटा जाता है ?

भैया—हर कामका नाप बँधा हुआ है। जैसे समझ लो एक दिनमे दस बिस्वा जोतना चाहिए, जो किसीने पन्द्रह जोत दिया, तो

कामके लिए उसे डेढ़ दिन समझा जायगा; जो कोई पाँच बिस्वा ही जोत सका, उसका आधा ही दिन होगा। हर आदमीके कामका बहीखाता होता है, जिसमें रोज-रोजका काम लिखा जाता है।

दुखराम—तो बड़ा हिसाब-किताब रखना पड़ता होगा ?

भैया—सैकड़ों आदमियोंका काम, हिसाब-किताब नही रखा जायगा, तो गड़बड़ी नहीं मचेगी ? मान लो किसी धरमें सौ औरत और एकसौ पचास मरद काम करनेवाले हैं। दस-दस आदमी की एक टोली बन जाय, टोली अपना मुखिया बनायेगी। फिर दस-दस या पन्द्रह-पन्द्रह टोलीकी एक वड़ी जमात होगी, जिसको वहाँ बिरगेड कहते है। बिरगेड अपने मे से सबसे लायक औरत या मरदको अपना मुखिया चुनता है, जिसको बिरगेडियर कहते हैं। टोलीका मुखिया अपनी टोलीके साथ काम करता है, लेकिन बिरगेडियरको बहुत काम देखना-भालना होता है। आजके काममें कितना हुआ, कितना नही हुआ, इसका हिसाब और तन्देही करनी पड़ती है; इसलिए उसे और आदमियोके साथ अपने हाथ जोतने-बोनेका काम नहीं करना पड़ता। लेकिन बिरगेडियर लोग उन्ही कुदाल-फावड़ा चलानेवाले लोगों मे से बनते हैं।

सन्तोखी—खाद, पानी, अच्छी जुताई, बीजका इन्तिजाम होनेसे वहाँ पैदावार भी ज्यादा होगी ?

भैया—देखते नही गाँवके गोएड़ेके खेतमें फसल कितनी पैदा होती है ?

दुखराम—सुतर जाय तो मकई मे तीन-तीन मोटी बाल लगती हैं भैया ?

भैया—वहाँ भगवानके भरोसेपर खेती नही करते। कहते हैं जब आसमान से पानी नही बरसा तो धरतीमे तो पानी है ही। पाइप लगाकर धरती के भीतर के पानीसे खेत सीच डालते हैं। और फसल कितनी होती है, यह इसीसे समझ सकते हो कि एक-एक बीघा (⅝ एकड़) मे बीस-बीस मन तक चीनी उन्होने पैदा किया है।

दुखराम—एक-एक बीघामे बीस-बीस मन चीनी ? हमने तो बीस मन गेहूँ भी पैदा नही होते देखा ? वहाँ की ऊख बहुत मोटी होगी ?

भैया—वह बहुत ठडा मुल्क है दुक्खू भाई ? वहाँ ऊख नही पैदा होती। हमारे यहाँ जैसे सक्करकद होता है, वैसे ही वहाँ एक चीज पैदा होती है, जिसको चुकन्दर कहते है। वह बहुत मीठा होता है; उसीसे चीनी बनाई जाती है। ऊखकी चीनी-जैसी वह भी मीठी, दानेदार और सफेद होती है। और कपास बीघामें बारह-तेरह मन खूब बारीक रेसावाला बिनौला निकालकर पैदा होता है। तीस-तीस मन प्रति बीघा धान पैदा कर लेते है और जानते हो न दुक्खू भाई ? खाली हाथसे कुदाल चलानेसे ही काम नही चलता। जब कुदालके साथ दिमाग भी लगता है, तो धरती सोना उगलने लगती है। वहाँ ऐसा-ऐसा गेहूँ निकला है, कि एक बार बोनेपर तीन-तीन साल तक फसल काटते हैं। धानका बीज ऐसे तैयार किये हैं, कि अगहनी धान कातिकहीमें कट जाता है।

दुखराम—भैया ? जो ऐसा बीज हमको मिलता, तो हमारी दस बीघाकी धानकी कियारी भी दोफसला हो जाती। चढते कातिकमें धान कट जाते, तो खेत जोत-जातकर कातिकके अन्तमे गेहूँ बो सकते हैं।

भैया—जोकोका राज बिना हटाये यह नही हो सकता दुक्खू भाई ? वहाँ जिस फसलको तीन-चार हफ्ता पहले काटना चाहते हैं, उसके बीजको भिगोकर बडे-बडे गोदामोंमें फैलाकर रखते हैं और जानकार पंडित गरमी-सरदी नापते रहते है। दो दिन वैसा करके फिर बीजको सुखा लेते हैं। हिन्दुस्तानमे कहाँ उतने-उतने बडे गोदाम, सरदी-गरमी नापनेकी कल और लाखो रुपयेकी दूसरी चीजें हैं। यहाँ भी सरकारने जो बडे-बडे खेतीके कालेज खोले हैं, उनमे पाव-आध सेर बीज तैयार करके देखा गया है, कि रूसी विदियामानोका कहना गलत नही है। लेकिन जोकें अगर करोडो रुपये लगाकर देहातमे वैसा इन्तजाम करने लगें तो उनकी तोंद ही पचक जायगी।

दुखराम—ठीक कहा भैया ? बिना जोकोके हटाये हमारा दुख दूर नही हो सकता। जहाँ इतना अन्न, धन पैदा होता है, वहाँ के लोग तो बडे खुसहाल होगे।

भैया—खुसहाल ? वहाँ किसीकी हड्डी निकली दिखलाई नही पडती। आज जो अपने गाँवमे तुम आधे लडकोको हाड हाड निकले, फटी लँगोटी पहिने देखते हो, इसका वहाँ कोई पता नही। पहर भर रातसे आधीरात तक जो मरद-औरतको यहाँ खटना पडता है, वह भी वहाँ नही है। बिरगेडियरको इस फसलमें कितना काम करना है, यह पचायत बता देती है और देखती रहती है। बिरगेडियर हर टोली को हफ्तेका काम बाँट देता है और देखता रहता है, कि काम ठीक-ठीक चल रहा है कि नही ? टोली भी अपने कामका हिसाब मिलाती रहती है। टोली टोलीमे होड लगी रहती है। एक टोली जब पाँच दिनमे सोहनी खतम करना चाहती है तो दूसरी चार ही दिनमे खतम कर चावसी (साबासी) लेना चाहती है। फिर गाँवके दूसरे गाँवसे, एक परगनेसे दूसरे परगनेकी होड रहती है कि कौन अपने कामको अच्छी तरह और जल्दीसे खतम करता है।

दुखराम—गाँव गाँव और परगने परगनेमे होड (लागडाट) लगती है, हमारे यहाँ तो कुस्तीमे कभी-कभी दौडने और कूदनेमे होड लगती है।

भैया—वहाँ जिलाकी ओरसे लाल झण्डा रखा जाता है, कि जो परगना सबसे पहले काम करे, सबसे अधिक फसल पैदा करे, उसको लाल झण्डा दिया जाय। इसी तरह गाँवके लिए भी लाल झण्डा रहता है। मर्द-औरत सब जी तोडकर काम करते है कि झन्डा उनके गाँवमे आये। झन्डा जब किसी गाँवको मिलता है, तो मेला लग जाता है आसपासके गाँवोसे हजारो मर्द-औरत अपने-अपने गाँवोकी लारियोंपर चढकर आते हैं।

दुखराम—तो वहाँ गाँव-गाँव मे लारियाँ है भैया ?

भैया—न अब वहाँ बैलवाले हल रह गये और न गाडियाँ। हर गाँव मे आठ आठ, सात सात बडी बडी लारियाँ रहती है। काम भी आदमीको ७ घन्टेसे बेसी नही करना पडता। और काम करने मे आनन्द आता है दुक्खू भाई ! लोग तरह-तरहका गाना गाते हुए काम करते हैं। खानेका वक्त हुआ तो किसी पेडके नीचे खाना लेकर लारी आ गई। सब लोग बैठ गये। रोटी तरकारी, भात, माँस-मछली दूध-दही सब तैयार है। परोसनेवाले परोस रहे हैं, औरत-मर्द सब भोजन कर रहे एक ओर रेडियो बाजा लगा दिया, दुनिया भरकी खबर और मीठे-मीठे गीत हो रहे

दुखराम—रेडिहा बाजा क्या है ? क्या यह कोई फोनोगिलाफ है ?

भैया—जानते हो न दुक्खू भाई ! पत्थर हड्डीके हथियारो और तीर-धनुसके जुगसे मानुख जाति अब बहुत आगे चली आई है। यह मानुखके दिमाग की करामात है, लेकिन अफसोस है कि इस करामातका फायदा जोकोहीको मिल रहा है। रेडियो बाजा होता है एक चौकोर बाक्स, लेकिन उसमे बिलायत, अमेरिका, रूस कलकत्ता, बबई, दिल्ली सब जगह का गाना और खबर चली आती है।

दुखराम—क्या वह तारकी तरहसे है भैया ?

भैया—तार नही लगा रहता दुक्खू भाई ? जो यहाँ कनैलामे रेडियोबाजा आज आ जाय, तो यही बैठे-बैठे सब तुम्हे सुनाई देने लगेगा।

दुखराम—बडे अचरजकी बात है भैया ? सोमारु राउत सुनेंगे तो कहेंगे कि इसमे जरूर कोई जादू है।

भैया—जादू नहीं है दुक्खू भाई ! देखो हम तीन हाथ परसे बोल रहे हैं। हमारे मुँहसे जो आवाज निकल रही है, वह तुम्हारे कान तक पहुँच रही है न ?

दुखराम—हाँ पहुँच रही है, मैं सुन रहा हूँ।

भैया—जो मैं सौ हाथसे बात करूँ, तो तुम्हें आवाज सुनाई देगी कि नही ?

दुखराम—बहुत कम, और शायद नही भी सुनाई दे।

भैया—आवाज तो तुम्हारे कान मे आती है दुक्खू भाई, लेकिन कान कुछ ऊँचा सुनता है, माने कान अच्छी तरह पकड नही पाता, कानकी ताकत कमजोर हो जाती है। कानकी ताकत और बढा दी जाय, या आवाजको और तेज कर दिया जाय, तब तुम सुनने लगोगे दुक्खू भाई ! कलकत्ता, दिल्ली या मास्को लदन से जो आवाज निकलती है, वह हवा प१८ तैरती हमारे गाँवमे भी पहुँचती है, लेकिन वह इतनी मन्द हो जाती है कि हमारा कान उसे पकड नही पाता। रेडियो बाजाका यही काम है, कि जो आवाज दुनिया भरसे चलके हमारे यहाँ आई है, उसे पकडे और फिर तेज करके फोनोगिलाफ बाजाकी तरह निकाले। और कोई जादू-मादू नहीं है। रूसमे किसान जब खाना खाने बैठते हैं, तो उस वक्त रेडियो बाजा गाना सुनाता है, देस-देस की खबरें सुनाता है और अब तो वह ऐसी तदबीर कर रहे हैं, कि आवाज ही नही रूप भी दिखलाई पडने लगे और लोग बैठे-बैठे मास्को और लन्दनका नाच और नाटक देखें।

दुखराम—क्या भैया ! ऐसा भी होने लगेगा ?

भैया—देखते नही दुक्खू भाई ! दस हाथपर खडे रहते हो और तुम्हारा मुँह दरपनमे दिखाई पडता है। इसी तरह रूपवाला बाजा भी तैयार हो गया है, लेकिन अभी रूप उतना साफ नही आता। कुछ दिनोंमे वह भी ठीक हो जायगा।

दुखराम—होगा भैया ! लेकिन हम लोगोको तो रेडियो बाजा भी देखनको नही मिलता। कब जोंको का नास होगा ? और वहाँ भैया ! सब मेहरारू काम करती हैं ?

भैया—बडे-छोटे सब घरकी मेहरारू, यही न पूछ रहे हो दुक्खू भाई ! लेकिन हमने बतलाया कि वहाँ कोई बडा-छोटा नहीं, कोई जात पाँत नहीं, सब बरा-

वर हैं, भाई-भाई हैं। जोको के राजमे मक्खन जैसे मुलायम हाथ की तारीफ की जाती है, सोवियतमे घट्टा पड़े-कड़े हाथो की तारीफ होती है। जोकोंके मुल्कमे कामचार-देहचोरको इज्जत की जाती है, सोवियतमे मेहनती मजूर-किसान काम करनेवाले लोगोकी इज्जत होती है। बीमार बूढ़े, बच्चोको वहाँ काम करना नही पड़ता। नहीं तो कोई रानी बनकर बैठे ता उसे दूसरे दिन भूखा मरना पड़ेगा।

दुखराम—तो रानी फूलमती कुँअरिके लिए तो आफत हो जायगी भैया।

भैया—इसीलिए न राजा-रानी, सेठ-सेठानी, महथ महथिन, मोलवी-मोलवियानी सब एक ओरसे मरकस बाबाकी सिच्छाका बुरा कहते है, रूसको गाली देते हैं। लेकिन दुक्खू भाई! वहाँ जो काम करना पड़ता है वह तकलीफका काम नही होता। गाँव भरकी औरतो को काम करना पड़ता है, लेकिन बच्चा पैदा होनेसे महीना पहलेसे उन्हें छुट्टी मिल जाती है और बच्चा होने के बाद भी डेढ़-दो महीने छुट्टी रहती है। उस बखत भी दूध-दवाई, डाक्टर-दाई सबका खरच पचायतकी ओरसे मिलता है। औरतें खेत काटनेके लिए आती हैं, तो बच्चोका तम्बू पहिले ही पड़ जाता है। और दाइयाँ बच्चो को सँभाल लेती है। वहाँ बच्चो के लिए खिलौना रहता है पालना रहता है, दाइयाँ कहानी सुनाती हैं।

दुखराम—तो वहाँ बच्चोको पीटा नही जाता?

भैया—बच्चोके पीटनेका काम नही, क्योकि अब माँ बाप काम करते हैं तो बच्चे दाइयोके पास रहते हैं। जब काम नही रहता, तब बच्चोंको ले आते हैं। उनके साथ खेलते हैं, कहानी सुनाते है, लाड़ प्यार करते हैं।

दुखराम—सपना जैसे मालूम होता है भैया।

भैया—सरगको किसीने नही देखा, लेकिन हम हजारो सालसे सरगके नाम-पर ठगे जा रहे हैं। लेकिन मैं जिस सोवियत की बात कर रहा हूँ, वह सरग जैसी सपनेकी चीज नही। जोकें हमारा रास्ता न रोकें, तो पाँचवें दिन उस देस मे पहुँच सकते हैं और अब तो हमारे पड़ोसका चीन भी वैसाही हो गया।

दुखराम—हवाई जहाज, सुनते हैं दो घटेमे कलकत्ते से चला आता है।

भैया—हवाई जहाज से नही दुक्ख भाई, दो दिनमे रेलसे पेशावरी और वहाँ से काबुल होते तीसरे दिन कमेरोके राजमे पहुँच जायेंगे। किराया भी ४०) से बेसी नहीं लगेगा।

दुखराम—तब तो भैया, बहुत नजदीक है।

भैया—नजदीक है, लेकिन जोकोंने हजार तरहकी पहरा-चौकी-बैठाई है जिसमे बाहरके कमेरे रूसको आँखोसे न देख सकें, न वहाँकी बात ठीक तौरसे समझ सकें। वहाँके लोग बहुत खुशहाल हैं दुक्खू भाई! गाँव-गाँवमे इस्कूल हैं, असपताल, पुस्तकालय हैं, सिनेमाघर हैं।

दुखराम—सिनेमाघर भी हैं गाँव-गाँवमे भैया?

भैया—हाँ! काम सब पचायती होता है, इसलिए हर गाँवमे एक इतना बड़ा घर होता है, जिसमे वहाँके सारे नर-नारी बैठ सकें। उसी घरमें सभा होती है। बड़े गाँव हैं, उनमें तो रोज सिनेमाका तमाशा होता है, लेकिन छोटे गाँवो में

मोटरसे घूमता रहता है। आज कर्नेलामे आया, और दो तरहका तमासा यहाँ दिखलाया, फिर तीसरे दिन यहाँसे भदया चला गया, वहाँ भी दो तमासा दिखलाया। इसी तरह वह आगे बढ़ता गया, दूसरे हफ्ते दूसरी सिनेमामोटर आई और वहाँ भी उसी तरह दो-दो तमासा दिखाती चली गई। गाँवमे पचायतकी ओरसे दूकान होती है, जिसमे पचासो तरहकी चीजें बिकती हैं, और नफाका सवाल नही, क्योंकि दूकान गाँव भरकी है। गाँव भरके लोग मिलकर खेती करते हैं। जूता, मोजा सिलाईके भी कारखाने गाँवमे होते हैं। जिसने भी जितना काम किया, सबका काम बही-खाता पर लिखा हुआ है और कितना पैदा किया वह भी सामने है। मान लो दस लाख रुपयाका सामान गाँवमे पैदा किया गया और दो लाख दिन गाँव भरके लोगोने मिलकर काम किया, तो इसका मतलब एक दिनके कामका ५) । लेकिन ५ लाखमे पहिले साझेका खर्च, अस्पताल, दाईघर, पुस्तकालय, नाटकमडली आदिके लिए दो लाख या जितना हो, निकाल दिया जायगा। अब एक रोजके कामकी ४) पैदावार हुई। गाँवमे जिसने जितने दिन काम किया उसीके अनुसार पचायत उन्हे पैसा दे देगी। उससे आदमी घर भरके लिए कपडा बनवायेगा, जूता खरीदेगा या फोनोगिलाफ बाजा खरीदेगा, मेला तमासा देखेगा, खाना खायेगा।

दुखराम—गाँव भरका चूल्हा एक नही हो गया है ?

भैया—कही-कही हो गया है, लेकिन बहुत जगह नही हुआ है। सहरोमे ऐसा हुआ है।

सन्तोखी—सहरोकी भी एकाध बात बतलाएँ भैया ?

भैया—सहरो म जानते हो न सन्तोखी भाई सब मकान जमीन बडी-बडी जोकोकी होती हैं। राज सँभालते ही कमेरी की सरकारने जोको की जायदादको छीन लिया। सहरोके सब घर कमेरोकी सरकारके है। जो झोपडियाँ और गन्दी गलियाँ पहले थी, उन सबको तोडकर पाँच-पाँच छ छ तल्लाके बडे बडे मकान बन गये। जोकोके राज के समय राजधानीमे तेरह लाख आदमी बसते थे, जिनमे आधे सुअरकी खोभारो मे रहते थे, आज उस लेनिनगराद की आबादी दुगुनासे भी अधिक तीस लाख है, लेकिन अब उन खोभारोका पता नही है। अब सबके लिए अच्छे-अच्छे मकान, चौडी सडकें, जगह-जगह लडकोके खेलनेके लिए बगीचे तथा खेलके मैदान हैं। मकानकी मरम्मत, बिजली पानीका इन्तजाम लोगोकी चुनी हुई छोटी छोटी पचायतें करती हैं। मुहल्ले-मुहल्लेके रसोईघर हैं, जिसमे हजार दो हजारसे दस दस बारह-बारह हजार आदमियोका खाना बनता है। सिरिफ दाल भात उबाल कर रख नहीं दिया जाता, बल्कि पचास-पचास साठ साठ तरहके भोजन बनते हैं। जिन औरत मर्दों को रसोई बनानेका काम है, वह रसोई घरमे जाते हैं। सबेरेका जलपान और दोपहरका भोजन करा दिया बस छुट्टी, तिपहरी का जलपान और रातका भोजन बनानेका इन्तजाम आकर दूसरी टोली करेगी।

दुखराम—औरतोको तो वहाँ और भी आराम है भैया ? हमारे यहाँ तो बेचारी पहर भर रात रहते ही चक्की पीसने लगती है, चौका-बासन करना, खाना बनाके खिलाना, बीचमे लडका रोने लगा, तो उसे दो थप्पड लगाना, चावल कूटना, दाल दरना, फिर चौका-बासन करना, गोएँठेके धूएँसे आँख फोडते खाना बनाना,

खिलाते-पिलाते आधी रात हो जाती है। बेचारियोंको फिर पहर भर रात रहे से जागना पड़ता है। वहाँ तो इतना काम नहीं पड़ता भैया!

भैया—वहाँ इतना काम कहाँ? बतलाया नहीं, सबेरे ६ बजे ड्यूटी पर गई तो बारह एक बजे तक उनकी छुट्टी। खाना पोसना, कपड़ा धोना तो कल-मशीनका काम है। बरतन धोनेके लिए भी बहुत तरह कल लगी हुई हैं; मशीन घूम रही है; एक ओरसे बर्तन डालते हैं, एक साबुन लगा देती है; दूसरी मशीन मल देती है; दूसरी मशीन बरतन पानीसे धो देती है; फिर साफ बर्तन दूसरी ओरसे बाहर चला आता है। औरतने जाकर छै-सात घंटे रसोईघर में काम कर दिया। अब उसे अपने लड़केको लाड़-प्यार करना; सखियोंसे बातचीत करना; किताब पढ़ना या कोई और मनबहलाव का दूसरा काम करना होता है। घरके लोग चाहे रसोई-घरके बड़े-बड़े मकानोंमें जाकर खाना खा सकते हैं और चाहे तो बरतनासन भोजन अपने घरमें खा सकते हैं।

सन्तोखी—दुकान-उकान तो वहाँ भी होती भैया?

भैया—दुकान बहुत हैं सन्तोखी भाई, और इतनी बड़ी-बड़ी कि जिनमें हजार-हजार आदमी गाहकोंको सौदा बेचते हैं। लेकिन सब दुकानें पंचायती हैं, कमेरोंके पंचायती राजकी, चाहे छोटी-सी सिगरेटकी दुकान हो चाहे बड़ी से बड़ी दुकान हो, जो माल बेच रहे हैं, वह किसी सेठ महाजनके नफाके लिए नहीं कर रहे हैं। सब लोगोंकी ड्यूटी है। घंटेसे काम करना पड़ता है, फिर छुट्टी पूरा। फिर अपना मौज करें। बीमार होनेपर डाक्टर मुफ्त, दवा मुफ्त, पथ मुफ्त, और तनखाह भी नहीं कटती। बूढ़ा होनेपर सबको पेन्सन।

सन्तोखी—तब काहे को वहाँ किसी को चिंता होती।

भैया—चिन्ता बिलकुल नहीं! लड़के-लड़कियों को पढ़ानेके लिए फीस नहीं देनी पड़ती, और सात बरस तक सबको पढ़ना होता है। दोपहरका खाना लड़कों को स्कूलमें मिलता है और डाक्टर जैसा खाना बतलाए वैसा खाना। तीन बच्चोंके बाद जितने बच्चे पैदा होंगे, उनका सब खर्च कमेरा सरकार देती है। सात रुपया रोजसे कम किसीको मजूरी नहीं। जो घरमें मरद-औरत दो ही कमानेवाले हों, तो भी चौदह रुपया रोज या सवा चार सौ रुपया महीना तो जरूर ही आएगा। बताओ उनको क्या चिन्ता हो सकती है?

सन्तोखी—तभी तो भैया! रुसवाले इतनी बहादुरीसे लड़े? उन्होंने अपने हाथसे धरतीपर सरग रचा, जर्मन जोंकोंके रूसमें बैठने का मतलब क्या होगा, इसे वह अच्छी तरह समझते थे।

भैया—इस्तालिन बीरने कह कर नहीं दिखा करके दिखाया। सताइस बरस से रूसके कमेरोंका अगुआ है इस्तालिन बीर। मरकस बाबाने जोंकोंके जाल-फरेब को देखनेके लिए आँख दी और लड़नेका ढंग बतलाया। लेकिन महात्माने कमेरोंको लड़नेके लिए तैयार किया, फिर पाँच बरस तक लड़ाई लड़ी और दुनियाके छठे भागसे जोंकोंका नाम मिटा दिया। इस्तालिन बीरने सरगको धरती पर उतारा। गाँवोंको बदल दिया। कारखानोंसे देसको भर दिया। लोगोंको दिखला दिया, कि जोंकोंको हटानेसे दुनिया नरकसे सरग बन जाती है। लेकिन इस्तालिन बीरने यह भी

सोच लिया था, कि जोंकोंसे हमें लड़ना पड़ेगा। इसीलिए अपने हथियारको मजबूत किया, हर नौजवानके लिए फौजमें दो-तीन बरस रहना लाजिम कर दिया। सब विद्या सिखायी गई। करोड़ोंकी पलटन तैयार हो गई। मरद ही नहीं औरतें तकने भी हथियार चलाना सीखा, हवाई जहाज उड़ाने लगीं। बच्चे बचपन हीसे सौ-सौ, डेढ़-डेढ़ सौ हाथ ऊँचे मीनारोंपरसे छतरीके सहारे कूद करके निडर होने लगे, जिसमें कि हवाई जहाजसे कूदनेमें उन्हें भय न मालूम हो। मोटरके हलोंको ऐसा बनाया कि थोड़ेसे हिस्से को हटाकर दूसरा रख देनेसे टंक बन जाता था।

दुखराम—टंक क्या है भैया?

भैया—टंक आज कलकी लड़ाईका बहुत जबर्दस्त हथियार है, जिसपर बन्दूक की गोली क्या तोपका गोला भी असर नहीं करता। उसके पहिएमें रबड़की टायर नहीं, मोटी जञ्जीर होती है। चारों ओर तीन अंगुल मोटे फौलादकी चद्दर लगी रहती है, भीतर ही तोप रहती है। वह ऊँची-नीची सब जमीनपर चला जाता है। बड़े-बड़े पक्के मकानोंको तोड़ते हुए तो ऐसे घुसता जाता है, जैसे सूखे पत्तोंके ढेरमें हाथी। इस्तालिन वीरने चढ़ाईके लिए कमेरोंको पहले हीसे तैयार कर लिया था।

सन्तोखी—इस्तालिन वीरका तो बहुत बड़ा दिमाग है भैया।

भैया—कमेरोंके लड़कोंमें बहुतसे ही बड़े-बड़े दिमाग पैदा होते हैं, लेकिन उनको काम करनेका मौका ही नहीं मिलता। जब सारी दुनियाको पछाड़नेवाली हिटलरी फौजको लाल फौजने तहस-नहस किया, उसे भगाकर जर्मनीके भीतर जाकर उसका सत्यानास कर दिया, तो सारी दुनियामें लाल फौजके महासेनापति वीर यूसुफ इस्तालिनका नाम लिया जाने लगा, सब उनकी बुद्धि और बहादुरीका लोहा मानते हैं। लेकिन इस्तालिन वीर मजूरी करके खानेवाले एक चमारका लड़का है, और गोरे नहीं काले चमारका लड़का है। इस्तालिनने चौदह बरसकी उमरसे ही जोंकोंकी जड़ काटनेका काम सुरू किया। चौदह चौदह बार उसे कालेपानी की सजा हुई, तो भी वह जेलसे निकल भागता रहा और भेस बदलकर कमेरोंमें काम करता रहा। कमेरोंने रूसकी जोंकोंसे पाँच साल लड़ाई लड़ी। उसके जीतनेमें लेनिन महात्माके बाद जो सबसे बड़ा दिमाग था, वह इसी चमारके लड़केका।

दुखराम—हमारे यहाँ भी भैया! हम कितनोंको चमार कहकर अछूत कहकर पशु बनाकर रखे हैं और उनके साथ जरा भी दया मायाकी बात कहने पर पण्डित लोग पोथी लेकर मारने दौड़ते हैं। जो जोंकें न रहे, तो इनमें भी न जाने कितने-कितने वीर बहादुर निकलेंगे, कितने दिमागवाले दिखाई पड़ेंगे।

६ भस्मासुर भूतनाथ पर चढ़ दौड़ा था

भैया—उस दिन दुक्खू भाई, तुमने ठीक कहा था। सचमुच ही हिटलरने वही किया, जो भस्मासुरने भूतनाथके साथ किया। विलायत की जोंकोंने हिटलर को अपना लाड़ला बेटा बनाया था। जब (३० जनवरी १९३३ को) जर्मनीका राज्य

जोंकोंके इस गुण्डेके हाथमे आ गया, तो विलायतकी जोकें फूली न समाती थी। उन्होंने सोचा हमने हिटलरको इतना मजबूत कर दिया कि वह रूसके बोलसेविकोंपर टूट पड़े और हमारा यह सबसे बड़ा दुश्मन बरबाद हो जाय। पिछली लड़ाईमें जर्मनी ने जो खूनी जग छेड़ा था, उसको देखकर अग्रेज; फ़ांसीसी और उनके दूसरे मित्रोंने जर्मनीसे ऐसी-ऐसी सरतें मनवाई थी, जिसमे वह फिर सिर उठाने लायक न रह जाय। हिटलर एक ओर अपने देसवालोंसे कहता था कि हमे पंगु नही रहना चाहिए, दूसरी ओर बाहरी देसोंकी जोंकोंको खुस करनेके लिए वह बोलसेविकोंके सत्यानाश करनेकी बात करता था। जर्मनी और फ़ासके सरहदपर राइन नामकी एक नदी है। जर्मनीने यह सर्त मानी थी, कि वह राइनके इलाकेमे कोई फौज नही रखेगा। और यह भी लोगोको जबर-जस्ती फौजी विद्दा सिखाकर अपनी सेनाको नही बढायेगा। हिटलरने कमेरोंको अपनी तरफ खींचनेके लिये झूठ बोलना सुरू किया, कि हम भी अपनी खोमका सामबाद (जोंक बिना राज) चाहते हैं, कुछ लोग आसा रखते थे कि हिटलर कमेरोंकी भलाईके लिए कुछ करेगा, लेकिन हिटलर तो जोंकोंके हाथकी कठपुतली था, उसने तो कमेरोंपर ही खूब जुलुम किया। इसपर झूठी आसावाले लोग तिल मिलाने लगे। फिर तो राज संभाले डेढ़ बरस भी नही हुआ, कि उसने ३०, १९३४ को हजारों अपने ही साथियोंको बड़ी बेदरदीसे कतल करवा डाला। इनमे उसके ऐसे भी साथी थे जिनकी मदतके बिना वह इतना बढ़ सकता था। विलायतकी जोंकें और भी खुस हुईं।

सन्तोखी—क्यो न खुस होती, उन्होंने सोचा होगा, कि हिटलर के आस-पास जो थोड़े-बहुत जोंकोंके विरोधी रह गये थे, वह भी खतम हो गये।

भैया—हिटलरने दो साल और तैयारी की और मार्च १९३५ मे जबरजस्ती सेना बढ़ाने वाली सर्त भी तोड दी। पड़ोसी फ़ास बहुत घबराया। विलायती जोंकें कहने लगी, कि जो हिटलर फौज न बढ़ायेगा, तो बोलसेविकोंसे लड़ेगा कैसे ? हिटलरने अब बड़े जोर-सोर से सेना और हथियार बढाना शुरू किया। साल भर और बीता। ७ मार्च १९३६ को राइनके इलाकेमे उसने एक बहुत बडी फौज भेज दी। फ़ास बहुत फड़फड़ाया। लेकिन विलायती जोंकें समझने लगी कि बोलसेविकोंसे लड़नेके लिए हिटलरको ऐसा करना ही चाहिए। दुनिया के लोग आँख मलमलकर देखने लगे। उन्हें साफ मालूम होने लगा कि अब फिर दूसरा महाभारत होगा। बूढ़े बाल्डविन विलायतकी जोंकोंके बड़े सरदार यहाँ के महामन्त्री थे। बुढ़ापेके कारण उन्होंने गद्दी छोड़ी और उनकी जगह-पर जोंकोका सरदार नेविल चेम्बरलेन ३१ अगस्त १९३७ को विलायतका महामन्त्री बना। जोंकोंका सरदार होनेके लिए जितने गुनोंकी जरूरत है, वह सब इस आदमीमे थे। और उसके साथी भी उसीकी तरह एकसे एक छँटे थैलीसाह थे। साइमन, होर और हेलीफाक्स (जो पहिले हिन्दुस्तान का बड़ा लाट इरविन था) सभी एक ही हाँडीके महलाये हुए थे, 'कोउ बड छोट कहत वड दोसू।"

सन्तोखी—इरविन वाइसराय। ऐसे ही ऐसे न हिन्दुस्तानमे बड़ा लाट बन आते रहे।

भैया—और क्या जोंकें बेवकूफ थोड़े ही हैं, छँटे आदमियो को वह हिन्दुस्तान भेजती रही। चेम्बरलेन और उसकी गुटका यही मन्त्री था "थैली माता थैली

थैली बन्धू थैली सखा" । चेम्बरलेनने हिटलरको और बढावा दिया । वह समझ गया कि विलायतकी जोकें हमारे रास्तेमे कोई बाधा न डालेंगी । उसने १२ मार्च १९३८ को आस्ट्रियाके राजपर कब्जा कर लिया । विलायतकी कुछ जोकें घबराईं, लेकिन उनके सरदारोकी चडाल-चौकडी तो आसा बाँधे हुए थी कि हिटलर बोलसेविकोंके नास करनेकी बडी भारी तैयारी कर रहा है । हिटलरने पाँच बरसोंमे अपने सारे कारखानोको लडाईका सामान तैयार करनेमे लगा दिया, और नवजवानोको फौजमे भरती कर लिया । उसके टक, तोप, हवाई-जहाज और लाखो की पलटन का तमाशा देखने के लिए विलायत की भी जोकें जर्मनी जाती थी, और बहुत खुस होती थी । छ महीने और बीते । सितम्बर १९३८ मे हिटलरने अपने पूरबके पडोसी चेकोस्लोवाकियापर लाल-लाल आँख की । चेम्बरलेन बिलायतसे दो-दो बार उडकर हिटलरके दरबार मे गया । अन्तमे १९ सितम्बर को उसने, दलादिए (फ्रास) आदि जोक सरदारोंने चेकोस्लोवाकियाकी बलि दे दी । पहले हिटलरने थोडा-सा हिस्सा लिया, फिर १५ मार्च १९३९ को सारे चेकोस्लोवाकिया को हडप गया ।

सन्तोखी—दूसरे-दूसरे मुल्कोको हिटलर हडपता जा रहा था, तो क्यो बिलायती जोकोको भय नही हुआ; आखिर यह देस भी तो जोको हीके थे ।

भैया—चेम्बरलेन जैसे जोक-सरदारो का ख्याल था, कि चेकोस्लोवाकियासे ही रूस नजदीक है, इसलिए बोलसेविकोको नास करने के लिए हिटलरको वह मिलना ही चाहिए । चर्चिल जैसी कुछ जोकें घबडा रही थी, क्योकि वह समझती थी, कि जर्मनीकी ताकत बहुत बढ जानेपर जो कही उसने हमारी ओर मुँह मोडा, तो कैसे जान बचेगी ?

सन्तोखी—यह बात चेम्बरलेन और उसकी चडाल-चौकडीकी समझमे क्यो नही आई ।

भैया—स्वारथी अन्धा होता है । चडाल-चौकडी करोडपतियो की गुट थी । चेम्बरलेनका बाप अपने समयमे बिलायत का एक मत्री था । उसका अपना एक लोहेका कारखाना था । १९०० ई० मे दक्खिनी अफरीकामे लडाई हो रही थी । चेम्बरलेन मत्री भी था, उसने कारखानेकी चीजोका दाम दुगुना-तिगुना कर दिया । फौजके लिए उसीके यहाँ से सामान खरीदा जाता । उसने दोनो हाथसे खूब लूटा । उस वक्त बिलायत मे कहावत थी, "जितना ही अँगरेज राज बढता है, उतना ही चेम्बरलेनका ढेरा बढता है ।" यह तो बाप चेम्बरलेनकी बात हुई । बेटे चेम्बरलेनकी भी सुनिए । उसके हथियार के एक कारखाने (बर्मिघम स्माल आर्म्स) को १९३८ मे दो-सौ गिन्नी नफा हुआ था, लेकिन उसी कम्पनी ने १९३८ मे साढे चार लाख गिन्नी नफा लूटा—इस वक्त चेम्बरलेन बिलायतका महामन्त्री था ।

सन्तोखी—सरम होनी चाहिये थी भैया ! अपने ही सरकारका मुखिया और सरकारी खजानेसे इतना-इतना रुपया अपने रोजगारको दिलवाना ।

भैया—जोकोंके समाजमे ऐसी बातको सरम नहीं कहा जाता । इसे कहते है ईमानदारीका ब्योपार ? चेकोस्लोवाकियापर हिटलरने जब दाँत गडाया था, उस वक्त चडाल-चौकडीको थोडा डर तो लगा; लेकिन चेम्बरलेन, काम्डविन, होर, साईमन करोंगे रुपया बटोरने में लगे हुए थे । तोप, बन्दूक, टक, हवाई-जहाज बनानेके

लिए करोड़ो रुपया चाहिए और यह रुपये जोकोंकी ही तोंद काटनेसे आते, इसलिए वह उसके लिए क्यों तैयार होते ? उधर हिटलरके पास पलटन और हथियार अनगिनत थे, जब कि विलायती सूमड़ो ने मुट्ठी बाँध ली थी, और अपने कारखानोसे चौगुने दामपर खरीदे थोड़ेसे हथियार दिखलाने के लिए रख छोड़े थे। हिटलर जानता था, कि यह लोग बंदरघुड़की देनेसे और अधिक कुछ नही कर सकते। अब हिटलरने यूरपके एक बड़े भागपर कब्जा कर लिया था। जर्मनी, आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया सभी देशोके हथियारोके कारखाने उसके लिए काम कर रहे थे। बीस बरससे सिर झुकाए हुए जर्मनोको यह सब जादू जैसा दिखाई पडने लगा। हिटलरने जर्मन आरिया जातिको सारी दुनियापर राज करने के लिए भगवानकी ओरसे भेजा गया था, और साथ ही यह भी कि हर जाति मे नेता भी भगवान ही भेजते हैं। हिटलर सारी मानुख-जातिपर राज करने के लिए भेजा गया था। जर्मन जातिका इसका गर्व होने लगा। हिटलरने मक्खनकी जगह बन्दूक बनवाने की बात कहकर जर्मनो को आलू खाने के लिए मजबूर किया। उसने दिलासा दिया था, कि जब ससार भरपर जर्मन जातिका झण्डा गड जायगा, तब दुनियाके सभी लोगोका धरम जर्मन जातिके आराम और भोग के लिए काम करना होगा। हिटलर उतावला हो रहा था ससार विजयके लिए। अब उसके सामने दो रास्ते थे—एक तो अपने पहले कहे मुताबिक बोलसेविको के ऊपर दौड़े और दूसरा रास्ता था बाहरी जोकोके ऊपर झपटनेका। फ्रास, इग्लैण्ड सब जगहकी जोकोने पैसा बचा-बचाकर रखा था। फौजके मदमे जो रुपया मजूर भी किया था, उसे भी चौगुना दामपर रद्दी-सद्दी हथियार देखकर ले लिया था। जोकोके पास न हथियार था न पलटन जो हिटलर की फौजका सामना कर सकती। लेकिन बोलसेविकोके यहाँ आँख मे धूल झोकनेकी कोई बात नही थी; वह समझते थे कि दुनिया की जोके हमे खा जानेके लिए तैयार बैठी हैं। हमारी तभी रच्छा हो सकती है, जब हमारे पास अच्छे-अच्छे हथियार और पलटन हों। उन्होंने बीस बरससे बराबर इसके लिए तैयार की थी। जिन वक्त जर्मनीको निहत्था बना दिया गया था और वह नाम मातके लिए थोड़ीसी पलटन रख सकता था और जमन जनरैल टके-टके पर मारे-मारे फिरते थे, उस वक्त बोलसेविकोने उन्हें अपने यहाँ नौकर रखा और लड़ाईकी विद्दा सिखानेके लिए कहा। यह जरनैल कई कई साल रूसमे रह चुके थे ? उन्होंने वहाँकी लाल फौजको बहुत नजदीकसे देखा था कि लाल फौजकी ओर बढना अक्लमन्दी नही है।

दुखराम—बेचारी जोकें ताकती ही रह गई।

भैया—पोलैंड, जर्मनी और रूसके बीचमे पडता है। पोलैण्डने बीस सालसे अपने यहाँ तालुकदारोंका खूनी राज कायम कर रखा था और किसानो और मजूरोका हर तरहसे पीसना ही अपना काम समझा था। हिटलरने दो-चार मरतबे इन तालुकदारोंको चाय पीने के लिए बुलाया, फिर क्या था, इनका मिजाज आसमान पर चढ गया। यह भी तीसमारखाँ बन गए। जब हिटलरने चेकोस्लोवाकिया पर कब्जा किया, तो इन तलुकदारोंने भी बढकर एक परगना पर झपट्टा मारा। हिटलर मुस्कुरा रहा होगा, मेढक मच्छर को निगलने के लिए मुँह बा रहा है, उसे यह मालम नही कि उसकी पिछली टाँगें साँप के मुँहमे हैं।

दुखराम—तो हिटलर पोलैण्ड लेनेका निश्चय कर चुका था क्या ?

भैया—हिटलर जानता था कि अब आगेका कदम ऐसा होगा कि बिलायत और फ्रासकी जोकें चुप नही बैठ सकेंगी। वह फ्रासपर हमलाकर सकता था लेकिन फ्रासकी पलटनके बारेमे बहुत लम्बी-चौडी बातें कही जाती थी। अग्रेज कहते थे, कि दुनियामे तो दो ही पलटन है—धरती की पलटन फ्रांसके पास और समुन्दर की पलटन हमारे पास।

दुखराम—और धरतीकी सबसे बडी पलटन हिटलरसे कितने साल तक लडी भैया।

भैया—तीन हफ्ता ?

दुखराम—तीन साल भी नही, तीन महीना भी नही, तीन हफ्ता। और लाल पलटन के बारे मे क्या कहते थे।

भैया—वह लडनेवाली पलटन नही है, वह खाली तमासा देखने के लिए है। लेकिन आखिरमे बिलायत और फ्रास और दुनियाकी सभी जोको को लाल-पलटनका लोहा मानना पडा। बिलायती जोकोके सरदार चर्चिलने कहा कि लाल पलटन न होती तो हमारा कही ठौर-ठिकाना न रहता। लेकिन हिटलर ऐसा नही समझता था। वह सोचने लगा कि बाकी दो रास्ते हैं—पोलैंण्डकी ओर दौडा जाय तो पच्छिमकी जोकें गला फाडती भले ही रहें, लेकिन वह मदद कुछ भी नही कर सकती। फ्रास, बेल्जियम या हालैण्डकी ओर बढनेपर इन जोकोको कुछ करनेका मौका मिलेगा।

दुखराम—कांत (दाव) बैठा रहा था।

भैया—लेकिन पासा डालनेसे पहिले उसे कुछ और भी सोचना था। बोल-सेविकोने सुरूसे ही दूसरी सरकारो को समझाया था, कि दुनिया की साती के लिए सबको मिलकर कोसिस करनी चाहिए। लेकिन जोकोको सान्ती से क्या मतलब ? जब तक अपने घर मे नही लगती, तब तक आग देसन्तर होती है, लेकिन जब हिट-लरका खतरा साफ दिखाई देने लगा, तब फ्रास और इगलैण्डने रूसको अपनी ओर मिलाना चाहा। रूसने सोचा, कि जोकोका गुण्डा ज्यादा खराब होता है, इसलिए इस गुण्डे हिटलरको खतम करनेके लिए कुछ किया जा सके तो अच्छा है। फ्रास और इगलैण्डने अपने अफसर मास्को भेजे। लेकिन वह हिटलरसे लडनेके लिए बात करने गए थे, बल्कि चाहते थे कि हिटलर उतावला होकर रूसपर दौड पडे, लेकिन कमेरोंके नेता कच्चे गुइयाँ नही थे। इस्तालिन बीरने कह दिया, कि हम दूसरे की आगमें जलनेके लिए तैयार नही हैं। जोकोंके मुखिया मास्कोसे खाली हाथ लौट आए। उधर हिटलरने २३ अगस्त १९३९ को अपने बिदेस मन्त्री को मास्को भेजकर बोले-सेविको से कहा कि न हम तुमपर हमला करें न तुम हमारे ऊपर करो। कागजपर दोनो ओर की दस्तखत हुई। ११ दिन बाद ३ सितम्बर १९३९ को हिटलरने पोलैण्ड पर हमला कर दिया। बिलायत और फ्रासकी जोकों के लिए कोई चारा नही था। उन्होने भी हिटलरके खिलाफ लडाई छेड दी, लेकिन पोलेंडके तालुकदारो को कोई मदद नही पहुँचा सके। कुछ ही दिनोमे सारे पोलैण्डको हिटलरने ले लिया। लेकिन पोलैण्डने २१ साल पहिले रूस से कुछ जमीनको दबा लिया था। जब हिटलरकी फौज ने उधर बढना चाहा, तो लाल फौजने आगे बढकर अपने पुराने इलाके को ले

लिया। हिटलर मुँह ताकता रह गया। बिलायती जोकें बकने लगी, कि बोलसेविकोने तो पोलैंडकी जमीन ले ली और घायल पोलैंड की बेबसीको देखकर ऐसी कायरता दिखलाई। लेकिन इन जोकोको यह कहनेमे जरा सरम न आई, कि उन्हीके सरदार लार्ड कर्जनने रूसकी सीमा जहाँ तक ठीक की थी, लालसेनाने उतना ही लिया। हिटलरको इस तरह बढते हुए देख बोलसेविकोको अपनी सीमाकी रच्छाका पूरा ख्याल करना ही था। रूसकी पुरानी राजधानी और मास्कोके बाद सबसे बडा सहर लेनिनग्राद खतरे मे था, फिनलैंड की सीमा उससे १४ ही मीलपर थी। फिनलैंड भी तालुकदारो के हाथमे था, जिन्होंने ४० हजार कमेरोके खूनसे अपने हाथको रँगा था और जो हिटलरके छुटभैया बननेके लिए बराबर तैयार थे। सोवियतने फिनलैंडसे कहा, कि इस सीमा को थोडा और पीछे हटाओ हम तुम्हारी बगल हीमे तुम्हे तिगुनी जमीन बदलेमे देते हैं। लेकिन वह इसके लिए क्यो तैयार होने लगे? वह भी तो समझते थे, कि जब तक पडोसमे कमेरो का राज है तब तक हमारी गद्दीकी खैरियत नही। फिनलैंडने जब किसी तरह बात नही मानी और सरहदकी लाल फौजपर गोली भी चला दी, तब कोई रास्ता नही था। लाल फौजकी फिनलैण्ड के तालुकदारोसे लडाई छिड गई। उस वक्त चेम्बरलेनको फिर जोश आया।

दुखराम—हिटलरसे लडनेके लिए?

भैया—हिटलरसे नही, रूससे लडनेके लिए। लाखसे ऊपर पलटन फ्रास और और इगलैंडसे भेजी जाने वाली थी, लेकिन बीच हीमे फिनलैंडका दिमाग ठडा हो गया और उसने सोवियतकी बात मान ली। कमेरोका राज कायम होनेपर चार जातियाँ और बिछड गई थी जिनमे एस्तोनियाँ, लतविया, लियुअनियाँ इन तीनो देशोकी जोकोने अपने मतलबके लिए अपने देशको अलग किया था। वहाँ के कमेरोने देखा, कि उनकी सीमाके उस पार कैसा सरग तैयार हो रहा है। तीनो देसोसे कमेरोने अपने यहाँकी जोकोको विदा किया और वोट देकर तय किया कि हम भी सोवियत राजमे सामिल होगे और वे १९४० मे सोवियतमे सामिल हो गये। दक्खिन पच्छिममे बेसराबियाका इलाका था जिसे रूमानिया की जोकोंने दखल कर लिया था। सोवियत ने रूमानियाँसे अपनी जमीन लौटाने के लिए कहा, रूमानियाँकी जोकें पसद नही करती थी, लेकिन करें क्या? बेसराबियाको छोडना पडा। सोवियतमे अब सब मिलाकर सोलह बडे-बडे पचायती राज हैं।

दुखराम—नाम क्या-क्या है भैया?

भैया—(१) रूस, (२) उक्रइन, (३) बेलोरूसिया (४) करेलोफीन, (५) एस्तोनिया, (६) लतविया (७) लियुवानिया, (८) मल्दाविया, (९) जार्जिया, (१०) आरमेनिया, (११) आजुरबाईजान, (१२) तुर्कमानिस्तान, (१३) उज्बेकिस्तान, (१४) ताजिकिस्तान, (१५) किरगिजिस्तान, (१६) कजाकिस्तान।

दुखराम—यह तो बडे-बडे परजातन्तर हैं और कितने ही छोटे छोटे भी होंगे?

भैया—हाँ, लेकिन उनका नाम देनेसे क्या फायदा? कभी नकसा मिलेगा तो तुम्हे दिखला देंगे।

दुखराम—हिटलरने आगे क्या किया भैया!

भैया—हिटलर चुप तो नहीं बैठ सकता था। वह जानता था कि जब तक फ्रांस और इंगलैण्ड को नहीं पछाड़ते तब तक दुनियाके आधे भागको हम अपनी जोंकोंको चूसनेके लिए नहीं दे सकते।

सन्तोखी—तो हिटलर भी जोंको हीके लिए सब कुछ कर रहा था?

भैया—जोंको का ही तो आखिरी नायक था। इंगलैण्ड और फ्रांसकी पूंजी-पति जोंकोंने सौ बरस पहिले अपने यहां तालुकदारो (सामंतो) को पछाड़ने के लिए जनताकी गुहार उठाई थी। काम बन जाने पर उन्होंने जनताको चूसनेके सिवाय और कोई काम नहीं किया। लेकिन यह काम वह परदा डालकर करते आए थे और वोट और चुनाव का नाटक करते थे।

सन्तोखी—नाटक क्यों भैया?

भैया—जानते हो न, जोंकोंके राजमें वोटकी बिक्री होती है। कोई करोड़-पति ससद एसबलीके लिए खड़ा होगा, वह वोटरोंको रुपया बाँटता फिरेगा। अपने दलालोंको रुपया देकर वोट लेनेकी कोशिश करेगा। उसके सामने कोई किसान-मजूर कैसे खड़ा हो सकेगा।

दुखराम—उसकी जमा-पूंजी तो मोटरके तेलमें ही बिक जायगी।

भैया—इसीलिए मैंने कहा कि जोंकोंके राजमें ईमानदारीसे वोट नहीं दिया जा सकता। लेकिन, कभी-कभी इस वोटसे जोंकें घबराती भी हैं। जर्मनीमें हिटलरने कहा—नेताको भगवान चुनते हैं, इसलिए उसको किसी पाखडकी जरूरत नहीं, लेकिन तब भी अपनी गीत सुनानेके लिए वह कभी-कभी वोटका नाटक खेलता था। उसके गुडे देखा करते थे कि कोई आदमी वोट देनेसे जी तो नहीं चुराता या गड़बड़ तो नहीं करता। जहां पता चला कि बेचारेपर आफत।

सन्तोखी—गुडोंको भी भैया, जोंकें ही पैदा करती हैं?

भैया—हिटलरने डेनमार्क और नारवे जीता। फिर बेल्जियम और हालैंड को खतम किया और तीन ही हफ्तेमें फ्रांसकी जबरजस्त सेनाने भी हथियार रख दिया।

दुखराम—जबरजस्त सेना होनेपर जल्दी हथियार क्यों रख दिया भैया?

भैया—सुना है, हिन्दुस्तानके किसी राजाका अफसर अँगरेजोंसे मिल गया और उसने किलेमें बारूद की जगह भूसी भरवा दी थी।

दुखराम—इसी तरह का विश्वासघात फ्रांसमें हुआ क्या?

भैया—फ्रांसका राज दो सौ जोंक परिवारोंके हाथ में था। यही वहांके करोड़-पति थे। फ्रांसमे तीन बार कमेरोंने अपना जोश दिखलाया और आखिरी बार तो कई महीने पेरिसमें राज भी किया। फ्रांसकी जोंकोंको डर था कि फिर कहीं कमेरे उठ खड़े न हों, इसलिए भीतर ही भीतर वह जरमन जोंकोंसे मिल गए। फ्रांसीसी बहुत बहादुर जाति है। वहाँ सिपाही डरना नहीं जानते, लेकिन उनके हथियार निकम्मे थे और जरनैल तो और भी निकम्मे थे। जो तीन हफ्ते में हिटलर ने फ्रांसको हरा दिया, इसमें हिटलरी फौज की बहादुरी उतना कारन नहीं थी, जितना कि फ्रांसकी जोंकोंका बिसवासघात। फ्रांसके खतम होनेके बाद तो अब जर्मन गुडोंको दौड़ लगानेकी जरूरत थी। मसोलिनी पहले ही गिद्धकी तरह ताक लगाए हुए था।

अभी वह इगलैंड और फ्रासके जगी जहाजोसे डरता था, लेकिन अब पीछे रहनेका मतलब था, लूटमे हिस्सा न पाना, इसलिए वह भी हिटलरके साथ मिल गया। हगरी, रूमानियाँ और बोल्गारियाने बिना लडे ही हिटलरकी गुलामी मान ली। यूगोसलाविया और यूनानको उसने पीस दिया। लडाई अफ्रीकामे चली आई। अब सोवियतसे बाहरका सारा यूरप हिटलरके हाथमे था। सभी मुल्कोके कल-कारखाने उसके लिए काम करते थे।

सन्तोखी—तो यूरपमे कोई नही बच रहा था ?

भैया—बच रहा था इगलैंड, क्योकि वह यूरपसे बाहर समुन्दरके बीचका टापू था। हिटलरके पास उतने जगी जहाज नही थे। अपने हवाई जहाजोको वह भेजकर लन्दन और दूसरे सहरोको तहस-नहस करता है।

सन्तोखी—फ्रासकी जोकें तो हिटलरके जूते चाटने लगी, लेकिन चेम्बर-लेनका क्या हुआ ?

भैया—जानते हो न जोकोमे भी बेसी धनी और कम धनीका फरक होता है। दोनो एक दूसरे से घिना करते हैं। हाँ, जोकोके धनपर कमेरे दाँत गडाने लगते हैं, तब सभी जोकें एक हो जाती हैं। हिटलर और इग्लैंडके बीचमे एक पतलीसी खाडी रह गई थी। बिलायतकी जोकें घबरा गईं। फ्रासकी दसा क्या हुई, इसको उन्होने अभी-अभी देखा था। उन्होने समझा सातिके समय जिस जोक से काम चल सकता है, लडाईके समय उसीसे काम नही चलता। चेम्बरलेनका पाप एक-एक करके गिनाया जाने लगा। बेचारेको गद्दी छोडनी पडी और चर्चिल उसकी जगह महामन्त्री बना।

दुखराम—चर्चिल भी तो जोक था भैया !

भैया—बडी जोक और हिन्दुस्तान के लिए तो काला साँप था। लेकिन इसके बारेमे हम फिर किसी दिन कहेगे। इतनी बात जरूर है, कि हिटलरको बहुत आगे बढ़ते देखकर चर्चिल पहिलेसे ही बोलने लगा था—हमे लडने के लिए तैयार होना चाहिए। जोकोमे वही आदमी था, जो इग्लैंडको कुछ आसा दिला सकता था। वह पिछली लडाईका मन्त्री था ?

दुखराम—उसीने न कमेरोके राजको खतम करनेके लिए पलटन भेजी थी ?

भैया—और वह बीस बरस तक सोवियतको गाली देता रहा। लेकिन बिलायती पारलियामेट सभामे जोंकोका ही जोर था। इसलिए उसको महामन्त्री बना दिया गया।

७. पागल सियार गाव की ओर

भैया—दुक्खू भाई ! बहुत नाम कहनेसे समझमे गडबड मच जाती है। यूरपके छोटे-मोटे कितने देसोका नाम मैंने गिना दिया है। कहनेसे नकसा दिखानेमे

बात जल्दी समझमे आती। देखो जो कहीं नकसा मिल गया, तो मैं ले आकर दिखाऊँ। लेकिन एक नाँव और सुन लो। अमेरिका नाम सुना है ?

दुखराम—हाँ भैया ! नाम सुना है सोमारू काका कहते थे, कि परागराजमे अमेरिकाकी पलटन आई थी। लेकिन भैया ! अमेरिका अँगरेजोकी इतनी मदद क्यो करता था ?

भैया—कमाके खानेवालो मे सच्ची दोस्ती हो सकती है, लेकिन लुटेरोमे कभी नही हो सकती। जब हिटलर इतना बढने लगा, तो अमेरिकाको भी भय लगने लगा। उसने समझा जो फ्रांस और इङ्गलैंडको चित करके आधी दुनियामे हिटलर का कबजा हो गया और फिर दलबलके साथ हमारे ऊपर झपटा, तो तेरह करोड़ आबादीका अमेरिका उसके सामने कितने दिनो तक टिकेगा ? इसलिए अमेरिका पहिले हीसे इङ्गलैण्ड और फ्रांसको हथियार बेंच रहा था।

सन्तोखी—बेंचने मे तो नफा ही है न भैया ?

भैया—और खतरा भी। जो कही हिटलर जीत जाता, तब तो पहिले हीसे उसे नाराज कर लिया न ? अमेरिकाके परधान रुजवेल्टने कई बार हिटलरको जली-कटी भी सुनाई।

दुखराम—दोनोकी भेंट हुई थी क्या भैया ?

भैया—दोनोके भेंट होनेका क्या काम है दुक्खू भाई ! रेडियो बाजा एक की बात दूसरी जगह पहुँचानेको तैयार ही है। अब सुनो, हिटलर क्या सोच रहा था ? सारे फ्रांस और सारे यूरपके ले लेनेके बाद अब वह सोचने लगा कि इङ्गलैण्डकी ओर बढ़ें या क्या करें। अमेरिका इङ्गलैण्डकी ओरसे लडाईमे कूदनेके लिए तैयार दिखाई पडता था। उसने सोचा जो मैं इङ्गलैण्ड और अमेरिका से भिड गया तो समुन्दर पार करने के लिए उतने जङ्गी जहाज नही हैं, अमेरिकाकी ताकत बहुत बडी है। उसके पास इतने बडे-बडे कारखानें हैं, कि वह पतगकी तरह चुटकी बजाते-बजाते हवाई जहाज बनाता जायगा। जर्मनीसे करीब-करीब दूनी अमेरिकाकी आबादी है। वहाँ तक पहुँचना मुस्किल है। जो कही लडाई जियादा दिन चली, लडते-लडते जर्मनी बहुत चौस (निरधन) गया। और इधर बोलसेविक चुपचाप अपनी फौज बढ़ाते रहे, हथियार पर सान लगाते रहे, फिर तो सब कुछ कर-धरके भी हमे मरना ही होगा। बात यह थी कि बोलसेविको की कोई ऐसी नीयत नही थी। हाँ, वह हिटलरकी बातपर कभी बिसवास नही कर सकते थे।

दुखराम—जब जोकोपर ही बिसवास नही कर सकते थे, तब जोकोके गुरुपर कैसे करते ?

भैया—यूरप जीतनेसे हिटलर का दिमाग बढ गया। उसने सोचा—फ्रांस, बेल्जियम, जर्मनी, आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकियाके बडे-बडे गोला-बारूद बनानेवाले कारखाने हमारे लिए हथियार बना रहे हैं। हमारे सामने फ्रांस तीन हफ्ते नही ठहर सका। अब हमारी ताकत इतनी है कि बोलसेविकोको पीस सकते हैं। उसके जरनैलो-मेसे कुछने समझाया, कि लाल-पलटन के बारेमे ऐसा सोचना अच्छा नहीं है। लेकिन जरनैलोकी बात नही मानी।

दुखराम—क्यों मानेगा ? भगवानने दुनियापर राज करनेके लिए जरनैलोंको भेजा था या हिटलरको ?

भैया—हिटलर यह भी ख्याल करता था, कि चारों खूँट तक विजयपताका गाड़े बिना मेरे लिए खैरियत नहीं। जो इतने दिनों तक मक्खनकी जगह आलू खाते आये हैं, वह मुझे ही खाने लगेंगे। और इङ्गलैण्ड, अमेरिकाके हरानेमें कमजोर हो जानेपर हम फिर बोलसेविकों का कुछ नहीं कर सकेंगे।

दुखराम—और बोलसेविकोंके हरानेकी आसामें जर्मनीवाले पचीसों साल तक न आलू खानेके लिए तैयार होंगे और न यही आसा थी कि हिटलर अमिरतकी घरिया पीकर आया है।

भैया—हिटलरके लिए कागजपर दसखत करना कोई चीज नहीं। वह कह ही चुका था, कागजपर दसखतकी जाती है फाड़ने के लिए।

दुखराम—जोंकोंका यही धरम है।

भैया—आखिर २८ जून १९४१ को हिटलरने कमेरों की धरतीपर हमला कर दिया। हिटलरने जितनी तैयारी की थी, अभी लाल सेना उतनी तैयार न थी। लाल सेनाको पीछे हटना पड़ा, और कभी-कभी तो दस-दस बारह मील एक दिनमें पीछे हटना पड़ता। लाल सेना बहुत बहादुरीसे लड़ी। कितनी ही बार ऐसा देखा गया, कि लालसेनाने किले को तब तक नहीं छोड़ा, जब तक कि एक भी सिपाही जिन्दा रहा। लेकिन उसे अपार हानि उठानी पड़ी।

सन्तोखी—उस वक्त तो भैया ! मैंने भी सुना था कि रूस कुछ ही दिनोंमें खतम हो जायगा।

भैया—हिटलरने खुद कहा था, कि मैं तीन मासमें रूसको पीस दूँगा। रूसके ऊपर हमला होते ही चर्चिलके जानमें जान आई। चेम्बरलेन बेचारा तब तक मर गया था, नहीं तो न जाने उसे क्या होता। चर्चिल को अभी तक पूरी आसा नहीं थी। लेकिन अब उसे विश्वास होने लगा, कि रूसके कारण इङ्गलैण्ड बच जायगा। हिटलरने अपने दाहिने हाथ हेसको बिलायत भेजा। हेस जिस बड़ी जोंकके घर उतरना चाहता था, वहाँसे दूर किसी जगहमें उसे हवाई जहाजसे उतरना पड़ा। लोगोंने पकड़ लिया। बात पहले हीसे खुल गई तब भी बिलायतकी जोंकोंको उसने बहुत समझानेकी कोशिश की—हिटलर इङ्गलैण्ड से दोस्ती करना चाहता है, वह सिर्फ बोलसेविकोंको खतम करना चाहता है। वह पक्का वचन देनेको तैयार है, कि हम कभी इंगलैण्ड और उसके राजकी ओर आँख नहीं लगायेंगे। लेकिन आप लोग हिटलरसे दोस्ती कर लें। उसने बहुत समझानेकी कोशिश की कि बोलसेविक ही हम सबके सबसे बड़े दुसमन हैं। हिटलरके इस काममें सबको मदद देनी चाहिए।

दुखराम—तो बिलायती जोंकोंने हिटलर की बात क्यों नहीं मानी भैया ! वह तो उन्हींके भलाईकी बात कह रहा था।

भैया—हिटलर की बात पर कैसे विश्वास कर लेते ? चर्चिल जानता था कि जो रूस भी खतम हो गया, तो हम अकेले हिटलरसे कभी नहीं बच सकते। उस वक्त अकेले लड़ना अपने ही हाथों अपने गलेमें फाँसी लगाना होगा।

सन्तोखी—यह तो ठीक है, लेकिन बिलायती जोकें बोलसेविकोको भी तो अपना दुसमन समझती थी।

भैया—रूसपर हमला होते ही चर्चिलने रेडियोबाजामे तुरन्त कहा, कि इङ्गलैण्ड तन-मनसे रूसके साथ है। साथ ही उसने कहा था, कि बीस बरसमें मैंने बोलसेविकोके खिलाफ जो कुछ कहा है उसमेसे एक अच्छर भी लौटानेके लिए तैयार नही। यह सब कहते हुए भी चर्चिल इतना जानता था, कि बोलसेविक हिटलरकी तरह दूसरे देसोमे अपनी फौज भेजकर वहाँ के सहरोको उजाड कर बच्चों बूढोको मारकर रूसका राज कायम करने नही जायँगे। इसीलिए चर्चिलने उस बखत हिटलरके छुटभैया हेसकी बातको ठुकरा दिया और इस्तालिनसे हाथ मिलाया।

सन्तोखी—और हिटलर की फौज जोरसे आगे बढती गई।

भैया—जोरसे बढती गई। और मैं कहूँ सन्तोखी भाई! मुझे एक छनके लिए भी कभी मनमे नहीं आया, कि हिटलर लाल सेनाको हरा सकेगा, किन्तु जितनी तेजीसे वह मास्को और लेनिनग्रादकी ओर बढ रहा था, उससे दिल घबरा रहा था। मास्कोके बीस मील नजदीक पहुँचकर जब लाल पलटनकी मार पडी और जिस बखत जोक गुडोको पीछे हटना पडा, तो लोगोंको पता लगने लगा, कि लाल पलटनने पहिलेसे अपने लडनेका ढग सोच लिया था।

सन्तोखी—लेकिन भैया! लाल पलटन इतना पीछे क्यो हटती गई। पहिले ही क्यो नही पूरी ताकतसे लडी?

भैया—सन्तोखी भाई जो कोई आदमी जोरसे ढेल फेंक रहा हो और तुम सीधे अपनी हथेलीके पर ओडने (रोकने) जाओ तो पत्थर की तरह चोट लगेगी, लेकिन तुम दोनों हथेलीके बीचमें उसको आने दो और जैसे ही हाथको छुए वैसे ही हाथको बित्ता दो बित्ता पीछे हटा लो, तो फिर ढेलका सारा जोर खतम हो जायगा। इसी तरह लाल पलटनने सोचा कि हिटलर अपनी सारी ताकतसे हमला कर रहा है। कहाँ ज्यादा हमला करना है और कहाँ कम यह बात भी वही जानता है, इसलिए इस बखत सरबसकी बाजी लगाकर लडनेमे हमारा नुकसान ज्यादा होगा। वह हिटलरकी चोटको सहते हुए पीछे हट गई। लेकिन कहाँ पहुँचकर फिर पीछे नही हटना है, यह भी वह जानती थी। हिटलरने गाल बजाया था, कि रूस को तीन महीने में खतम कर दूँगा। मास्को पहुँचनेका दिन तक धर दिया था और सिपाहियोंमे बाँटनेके लिए ढेरके ढेर तमगे भी ढाल लिये गए थे। लेकिन मास्कोके नजदीक पहुँचते ही जैसे लाल पलटन अपना पजा बाहर निकालकर झपटी, कि हिटलरको लाखके करीब बढ़िया जवानवाली अपनी मजबूत पलटनको मरवाकर पचासों मील पीछे हट जाना पडा। लेनिनग्रादसे दस मीलपर हिटलरी पलटन पहुँच गई। और नौ सौ दिन तक घेरा डालकर बैठी रही, लेकिन मजाल था कि एक कदम आगे बढ़े। इन दोनो बातों ने बतला दिया, कि लाल पलटनका पीछे हटना हारे हुए जोधाका भागना नही था।

दुखराम—तो यह उसकी दाव-पेंच न थी भैया?

भैया—हाँ, दाव-पेंच थी। इस तरह हिटलरको जब सीधे मास्कोपर चढ़ाई करनेकी उम्मीद न रही, तो वह आगेसे घेर लेनेके लिए वोरोनेजपर धकधावें पडा, लेकिन लाल पलटनने उसका दाँत तोड दिया और वहाँ से भी हिटलरी गुडोको

पीछे हटना पड़ा। यह तीसरी जगह थी जिसने बतला दिया कि लाल फौजके तरकस मे अभी बहुत तीर हैं।

दुखराम—सचमुच ही भैया ? हिटलर और उसकी सेना गुडोकी सेना है, नहीं तो इस तरह बचन देकर तोडते।

भैया—वचन तोडने की ही बात नही दुक्खू भाई ? हिटलरने जो जुलुम रूसमे किया है, वैसा कभी नही सुना गया। वीरका काम है लडनेवालेसे लडना, न कि बरस-बरसके बच्चोको मारते जाना ?

दुखराम—क्यो भैया ? हिटलरने बच्चोको भी मरवाया ?

भैया—एक दो नही पचासो हजार। कितनोको बिखवाली हवा देकर मारा, कितनोको खून निकाल-निकालकर मारा ?

सन्तोखी—क्या खून भी पीते हैं भैया ?

भैया—यह पीने ही जैसा था। लडाईमे जो बहुत घायल होते है, उनको ताजा खून पिचकारीसे देना पडता है। सब जगह आजकल खून जमा करनेका इन्तिजाम है। जवान हट्टे-कट्टे आदमीके शरीरसे खून लिया जाता है। दस सेर खूनमेसे छटाँक दो छटाँक खून लेनेसे कोई आदमी नही मरता। मै भी दो तीन बार खून दे आया हूँ।

दुखराम—तो भैया ? तुम्हे तकलीफ नही हुई ?

भैया—तुमने कभी दवाईकी सुई ली है दुक्खू भाई।

दुखराम—हाँ भैया ? एक बेर तिल्ली (बरवट, पिलही) बढ़ गई थी, उसीके लिए चार-पाँच सुई ली थी।

भैया—तो सुई लेनेमे तकलीफ हुई थी कि नही ?

दुखराम—क्या तकलीफ होगी, जरा-सा छन्न-सा काँटा सा लगा, और फिर सुईके पीछे पिचकारीमे भी दवाको नसमे डाल दिया।

भैया—उसी तरह सुई चुभाकर पिचकारी मे खून निकालनेसे कोई तकलीफ नही होती, लेकिन जो ज्यादा खून निकाल लिया जाय तो आदमी मर जाता है।

दुखराम—तो राक्षसोंने ज्यादा-ज्यादा खून निकालकर बच्चोको मार डाला ?

भैया—हजारो बच्चोको खून निकालके मारा, हजारो बच्चो को गोली दाग के मार दिया, हजारो बेकसूर बूढोको मारा। औरतोको तो लाखोकी तादादमे मारा। हाथ बाँधकर लोगोको सहरके बाहर ले जाते और हुक्म देते कि खाई खोदो। खाई खोदनेपर फिर तड-तड गोली चला देते, और सब उसी खाईमे गिर जाते।

सन्तोखी—आदमीका दिल कैसे इतना राक्षस जैसा हो सकता ?

भैया—मैं भी सन्तोखी भाई ! इन बातोपर विश्वास नही करना चाहता था। जानते हो न लडाईमे झूठ साँच भी बहुत चलता है, लेकिन जब लाल फौजने हिटलरी गुडोको पीछे ढकेलना शुरू किया और कमेरोके शहर और गाँव फिर आबाद होने लगे तो उन खाइयोको खोदा गया। पिघली हुई बरफके नीचे सैकडो लासें निकली। उनका फोटो लिया गया। मैंने उन फोटुओको बम्बईमे देखा, तो सच कहता हूँ दिल खौलने लगा। नन्हें-नन्हे बच्चे, दो बरस, तीन बरस, चार बरसके एक

दो-दो नही, पाँच-पाँच, सात-सात सौ मरकस सूखे पडे हुए थे। औरतोंको पेट फाडकर बेइज्जती करके मारा गया। सैंकडो बेकसूर आदमियो को फाँसीपर झुलाकर महीने-महीने तक सहरके चौरस्तेपर लटका के छोड दिया गया।

दुखराम—तो इन राच्छसो को गुन्डा ही कहने से काम नही चलेगा, और कोई नाम ढूंढना चाहिए।

भैया—उनका जुलुम भी ऐसा है दुक्खू भाई, कि जुलुम कहने से वह पूरा समझमे नही आ सकता। लेकिन जब गुन्डोने इस तरह जुलुम करना शुरू किया, एक-एक सहरमे चालिस-चालिस पचास-पचास हजार निहत्थे आदमियोंको मार डाला, तो सोवियत-निवासियोने भी जानपर खेलना शुरू किया। बारह बरसके लडकोसे सौ बरसके बूढों तकने जान हथेलीपर रखकर गुन्डोके साथ मुकाबिला करनेका निश्चय किया। जो इलाका जर्मनीके भी हाथ मे चला गया था, वहाँके कितने ही नर-नारी जगलोमे भाग गये। उन्हे तो अपने इलाकेका कोना-कोना मालुम था, गाँवकी गली-गली अँगुलीपर थी। वह रातको जिस वक्त भी मौका मिलता, जर्मन पलटनियो पर छापा मारने लगे। छापा मारके सिपाहियोंके बन्दूक, मसीनगन सब छीन लेते थे। कुछ ही समय मे सारा इलाका छापामारोसे भर गया और जर्मनो-को अपनी छावनियोसे बाहर निकलने की हिम्मत न रही?

दुखराम—छापामार क्या भैया?

भैया—अपने दुस्मनोसे बदला लेने के लिए वह बहादुर लोग दिन या रातको इक्के-दुक्के या गफलतमे पाकर हमला करते, इसीको छापा मारना कहते हैं। इसीलिए इन बहादुरो को छापामार कहते हैं।

सन्तोखी—हाँ भैया! जब बराबरका जोर नही हो और एकके पास बडे-बडे हथियार और दूसरे के पास मुसकिल से कही एकाध बन्दूक हो, फिर यह छोड दूसरा रास्ता क्या था?

भैया—हाँ सन्तोखी भाई! जर्मनोंके पास हजार-हजार पन्द्रह-पन्द्रह सौ मनके टैंक थे, अनगिनत हवाई जहाज थे, बडी-बडी तोपें थी मिनट-मिनट मे हजार गोली चलानेवाली मसीनगनें थी। उधर लाल पलटन पीछे हट गई थी, और वहाँ रह गये थे गाँवो सहरोके निहत्थे नर-नारी। किन्ही-किन्ही गाँवोमे तो बदूकें भी न थी, क्योकि जर्मन गाँवमे पहुँचते ही बन्दूक छीन लेते थे, बादमे खाने-पीने की चीजें, रुपया-पैसा छीनते थे। लेकिन सोवियत के कमेरे जानते थे, कि हमारे सरगमे यह राछस घुस आए हैं। इनको सान्तिसे नही बैठने देना होगा। कभी-कभी तो बिना एक भी बन्दूकके छापामारोने अपना काम सुरू किया। जगलमेसे आकर कही अंधेरेमे छिपे रहते। जोखिम तो था, लेकिन गाँवके लोग जगल में छिपे छापेमारोके पास खाना पहुँचाते थे, गुन्डे कहाँ-कहाँ हैं, इसकी खबर देते थे। गुन्डे सिपाही चौबीस घटा तो सजग नही रह सकते और न चौबीसो घन्टा एक जगह एक हातेमे बन्द रह सकते थे। छापेमार अचानक उनके ऊपर कुल्हाडा, कुदाल, भाला कोई चीज लेकर टूट पडते। चार गुन्डोको मारा तो चार बन्दूक और गोली-गन्ठा मिला।

सन्तोखी—फिर तो मूर-मूर लेकर इसी तरह बढ़ता चलता जायगा।

भैया—हाँ, दो बन्दूक छीनी, फिर दो बन्दूक लेकर छापे मारे और चार नई बन्दूकें हाथमे आईं। इस तरह सैकडो, हजारो बन्दूकें, मशीनगनें, हाथके बम, पिस्तौल और बहुत से हथियार छापामारोके हाथमे चले आए। टैंक और बडी तोप भी कभी-कभी पकड लेते थे, लेकिन उनको जङ्गल मे ले जाकर छिपाना आसान नही था। बाकी हथियारोको छापेमार खूब चलाते थे।

दुखराम—खूब जवाब दिया भैया ? रूसके कमेरो ने और खूब बहादुरी दिखलाई।

भैया—दुनिया चकित है दुक्खू भाई ? उनकी बहादुरीसे। जर्मन सिपाहियो हीको वह नही मारते, बल्कि रास्तेकी सडको, पुलो, रेलोको तोड देते थे, जिसकी वजहसे जर्मनी को सामान पहुँचाना मुश्किल होता था। उनके सामनेसे लाल-पलटन लड रही थी, और पीछेसे लड रहे थे लाखो छापामार और छापामारिनें। इतने बहादुर लडनेवाले साथी अँग्रेजोको मिले, तब उनका भी हौसला बढा।

सन्तोखी—भैया, रूसके कमेरोकी बहादुरी और उनको मरकस बाबा रास्ते पर चलनेकी बात देखकर तो मैं समझता हूँ, कि दुनिया भरके कमेरे उनके साथ प्रेम करते हैं। सगे भाईकी तरह समूची दुनिया के कमेरेका दुख सुख एक सा है, और हैं भी वे सगे भाई। लेकिन अँगरेज जोकें जो अबकी बच गईं, यह अच्छा नही हुआ।

भैया—जब पहले जोकोकी लडाई थी, तो सन्तोखी भाई, मैं तुमसे क्या कहता था ?

सन्तोखी—यही कि तालुकदारोके झगडेसे हमको मरने की जरूरत क्या ? भले दोनो लड मरें।

भैया—हाँ, तो उस वक्त लडाई जोको-जोकोकी थी, विलायती जोकें दो सौ बरसोसे हमारा खून चूस रही हैं, उन्होने हमारी छाती पर कितना कोदो दला, उस सबको देखकर हम क्यो इन जोकोकी मदद करने जाते। लेकिन जब गुन्डा हिटलर कमेरोके राजपर चढ दौडा, तो बिल्कुल रग बदल गया। पानीकी नाली बह रही हो, तुम उसमेसे अंजली भरकर पियोगे, प्यास बुझाओगे, लेकिन उस नालोमे जैसे लाल जहरकी पुडिया डाल दी जाय, तो उस पानीका गुन बदल गया न ?

दुखराम—हाँ भैया, हिटलरने जिस दिन हमारे कमेरे भाइयोपर हमला किया, बच्चोको खून निकालकर मारा, निहत्थोको उनके हाथ कबर खुदाकर गोली चलवाई, तो दुनियामे कौन कमेरा—किसान मजूर—होगा जिसकी आँखसे आग न निकलने लगे और हिटलरको कच्चा खा जाने के लिए तैयार न हो ?

भैया—ठीक कहा दुक्खू भाई ? हिटलरने जिस दिन सोवियतके कमेरोपर हमला किया, उसी दिन दुनिया भरके मजूरो-किसानोपर हमला कर दिया। हिटलर जोकोका सबसे बडा खूनी राज कायम करना चाहता था, उसने अपने यहाँ के किसानो-मजदूरोको पीसा। पहिले हीमे हम यह सब जानते थे और हिटलरको फूटी आँखो भी देखना नही चाहते थे, लेकिन जब तक उसकी लडाई सिर्फ जोकोंसे रही, तब तक जोकोको छोडकर दूसरी जोकको हम कैसे पसन्द करते ? लेकिन अब बात वैसी नही थी। जो हिटलर रूसको जीत लेता, तो दुनियासे मजूर-किसान-राज खतम हो जाता।

हजारो बरसोसे बडे-बडे महात्माओ और त्यागियो ने सपना देखा था, कि एक ऐसा मानुख-समाज हो, जिसमे जोकोका नाम न रहेगा। उनका सपना ठीक था, लेकिन वह ठीक रास्ता नही जान सके।

दुखराम—रास्ता तो भैया मरकस बाबा हीने बतलाया।

भैया—हाँ, मरकस बाबा हीने बतलाया। फिर पेरिसमे लाखो मजूरोने प्राण दिया कमेरा राज्य कायम करनेके लिए, फिर रूसमे करोडो कमेरोने लड़ाई और भूखसे जान दी, तब जाकर दुनियामे पहले पहल एव मजबूत कमेरा-राज कायम हुआ। पच्चीस बरसमे उसने दुनियाके छठे हिस्सेको बहुत कुछ सरग-सा बना दिया। उसको देखकर दुनिया भरके कमेरोंकी हिम्मत बढी कि हम भी किसी दिन जोकोंको निकाल बाहर करेंगे। जो रूससे कमेरा-राज खतम हो जाता, तो दुक्खू भाई? यह सारी दुनिया के कमेरोका नुकसान होता कि सिर्फ रूस ही वालो का?

दुखराम—सारी दुनिया के कमेरोका भैया? मै तो जानता हूँ कि खूंटके बलसे बछरू (बछडा) कूदता है। जब हमने रूसके कमेरा-राजके बारेमे सुना, तो उमीसे हमारी भी हिम्मत बढ़ी, और हम भी लाल झडा लेकर कूदने लगे।

भैया—एक सडी मछली सारा तालाब गन्दा कर देती है, दुनियामे एक भी जोंक बच जाय, तो भी कमेरोके लिए खतरा है। और एक बार मानुख जातिमे जोकें इतनी भारी हारके बाद जो फिर पहलेकी तरफसे सारी दुनियापर छा गई जो लाल झण्डा फहराना सैकडो बरसोंकी बात हो जायगी। दुनिया जोकोंके लिए अकण्टक हो जायगी।

भैया—इसलिए दुक्खू भाई, जिस दिन हिटलरने सोवियतपर धावा बोला, उसी दिन मैंने अपने दोस्तोसे कह दिया, कि अब जाको-जाकोकी लडाई नही रही। हिटलरके हरानका मतलब है, कि जोकोके सबसे बडे गुन्डेको खतम करना, ऐसे गुन्डेको खतम करना जिसकी ओर सारी दुनियाकी जोकें आसा लगाये बैठी हैं। सोवियतकी जीत दुनिया भरके कमेरोकी जीत है।

सन्तोखी—यह बात साफ मालूम हो रही है भैया?

भैया—हिटलरने जब मास्को लेनिनग्राडका रास्ता बन्द देखा, तो वह दक्खिनसे बढा और बढ़ते-बढ़ते वोल्गा गगाके किनारे बसे तालिनग्राद सहर तक पहुँच गया। इस्तालिन वीरने अपने लाल जरनैलोको हुक्म दिया, कि अब एक कदम भी पीछे नही हटना है। और वह एक कदम भी पीछे नही हटे। यहीपर हिटलरको सबसे बडी हार खानी पडी। उसके दो लाख सिपाही मारे गये और एक लाख सिपाहियोको लाल पलटनने बँद किया। हिटलरकी जो वहाँ हार नही हुई होती, तो वह बाकू होते बाकूकी तेलकी खानोको लेते ईरान मे पहुँचता और फिर उसके बाद हिन्दुस्तान ही रह जाता था।

दुखराम—तब तो भैया इस्तालिनग्रादकी लडाई रूसके ही कमेरोंके लिए खतरेकी चीज नही थी, बल्कि हिन्दुस्तानके लिए भी खतरा हो गया था।

भैया—फिर हिटलरी गुंडे हिन्दुस्तान भी आते। यहाँ भी लाखों औरतो की इज्जत लूटते, बच्चे-औरतोंके खूनसे अपने हाथ रँगते और सैकडों सहर और गाँव

जलाकर छार कर डालते। लेकिन लाल पलटन हिटलर का दाँत खट्टा करने के लिए तैयार थी। स्तालिनग्राद पर मार खाकर जो हिटलर पीछे की ओर भगा, तो भागता ही गया, फिर उसका पैर कहीं नही ठहरा। हिटलर एक हजार मील तक सोवियतकी धरतीमे घुस आया था, लेकिन अब पिटाई शुरू हुई। पागल सियार गाँव की ओर आया। जब लाठी पड़ने लगी, तो अपनी माँदकी ओर भागा। सोवियत की अंगुल-अंगुल धरतीसे पापी निकाले गये। अब वह अपनी धरतीपर भागकर गये लेकिन लाल फौजने इन सियारोंको माँदमे बैठकर भी जीने नही दिया। उसने तै किया था कि पागल सियारोंमेंसे एकको भी नही छोड़ेंगे।

दुखराम—और भैया, इन गुंडोने जो बच्चोको मारा, औरतोकी इज्जत बिगाड़-कर गोली मारी, इसका भी बदला खूब लेना चाहिए था। इन गुंडोको कुत्ते की मौत मरना चाहिए था।

भैया—लाल पलटन बदला लेती नही है दुक्खू भाई, लेकिन पागल बनकर नही। इस्तालिन बीरने कह दिया कि जर्मनीके कमेरो को वहाँ की जनताको हम अपना दुसमन नहीं मानते। राछस आततायी हैं हिटलरी गुंडे, हम इन्ही गुंडो को उनके किये का मजा चखायेंगे। फिर जर्मनीकी जनता गुंडोके हाथसे छुट्टी पाएगी।

सन्तोखी—तब तो भैया, जर्मनीमे भी अब जोंको की खैरियत नही। वहाँ भी हिटलरी गुंडो के खतम होनेके बाद कमेरो का ही राज कायम होना था, लेकिन बिलायत और अमेरिकाकी जोंकें इसको क्या पसन्द करने लगी?

भैया—जोंके क्यो पसन्द करने लगी? लेकिन इस्तालिन बीरने कह दिया कि वहाँ कैसा राज कायम हो, इसे वहाँ होके लोगोपर छोड़ देना चाहिए। लाल पलटन अपने मनका राज कायम करने की कोशिश नही करेगी और न इंग्लैंड अमेरिकाको ऐसी कोसिस करनी चाहिए।

सन्तोखी—लेकिन भैया, बाहर की जोंकोंने जो मदद नही किया और उधर जर्मनीकी बड़ी-बड़ी जोंकें और उनके नायक हिटलरी गुंडे खतम हो गये, तो वहाँ कमेरोका राज छोड़ दूसरा कौन राज कायम हो सकता था?

भैया—लेकिन सन्तोखी भाई, इंग्लैंड अमेरिकाकी जोंकें चुप तो नही रह सकती। सोवियत और लाल पलटनको देखने ही से उनका प्राण निकल रहा था, जो सात करोड़के जरमनीमे भी कमेरा-राज कायम हो गया, तो दुनियामे जोंकें कै दिन टिकेंगी?

दुखराम—तो क्यो नही भैया, जोंको ने हिटलर से सुलह कर ली?

भैया—सुलह नही कर सकती थी सन्तोखी भाई! जिस दिन चर्चिल सुलह की बात भी जीभ पर लाता, उस दिन ही बिलायतके जोंको की खैरियत नही थी। बिलायत के लोगोने सैंतिस साल पहिले की लड़ाईमे भी अपने लाखो बेटो को मरवाया, उस वक्त भी बिलायत की जोंकों ने उसके सामने बड़ी लम्बी-लम्बी बातें कही थी जिससे मालुम होता था, कि अब कमेरोकी जिन्दगी सरवारी जिन्दगी हो जायगी। लेकिन जब वह लड़ाई खतम हुई, उसके बाद के इक्कीस सालो मे उनकी जिन्दगी और अधिक नरक बन गई। तीस-तीस, चालिस-चालिस लाख तक आदमी बेरोजगार

हो गए, उन्हें भूखे मरना पड़ता और बाल्डविन चेम्बरलेन जैसी-जैसी जोंकोंने हजारों की जगह लाखों का नफा कमाया। जब तक हिटलर खतम नहीं हो जाता, तब तक बिलायती जोंकोंको पैंतरा बदलनेके लिए कोई जगह नहीं थी।

सन्तोखी—लेकिन हिटलर के खतम होने के बाद वह रूस से क्यों ना लड़ी ?

भैया—तुम यही ख्याल करके कह रहे हो न सन्तोखी भाई कि जोंकें नहीं चाहती कि जरमनी जैसे बड़े मुल्कमे कमेरोंका राज हो, जिससे सारी दुनिया की जोंकोंके आगे अँधेरा छा जाय। लेकिन इस लड़ाईका फल क्या हुआ, इसके बारेमे हम किसी दूसरे दिन बतलायेंगे। अब तुमको यह जानना चाहिए कि क्या बात थी कि हिटलरी फौज के सामने फ्रांसकी जैसी जबरदस्त सेना तीन हफ्ते भी नहीं ठहर सकी। हिटलर तीन महीनेमे रूस ले लेनेकी बात कहकर गाल बजाता ही रहा, लेकिन वह रूसकी धरती छोड़कर अपने घर मे भी नहीं लड़ सका ?

सन्तोखी—भैया, गुन्डे बहुत दिन तक कहाँ डट सकते थे ! उनके सिर पर काल नाच रहा था।

भैया—ठीक है और इसका कारण यही हुआ कि पागल कुत्ता रूस की ओर दौड़ा। मैंने बतलाया कि सोवियतके कमेरे कितने थे। लाल सिपाही तनखाह के लिए नहीं लड़ता था।

दुखराम—तनखाह के लिए लड़ते हैं जोंकों के सिपाही। जोंकें तनखाह छोड़कर कोई ऐसी चीज उनके सामने नहीं रखती, जिसके लिए वह जी-जानसे लड़ें।

भैया—रूसमे कमेरे अपने ही अपनी पचायत चुनते है और यही पचायत राज चलाती है। गाँव मे भी १८ बरससे बेसीके मर्द औरत वोट देकर पचायत चुनते हैं, जिले की भी पचायत वही चुनते हैं, अपने-अपने प्रजातन्त्रकी भी पचायत उन्हीं को चुनना होता है। फिर हिन्दुस्तान ऐसे सात देशोंके बराबर सारे सोवियत देश की सबसे बड़ी पचायत वही चुनते है।

दुखराम—तो नीचेसे ऊपर तक सब पचायती ही काम है भैया ?

भैया—हाँ, सब पचायत है। सबसे बड़ी पचायत (महासोवियत) के लिए तीन लाख आदमी पर एक आदमी चुना जाता है। उस पचायत के दो हिस्से या घर हैं, एक घरके लिए हर तीन लाखपर एक आदमी चुना जाता है, दूसरे घरके लिए खोमका बराबर आदमी चुना जाता है, चाहे कोई खोम पचास ही हजार आदमियोंकी हो। रूसी खोमकी आबादी बारह करोड़ के करीब है और हिन्दुस्तानके पड़ोसमे रहने वाली ताजिक खोम चौदह ही लाख है, लेकिन दोनो पचीसहीं पचीस पच चुनते हैं, इसलिए जिसमे ज्यादा आदमी रहनेवाली खोमके ही पच अधिक न चुन लिए जायें। यही बड़ी पचायत सारे सोवियत देसके मन्त्रियों को चुनती है। इस्तालिन वीरने सोवियत का जितना धनवान, बलवान बना दिया है, उसके कारन सोवियतका बच्चा-बच्चा उसे प्रान से भी अधिक प्यारा समझता है। लेकिन इस लड़ाईके पहिले इस्तालिन वीरने कोई सरकारी दर्जा नहीं लिया था। जब लड़ाई का खतरा बहुत बढ़ गया, तो बड़ी पचायतन इस्तालिनको ही अपना महामत्री और महासेनापति बनाया।

दुखराम—और इस्तालिन वीरने वह करामत दिखाई, कि सोवियत क्या दुनियाभरके कमेरे कभी उसका उपकार नहीं भूलेंगे।

भैया—सोवियतने अपने को फौलाद जैसा मजबूत बनानेका काम बहुत पहलेसे शुरू कर दिया था। जनरैल, जानते हो, पलटन का सबसे बडा अफसर होता है, उसके ऊपर मार्सल होता है। जोकों के राजमे पचास बरसकी उमर से पहिले कोई जनरैल बननेका सपना भी नही देख सकता। लेकिन सोवियतमे बत्तिस-बत्तिस, तैतिस-तैतिस बरसके जनरैल हैं। पैंतिस-छत्तिसके तो वहाँ मार्सल हैं। कुछ साल पहले जो बात सुने होते, तो विलायत की जोकें जानते हो क्या कहती ?

दुखराम—क्या कहती हैं भैया ?

भैया—कहता, कि जिनको अभी माँका दूध पीना चाहिए, उन छोकरोको जनरैल बना दिया।

दुखराम—तो जोकोंके यहाँ बूढ़ो ही का मान ज्यादा है ?

भैया—सोवियतमे भी बूढोका मान करते हैं लेकिन जवानोपर उनका बिसवास ज्यादा है। जानते हो न लड़ाईके हथियार और लड़ाईके दाँव-पेंचमे रोज नई बातें निकलती आती हैं। नई बातोको नया दिमाग जितनी जल्दी पकड सकता है, उतना जल्दी बूढा दिमाग नही पकड सकता।

दुखराम—हाँ भैया ! तीर-धनुसके जमानेके जनरैल जो आजकी लडाईमे जनरैल बना दिये जायें तो उनके दिमागमे तीर-धनुस ही ज्यादा रहेगा, उनकी पैंतराबाजी भी उसी जुगकी होगी। जुमराती दादाको देखते नही, नब्बे बरससे इधरकी कोई बात ही नहीं करते तड़के साबुन लगाते हैं, तो उस पर भी गाली देते हैं। बहुओके साबुन लगानेकी बात सुनते हैं तो कह देते हैं—बस बस बेसवा हो गई। बूढो का दिमाग ऐसा ही होता है न ! मैं तो समझता हूँ भैया ! फ्रासके इतना जल्दी हारनेके भी कारण ऐसे ही बूढे जनरैल रहे होंगे।

भैया—यह बात बिल्कुल ठीक है दुक्खू ! विलायतके जनरैलोकी भी वही हालत थी। पाँच हिस्सामें चार हिस्सा हिटलर की फौज लाल सेनासे लडनेमे लगी हुई थी लेकिन पाँचवें हिस्से की पलटन से भी लडनेमे यह बूढ़े जनरैल चीटी की चालसे बढते थे। अफरीकामे यही देखा, इटली मे यही देखते रहे और फ्रासमे भी अँग्रेजोकी पलटन यही करती रही। एक तो इनके जनरैल पचास साठ बरसके बूढे होते थे, ऊपरसे तालुकदारो और करोड़पतियोंके बेटे !

दुखराम-एक तो करैला दूसरे नीमपर चढा, लेकिन जोको का इसमे भी मतलब होगा कुछ भैया !

भैया—कुछ नही बहुत मतलब है। एक तो विलायतके तालुकदारो-जमीदारोंमे बापकी मिल्कियतका मालिक सिर्फ बडा लडका होता है, छोटे लडकोको कोई नही पूछता, उनके लिए भी खाने-चबानेका कोई इन्तजाम होना चाहिए। कमेरोंके बेटे हो गये, तो पलटन हमारे हाथमे न रहेगी। पलटन हीके बलपर न जोकें कमेरोका खून चूस रही हैं ? इसी वास्ते तालुकदारो ओर जोकोंके ही लडकोको अफसर बनाया जाता है। जो कोई मामूली आदमी किसी तरह घुसकर छोटा लफ्टेन्ट हो गया, तो बिना बडे अफसरो के सिफारिसके तरक्की होती नही और बेचारे को कप्तान और मेजर तक ही जिन्दगी बिता देनी पडती है। दूसरी ओर सिफारिसके बलपर तालुकदारोंके नालायक लडके भी खट-खट ऊपर चढते चले जाते हैं।

दुखराम—तब तो भैया पलटनमे भी जोंकोंने 'छीया-छीया' कर दिया ?

भैया—ऊपर-भीतर, अगल-बगल सब जगह जोंकोंकी सास सड़ रही है। नाक बिना लोग परेख नही पाते। यही भाग्य समझो कि सास पलटन लड़नेके लिए आई, नही तो ये नवाबजादे कहीके नही रहते। अँग्रेज कमेरो के लड़के लड़नेमें किसीसे कम नही। लेकिन सोवियत का कुछ दूसरा ढग है। वहाँ जवानोंपर बिसवास किया जाता है। वहाँ तालुकदार, नवाब जोंकें रह ही नहीं गई हैं कि उनके लड़के पलटन मे आवें और सिफ़ारिस के बलपर जनरैल बन जायें। वहाँ सिपाही से लेकर जनरल-मार्सल तक सभी कमेरोकी सन्तान हैं। तरक्की होनेमें कोई देर नहीं लगती, जो आदमी लायक है। कोयले की खानका मजूर वोरोसिलोफ़ मारसल बन गया। सोवियतमे लड़कोंके पढ़ने-लिखनेका इन्तजाम ऐसा ही है, जिसमे की जिस कामके लायक काबिलियत है, वह बस वहाँ पहुँच जाते हैं।

सन्तोखी—क्या बात है भैया ?

भैया—मैने पहले बतलाया है न, कि वहाँ लड़के-लड़की को जबरदस्ती पढ़ाया जाता है। मास्कोमे नौ बरसकी जबरजस्ती पढ़ाई है और बाकी सारी सोवियत भूमिमें सात बरसकी—सातवें बरससे पढ़ाई सुरू होती है और चौदहवें मे खतम होती है।

सन्तोखी—हिन्दुस्तानसे सातगुना बड़ा सोवियत देस है न भैया ? तो क्या वहाँ सब जगह एक-एक गाँवमे मदरसा है ?

भैया—हाँ, जैसे हवा, पानी वैसे ही वहाँ पढ़ाई समझी जाती है। फिर लड़के तो मदरसामे सात बरसके होकर जाते हैं, लेकिन उनकी पढ़ाई पैदा होते ही होने लगती।

दुखराम—पैदा होते कैसे लड़का पढ़ेगा भैया ?

भैया—हमने कहा था न, कि वहाँ बच्चों के रखने के लिए दाईघर बने हुए हैं। माँ जब काम करने जाती है तो बच्चोको दाईघरमें दे आती है। दाईयाँ बेपढ औरतें नहीं हैं। वह भी पढ़ी लिखी रहती हैं और यह भी सीखे रहती हैं कि बच्चोको कैसे रखना चाहिए। पालनेवाला बच्चा पालने मे झूलता है, आँख से जिस चीजके देखने, कानसे गाना सुनने या तरह-तरहके खिलौनों को देकर उनको बहलाया ही नही जाता, बल्कि हर तरह की चीज का ध्यान कराया जाता है। जब लड़के बोलने और बात समझने लगते हैं तब उन्हे ग्यान बढ़ानेवाली छोटी छोटी कहानियाँ सुनाई जाती हैं। लड़कोंके खेलने के लिए हरेक दाईघरमे सैकड़ो खिलौने होते हैं, मोटर होती हैं जो चाभी देने से चलती हैं। रेल और हवाई जहाज होते हैं वह भी चलते हैं। कुछ बड़ा होने पर लड़को की अपनी रेलवेलाइन है जिसमे इजन चलानेवाला भी लड़का है, गार्ड भी लड़का ही है। रेलवे तीन-तीन चार चार मील तक वह अपनी रेल चलाकर लौटा लाते हैं।

दुखराम—भैया ! इतने छोटे-छोटे बेबूझ लड़को को इजन थमा दिया जाता है तो खतरा नहीं होता ?

भैया—उतरे की बात उनको पहले बतला दी जाती है और उनका इजन भी पाँच-छ मीलसे बेसी घन्टेमे नही चल सकता। लड़के तो देखते ही हो कि पहले खड़े होने हैं तो गिरते भी हैं तो क्या पैर टूटनेके डरसे उनको खेलने न दिया जाय।

कितने माँ-बाप लडकोको पेडपर चढने नही देते, पानीमे तैरने नही देते, लेकिन यह ठीक नहीं है। आदमी का बच्चा पान-फूल बनाकर रखने केलिए नही है। जवान होनेपर जाने वह कहाँ जायगा, कही जगलमे जान बचानेके लिए उसे पेड़ पर चढना होगा। नाव डूबने पर तैरना पडेगा।

दुखराम—तो सन्तोखी भाई, तुम भी सामूको पान-फूल बनाकर रखते हो न ?

सन्तोखी—हाँ, भैया, हमे भी यह बात ठीक नही मालूम होती, हाथ-पैर तो चारपाई से गिरकर भी टूट सकता है।

भैया—लडकोको बहुत तरह का खिलौना मिलता है, फिर कागज-पेंसिल मिलता है, वह अपने मनकी तसवीर खीचते हैं, गाने का खेल खेलाया जाता है। तरह-तरह के गानोको सीखते है, नकलका खेल खेलते हैं, लेक्चर (व्याख्यान) देते हैं, गिनती सीखते हैं और मुँहजबानी हिसाब लगाते हैं। फिर लडकोंके अपने सिनेमा होते हैं।

सन्तोखी—अपने सिनेमा क्या भैया ?

भैया—चार छ बरसके सयानोके सिनेमाको देखकर क्या समझ पाएँगे ? इसलिए इनके सिनेमामे कुत्ते, बिल्ली, भालू, गदहा इत्तादि आते हैं। और तरह-तरह की हँसने वाली बात कहते हैं। गाना गाते हैं, हँसी हँसीमे ही जोको और कमेरोके गडेंकी बात चली आती है। छ बरस तक उनको अच्छर सिखलाया जाता है। अपने जो कही लुक छिपकर किसी बडे लडकेसे अच्छर सीख लें तो दूसरी बात है। दाईघरमे रहते बखत ही गजब की जेहनवाले बच्चे छाँट लिये जाते हैं। चार-चार साल तक उनकी खीची तसवीरें और उनकी तरक्की को देखकर पारखी पहचान लेते है, कि यह लडका आगे चलकर गजब का तसवीर बनानेवाला होगा।

सन्तोखी—हाँ, भैया! लडके बहुत चीन्हा खीचना चाहते हैं, लेकिन हम लोग डाँट देते हैं कि कागज-पेंसिल खराब करेगा।

भैया—वहाँ डाटते नही, उन्हें रग बिरगी पेंसिल और कागज देते है। दाईघर मे एक उमरके लडके एक कोठरीमे, तीन बरस वाले तीसरी कोठरी मे। जो तुम किसी दाई घरमें पहुँच जाओ सन्तोखी भाई, तो बहुत हँसोगे। चार-चार बरस के दस-बारह लडके कागज पेंसिल लिये तस्वीर खीच रहे हैं। कोई बिल्ली बना रहा है, कोई कुत्ता। कोई साँप बना रहा है कोई चिडिया। बीचमे एक दूसरे की तस्वीर की ओर झाँक भी लेते हैं, फिर अपनी तस्वीर बनाने मे लग जाते हैं। दाई छडी लेकर तस्वीर नही बनवाती। अपने "अम्मा ? मुझे कागज-पेंसिल दो, मुझे कागज-पेंसिल दो" कहकर कागज-पेंसिल लाए हैं और सब अपने मन से तसवीर बना रहे हैं। अम्मा यह चालाकी जरूर करती हैं, कि उनके समझने लायक चीन्हेवाली कुत्ता-बिल्लीके छपे कागजको जब तब फेंक देती हैं। बच्चे कितने ही बार समझते हैं, कि पढा हुआ कागजको रद्दी कहते हैं, सबको फेंका नही जाता, एक-एक लडकेके कागज को नाम लिखकर जमा किया जाता है। तीन-चार बरसके बाद कौन लडका गजब का तसवीर बनानेवाला होगा, यह समझना आसान हो जाता है। तसवीर की तरह गाने, नकल करने, लेक्चर

देने, हिसाब लगानेमे गजबकी जेहनवाले लडकोको छाँट लिया जाता है। लडकोंके झगडेका फैसला पचायत करती है और वह अपने ही अपना नेता भी चुनते हैं। दाई घरमे रहते ही उन गजबकी जेहनके लडकोको पहचान लिया जाता है, जो कभी हजारो-लाखो आदमियोके नेता बनेंगे।

दुखराम—भैया! हमारे यहाँ तो गरीब घरमे, चमार और अछूत कहे जाने वाले माँ-बाप के घरमे, न जाने कितने गजब की जेहनवाले बच्चे पैदा होते हैं, लेकिन फूंदेपरके फूलकी तरह वही पैदा होकर बिना फूले ही कुम्हला जाते हैं।

भैया—यह समझो दुक्खू भाई, कि २० करोड़ आदमियोमे एक भी गजब के जेहनवाला बच्चा न मुरझाने पायेगा, न जेहनवाला मुरझाने पायेगा, न कम जेहन वाला। गजबकी जेहनवाले लडकोके पढनेका अलग इन्तिजाम होता है। घुड-दौडमें दौडनेवाले घोडोको बैलके साथ नाधनेमे नुकसान है। यह बत्तीस बरसके जो जरनैल थे, वह कमेरा राज्य कायम होते समय चार-पाँच बरसके रहे होगे। उनको भी सिच्छा पानेका मौका नही मिला, और पीछेके लडकोको तो और भी।

सन्तोखी—जो ऐसा इन्तिजाम हमारे देसमे हो, तो हमारी ३५ करोडकी आबादीमे न जान कितने गजबके तसबीर बनानेवाले, गजबके गानेवाले, गजबके नाटक खेलने, गजबके हिसाब लगाने वाले, गजबके नेता मिलेंगे?

भैया—यह है सन्तोखी भाई, जो लाल पलटन जरनैल लडनेका इतना जबर जस्त दाँव-पेंच जानते हैं। जब दुसमन और दुनिया जानती थी कि लाल पलटन हार-के भाग रही है, उस बखत वह दुसमनपर जाल फैलाकर चुपचाप बैठे हुए थे। जोकोकी पलटनमे छोटा लपटेन या थानेदार भी मामूली सिपाहीसे रण छोड़कर दूसरी तरहसे बात नही करेगा, लेकिन लाल पलटनका सबसे बडा अफसर जरनैल और मामूली सिपाही दोनो सगे भाई जैसे है। जब उरदी डिउटीपर हैं तब वह सिपाही और वह जरनैल, बाकी बखतमे दोनो एक चारपाईपर ऐंठेंगे, साथ खेलेंगे; कूदेंगे-नाचेंगे, हँसी-मजाक करेंगे। उस बखत देखनेवालेको पता ही न चलेगा, कि यह जरनैल है और यह सिपाही।

दुखराम—जोंको तुम्हारा सत्यानास हो।

भैया—इस्तालिन बीरने अपने जरनैलो को एक बार कहा था, कि वह अफ-सर ठीक अफसर नही हो सकता, जो सिपाहीसे ऐसा काम कराना चाहता है, जिसे वह खुद नही कर सकता। अमेरिकाका एक अखबारवाला सोवियतकी लड़ाई देखने गया था। मैदानके पास पहुँचा, तो वहाँ मोटरका कोई ठीक रास्ता नही था। मोटर रुक गई। उसी बखत एक आदमी आया। उसने फावडेसे काटकर रास्ता ठीक कर दिया। अमेरिकन अखबारवालेने आदमीकी उरदीको देखा, तो मालूम हुआ वह मेजर है। उसको बडा अचरज हुआ।

दुखराम—भला जोकोके मुलुकमे कपतान और मेजर फावड़ेपर थूक भी सकते हैं।

८ लाल चीन

गाँवकी चौपालम आज फिर तीनो सयानोकी बात चल पड़ी।

सन्तोखी—भैया आज तो चीनकी बात बताओ। खबर कागजमे बहुत झूठ-साँच सुनते हैं।

दुखराम—भैया ई चीन और महाचीन एकई है कि दो? और चीनी लोग वही के रहवइयाँ हैं न? कलकत्तमे तो उनका एक मुहल्ला ई है।

भैया—महाचीन और चीन एकई है। हमारे देसके लोग पहले इसे चीन को जानते हैं। वहाँके लोगोंमे बौद्ध धर्म बहुत चलता है। हमारे देसको ऊ लोग अपना एक बड़ा तीरथ मानते हैं। दू हजार बरससे चीन और भारतमे भाईचारा चला सो अब तक चलता ही जा रहा है।

दुखराम—दू हजार बरस से? तब तो बहुत दिनका सम्बन्ध है।

भैया—चीनसे बड़े बड़े जातरी लोग हिन्दुस्तान आते रहे। हमारे देसमे ऐसी पोथी नहीं है जैसी पोथी चीनके साधुओंने हिन्दुस्तानको देखके अपनी भाखा-मे लिखा।

सन्तोखी—तो चीनी भाखामे हमारे देसके बारेमे लिखा है।

भैया—हमारे देसकी हजारो पोथी चीनी भाखामे उल्था करके आज भी मिलती हैं। उनमे बहुत थोड़ी ही पोथी अब हमारे देसमे बँची है।

सन्तोखी—तब तो भैया चीनी लोगोंका बड़ा उपकार मानना चाहिये।

दुखराम—महाचीन कहनेसे तो मालूम होता है कि कोई भौत बड़ा देस होगा।

भैया—भौत बड़ा देस है। हमारे देससे चौगुनासे कम नहीं है। औ वहाँ सैंता-लीस करोड़ आदमी बसत हैं।

सन्तोखी—और हमारे इहाँ पैंतीस करोड़, माने हमारे इहाँसे बारह करोड़ से बेसी बेकत परानी चीनमे हैं।

दुखराम—सुनते हैं भैया कि चीन भी अब मरकस बाबाके रहता पर चलता है।

भैया—हाँ बाइस बरस तक चीनके कमेरोको जोंकोस लड़ना पड़ा। लाखो मरद-मेहरारू लड़का-बच्चा लड़ाईमे मारे गये और भूख-अकालम जितने मरे सो अलग।

सन्तोखी—जब रूसम मरकस बाबाका पथ चला तब दुनिया भरको जोंकोंने उसके दबानेके कोसिस की मुदा उनका कुछ नहीं चला खाली लाखों परानियोंकी जान गई। चीन तो बेकतपरानीमे रूससे भी बेसी है।

भैया—रूस म बीस करोड़ आदमी बसते हैं और चीनम सैंतालीस करोड़, दूनास भी बेसी।

दुखराम—तो भैया, जोकोंसे लडनेमे बाईस बरस काहे लगा ?

भैया—जोकें भी वहाँ भीत थी। औ दुनियाँकी सबसे बडी जोकें चीनी जोकोंके पीठ पर थी।

सन्तोखी—अमिरिका तो जरूर पीठ पर रहा होगा ?

भैया—ई जो बडी लडाई थी, उससे पहले तो अँग्रेज और दूसरे मुल्कोंकी जोकोंने पीठ ठोका, हथियार से मदद किया, अपने-अपने देसके जरनैल औ बडे-बडे लडाईके पंडितोको भेजा। लडाईके बाद तो सबसे बेसी मदद अमिरिकाने दिया। उसका सोलह अरब रुपया इस मददमे गया।

सन्तोखी—इतना रुपया लगाते बखत मोह नही लगा ?

भैया—जोकें बडा जुआ खेलती हैं, जुआडी लालचके फेरमे पडके दाँव पै जानते हो न रुपया लगानेमे आगा-पीछा नही करता। औ अमिरिकाने इतने रुपयेमे बेसी बढिया-बढिया लडाईके हथियार दिये।

सन्तोखी—तो मरकस बाबाके चेलोंके पास तो इतने हथियार थे नही, औ पलटन ?

दुखराम—भागनेमे तो भीत नुकसान हुआ होगा ?

भैया—लाखो मरद-मेहरारू, बूढे-बच्चे मारे गये। रास्ते मे बडी तकलीफ हुई। जोकोंकी पलटन चारो ओरसे घेरना चाहती थी। बिदेसी जोकोंने लडाईके उडनखटोला दिये थे, जिनमे बम गोला गिराते थे, सब कुछ नुकसान सहकरके अन्तमे जैमाला उन्हींके गलेमे पडी ?

भैया—दुक्खू भाई, मरकस बाबाने कहा था कि जनता पर बिजय कोई नहीं पा सकता, कमेरोंका बल कोई नही तोड सकता। कमूनिस्त उसी जनता औ कमेरा के लिये अपना परान देते हैं।

सन्तोखी—हाँ भैया, ई तो मालूम है। इतने बेसवारथके आदमी कहीं नहीं मिलेंगे। बडे-बडे पढवैयासे लेके मजूर तक जोभी मरकस बाबाके चेलोंमे नाम लिखाता है, वह सब कुछ तकलीफ सहने, फाँसी पर झूल जानेके लिये भी तैयार रहता है।

भैया—मरकस बाबाके चेले रकत-बीज हैं रकत-बीज। सन्तोखी भाई, रकत-बीज की कहानी तुमने सुनी है। उसको ऐसा बरदान था, कि जो धरतीपर एक बूँद गिरेगा, तो उससे सौ बीर-बका उसी तरहके और पैदा होंगे। बस वही बात है।

दुखराम—मुझको एक परतोख याद आता है। हमारे यहाँ बरसातमें सूरन (जमीकन्द) पैदा होता है। एक सालका सूरन खोद लिया जाय, तो छटाँक दो छटाँकका ही होगा। मुदा हम लोग उसे एक सालमे नही खोदते, तीन-चार साल रहने देते हैं। गरमीमे उस जगह खोदें, तो मालूम होता है, कि वहाँ सूरन-ऊरन कुछ लगा ही नही था, सब असोप हो जाता है, मुदा रोहिनीका छींटा परते ही फिर वह जम आता है। चितरा, स्वाती तक तो खूब बडा-बडा, हरा-हरा पौधा दिखाई पडता है। फिर गरमीमें वह असोप हो जाता है। मुदा साले सालाऊ बढना ई रहता है। पहिले सालको बरसात के बाद खोदने पर जो दो छटाँकका निकलता, तो दूसरे साल

पाव-डेढ पावका, तीसरे साल सेर-डेढ सेरका औ कोई-कोई तो अन्त मे तीन-तीन सेरका निकलता है। सूरन हर साल गलनेको गल जाता है मुदा फिर दूना-तिगुना होके अगले साल निकलता है। जान पडता है, मरकस बाबाके पथ, उनके चेलो—कमूनिस्तोकी भी यही बात है। एक बेर उनको अलोप देखके जोकें बडी खुसी मानने लगती हैं, घिउका दिया जलाती हैं, ई खुसिहाली भौत दिन नही चलती।

भैया—ई कोई जादू-मंतर नही है दुक्खू भाई! लोग रोटी-कपडाके मुहताज हैं। दुनियामे जिन्दगी उनको भार मालूम देती है। जब ओ सोचते हैं, कि मरकस बाबाका रहता छोड कोई दूसरा रहता नही है, तो हजार बिपता झेलने पर भी धूर झाडके उसी रहते पै चले आते हैं।

दुखराम—हाँ भैया, पेटकी भूख ऐसी ही होती है, उसे कैसे कोई भूल सकता है? सालमे छा महीना जब लडका-परानीको आधा पेट खानेके लिए अन्न नही जुरता, छोटे-छोटे बच्चोका मुँह झुराया, आँखें भीतर गडी, पेट सटका हाथपैर हड्डी-हड्डी देखता है, तो साचे कहूँ भैया, आदमी पागल हो जाता है। सोचता है—क्या करूँ कि इनके मुँह मे दाना अन्न पड।

भैया—ठीक है दुक्खू भाई, कमूनिस्त तो परलोकका भी लालच नही देते, खाली यही पेटकी जो तकलीफ है, उसीका रहता बताते है। और उनका रहता बिलकुल ठीक है, ई बात भी जानने-समझनेवाले ईमानदार आदमी मानते हैं। आज देखो हमारा देस दाने-दानेके लिए मोहताज है। इस साल तीन अरब रुपया का अनाज बाहर से मँगाया गया जिसमेसे आधा करज पर अमिरिकासे लिया गया।

सन्तोखी—अमिरिका तो बडा भारी जोक देस है भैया? अपने देसको उसके हाथमे बधक रखना क्या अच्छा है?

भैया—मुदा, बिना बधक रखे अमिरिका अनाज थोडे ई देता। हमारे देसकी जोकें चाहे चीन और रूससे अनाज सस्ता हि मिलै, औ बिना बधक औ कडी सरतके मिलै, तो भी जोकें चाहती हैं कि अमिरिकनके ही हातमे अपने देसको दे दें।

दुखराम—'चोर-चोर मौसियाउर भाई' ठीक ही कहा है।

भैया—हमारे देसकी जोकें पागल हो गई हैं पागल। उनको कंसकी तरह सब जगह कन्हैया ही कन्हैया दिखाई देते हैं। वह समझती है, कि अमिरिकाके साथके गठबधन होनेसे हमारी रच्छा होगी, हिन्दुस्तानके कमेरे उनका कुछ नही बिगाड सकेंगे।

सन्तोखी—मुदा चीनकी जोकोन तो अमिरिकासे गठबधन किया था, वहाँ काहे नही अमिरिकाने उनको बचा लिया?

भैया—जोकोका जिव बडा कठोर होता है वो अन्त तक मरना नही चाहती। चीनी जोकोका सरदार चाकसक भागकर फारमूसा (तैवान) के टापूमे अपने भाडेके आदमियोके साथ जाके बैठा है। अमिरिका उसको घी मलीदा खिला रहा है औ दोनोको अब भी भरोसा है, कि चीनमे जाके फिर जोकोका राज बनायेंगे।

सन्तोखी—ई खाली मनका लड्डू है। एक बार जोकोका राज जो मिटा, तो फिर लोग उसको आने नही देंगे।

भैया—जोकोंके राजके हटते ही सन्तोखी भाई, आदमी समझने लगता है, कि परान कैसे संकटसे बचा। हमारे देसमे जैसे अन्नका आज अकाल है, दो बरस

पहले यही दशा चीन की भी थी। वहाँ भी अमिरिकासे ढो-ढो कर अनाज जाता था। औ अमिरिकासे जो कुछ आता, उसमेसे बेसी तो चाकँसकके भाईबन्द चोरबजरिहा दूना-चौगुना पर बेचके पैसा बनाके रख लेते थे। अनाज ही नही, पलटनके लिए आया हथियार भी वह कमूनिस्तोके हातमे बेच डालते थे।

सन्तोखी—हाँ भैया, जोकोका तो टका ही धरम है, टका ही करम है, वो काहे न ऐसा करेगी। उनका पैसा मिले तो अपने बाप-मतारीको बेंच डालें। तो चीनमे कमूनिस्ताका हथियार इसी तरह मिला ?

भैया—नही, कमूनिस्तोके पास इतना पैसा कहाँ था, मुदा अमेरिकाका भेजा हुआ हथियार अन्तम गया उन्हीके हातमे।

दुखराम—बिना दाम दिये ? सो कैसे भैया ?

भैया—जानते हो न दुक्खू भाई लड़ाईमे लडनेवाले सौ में नब्बे किसानोंके ही पूत होते हैं। कमेरोके पूत ही अपन। परान देके जोंको की रच्छा करते हैं। जब जोंको-जोंकोकी लड़ाई होती रही तब तो उनको भेद नही मालूम हुआ, मुदा जब जोंको और कमेरोमे रन छिड जाता है, तो उनको बहुत दिनो तक धोखेमे नही रखा जा सकता। गुसाँई जीकी चौपाई जानते हो न ? 'उभय भाँति जानेसि निज मरना, तब ताकेसि रघुनायक सरना।' जब कमेरोके पूत देखने लगे कि जिन्दगी भर उनका खून चूसनेवाली जोंकें हमे उरदी-पेटी पहनाके, हथियार देके अपने भाइयोके सामने भेजके मरवाना चाहती हैं, तो उनके मनमे आता है, कि मरना है, तो अपने भाइयोंके लिये मरें, जोंकोंके लिये काहे मरे।

सन्तोखी—और कमूनिस्तोके पास भाडेकी पलटन तो नही है।

भैया—अपने लिए लडना और परायेके लिए सो भी दुसमनके लिये लडना एक नही है, ई तो बराबर अपने गाँवमे भी देखते रहते हो। अपने हक-पदके लिये आदमी सरबस दाँवपर लगा देता है। जोंकोकी ओरसे भेजी जानेवाली हजारो नहीं, लाखो पलटन अमिरिकाके दिये बढिया-बढिया हथियारोके साथ जाके कमूनिस्त फौज मे मिल गई।

दुखराम—लाल फौजमे न ?

भैया—हाँ, कमुनिस्तोकी फौजको लाल कहते हैं, तुम जानते ही हो।

सन्तोखी—जोकें बडी सवारथी होती है भैया ! अपना सवारथके आगे उनको कुछ नहीं सूझता। तभी तो अपनी रच्छाके लिये मिला हथियार भी कमूनिस्तोको बेच देती, औ अपने देशके लिये अन्न और जो कुछ मिलता रहा, उसको भी बेंचके पैसा लेती।

भैया—ठीक कहा सन्तोखी भाई, देसमे अकाल अकाल था, लाग भूखो मर रहे थे। अमिरिकासे करोडो मन अनाज औ खानेकी चीजें आती थी, उनमेसे भी आधा चोर-बाजारमें चला जाता। चोर-बजारी इतनी बढी थी कि अन्तमे अमिरिकाने अनाज बाँटनेके लिये अपने बहुत से आदमी चीन भेजे। मुदा अमिरिकाके आदमी अपने हाथसे बाँटने के लिये सब जगह जा नहीं सकते थे और सब जगह, चाकँसकके भाई-बन्ध औ दूसरे घूस-रिसवत खानेवाले सब कुछ चुराके बेचनेके लिए तैयार थे।

छीछालेदर हो गई। लोग एक ओर भूखके मारे तराहि-तराहि करते, और दूसरे देखते कि ऐसे ठगो, लुटेरो, घूस-रिसवत खानेवालो औ चोरबजारिहोके मारे कोई रहता नही। सब जगह जोकोकी सड़ती लास दिखाई देती थी।

सन्तोखी—भैया, ई तो मालूम होता है, कि कुछ-कुछ हमारे ही देसकी दसा चीनमे भी हो गई थी फिर चीन कैसे इस साल हमको तीन करोड मन अनाज दे रहा है?

भैया—तीन करोडमे दस-लाख टन ही नही, अऊ तो बीस लाख टन अनाज देने के लिये तैयार था। तुमको अचरज होगा कि दो ही बरस पहिले हमारी तरह दाना-दानाके मोताज चीनके पास इतना अन्न कहाँसे आ गया? जानते हो न, एक अकतूबर १९४९ मे ही चीनपर पूरी तौरसे कमेरोकी सरकारका राज कायम हुआ। इतने थोडे समयमे अपने यहाँवा उन्होने अन्नका अकाल हटा दिया, और अब छै-छै, आठ-आठ करोड मन अनाज बाहर भी भेजने को तैयार हैं। यह सब जादू-मंतरसे नही हुआ। जोकोंके चरन जहाँ पहुँच जायें, वहाँ सोना भी माटी हो जाता है, और कमेरोका चरन जहाँ पहुँच जाय, वहाँ माटी भी सोना हो जाती है। गेहूँ, चाउर, सोना ही है, सन्तोखी भाई।

सन्तोखी—सोनासे बढ़के भैया, सोना खाँधे आदमी भूखसे मर जायगा, सोना खाके पेटकी आग थोडे ही बुझेगी। मुदा, सुनते है एक ही बरिसमे उन्होंने अपना अनाजका टोटा पूरा कर लिया। ई तो जादू-मंतर जैसा ही मालूम होता है। सैंतालिस करोड आदमी भुखमरी मे जीते थे, इतने आदमियोके लिए कैसे पूरा अन्न उपजा सके?

दुखराम—भैया, जो चीनके कमेरोने अनाजका दुख अपने यहाँसे दूर कर दिया, तो हमारे देसमे क्या वैसा नही हो सकता?

भैया—चीनने जो कुछ कर दिखाया है सो सब हमारे यहाँ हो सकता है, मुदा जिस देसमे चोरबजारियो, घूस-रिसवत खानेवालो पर कोई रोक-थाम नही हो सकती राजकाज सब उन्हीके हातोमे है, वहाँ कैसे कुछ हो सकता है? सब जानते हैं कांगरेसने गला फाड़-फाड़के परतिग्गा की थी, कि अपना राज होते ही जिमीदारी, जागिरदारी नही रहने देंगे। मुदा, जब राज हाथमे आया तो जानते हो न खून पानीसे गाढ़ा होता है, अपने भाई बन्धो की चिन्ता करने लगे। जिमीदारी उठा देंगे तो हमारे बेटा-दमादो, साले-ससुरोमे भी तो बहुतसे छोटे-बडे जिमीदार हैं, यही सोचके नाकर-नूकर करने लगे, बहाना बनाने लगे। कानून बनानेमे ही बरसो लगा दिये, जो कानून बनाया भी सो भी हाईकोटने बे-कानून बतला दिया।

दुखराम—सो क्यो भैया?

भैया—एक कानून होता है और दूसरा महाकानून होता है, दुक्खू भाई! जो कोई ऐसा कानून बने, जो महाकानूनके खिलाफ हो, सो बेकानून हो जाता है।

दुखराम—तो जिमीदारी हटानेके कानूनसे पहिले महाकानून बन चुका होगा, तभी न ऐसा हुआ?

भैया—हाँ महाकानून (संविधान) बन चुका है, औ बनानेवालों में जोको के ही आदमी बेसी थे। उनको बहुत डर था कि कहीं मरकस बाबाके चेले

लोगोंने जो चोरबजारी, घूस-रिसवत और बेईमानी-सैतानीसे लाखो-करोड़ रुपयेकी धन-सम्पत्ति बटोरी है, उसे कानून बनाके छीन न लें। इसलिये उन्होने महाकानूनमें ऐसी बात रखी, जिसमे चाहे जैसे धन-सम्पत्ति किसीने बटोरी हो; उसको छीना न जा सके।

सतोखी—तो इसीसे जिमिदारी कानून बेकानून हो गया? और सुनते हैं, कि उसमे भी जिमिदारीको जिसमे बेसी हानि हो; ऐसा रसता निकाला गया था।

भैया—हाँ जिमिदारी उठाना नहीं—यह तो जिमिदारी खरीदनेका कानून है। कमेरोको करोडो-अरबो रुपया कमा-कमाके जिमिदारोको देना होगा, तब जाके जिस खेतको वह जोतते है, वह उनका होगा। चीनमे मरकस बाबाके चेलोंने राजकी बागडोर सँभालते ही कानून बनाके ढिंढोरा पिटवा दिया कि खेत उसका है जो उसे जोतता है। जब किसान जानता है, कि हम अपने खेतमे अपने और अपने देस भाइयो-के खाने के लिए अनाज पैदा करते हैं, तो वह क्यो नही जान लडाके काम करेगा।

दुखराम—हाँ भैया, अपने कामको सभी लोग खूब मन लगाके करते हैं; काहेसे कि उसका नफा-नुकसान अपना होता है।

भैया—और यह भी कानूनमे कह दिया है कि किसीके पास बहुत बेसी खेत नही रहेगा। जिसके पास बेसी-बेसी खेत है, उसे बिना खेत या कम खेतवाले कमेरोंमे बाँट दिया जायगा। उन्होने बरसो तक कागजी घोडा नही दौडाया। बस गाँवकी पचायतें बनाके तडाक-भडाक इस कामको कर दिया।

सतोखी—अनका अकाल था, करोडो आदमियोके सिर पर मौत नाच रही थी, फिर कमेरोकी सरकार कैसे कागजी घोडा दौडाती?

भैया—हाँ सतोखी भाई, जिस कामके किय बिना चलनेवाला नही है, जिसको करना ही है, उसमे घिसिर फिसिर क्या? लेकिन चीनमे जोंकोको पीसने के लिये तो सरकार नहीं बनी थी, इसलिए उन्होन बेलाग होके जनताकी भलाई का जो भी काम हुआ, उसे तडाक-फडाक कर डाला। हमारे इहाँ तो अंग्रेज गये, मुदा सरकार चलानेके लिय जो इतजाम अंग्रेजान किया था, और पहिलेसे भी ज्यादा घिना देने वाले रूप मे। पहिलके नाकरसाह बडी-बडी तनखाह लेते थे, अपने ऊपरके हाकिमोके सामने पूँछ हिलाते और नीचे वालोका आँख दिखाते थे। अब ई सब जुलुम औ बेईमानी पहिलेसे कई गुना बेसी हो गई, ऊपरसे काम भी बहुत ढीला हो गया है। एक दिनका काम एक महीनेमे होना मुसकिल है। घूस-रिसवतका तो पूछो ई मत फिर कैसे बेडा पार होगा।

दुखराम—तो चीनमे उन्होने काम बडा किया भैया?

भया—सबस बडा काम यह किया, कि जो सैकडो बरस का कूडा-करकट और गदगी चीनमे जोंकोने जमाकर रखखी थी, उसे उन्होने एक बुढिया आँधी मे उडाकर साफ कर दिया। हमारे इहाँ सब कूडा करकट उडाने नही, बचाके रखनेकी कोसिस की जाती है। जहाँ देखो तहाँ निकम्मे लोगोकी पलटन दुगना-तिगुना कर दी गई है। चीनम जिमिदारी हाटके बेसी जमीनको लोगोमे बाँटके किसानोको एक ओर तैयार कर दिया गया कि वह खूब अन्न उपजावें। दूसरी और जोंकोके सरदार चाँर्कसेक और उसकी पलटनसे लडनेके लिए जो धीरे-धीरे पचास-साठ लाख लाल फौज तैयार हो गई थी, उनको भी काम मे लगा दिया गया।

दुखराम—कौन काममे भैया ? पलटनवा काम लडना ही है न ?

भैया—जोंकोंके इहाँ पलटनका काम लडना है। बलुक लडाई न होती हो तो रोकें रार करके किसीसे लडाई छेडनेकी कोसिस करती हैं। जब लडाईका समय नही होता, तो पलटनका काम है, छावनीमे बैठके कवायत-परेड करना, महीनेमे अपनी तनखाह ले लेना। मुदा, कमेरोकी पलटनवा ढग दूसरा ही है। लडाई हो औ अपने देस पर सकट हो, तो यह खूब लडना जानती है कवायतपरेड भूलने न पावे इसका भी विचार वहाँ किया जाता है, मुदा, कमेरोकी पलटन समझती है, कि चुपचाप बैठके अपने जाँगरको (देह की मसक्कत) ऐसे ही बेकार खोना और जनताके कसालेकी कमाई बैठे-बैठे खाना ठीक नही है। चीनमे जब चाकैसेक भाग गया और देशमे उसके गोइन्दोंसे ही निपटना रह गया, तो बहुत-सी पलटन खाली हो गई। पलटनने बन्दूक खडी कर दी और फावडा हाथोमे ले लिया। पचास पचास साठ-साठ लाखकी पलटन जब दिनको न दिन, रातको न रात जान, फावडा लकर कामम डट जाये तो वह कितना काम करेगी, इसके बारेमें क्या पूछत हो। पलटनने नदियोंमें बडे बडे बाँध बनाये, पहाडो को घेरकर पानी के समुन्दर तैयार कर दिये। हजारो मील लम्बी नहरें बना दी, जगल और परती जमीनको काट-कूटके करोडों बीघा नये खेत तैयार करके किसानो को दे दिये।

दुखराम—हमारे इहाँ क्या यह नही होगा, भैया ?

भैया—जोकोके राज म नही, यह तो कमेरोके राजमे ही होता है। पलटन के बडे-बडे इन्जीनियर होते है, बडे-बडे इलिमदार लोग होते हैं। उनकी बिद्दा अब बाँध, ताल और नहर बनानेम लगी। बाँधो और समुन्दर जैसे तालोके बना देनेसे बाढका डर कम हो गया, किसानोको राम भरोसे राम भरोसे खेती करनेकी जरूरत नही रही, उनको सिंचाईके लिए पानी सब जगह मिलने लगा। ऊपरसे खेतीकी बिद्दाके इलिमदार लोग जल्दी जल्दी तैयार किये गये, और उन्होंने नये ढङ्गसे खती करनेका रस्ता गाँव गाँव मे बनाया। सरकारने अच्छे बीजका इन्तिजाम किया, किसानोने खाद गोबर-को चूल्हेमे जलानेकी जगह खेतमे डाला, इस तरह डेढ बरससे पहले ही चीनमे अन्नका दुख मिट गया।

सन्तोखी—भैया सुनते है पाँच बरस तक गरीबोकी छाती पर कोदो दलने वाले फिर वही कांगरिसवाल रामनामी ओढके हम लोगोका वोट माँगने आ रहे हैं।

भैया—हाँ, बडा रामनाम (चुनाव घोषणा) अबकी तैयार हुआ है। कहा जा रहा है कि अबकी पाँच सालके लिए जो हमको राज-काज मिल गया, तो गरीबोका सब दुख दूर कर देंगे।

सन्तोखी—भाई भतीजे, भानजे और सात पीढी तकके रिश्तेदारो का घर तो भर दिया। अभी कुछ कोर-कसर होगी ?

दुखराम—मुदा कितना ही रामनामी पहनके आवे, हम उनको खूब पहिचानते हैं। अब फिर फिर सियार गूलर तर नही जायेंगे। 'एक बार हँकावैं तो लाखो बीर कहावैं।" एक बेर धोखा दे दिया, सो दे दिया।

भैया—सो तो देखा जायगा, मुदा मालूम हुआ न की चीनवालोंने वैसे इहाँ जोको का टाट उलट दिया, बाईस बरस तक लडते रहे और एक दिनके

लोगोंने जो चोरबजारी, घूस-रिसवत और बेईमानी-सैतानीसे लाखों-करोड़ रुपयेकी धन-सम्पत्ति बटोरी है, उसे कानून बनाके छीन न लें। इसलिये उन्होंने महाकानूनमें ऐसी बात रखी; जिसमें चाहे जैसे धन-सम्पत्ति किसीने बटोरी हो; उसको छीना-न जा सके।

संतोखी—तो इसीसे जिमिदारी कानून बेकानून हो गया? और सुनते हैं; कि उसमें भी जिमिदारीको जिसमें बेसी हानि हो; ऐसा रसता निकाला गया था।

भैया—हाँ जिमिदारी उठाना नहीं—यह तो जिमिदारी खरीदनेका कानून है। कमेरोको करोड़ो-अरबो रुपया कमा-कमाके जिमिदारोंको देना होगा; तब जाके जिस खेतको यह जोतते है; वह उनका होगा। चीनमें मरकस बाबाके चेलोंने राजकी बागडोर सँभालते ही कानून बनाके ढिंढोरा पिटवा दिया कि खेत उसका है जो उसे जोतता है। जब किसान जानता है, कि हम अपने खेतमें अपने और अपने देस भाइयों-के खाने के लिए अनाज पैदा करते है; तो वह क्यों नहीं जान लड़ाके काम करेगा।

दुखराम—हाँ भैया; अपने कामको सभी लोग खूब मन लगाके करते हैं; काहेसे कि उसका नफा-नुकसान अपना होता है।

भैया—और यह भी कानूनमे कह दिया है कि किसीके पास बहुत बेसी खेत नहीं रहेगा। जिसके पास बेसी-बेसी खेत है, उसे बिना खेत या कम खेतवाले कमेरोंमें बाँट दिया जायगा। उन्होने बरसों तक कागजी घोड़ा नहीं दौड़ाया। बस गाँवकी पंचायतें बनाके तड़ाक-फड़ाक इस कामको कर दिया।

संतोखी—अन्नका अकाल था, करोड़ों आदमियोके सिर पर मौत नाच रही थी, फिर कमेरोकी सरकार कैसे कागजी घोड़ा दौड़ाती?

भैया—हाँ संतोखी भाई, जिस कामके किये बिना चलनेवाला नहीं है, जिसको करना ही है, उसमे पिसिर-फिसिर क्या? लेकिन चीनमें जोंकोको पीसने के लिये तो सरकार नहीं बनी थी, इसलिए उन्होने बेलाग होके जनताकी भलाई का जो भी काम हुआ, उसे तड़ाक-फड़ाक कर डाला। हमारे इहाँ तो अंग्रेज गये, मुदा सरकार चलानेके लिये जो इतजाम अंग्रेजोंने किया था, और पहिलेसे भी ज्यादा घिना देने वाले रूप में। पहिलेके नौकरसाह बड़ी-बड़ी तनखाह लेते थे, अपने ऊपरके हाकिमोंके सामने पूँछ हिलाते और नीचे वालोको आँख दिखाते थे। अब ई सब जुलुम औ बेईमानी पहिलेसे कई गुना बेसी हो गई, ऊपरसे काम भी बहुत ढीला हो गया है। एक दिनका काम एक महीनेमे होना मुसकिल है। घूस-रिसवतका तो पूछो ई मत फिर कैसे बेड़ा पार होगा।

दुखराम—तो चीनमे उन्होने काम बड़ा किया भैया?

भैया—सबस बड़ा काम यह किया, कि जो सैकड़ो बरस का कूड़ा-करकट और गदगी चीनमे जोंकोंने जमाकर रखी थी, उसे उन्होने एक बुढ़िया आँधी में उड़ाकर साफ कर दिया। हमारे इहाँ सब कूड़ा-करक्ट उड़ाने नहीं, बचाके रखनेकी कोसिस की जाती है। जहाँ देखो तहाँ निकम्मे लोगोंकी पलटन दुगना-तिगुना कर दी गई है। चीनमे जिमिदारी हाटके बेसी जमीनको लोगोंमें बाँटके किसानोंको एक ओर तैयार कर दिया गया कि वह खूब अन्न उपजावें। दूसरी ओर जोंकोंके सरदार चांकैसेक और उसको पलटनसे लड़नेके लिए जो धीरे-धीरे पचास-साठ लाख लाल फौज तैयार हो गई थी, उनको भी काम मे लगा दिया गया।

दुखराम—कौन काममे भैया ? पलटनका काम लडना ही है न ?

भैया—जोकोके इहाँ पलटनका काम लडना है। बलुक लडाई न होती हो तो जोके रार करके किसीसे लडाई छेडनेकी कोसिस करती हैं। जब लडाईका समय नही होता, तो पलटनका काम है, छावनीमे बैठके कवायत-परेड करना, महीनेमे अपनी तनखाह ले लेना। मुदा, कमेरोकी पलटनका ढग दूसरा ही है। लडाई हो औ अपने देस पर सकट हो, तो वह खूब लडना जानती है, कवायतपरेड भूलने न पावे इसका भी विचार वहाँ किया जाता है, मुदा, कमेरोकी पलटन समझती है, कि चुपचाप बैठके अपने जाँगरको (देह की मसक्कत) ऐसे ही बेकार खोना और जनताके कसालेकी कमाई बैठे-बैठे खाना ठीक नही है। चीनमे जब चाकैसेक भाग गया और देशमे उसके गोइन्दोसे ही निपटना रह गया, तो बहुत-सी पलटन खाली हो गई। पलटनने बन्दूक खडी कर दी और फावडा हाथोमे ले लिया। पचास पचास साठ साठ लाखकी पलटन जब दिनको न दिन, रातको न रात जान, फावडा लेकर काममे डट जाये तो वह कितना काम करेगी, इसके बारेमे क्या पूछते हो। पलटनने नदियोमे बडे बडे बाँध बनाये, पहाडो को घेरकर पानी के समुन्दर तैयार कर दिये। हजारो मील लम्बी नहरें बना दी, जगल और परती जमीनको काट-कूटके करोडो बीघा नये खेत तैयार करके किसानो को दे दिये।

दुखराम—हमारे इहाँ क्या यह नही होगा, भैया ?

भैया—जोकोके राज मे नही, यह तो कमेरोके राजमे ही होता है। पलटन के बडे-बडे इन्जीनियर होते है, बडे-बडे इलिमदार लोग होते हैं। उनकी विदा अब बाँध, ताल और नहर बनानेमे लगी। बाँधो ओर समुन्दर जैसे तालोके बना देनेसे बाढका डर कम हो गया, किसानोको राम भरोसे राम भरोस खेती करनेकी जरूरत नही रही, उनको सिचाईके लिए पानी सब जगह मिलने लगा। ऊपरसे खेतीकी बिद्याके इलिमदार लोग जल्दी जल्दी तैयार किये गये, और उन्होने नये ढङ्गसे खती करनेका रस्ता गाँव गाँव मे बताया। सरकारने अच्छे बीजका इन्तिजाम किया किसानोने खाद गोबर-को चूल्हेमे जलानकी जगह खेतमे डाला, इस तरह डेढ बरससे पहले ही चीनमे अन्नका दुख मिट गया।

सन्तोखी—भैया सुनते है पाँच बरस तक गरीबोकी छाती पर कोदो दलने वाल फिर वही कॉगरिसवाल रामनामी ओढके हम लोगोका वोट माँगने आ रहे हैं।

भैया—हाँ, वडा रामनाम (चुनाव घोषणा) अबकी तैयार हुआ है। कहा जा रहा है कि अबकी पाँच सालके लिए जो हमको राज-काज मिल गया, तो गरीबोका सब दुख दूर कर देंगे।

सन्तोखी—भाई भतीजे, भानजे और सात पीढी तकके रिश्तेदारो का घर तो भर दिया। अभी कुछ कोर-कसर होगी ?

दुखराम—मुदा कितना ही रामनामी पहनके आवे, हम उनको खूब पहिचानते हैं। अब फिर फिर सियार गूलर तर नही जायँगे। 'एक बार डँहकावै तो लाखो वीर कहावै।" एक बेर धोडा दे दिया, सो दे दिया।

भैया—सो तो देखा जायगा, मुदा मालूम हुआ न की चीनवालोने कैसे अपने इहाँ जोको का टाट उलट दिया, बाईस बरस तक लडते रहे और एक दिनके लिए भी

हियाव नही छोडा। लड़ाई जीतके भी चुपचाप बैठ नही रहे। जीतके साथ ही उन्होंने अपने इहांके चोरबजरिहो और घूस-रिसवत खानेवालोको जड़-मूलसे खतम कर दिया। जमीदारी तालुकदारी उठा दी, सूदखोरो का मुंह काला कर दिया। औ खाली अपनोको ही नही चीनके कमूनिस्तानोंने कमेरोके लिये जीने मरनेवाली सब पार्टियो और दलोका एक गोल बना लिया।

सन्तोखी—सब दलोका एक गोल भी बना लिया? हमारे इहांके कमूनिस्त ऐसा क्यो नही करते?

भैया—हमारे इहांके कमूनिस्तोंने कुछ गलती की, और गलती किससे नही होती। हुसियार आदमी वह है जो गलती करके सीखता है। अब हमारे इहांके भी कमूनिस्त कमेरोके लिए जीने मरनेवाली सभी पार्टियो और दलोका एक गोल बना रहे हैं।

संतोखी—भैया, हमारे गांवो-बाजारोमे तो आजकल कमूनिस्त कही देखनेमे नही आते, मुदा स्कूलके पाठसालाके माहटर-गुरु लोगोके मुंहसे सुनो, चाहे डाकिया और सिपाही लोगोकी बात सुनो, सभी जगह लोगोका नाकों दम है। तनखासे खरची नही चलती। दौरी दुकान रखनेवाले हमारे जैसे छोटे-छोटे बनियाँ अपना मूर खा खाके किसी तरह लडका बालोको पोस रहे हैं। सब लोग कमूनिस्तोका नाम लेते ही आसरा लगाये हैं, कि क्या जाने चीनकी तरह हमारा भी दिन लौटे। चीनको सुनते है कोरियामे भी लडना पडा।

भैया—आजकल दुनिया भरकी जोकोकी रच्छाका बीडा अमिरिकाने ले लिया है। अमिरिका समझता है, कि चीन और रूस जैसे दुनियाके सबसे बड़े दो देसोमे तो कमेरोका राज कायम हो गया, जोकोका राज उठ गया और यूरपके पूरपवाले चार-पांच देसोमे भी मरकम बाबाकी ही बात चलती है। वह समझता है, जो राज अब भी जोकोके हाथमे है, उनको मजबूत न करेंगे, तो हमारे इहांका जोक-राज्य भी एक दिन खतम हो जायगा। वह तो बहुत चाहता है, कि किसी तरहका झगडा पैदा करके दुनियामें इसी बखत तीसरा महाभारत छेड दिया जाय तो अच्छा।

सन्तोखी—बहुत जल्दीमे है, देर होने से डरता है।

भैया—हाँ, रमायनमे सुने हो न। रामकी सेनाका पराकरम देखके रावणका बेटा मेघनाथ डर गया। वह लडाईका मैदान छोडके गुफामे जाके मन्तर सिद्ध करने लगा। भभीखनने पता लगा लिया, औ रामजीसे कहा कि 'जो इस बखत बिघन नहीं किया गया औ मेघनाथने मन्तर सिद्ध कर लिया, तो फिर उसको जीता नही जा सकता।' परितोख तो ठीक नही है। रावन और उसका बेटा जोकोमे ही हो सकते है, मुदा इहां उस बातको छोड दो, अमिरिका जानता है कि पहले तो बीस करोड और हिन्दुस्तानसे सात गुना बडा रूस ही था, जिसके मारे दुनियाकी जोकोकी खैरियत नही थी, अब तो हिन्दुस्तानसे चौगुने औ साठ करोड़ आदमीवाला चीन भी उसी ओर है। चीनने जब एक सालके भीतर अपने यहांका अन्नका दुख हटा दिया, तो अमिरिका और कांपने लगा। वह जानता है, कि चीनमे जल्दी-जल्दी नये कारखाने खुल रहे हैं—सूती कारखाना, ऊनी कारखाना, चमडे का कारखाना, लोहे का कारखाना, कल-मसीन का कारखाना, रेल इंजन, मोटर बनानेका कारखाना, हजारो तरहके कार-

खाने बन रहे हैं। रूस औ दूसरे कमेरोंके देसके हजारों बड़े-बड़े इलिमदार चीनमे आके मदद कर रहे हैं। जो उसे दस ही बरस और काम करने को मिला, तो चीन भी रूस जितना ही मजबूत हो जायगा। फिर तेरह करोड आदमियोका अमिरिका अपनी जोकोंके लिए भाडेकी पलटन से कैसे चीन और रूसके सामने खडा हो सकेगा ?

सन्तोखी—चीन, रूस ही क्यों भैया पैंतीस करोडका हमारा हिन्दुस्तान भी अपने भाई चीनके साथ रहेगा। वह कभी अमिरिकाकी जोकोंके आगमे नही कूदेगा।

भैया—हमारे देसकी जोकें तो सन्तोखी भाई, अमिरिकाकी जोकोंकी आगमें देसको झोंकना चाहती हैं। जैसे भी हो वह देसकी भुखमरी दूर नहीं होने देंगी।

भैया—सो तो होगा ही, जो हम अभीसे सजग नही हुए। देसको अपने पैर पर खडा करनेके लिये चीनका दिखाया रास्ता भी हमें लेना होगा। अमिरिका चीनको बरबाद करना चाहता था, जब चाकैसेकसे काम नही चला, तो कोरियामे उसने झगडा उठा दिया और अपनी पलटन वहाँ उतार दी। कोरियाके तो गाँव-शहर सब पर अमिरिकाने उडनखटोलोने बमगोला गिरा-गिराके उसको तहस-नहस कर दिया। आधे कोरियामे जोकोंका राज था और आधे मे कमेरोंका। अमेरिकाने कमेरोंके भागको भी जोकोके राजमे मिलाके चाहा कि चीनके सिवाने पर पहुँच जाय, तब चीनके सपूत समरमे कूद पडे।

सन्तोखी—अभी भी अमेरिकाकी जोकोंका मन चीनसे भरा नही है।

सन्तोखी—वह तो चाहती थी कि हिन्दुस्तानको भी चीनसे भिडा दें। जानते ही न, महादेव बाबा कैलाशमे रहते हैं। कैलास मानसरोवर भोट (तिब्बत) देसमे है और भोट देस, डेढ हजार बरससे चीनके साथ रहा है, चीनके भीतर बसनेवाली पाँच जातियोमे भोटके लोग भी हैं। जब चाकैसेककी पलटन पीठ दिखाके मैदानसे भाग गई औ यहाँके कमेरोंकी सरकारने तिब्बतके राज चलाने वालोंसे कहा, कि तुम भी हमारे पाँच जात वाले परिवारमे आके मिल जावो, तो तिब्बतकी जिमिदारी-जागिरदार जोकोंने इसे पसन्द नही किया औ चारों ओर हाथ-पैर मारने लगीं। अंग्रेजो औ अमेरिकाके गोइदे तिब्बतमे पहुँचकर आगमे घी डालने लगे। मुदा अपने थोडे सिपाहियोंके बल पर वह चीनकी लाल सेनासे लड़ नहीं सकती थीं। अमेरिका औ अंग्रेजोंकी सरकारोंने हिन्दुस्तान को बहुत साम-दाम दिखाया। कहा—रुपया-पैसा औ गोला-बारूद अमेरिका देगा, हिन्दुस्तान अपनी पलटन दे दे, तो तिब्बतको कमूनिस्तोंके हाथमें जानेसे बचा लिया जाय। हिन्दुस्तानकी सरकार जानती थी, कि इस दलदलमे फँसनेका नतीजा बहुत बुरा होगा। हिमालयके पार उस देसमे अपने लाखों आदमियोंको लेजाके कटवाना बडा महँगा सौदा था। नफेकी कोई उमेद न थी, नही तो क्या जाने हिन्दुस्तानी जोंकोंने दबाव डालके वैसा करवाया होता।

सन्तोखी—तो अमेरिकाकी जोकोंका काम हमारी सरकारने नही किया।

भैया—इससे अमेरिकाकी जोकें नाराज हो गईं।

दुखराम—अपने देसको बचानेके लिये अपने पैरों पर खडा होना होगा जैसा चीनने किया। औ अब तो महादेव बाबाके घरमे कमेरोंका राज लाल पताका आ गया। कहो सन्तोखी भाई, महादेव बाबाने जब मरकस बाबाका रहना मान लिया तब तो अब किसीको नाकर-नूकर नही करना चाहिये।

सन्तोखी—दुक्खू भाई, हम तो पहले महादेव बाबा औ रामजीकी बहुत पूजा करते थे। मुदा जबसे भैयाकी बात सुनी और तुम बात मानने लगे, तबसे ऊ कुल सरधा भगती न जाने कहाँ बिलाय गयी। अब तो हमारे पडोस तक कमेरों का राज चला आया। भैया, बनारस से अब कितनी देरका रहता है?

भैया—बनारससे जो सोझे उत्तरकी ओर उडा जाय, तो घण्टा, डेढ़ घटामें उडनखटोला वहाँ पहुँच जाये। हमारा सिवाना औ चीनका सिवाना एक ही है, दोनोमे एक अँगुल का भी फरक नही है। भोट देस अब कमेरोका हो गया औ एक लाखसे बेसी भोटिया लोग हिन्दुस्तानके भीतर बसते हैं, जो बहुत गरीब हैं।

सन्तोखी—तब तो भैया, अपने भाइयोकी खुसहाली सुन-सुनके इनका मन भी ललचायेगा।

भैया—इसलिये हमारे राज चलानेवालोने वहाँ पुलिस-थाना बैठा दिया है, जिसमे उस पार की बीमारी इस पार न आने पावे। मुदा, जब तक अपने देसकी भुखमरी गरीबी बेरोजगारी नही हटती, तब तक कौन उसे रोक सकता है? चीन हमारा दो हजार बरसका पुराना भाई है। उसने रहता दिखा दिया, जितना जल्दी पुरानेका मोह छोड के हम उसी रहताको पकडे, उतना ही अच्छा।

९ सान्तीका रहता

बरखाका एक महीना बीत गया। एक दो बार मामूली छीटाके पानीका कहीं पता नही था। गाँवके किसान ब्याकुल थे। महँगीके दिनमे घरके भीतरका अनाज खेतमे डाल आये थे, अकुर जम आया था, मुदा पानी बिना जहाँ-तहाँ खती सूख रही थी। आज रात भर खूब बरखा हुई, सूखे-रूखे बिरछ हरे दिखाई पड रहे थे, भुलसे पौधोंमे भी जान आ गई थी।

बादल आज दिनमे भी चारो ओर घिरे थे। आज भैया, दुखराम औ सन्तोखी तीनो सयाने पेडके नीचे नहीं, दुखरामके ओसारेमे बैठे थे। बात चलानेके लिये सन्तोखी ने कहा—भैया अच्छी तरह कमाना धरतीसे। अन्न पैदा करना, कपास पैदा करना और जो कुछ कामकी चीज है, सबको बनाके तैयार करना, पेट भर अपने खाना, अपने बाल-बच्चोको खिलाना और गाँव-पुरके लोगोको भी भूखा न देखना, ऐसी जिन्दगी ही तो हम लोगोको चाहिये।

भैया—मुदा जब ले जोंकें हैं तब ले सान्तिसे दिन काटना नही हो सकता सन्तोखी भाई। दुनियाके किसान मजूर, कमेरे लोगोंको इसीमे आनन्द है, कि सातीसे कमाया-खाया, मुदा जोकें जो सान्तिसे रहने दें तब न।

दुखराम—हाँ भैया, जोकें खून चूसनेवाली हैं न? उनको सान्ति काहे पसन्द आयेगी? वे तो ढूँढ़-ढूँढ़के रार करना चाहती हैं। आजकल दुनिया साति के पाछे ही गोलमे बँट गई है।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

भैया—अमिरिका [illegible] लड़ाई के लिये तैयार करनेके वास्ते अरबों डालर [illegible] रही है [illegible] रही है [illegible] चाहिये। सारे दुनियाके हाट-बाजारमें अमिरिका का माल बिक रहा है, ओकोंको बहुत मुनाफा है। धन [illegible] धन्ना की मालिक है। मजूर को तो [illegible] मर करना और किसी तरह पेट पालना है। ओकोंका क्या लगता है, जो ओके गरीबों की कमाईमें से अरबों डालर अपनी रक्षा के लिए फेंक दें।

मल्लाही—तो कहे कमेरोको आँखिमे पट्टर बँधा हुआ है उनको सूझता नही।

भैया—कैसे सूझे, तो दो सौ बरिस नही हजारो बरिससे ये ही समझाया गया है कि धनी-गरिब भगवान बनाते हैं अपने भाग पर भरोसा करना चाहिये किसीके धनका देखके लाभ नही करना चाहिये।

दुखराम—धन इन चोरों डकैतोका है, कि धन कमेरे पैदा करते है।

भैया—धन कमेरे ही पैदा करते हैं, मुदा पोथी-पतरा भगत भगवानने सारी दुनियाके गरीब कमेरो की आँखो पर पट्टी बाँध दी है।

मल्लाही—मरकस बाबाने तो आँख का पट्टर खोल दिया। मरकस बाबाके चेला अमिरिका में नही पहुँचे क्या ?

भैया—चेले तो पहुँचे हैं, अमिरिका मे कोई भेपड़ नही है। मुदा पढुआ होनेसे ओकोंने बेसी फायदा उठाया है। वो खूब सस्ता अखबार और पोथी छापके निकालती हैं, जिनमे लोगोको आँखोमे धूल झोंकने की बात रहती है।

सन्तोखी—तो पढ़ने लिखनेसे ग्यान नहीं होता क्या ?

भैया—पढने लिखनेसे ग्यान होता है मुदा ई दुधारी तलवार है। पोथी-गियान भी देती हैं औ आँखोपर पट्टी भी बाँधती है। बाभनोकी पोथी देखते हो कितनी बडी-बडी है, और रिसि-मुनि छोड़के दुसरोकी बात बदलाई नहीं मुदा, उसमे धूल घूसने वालोंके मुनाफे की बात छोड़के और क्या है ? सो

आदमीको उन्होंने अछोप-अछूत बना दिया, जिसके छुनेमे भी पाप लगता है। सबसे निरघिन काम उनसे लिया जाता है। जो काम कोई नहीं करता सो काम मन मारके अछोप लोग करते हैं। बड़ी जात वालोंका पैखाना उठाते हैं। मरे डाँगरको उठाके न ले जायँ, तो बाबू लोगोंका गाँव सड़ने लगे। ई सब करने पर भी सबसे गरीबये ही लोग हैं। सौ मे पैंसठ-सत्तर आदमीके लिए पोथीमे लिखा है कि खाली बाभन-छत्री-लालाकी सेवा करना उनका धरम हैं।

दुखराम—हाँ भैया, हमरी अहिरकी जातिमें जब थोड़ेसे लोग पढ़ लिख गये तो इन्हें पहिले सनक सवार हुई, कि जो हम लोग भी जनेऊ पहिन लें तो बड़ी जात वालोंमे हो जायँगे। अहिर छोड़के उन्होंने दुसरा-दुसरा बढ़िया नाम भी रख लिया। मुदा, बाम्हनोंकी पोथीमे तो हमारे भाग का फैसला पहिलेई कर दिया गया है।

भैया—दुक्खू भाई, पाँकके धोने से पाँक नहीं छूटती। बाम्हनोंकी पोथीमें जितना चालाकी है, उतना किसी धरमकी पोथीमे नहीं है।

सन्तोखी—बाकी भैया हैं तो सभी फंदे वाली ही धरम पोथियाँ? ईसाई धरमकी पोथी हो चाहे मुसलमान धरमकी पोथी, किसी धरमकी पोथी हो, सबमें कमेरोंके, गलेमे फन्दा डालने का जतन किया गया है।

भैया—ठीक कह रहे हो, मुदा एक ही बोली बोलने वाले एक ही देसमे रहने वाले, एक ही रंग-रूपके लोगोंको हजार जातमे बाँटना औ उनमे भी ऊँच-नीच बनाके एक दूसरेके साथ झगड़ा लगाये रखना, ऐसी चालाकी कहीं नहीं पाओगे। जैसे जैसे बाम्हनोंकी पोथी तैयार हुई, इसी तरह आज भी जोंकोंके देशोंमे हर साल हजारों पोथियाँ छपती हैं। इनका काम खाली लोगोंकी आँखो मे धूल झोंकना है। मुदा जब बेटे-पोते मरने लगते हैं, लड़ाईमे फतिंगेकी तरह उन्हें झुलसा झुलसाके मारा जाता हैं और घर-घरमे रोना-काँदना मच जाता है, तब लोग सोचने लगते हैं। फिर कुछ बतलाने लगते हैं, कि लड़ाई रोपने वाली हमारे देसकी जोंकें है। तब उनको डर पैदा हो जाता है। सुना है न सन्तोखी भाई, पहले महाभारतमे जब रूसके लाखों जवान जोंकोंकी लगाई आगमे मर गये, तो वहाँके लोग उपाय ढूँढने लगे। फेर मरकस बाबाके बड़े चेला लेकिन महातिमाने मन्तर दे दिया—अपनी बन्दूकें घरके दुश्मनो थाने जोंकों की ओर फेर दो। कमेरोंके बेटोंके पास पैसा कहाँ? औ पैसाभी जमा करें तो कानून के खिलाफ, बन्दूक रक्खें? ई तो जोंकोंने लड़ाईकेलिए मुफतमे बन्दूके दे दी और उनको ठीकसे चलाना भी सिखा दिया। देसके लाखों जवानोंके मरनेसे सबका मन बिगड़ गया था। ऐसा मौका कहाँ मिलता, औ कमेरोंके लड़कोंने अपनी बन्दूकोंको सचमुच ही अपने देसकी जोंकोंकी ओर कर दिया। औ आजसे ६८ बरस पहिले दुनियाके छठे भागमे जोंकोंका टाट उलट गया, कमेरोंका राज खड़ा हो गया।

सन्तोखी—इसलिये भैया, अमिरिकाकी भी जोंकें डरती होंगी। सोचती होगी, जो अमिरिकाके घर-घरके लड़के मरवाये गये, तो इहाँ भी कहीं रूसवाली बात न हो जाय। इसलियें अमिरिकाकी जोंक चाहती हैं, कि रुपया और हथियार हमारा लगे औ मरनेवाले हों दूसरे।

दुखराम—तो कोरियामें काहे अपने आदमियोंको ले जाके मरवाया अमिरिकाने?

भैया—गलती कर बैठा, सोचता था, कि डालरसे खरीदे गुलाम देसोकी जोर्के सिपाही देंगी औ अमिरिकाका काम थोड़ेसे सिपाहियो औ बहुतसे रुपया-हतियारो से चल जायगा। मुदा अमिरिकाके गुलाम देस वैसे तो जीहजूरी और चापलूसीमें बहुत आगे बढ़े थे, मुदा गुसाई जी कह गये हैं—"सरबसि खाई भोगकरि नाना। समर भूमि भा दुरलभ प्राना।"

सन्तोखी—अगरेजोंने अमिरिकाकी बहुत मक्खन रोटी खाई, उन्होंने कितने जवान कोरियाकी आग में झोके ?

भैया—मक्खन रोटी खानेवालोंमे अगरेज ही नहीं थे, फ्रान्स, इटली और न जान और बहुत से कितने देसोने खूब परमुहे फलहार किया। मुदा, जब कोरियामें अपने देमके जवान भेजने की बात आई, तो किसीने पाँच सौ, किसीने हजार आदमी भेजके कुल भीर अमिरिकाके ऊपर डाल दी। बारा-तेरा महीनोकी लडाईमे अमिरिकाके अस्सी हजारसे बेसी जवान कट गये, चाहे अंग भंग होके बेकार हो गये। अमिरिकाने समझा था, कि हमारे अणुवा बमके धमकाने और उडनखटोलोंसे दस-बीस हजार बमगोला गिरा देनेसे कोरियावाले हतियार धर देंगे। मुदा 'इहाँ कुम्हड़ बतिया कोऊ नाही।' एक बेर तो कोरिया के जवानो ने ढकेलते-ढकेलते अमिरिकाको समुन्दरके तीर पहुँचा दिया था औ मालूम होता था कि अब इन जोकोको को कोरिया-बँधना बाँधके समुन्दर पार भागना पड़ेगा।

दुखरामः—तो कैसे भागना रुक गया भैया ?

भैया—अमिरिकाने पहिले अपने थोड़े ही आदमी भेजे और दूसरे गुलाम देसोके भी आमदनी बेसी आदमी नही गये थे। अमिरिका ने देखा कि जो अब हात सँकोचा तो सब रोब दाब मट्टी मे मिल जायगा। तब उसने यहाँके जवानोको आँख मूँदके झोकना शुरू किया। बेचारे आधे कोरियाके कमेरे कैसे सामना करते। लोगोने समझाया, कि पुराने सिवाने पर चलके लड़ाई बन्द कर दो, मुदा अमिरिकाने चाहा कि कोरियामें कमेरा राजका चीन्ह न रहने पावे। जब अमिरिकाकी पलटन आगे बढ़ते-बढ़ते चीनके सिवाने पर पहुँच गई, तो चीनके कमेरोको डर मालूम होने लगा। जानते हो न, अमिरिकाने कोरिया से जो कमेरो का राज खतम करना चाहा उसका एक भेद यह भी था, कि इस तरह चीनके कलेजके पास चलके बन्दूक तानेंगे। औ समूचे कोरियामे अपनी पलटनकी छावनी—अड्डा बनाके फिर चीन पर हल्ला बोल देंगे।

सन्तोखी—हाँ, दरवाजे पै सतरूको देखके गाफिल रहना अच्छा नही है भैया !

भैया—तो भी चीन सरकारने लड़ाईके लिये कदम नही बढ़ाया। हाँ अपने यहाँके कमेरोको छुट्टी दे दी, कि जो चाहे सो कोरियाके भाइयो को मददके लिये चला जाय ! फिर चीनके भी जवान कोरियाकी मदद करनेके लिये आए औ अमिरिकाकी पलटनको पहिलेके सिवानाके पार लँघा आये। अब अमिरिका और उसके पिछलगू देसोकी जोर्के समझने लगी कि लड़ाईका फैसला जल्दी नही होगा। अमिरिका हुकुम पर हुकुम लिखके भेजता मुदा उसके पिट्ठू देस खाली जबानी जमा खरच करके बहादुरी दिखाते। आदमी भेजनेकी बेरा अगरेज कहते हैं, कि हम मलाया सिंहापुरमें कमूनिस्तो से लड रहे हैं, बड़ी भीरमे। फ्रान्स कहता है कि हम हिन्दी चीन और कम्बोजमे कमुनिस्तोको रोके हुए हैं।

दुखराम—तो सब कोई न कोई बहाना ढूंढ़के कहती हैं, 'लडो भतीजो पाछ दो पुतो।'

सन्तोखी—इसलिए तो भैया, अमिरिकाको लडाईबन्दीकी बात माननी पडी।

भैया—दुनिया भरकी जोकें समझती हैं, कि इन दो-चार बरसोंमे जो कमेरो की सरकारोके साथ लडाई करके उनको नास नही कर पाये, तो फिर मौका नही मिलेगा। अमिरिका तो लडाई करानेके लिये पागल हो गया है। उसने अपनी जानमे लडाई छेड भी दी। कोरियामें सीधे अपनी पलटन पहुँचा दी। उसके जनरैल और गोला-बारूद तो सारी दुनियामे लडाई कराने का जतन कर रहे हैं। अमिरिका जानते हो न, दो समुन्दरोके पार चीन और रूस दोनोंसे बहुत दूर है। अगरेजोके टापूकी तरह बीचमे दस-बीस कोसकी खाडी नही, बडे-बडे समुन्दर रास्तेमे पडते हैं। 'लंका अस दीप समुन्दर अस खाडी' कहके रावन अपनेको अपरबल समझता था, मुदा हिन्दुस्तान औ लंकाके बीचकी खाडी हनुमान जीके लाँघनेके मान की थी। अटलांटिक औ पसिफिक जैसे महासमुन्दरको लाँघना किसी हनुमानके लिए आसान नही है। तो भी अमिरिका कहता है, कि हमारा सिवाना दोनो महासमुन्दर नही है।

सन्तोखी—तो भैया, अपना सिवाना कहाँ मानता है ?

भैया—चीन औ रूसके अपने सिवानेको सिवानेसे मिला मानता है।

सन्तोखी—ई तो बडी बेहयाई है भैया।

भैया—जोकें तो लाज-सरम धोके पी गई हैं। अमिरिकाने यही कहके कोरियामे अपनी पलटन रक्खी चीनमे चार्कसेकको मदद की। हिन्दी चीनमे चीनके सिवाने पर वह लडाईमे फ्रान्सीसियोको हर तरहकी मदद दे रहा है। अपने जहाज हवाई जहाज, गोला-बारूद, पैसा-कौडी, जनरल सब भेज रहा है। हिन्दुस्तानको भी चाहता है कि वह अमिरिकाका हुकुम मानके भोटदेस औ चीनकी नाकाबन्दी करे। पाकिस्तानको रूस औ चीनके सिवाने पर कस्मीरमे बैठाके अपना मतलब सिद्ध करना चाहता है।

सन्तोखी—भैया सुनते हैं कि पाकिस्तान अमिरिकाके बल पर कूद रहा है ?

भैया—अँगरेज तो सिखंडी है, सबै नचावें राम गुसाई, असली नचाने वाला और खरच-बरच देने वाला अमिरिका।

दुखराम—तब भैया जवाहरलाल काहे अमिरिकाकी बात मे पडते हैं ?

भैया—जवाहरलाल हो चाहे कोई हो, जब तक ऊ जोकोके फंदेसे बाहर नही निकलते, तब तक चाहे जितना गाल बजा लें, मुदा 'करिहैं सोइ जो राम रचि राखा' राम जानें जोकोके हाथमे देसकी गरदन है। ओ कर क्या सकते हैं। जिमिदारो, तालुकदारोको खतम करो, सभी बडी-बडी जोकोको लाल भवानीके सामने बलि चढावो देसके सभी कमेरो और उनके साथी समाजियोको काम पर लगा दो, तब हमारे देसमे रोटी, कपडेका दुख दूर होगा, तब लोग अपना बल-बौसाय दिखायेंगे, सभी अमिरिकाका मुँह नही देखना पडेगा।

सन्तोखी—मुदा हमने तो अपने सेठके लडकेको कहते सुना, कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की लडाई होने वाली है।

भैया—सेठ क्यों नहीं कहेंगे। झूठ कहनेमें क्या लगता है ? जो झूठ बोलनेमें नफा हो, तो कौन सेठ साँचकी कंठी तोड़नेके लिये तैयार नहीं है। जानते हो न कि कि कोरियाकी लड़ाई होतेही सेठोंने चीजोंका दाम बढ़ा दिया।

सन्तोखी—हाँ भैया, हमीं सवाया दाम देके सौदा ले आये। औ, अब सेठने लड़केने रुपया पीछे दो आना बढ़ा दिया।

भैया—पाकिस्तान औ हिन्दुस्तानकी लड़ाईके नाम पर ना ?

दुखराम—सो भैया, लड़ाई सेठोंके लिये कलपब्रिरिच्छ है।

भैया—लड़ाई होतेही सेठोंकी पाँचो अँगुली घीमें हो जाती हैं। सौदा चाहे बरस भर पहिलेका खरीदा या तैयार किया हुआ हो, मुदा वह झट से दाम सवाया-डेवढ़ा कर देते है। हमारे यहाँके सेठोंको जो मुनाफा हुआ, वह अमिरिकाकी जोंकोंके मुनाफाके सामने कुछ नहीं है। जो कोरियाकी लड़ाई छिरी होती, तो अमिरिकाके लोहा इसपात, गोला-बारूदके कितनेही कारखाने दिवालिये हो जाते, लड़ाईके बाद जितने लड़ाईका सामान वहाँ बना था, वह माल गोदाममें इतना भर गया था, कि आगे जगह नहीं थी। मालगोदामका गोला-बारूद जब मार-काटके लिये जाय, तब दूसरे मालके रखने को जगा हो ?

दुखराम—इसीलिए भैया जोंकें सांतिसे डरती हैं औ रात-दिन लड़ाईका जाप करती हैं।

भैया—ठीक उलनकी बात है दुक्खू भाई। औ लड़ाई हो जाने पर करोड़ो का मुनाफा घरमें आता है। मुदा पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनों तो आजकल अमिरिका के दहिने-बाएँ हातमें हैं। निस्तर तब लड़ेंगे जब मालिक उनको लड़ने के लिए छोड़ेंगे।

सन्तोखी—तो काहे पाकिस्तान औ हिन्दुस्तानके बड़े-बड़े लोग लड़ाईकी बात कहते हैं ?

भैया—पाकिस्तानका एक टुकड़ा पच्छिममें है और एक टुकड़ा पूरबमें बंगाल है। पाकिस्तानमें सबसे बेसी रहने वाला इलाका पूरब वाला है। मुदा पी, मलीदा खाने वालोंमें गरीब बंगालियोंको कोई पूछता नहीं। बड़ी-बड़ी गद्दी बाहरसे भाग कर आये लोगों के हातमें हैं। पंजाबी मुसलमान इसे देखके जलते हैं।

सन्तोखी—इसीलिये तो पंजाबी पाकिस्तानी जनरैलों और बड़े-बड़े आदमियों को पकड़के जेहल में डाला गया ?

भैया—लेकिन, चांडाल चौकड़ी पाकिस्तानियोंकी छाती पर कोदो कब तक दलेगी। पाकिस्तानी बंगालमें जाके देखो, बड़ी-बड़ी तलबा पानेवाले हाकिम सब पंजाबी मिलेंगे। पलटन देखो तो सब पंजाबियोंकी हैं। पंजाबी कहीं ऐस-जैसमें विघन ना डालें, इसलिए पाकिस्तानी बंगालकी जागिरदारी दे दी गई। बंगाली अलग जल रहे हैं। पठानोंको जिस तरह पीसा जा रहा है, उससे पठान नराज हैं, उनकी नराजी दूर करनेकेलिये कास्मीर पर लूट-मार करनेके लिये पठानोंको भेज दिया। बस धोखा-धड़ीसे काम निकालते, मालिक चाहते है, कि पाकिस्तानी जनताकी आँख खुलने न पाये। उनके मनमें है, कि जो कहीं जनता के हाथमें फैसला करने को दे दिया गया, तो हमारे जैसोंका कहीं ठौर-ठिकाना नहीं लगेगा।

=

सन्तोखी—हाँ भैया !

भैया—अपने पैरमे कौन अपनेही कुलाडी मारता है। बगालकी जनताने इन मालिकोको खूब दिखा दिया, जब साढे तीन सौमे दस भी उनके आदमी नही चुने गये।

दुखराम—हाँ भैया !

भैया—पाकिस्तानके बाद फिर पच्छिम चलो, तो रूसके सिवाने पर ईरान और तुर्कीके मुलुक हैं। दोनो मे अमिरिका पहुँचा हुआ है। अपने सिवानेकी रच्छा करनेके बहाने दोनोको करोडो रुपयाका हतियार दे रहा है। अपने जनरल भेजके वहाँ की पलटनको अपनी मुट्ठीमे कर रक्खा है औ जोकोको कमेरोके खूनकी होली खेलने की छूट दे रखी है। तुर्कीसे पच्छिम ग्रीस देस है। जर्मन फसिहोको लडके निकालनेमे वहाँके कमेरोंने अपने हजारो बेटोकी बलि चढाया। फसिहोके राजके खतम होने पर कमेरोंने अपना राज बनाना चाहा, तो जोकोकी मददके लिये अँगरेज और अमिरिकाने पलटन भेज दी। हमारे दो जिलेके बराबर का ग्रीस देस चार-पाँच बरस तक जान हथेली पर रखके अपने देस और परदेसकी जोको की भाडेकी पलटनसे लडता रहा। उसके पच्छिम जुगोसलाबियामे मरकस बाबाके चेलोने बडी बहादुरी दिखलाई और वहाँ कमेरोका राज भी कायम कर लिया। मुदा जोकोंने वहाँ भी अपना जाल फैलाया और पच्छिममे इटली, फ्रान्स, पच्छिमी जर्मनी, नार्वे, स्वीडन, जितने देश कमेरोंके राज के सिवाने पर है, सब जगा अमिरिका लडाईकी तैयारी कर रहा है। लडाईका फल इन देसोके लोगोने खूब भोगा है। वहाँके कमेरे नही चाहते, कि फिर तीसरा महा-भारत हो, मुदा अमिरिकाकी जोकें वहाँकी जोकोकी पीठ ठोक रही हैं।

सन्तोखी—जर्मनीकी जोकोंके गुन्डे सरदार हिटलरकी पीठ भी अँगरेज औ फ्रांसीसी जोकोंने ठोकी थी, मुदा पीछे उनको पछताना पडा, जब बरदान पाके भस्मासुरने भूतनाथकी ओर ही हाथ बढाया।

भैया—गरजमे आदमी बावूला हो जाता है। जोकें देखती हैं, कि हर जगह कमेरे अब उनको रखना नही चाहते। जो लडाई होगी तो सबसे बेसी मरेंगे कमेरोंके, सबसे बढकर दुर्गति होगी कमेरोकी। इसीलिये कमेरे सांती चाहते हैं। जोकोंके राजमे लडाईकी तैयारी अधाधुन्धकी जा रही है औ कमेरेके राजमे सान्ती की परितिग्या कराई जा रही है। करोडो आदमी सान्तीके परितिग्या पत्र पर दसखत कर रहे हैं।

दुखराम—कही इस सान्तीसे फायदा तो नही उठायेंगी ?

भैया—सो, उससे गाफिल कमेरे नही हो सकते। मुदा वो जहाँ तक हो सके, सान्ती रखनेका जतन कर रहे हैं।

सन्तोखी—सात समुन्दर पारसे आके दरवाजे पर अमिरिकाकी जोकें ताल ठोक रही हैं, इस पर भी कमेरोकी सरकारें धीरजसे काम ले रही हैं। जो इन्होंने सबुर न किया होता तो अब तक तिसरा महाभारत छिड गया होता ?

भैया—मुदा सान्तीका हतियार लडाईके हतियारसे भी बढके है।

सन्तोखी—भैया ई तो गाधी बाबा वाली बात कर रहे हो।

भैया—गाधी बाबाने सब जगह गलती नही की है, सन्तोखी भाई। औ जहाँ गलती भी की, वह न समझनेके कारन। मरकस बाबाके पास न आ वो दूसरोका

गुरुमन्तर ले लिये थे, उसीके मोह मायामे पडके रोगीको असली दवाका पहिचान नही कर पाये। जो दुनियाके सौमे नब्बे आदमियोको दुखी नही देखना चाहता है उनको सुखी रखना चाहता है वह कभी सान्तीका रसता छोडके लडाईका रसता नही लेगा। जोकोके देसकी भी जनता लडाई नही सान्ती चाहती है। वहाँ भी लाखो करोडो आदमी सान्तीकी परतिग्गा कर रहे हैं। इसको देखके जोकोका कलेजा काँपन लगा है। जो कमेरे सान्तीकी परतिग्गा कर लिये, तो तोपोमे झोकनेके लिये उनके लडके कैसे मिलेंगे ?

दुखराम—कमेरोकी आँख तो खुलनी चाहिये।

भैया—कमेरोने लडाईमे सवा करोडसे वेसी आदमियोका निरघिन मौत मरते देखा। गाँव-गाँव और सहरके सहर उजडते देखा। बेवा अनाथोको मारे मारे फिरते देखा। सारे देसको भूखके मारे हाय हाय करते देखा। जाकोके देसके कमेरे, वहाँकी सौमे नब्बे जनता, फिर लडाई चाहेगी ? दो महाभारतोको देखके उनका मन भर गया।

दुखराम—और कमेरे जहाँ राज कर रहे हैं वहाँ तो कोई काहे लडाई चाहेगा।

भैया—हाँ दुक्खू भाई रूसके कमेरे दस साल लगके अपने देसको फिरसे बसा सके हैं। लडाईके पहिले जितना धन पैदा करते थे उससे अब वह दूना पैदा कर रहे हैं, मुदा उनका अभी बडा-बडा मसूबा है। आमू दरियाकी दुनियामे सबसे बडी नहरें बना रहे हैं पनबिजली तैयार करनेके कारखाने खडे कर रहे हैं। रेगिस्तानके पेटमेसे करोडो एकड खेत निकालने के लिए रात दिन एक करके काम कर रहे हैं। वह अगले दस सालमे लोहा, कोयला बिजली तेल सब चीजें आदमी पीछे अमिरिकासे भी वेसी पैदा करना चाहते हैं। गरीब और बेरोजगारीको उन्होंने अपने देससे खतम कर दिया है, मुदा वो चाहते हैं कि सभी नर-नारी अन्न धनसे भरपूर हों, सब आरामसे रहें औ पोथीवाले सरगका सुख जिसको कहते रहे, वह इसी धरती पर भोगनेको मिले।

दुखराम—तब भैया ऊ काहे लडाई चाहेंगे ? इसीलिए तो उसकाने पर भी वह लडाई करने के लिए तैयार नही होते।

भैया—वो जानते है कि लडाईसे फायदा खाली जोकाको है। दुनियाकी जोकोके दिन अब इने गिने रह गये हैं। लडाई छेडके वो अपनी जिन्दगी बढाना चाहती हैं। चीन भी अपने यहाँ जोकोंके राजको उठाके देसको अन्न धनसे भरपूर करना चाहता है। वहाँके सब मरद मेहरी—पलटनिया जवान तक अपने घरको बनानेमे लगे हुए हैं। डेढही सालमे उन्होने अपने यहाँ से अन्नका अकाल हटा दिया। और तीन करोड मनके करीब अनाज हमारे देसको भी उस साल दिया। अभी उनको अपने देसम सब जगह रेलकी सडकाका जाल बिछाना है सिंचाईके लिए नहरें खोदनी हैं हर जगह कल-कल-कारखाने खडे करने है। एक-एक बेफत—परानीका पटुआ बनाना है। वह काह लडाई चाहगे ?

सन्तोखी—तो जोक जानती हैं, कि कमेरोकी सरकारें लडाईसे भागना चाहती हैं तो खदेडके क्यो नही उनको लडने लिए तैयार करती ?

भैया—जोकें यह भी जानती हैं, कि खदेड़ने पर जो कमेरे खड़े हो गये, तो लेनेके देने पड़ेंगे। कमेरोकी सरकारें अतिको बरदास्त नही कर सकती। और कमेरों जैसे वीर-बके दुनियामे और कही नही हैं।

सन्तोखी—तो जोकोंने लिए अब दोही रास्ता रह गया है कमेरोंको फुसला के उनके लडकोको तोपोका चारा बनाना औ रुपया दिखाके लोगोको खरीदना ?

भैया—हाँ, इसमे क्या संदेह है। हमारे देसमे आजकल अमरिकाकी जोकोंने हजारो पढ़ुवा लोगोको खरीद लिया है। हिन्दीमे औ दूसरी देसी भाषाओंमे सैकडो पोथियाँ औ अखबार लिख-लिखके मुफुत बँटवा रही हैं, जिनको बहुतसे लोग पढते भी हैं।

सन्तोखी—झूठके पोथोको कौन पढेगा भैया ?

भैया—झूठका पोथा तैयार करनेके लिए उसने कई हजार हिन्दुस्तानियोको खरीद लिया है। और भेदिया तो उसके सारे देसमे फैले हुए हैं। मंतिरी लोगो की सभाओमे जो सलाह-मसविरा होता है, उसकी बात अमिरिकाके गोइंदोके पास पहुँचते देर नही होती।

सन्तोखी—तबतो भैया मतियोमे भी कुछ अमिरिकाके हाथमे बिके होंगे।

भैया—पानीकी तरह रुपया बहा रहा है, कितने लोगोंको किराया औ खरचा देके अमिरिकाकी सैर करनेके लिए भेज रहा है जिनमे कुछ हमारे मंतिरी भी है।

दुखराम—तो घूस-रिसवत, भेट-नजराना चारो, ओर जाल फैला हुआ है अमिरिकाकी ओरसे। एक भभीखनने लंका ढा दिया था, हमारे देसमे तो अमिरिकाने न जाने कितने भभीखन तैयार किये हैं ?

भैया—चीनमे भी अमिरिकाने बहुत भभीखन तैयार किये थे और सोलह अरब रुपया भी पानीकी तरह बहाया। मुदा जानते हो न, चीन के भभीखनोंकी क्या दसा हुई। जब जोकोंके राजमे पिसते-पिसते नाकमे दम आ गया और उन्होंने सब कुछ अपनी आँखो के सामने देखा, तो जनताकी नजर अमिरिकाके हाथमे बिके मतरियो, मुखियो और लिखाडो की ओरसे फिर गई।

सन्तोखी—तब उन्हे मरकस बाबाके चेलो की बात सच्ची मालूम होने लगी। तब उन्होंने समझा कि मरकस बाबाका रहता छोड सुख और सातिका दूसरा कोई रहता नही है।

१०. हिन्दुस्तान की आजादी

सन्तोखी—सोहनलाल ! तुम्हारे आनेसे हम लोगोका कुछ नुक्सान भी हुआ कुछ फायदा भी। नुक्सान तो यह हुआ कि भैया जो कुछ कहते हैं, वह पहिलेकी नरह

सोलहो आना मेरी समझमे नही आता। कौन-कौनसे नाम, जिनके कहनेमे जीभ लुटपुटाती है। लेकिन कई बातें तुमने ऐसी खोदके कहवाई, जिन्हें हम सुन न पाते।

दुखराम—हाँ, सन्तोखी भाई! थोडा-सा नुकसान तो जरूर होता है।

भैया—देसोका नाम तो नकसा देखनेसे ही साफ-साफ समझमे आता है। हमारे लिए बनारस-परयाग बिल्कुल परकट है लेकिन फ्रास-अमिरिकावालोके लिए वह उसी तरहके बेकार नाम है, जैसे हमारे लिए उनके शहरो के नाम। अच्छा अब चलो हिन्दुस्तानकी आजादी के बारेमे कुछ बात करे। रूस, जीन, जैसे लाल झण्डेवाले दोनो को छोडकर सारी दुनिया नरकमें है। हिन्दुस्तान तो सबसे बडे नरकमे है, क्योकि इसके ऊपर बिलायती जोको की भी गुलामी है और अपनी भी। लेकिन दुक्खू भैया प्याजका पहले ऊपरका छिलका निकाला जाता है या भीतरका?

दुखराम—पहिले भैया ऊपरका छिलका छुडाया जाता है, तब नीचे न छुडाया जायगा?

भैया—लेकिन चाकू चलानेमे कुछ नीचेका भी छिलका कट जाता है, तो भी हमे पहिले ऊपरके छिलकेके हटानेमे सबसे ज्यादा जोर लगाना पडेगा। भीतरके छिलकोपर भी चोट इसलिए लगानी पडती है, कि बिना जमीदारो और पूँजी पतियोसे टक्कर लिये किसान-मजूर मजबूत भी नही होगे, और न यही समझ पायेंगे कि हम नरकमें इन्हो जोकोके कारन पडे हैं। हिन्दुस्तानवालोने आजसे ९८ बरस पहिले अपने देसको आजाद करने की कोसिस की।

सन्तोखी—१८५७ के गदरके बखतमे न भैया?

भैया—और उसीके चार बरस पहिले मरक्स बाबाने लिखा था कि अगरेज सार्जन, जिन हिन्दुस्तानी सिपाहियोको अपने कामके लिए कबायद-परेड सिखा रहे हैं, वही सिपाही अपनी आजादीके भी सिपाही तो बन सकते है।

दुखराम—तो बाबाके कहनेके ४ ही साल बाद तो उन्होंने कोसिस की। लेकिन आजादी क्यो नही मिली भैया?

भैया—सिपाहियोको यह पूरी तौरसे ख्यान न था, कि वह क्या चाहते है।

सोहनलाल—पता क्यो नही था, वह जानते थे कि हिन्दुस्तानसे अंगरजी राजको खतम करना है।

भैया—तुम्हारे पास एक पुराना घडा है, तुम उसको फोड रहे हो तो क्या तुम्हारा यह जानना काफी है, कि "मै घडेको फोड रहा हूँ" या यह भी जानना चाहिए कि इसे फोडकर मैं किससे पानी पियूँगा।

दुखराम—हाँ भैया, सिर्फ घडा फोडनेसे काम नही चलेगा, पानी पीनेका भी इन्तजाम होना चाहिए।

भैया—सिपाही घडा फोडना चाहते थे, नये घडे का उन्हें ख्यान भी नही था। उनके नेता थे बडे-बडे जमीदार, राजा और नवाब, जिनको लडाई की बिद्या, उस समयके हथियारोंका ख्यान नही था। कम्पनीने किसीकी ... कर ली थी, किसीका राज छीन लिया था, कोई समझता था कि हम

राजा-नवाब हो जायेंगे । बस इकट्ठा हो गये थे । सिपाहियोंने बहादुरी की, हिन्दू-मुसलमान दोनों जी-जानसे लड़े, लेकिन उनके पास आँखें नहीं थीं ?

दुखराम—आँख नहीं थी ? क्या वह सब अंधे थे ?

भैया—पलटन की आँखें अफसर होते हैं दुक्खू भाई ! सौ-सौ, पचास-पचास सिपाही अपने मनसे जिधर चाहें, लड़ने लगें, तो दुस्मन उन्हें जल्दी तबाह कर देगा। पाँचों उँगलियाँ बाहरकी ओर खुली हैं, लेकिन हथेलीसे जुड़ी हैं। इसी तरह अलग बिखर हुए सिपाही सभी मजबून होते हैं जब हजारों-लाखोंको एकस एक नत्थी कर दिया जाय। अफसर यह काम करते हैं। दूसरा दोस यह था, कि जो राजा नवाब उनके अगुआ बने थे वह लड़ाईके अगुआ होने लायक नहीं थे। सब अपना-अपना स्वारथ देखते थे। तीसरा दोस था कि जनता इन विदेसियोंसे लड़ने वाले अपने सिपाहियोंको अपना नहीं समझती थी।

दुखराम—क्यों भैया, वह हमारे भाई-बन्द तो थे ही ?

भैया—भाई-बन्द कह देनेसे नहीं काम चलेगा दुक्खू भाई, जब वह गाँवों और सहरोंको लूटते थे, लोग उनके आनेकी खबर सुनते ही घर-दुआर की सुध छोड़ भाग निकलते थे, तो कैसे कह सकते हो कि वह भाई-बन्द थे ?

सोहनलाल—लेकिन लोगोंसे पैसा न लें तो उनका खर्च कैसे चले।

भैया—लेकिन वह डकैत तो नहीं थे। वह अंग्रेजोंको इसलिए निकालना चाहते थे कि लोग ज्यादा सुखी रहें। लोगोंको यह बात अच्छी तरहसे मालूम होती, तो लोग तन-मन धनसे उनकी मदद करते। इन सबसे यही मालूम होता है कि जो लड़के जान देने वाले थे, उनको मालूम नहीं था कि वे अँगरेजोंको निकालकर क्या करेंगे, इसलिए वह जनताको भी नहीं समझा सकते थे—क्यों तुम्हें हमारी मदद करनी चाहिए। हो सकता है जो और कुछ दिन लड़नेका मौका मिला होता तो खुद गलती करके सीखते। लेकिन कुछ बागी राजाओं नवाबोंको छोड़कर बाकी सारी जोंकें, राजा महाराज-नवाब अपने भाइयोंके खिलाफ अँगरेजोंकी मदद कर रही है। बेचारों को सीखनेका मौका नहीं मिला। कैसे खूनकी नदी बहाकर जुलम करके उस लड़ाईको दबा दिया गया, यह कहनेकी जरूरत नहीं। और दबाया भी बीस सालके लिए।

सन्तोखी—बीस सालके बाद फिर सुतन्तर होनेका ख्याल क्यों आने लगा ?

भैया—हिन्दू समझते थे कि समुन्दर पार जानेपर धरम चला जाता है और दूसर के हाथका खाना खा लेनेसे आदमी किरिस्तान हो जाता है इसीलिए वह कुएँके मेढक रहे। अब एक-एक करके कुछ लोग बिलायत जाने लगे, कितने ही लोग हिन्दुस्तान हीमें अँगरेजी पढ़कर किताबोंसे दुनियाके बारेमें जानने लगे। उन्होंने देखा कि आदमी भेड़ नहीं है, राजा भगवानकी ओरसे भेजा नहीं जाता। बिलायतमें राजा हैं, लेकिन राजाका काम देखती है पंचायत—पार्लामेंट। अमेरिकामें तो राजा भी नहीं है वह पंचायती राज है। अँगरेजोंको अपना राज चलानेके लिए सस्ते क्लर्कों और नौकरोंकी जरूरत है, इसलिए अँग्रेजी पढ़ाना जरूरी था, अँगरेजीकी किताबोंके पढ़ने पर साहब बहादुर नंगा दिखाई देने लगे और दुनियाके और देसोंकी बातें पढ़कर उनके दिलमें भी आजादीका ख्याल आने लगा। कुछ होसियार अँगरेजोंने सोचा कि

कही यह हिन्दुस्तानी हाथसे बाहर न हो जायँ। उनकी मददसे कांगरेसकी अस्थापना की

दुखराम—क्या भैया! बिलायती जोंकोने कांगरेसको अस्थापित किया?

भैया—हाँ, गोरे साहबोंने काले साहबोको बढ़ावा दिया। पचीस साल तक तो कागरेसमे इन्ही काले साहबोका जोर रहा। इनका काम था, सालमे एक बार किसी बडे सहरमे इकठा होना और हाथ जोडकर अँगरेजी सरकारसे परार्थना करना "भगवान हमे यह नौकरी दो, हमे वह नौकरी दो।" सिच्छा और बढने लगी। नौकरियाँ कम पडने लगी। लोगोकी तकलीफ बढ गई, धीरे-धीरे गोरे भगवान से परार्थना करना बहुत-से लोग बेकार समझने लगे। उनमेसे कुछ लोगो ने बम-पिस्तौलसे एकाध अँग्रेजों या काले अफसरोको मारा। कुछको फाँसी हुई, लोगोने सहीद कहके उनका सम्मान किया।

दुखराम—उससे कुछ फायदा हुआ कि नही भैया?

भैया—सबसे बडा फायदा यह हुआ कि हिन्दुस्तानके नौजवान निरभय होने लगे। मौत उनके लिए डर नही परेमकी चीज बन गई। बाकी तो मैं कही चुका हूँ कि एक्के-दुक्के अफसरोके मारनेसे जगह खाली नही होती। फिर पिछला (१९१४-१८) महाभारत आया। लडाईने सारी दुनियामे उथल-पुथल मचा दी। रूसमे कमेरोका राज कायम हो गया, इसका भी असर पडा। दच्छिनी अफ्रीकामे गाँधीजी गोरी सरकारसे लड़ चुके थे। लड़ाईके बीचमे वह हिन्दुस्तान आ गये।

सोहनलाल—गाँधीजी जब हिन्दुस्तान आये तो देसकी सुततरताईके लिए यहाँ कौन-कौन काम कर रहे थे?

भैया—तीन तरहके लोग थे. एक तो सपरू जैसे पुराने ढर्रेके कागरेसी नेता जिनका काम था सरकारसे परार्थना करना, भिच्छा माँगना। वह किसी तरहका जोखिम उठानेको तैयार नही थे। यह खूब अँगरेजी पढे-लिखे होते थे। चमड़े के रगसे मजबूर थे, नही तो जहाँ तक बन पड़ता था वह साहब बहादुरका ठाट-बाट रखते थे। इनमे से चलते पुरजेके लोगोको अँग्रेज कोई नौकरी या पदवी देखकर अपनी ओर खींच लेते थे। इनका बिसवास था, कि अँगरेजोको न्यायसे बड़ा परेम है। उन्हें जोंकोके स्वभावका पता नही था, इसलिए समझते थे, कि बिलायती जोंकें किसी दिन अवढर-दानी संकरकी तरह हिन्दुस्तानको निहाल कर देंगे। दूसरी ओर कुछ नौजवान थे; जो समझते थे कि बम-पिस्तौलसे दो चार सरकारी नौकरोको मार देनेसे बिलायती जोंकें हिन्दुस्तान छोडकर चली जायेंगी। तीसरी तरहके लोग थे, जो कभी-कभी गरम-गरम लेक्चर दे देते थे और अँगरेजीको बुरा-भला कहकर कभी-कभी जेल चले जाया करते थे। इन तीनो तरहके लोगो में से किसीको आम जनतासे कोई वास्ता नही था। वह समझते थे, कि जनता न किसी राजनीतिको समझ सकती है, न निरभय होकर बलिदान कर सकती है, हम नेता ही हिन्दुस्तानका बेड़ा पार कर सकते हैं। गाँधीजी जनताकी ताकतको दक्खिनी अफरीकासे कुछ-कुछ समझने लगे थे। उन्होंने हिन्दुस्तानी कुलियोको वहाँ देखा था, कि वह कैसे लड़ाके हैं। पहिली लेड़ाई खतम हो रही थी। युद्धके लिए अँग्रेजोने भारत रच्छा कानून बना लिया था, लेकिन युद्धके बाद वह कानून चल नही सकता था। वह जानते थे कि लड़ाईके बाद दुनिया भरमें जबरजस्त

उथल-पुथल होगी। रूसमें उन्होंने देख ही लिया था, कि कैसे कमेरोंने जोंकोंको मसल डाला। इसलिए अँग्रेजोंने हिन्दुस्तान में एक ऐसा कानून बनाया, जिससे उथल-पुथल मचाने वालेको मनमानी सजा दी जाये। बोलक्कड लोगोंने इस कानून का बहुत विरोध किया, लेकिन सरकार क्यों सुने? गाँधीजीने इस बखत आगे कदम बढ़ाया और जनताकी तागतको इस काममें लगाया।

सोहनलाल—गाँधीजीका यह बडा काम है न भैया?

भैया—बहुत बडा काम है। इतना बडा काम है, जिसके लिए हिन्दुस्तान उन्हें कभी नहीं भूलेगा। जनता की तागतके सामने अँगरेजी सरकार घबराई। हजारों आदमियोंको जेलमें डाला। लोगोंके दिलसे जेलका डर बिल्कुल जाता रहा। अँगरेजोंने जो कानून बनाया था, वह रद्दीकी टोकरीमें डाल दिया गया। अब चिन्ता जेल जानेवालोंको नहीं, बल्कि चिन्ता थी अंगेजोंकी इतने लोगोंके रखनेके लिए जेल कहाँसे आयेंगे। गाँधीजीने साल भरमें सुराज पानेकी बात कही, जोंकोंके दिलको बदल देनेकी बात कही। लेकिन कोई जादू-मन्तर थोडे ही है कि सालमें सुराज चला आवे।

दुखराम—और जोंकोंका दिल तब न बदले जबकि उनके पास दिल हो।

भैया—गाँधीजीकी लडाई बन्द हो गई, लेकिन पहिले ही से कितने ही नौजवानोंने रूसके कमेरोंकी बात सुनी। मरकस बाबाकी सिच्छाको भी वह पढने लगे। हिन्दुस्तान में भी उस सिच्छाका बीज पडा। अँगरेजी सरकार घबराने लगी, यह बोलसेविक हिन्दुस्तानमें कैसे पहुँच गए? उन्होंने डाँगे और दूसरे कमूनिस्तोंपर १९२४ में कानपुरमें मुकदमा चलाया और उन्हें कडी सजा दी। कमूनिस्त मजूरोंमें काम कर रहे थे। अपने हकके लिए मजूर लडने लगे और मजूरी बढाने या किसी मजूरके निकालने पर बडी-बडी हडतालें होने लगी। १९२९ में ४ लाख मजूरोंने कलकत्ताकी गलियों में घूमते हुए बिलायतसे भेजे साइमन कमीसनका विरोध किया।

दुखराम—साइमन कमीसन क्या था भैया?

भैया—बिलायती जोंकें बहुत चालाक थी भाई! जब लोगोंमें ज्यादा असंतोस देखती हैं, तो पाँच-सात आदमियोंकी गुट्टको यह कहकर भेज देती हैं, कि यह लोग जाकर जाँच पडताल करेंगे, फिर हम तुम्हारे लिए जरूर कुछ करेंगे। इसी को कमीसन कहते हैं। उस दफन जो कमीसन आया था, उसका मुखिया था साइमन—जोंकोंका एक छँटा सरदार। इसीलिए उस कमीसनको साइमन कमीसन कहा जाता था। कमूनिस्तोंकी इस तागतको देखकर सरकार और घबराई और देस भरके कोने-कोनेसे गिरफ्तार करके, जोसी, अधिकारी, डाँगे, आदि उनतिस कमूनिस्तोंपर मेरठमें मुकदमा चलाया।

दुखराम—तो भैया, मरकस बाबाकी सिच्छा फैलानेसे बिलायती जोंकें बहुत घबराईं?

भैया—उतनेसे भी सन्तोष नहीं हुआ दुक्खू भाई! १९३४ में तो सरकारने कानून निकाल दिया कि कमूनिस्त पार्टीमें जो भी जायेगा, उसे जेलमें भेज दिया जायगा। लेकिन मरकस बाबाकी सिच्छा न फूस-सज्जापर सोनेवालोंके लिए और न गोबर गनेसोंके लिए ही है। वह हवामें सिच्छा नहीं देती, नरक-सरगका लोभ भी

यहाँ नहीं। जो गरीब हैं, मजूर हैं, रोज तकलीफोंको भुगत रहे हैं, उनको यह सिच्छा बहुत जल्दी समझमें आने लगती है। जनताको इस तरह मैदानमें आते देखकर विलायती जोंकोंके पेटमें पानी कैसे पचता ? जोंकें घबराती थीं, विलायती ही नहीं हिन्दुस्तानी भी। इसलिए नहीं कि गाँधीजी बोलसेविक थे और धनिकोंका धन छीन-कर पञ्चायती बना देते। गाँधीजीका साथ करनेका मतलब जेहलखाना-जुरमाना था, इसलिए वह घबराती थीं। लेकिन गाँधीजीके "विलायती माल न छुओ" कहनेसे हिन्दुस्तानी मिलोंका माल खूब बिकने लगा। खूब नफा होने लगी, तो सेठ लोग भी गाँधीजीकी आरती उतारने लगे, जमींदार भी दण्डवत् करने लगे, और अब गाँधीजीने भी बार-बार कहना सुरू किया, मैं सेठों-जमींदारोंका धन छीनना नहीं चाहता, मैं तो इतना ही चाहता हूँ कि सेठ-जमींदार किसान-मजदूरोंके माँ-बाप बन जायँ।

दुखराम—इसीको कहते हैं भैया, "नदिया (दूध के बरतन) की साखी बिलाई।"

भैया—यह सब बात पुरानी हो गई दुक्खू भाई! विलायती जोंकोंने देखा कि कमेरोंका राज रूसमें कमजोर होनेकी जगह और बढ़ता ही जा रहा है, मरकस बाबाकी सिच्छा भी दुनियामें फैलती आ रही है, हिन्दुस्तानमें भी उसे दबाया नहीं जा सकता। उधर हिन्दुस्तानी भी सुराज-सुराज कह रहे हैं, अगर कुछ नहीं करेंगे तो, सब हमारे खिलाफ हो जायँगे।

सन्तोखी—बन्धन (रेहन) से बूडा (बै) हो जायगा।

सोहनलाल—और हिन्दू-सभावाले भी तो लड़ाके थे।

भैया—रहनेदो हिन्दू सभाकी बात।

सोहनलाल—सावरकर क्या लड़े नहीं, क्या उन्होंने अपनी जवानी अँगरेजोंके साथ लड़नेमें नहीं बिताई ?

भैया—क्या उन्होंने अपने बुढ़ापेको अँगरेजोंके राजको मजबूत करनेके लिए नहीं बिताया ? भाई परमानन्दको भी किसी वक्त फाँसीकी सजा मिली थी, लेकिन उसका यह मतलब नहीं है, कि वह पुरानी आग बाद भी उनके भीतर रही। सोहन भाई! अंडमनके काले पानी में उनकी सारी आग ठंडी हो गई। बासी खानेवाला बहादुर नहीं होता।

दुखराम—ऐसे ही हिन्दू सभाके नेता रहे, जो गरीबोंका खून कच्चा पी जाते। सिपाही सवार छाँट-छाँट कर गुंडे रखते और एककी डेढ़ मालगुजारी दिये बिना पिंड नहीं छूटता। कभी मोटरका चन्दा लगता, तो कभी हाथी का। ब्याह-बरातके लिए हजारों रुपया वसूल करते।

भैया—अब हिन्दू-सभामें या तो इसी तरहके गरीबोंके खूनको चूसकर [illegible] हुए राजा-महाराजा, जिमींदार हैं, या उनके टुकड़ेसे जीनेवाले, क्या जाने [illegible] पागल भी निकल आयें।

दुखराम—तो अब यह लोग जोंकोंके सरदार बनकर अपनी [illegible] चाहते हैं।

भैया—देखा ना दुक्खू भाई! जोंकें अभी कितने-कितने [illegible] हैं। धरमके नामसे उन्होंने हजारों बरसोंसे पागल कर रखा है, [illegible] कहकर वह गाँधीजी को गाली देने चले हैं।

सोहनलाल—तो भैया ! तुम चाहते हो कि हिन्दू अपना धर्म न बचावें ?

भैया—जिनको गुलामीसे इतना प्रेम है, वह भारत माताकी कितनी इज्जत करते है, यह खुद समझ सकते हो।

सोहनलाल—तो हिन्दू क्या बाधा डालते हैं ?

भैया—हिन्दुओंका बरताव। हिन्दुओंने दस करोड आदमियोको चमार, मुसहर, डोम बनाकर उन्हे जानवरसे भी बदतर कर दिया। जब कोई उनमेसे मन्दिरोमे जाता है, तो कह देते है कि पोथीमे इसके खिलाफ लिखा है। पोथियाँ किसने बनाई। उन्होने, जो कहते हैं कि जोके भगवानकी ओर से भेजी गई हैं। जमीदार और सेठ किसानो-मजूरोको चूसते हैं, तो यह भी वह धरम करते हैं। पहिले जनमका पुन्न है, इसीलिए उनको धन मिला है। लेकिन दुक्खू भाई ! तुम्हे मालुम है न कि जोकोंके घर मे भगवान सोनेकी बरसा नही करते, एक आदमीको धनी बनानेके लिए ही निन्नानवे आदमियोको भूखा मरना पडता है।

दुखराम—हाँ भैया ! सब पोथी-पत्रा जोकोके फायदेके लिए बना है।

भैया—अभी ३० बरस पहिले (१९२१ई०)तक नेपालके हिन्दू-राजमे आदमी खरीदे-बेचे जाते थे और पोथी-पत्रेवाले कहते फिरते थे, कि यह सब भगवानकी पोथीमे हुआ है।

दुखराम—तो भैया ! नेपालमे आदमियोका बेचना-खरीदना कैसे बन्द हुआ ?

भैया—दुनिया मे थू-थू होने लगी, इसीलिए। और नेपाल राजकी सावरकर और भाई परमानन्द तारीफ करते नही थकते थे। असल बात है कि जो-जो हिन्दू-हिन्दूके नामपर चिल्लाते थे, उनमे बहुत ज्यादा अँगरेजोके खुसामदी थे—"करत बहुत निज प्रभु कर काजा"। रूसमे भी जब जोकोका राज था तो इस तरहके लोग वहाँ भी बराबर झगडे उठाया करते थे।

दुखराम—रूसमे भी तो भैया १८२ जाति हैं। वहाँ कैसे रास्ता निकाला गया ?

भैया—वहाँ पहिले ही मान लिया गया, कि कोई जाति दूसरी जातिकी गुलाम नही है, जिस जातिकी जो भूमि है, उसका कर्ता-धर्ता वही है। इसलिए एक-एक जातिका एक-एक पञ्चायती राज बनाया गया है, जहाँके राज-काजको उसी जातिके लोग चलाते हैं। अपनी भूमिमे अपने कर्ता-धर्ता होनेसे उनको डर नहीं है, कि दूसरी जाति दबायेगी। इसीलिए एक सौ बयासी जातियो ने मिलकर बीस आदमियोका एक बडा पचायती राज बनाया है। यहाँ भी उसी बातको मान लो तो सारा झगडा मिट जाये।

सोहनलाल—लेकिन पाकिस्तान बन जाने पर वहाँके मुसल्मान ईरान, तुर्की अफगानिस्तानसे मेल करके हिन्दुस्तान पर हल्ला बोल दें तो फिर क्या होगा ?

भैया—सोहन भाई ? दुनियामे जितने मुसलमान देस हैं, सब पाकिस्तानसे चौथाई-तिहाई ही हैं। पञ्जाबकी ओरके पाकिस्तानके मुसलमानो की आबादी ३ करोड होगी जब कि ईरान की १ करोड ८० लाख हैं, अफगानिस्तान १ करोड, तुर्कीकी १ करोड ७८ लाख; मिसकी १ करोड ६०लाख; बनाओ दूसरे मुस्लिम देस पाकिस्तान-की पूँछ बन जायेंगे या पाकिस्तान दूसरे देसोका ? मरकस बाबाने तो ऐसा रास्ता बतलाया है, कि उनमे देस-जाति-धरम का झगडा ही नहीं लग सकता। हम रोटी-

कपडाके लिए लडते हैं, कोई धरम हमारे रास्तेमे बाधा न डाले। जो बाधा डालेगा, उसे ही नुकसान उठाना पड़ेगा। हिन्दूके नामपर, मुसल्मानके नामपर जोकोको छिपाया नहीं जा सकता।

दुखराम—भैया! बरसातके मेढकोकी तरह से जान पड़ता है जोकें न जाने कितने धरम निकालेंगी और कौन-कौन-सी खुराफात जोडेंगी। लेकिन मरकस बाबाने जो कसौटी दे दी है, उससे खरे-खोटेका पहचानना बहुत आसान है। मैं देख चुका हूँ, कितने राजा-महाराजा लोग कौंसलमे वोटके लिए खडे हुए थे और कितने पडित और पुरोहित बडा-बडा टीका लगाकर लोगोको समझाते फिरते थे, कि कांग्रेसवाले जो गये तो हिन्दू धरम नही बचेगा, वह हिन्दू-मुसल्मान सबको एक करना चाहते हैं।

भैया—लेकिन दुक्खू भाई, कांगरेसवालोंमे जो किसीने मुसल्मानके साथ खाया होगा, तो रोटी-दाल, लेकिन इन राजा-महाराजाओकी लीला अपरम्पार है। यह साहब बहादुरके साथ बैठ न जाने क्या-क्या खाते हैं।

दुखराम—इसीको कहते हैं "छप्पन चूहा खाईके बिलारी भई भक्तिन"।

सोहनलाल—लेकिन भैया! फलाने सासतरी, फलाने राजा जैसे बडे-बडे दिग्गज लोग भी हिन्दू-धरमकी बात करते हैं?

भैया—तुम बूढे-बूढे नामोको देकर डराना चाहते हो। मैंने कहा नही कि बूढोका दिमाग मरनेसे पहिले ही मुरदा हो जाता है। ऐसे बहुत कम बूढ़े देखनेमे आते हैं, जिनका दिमाग मरते दम तक गगाकी धाराकी भाँति बहता रहे, नही तो वेसी सठिया जाते हैं। फिर तुम ऐसे नामोको भी ले रहे हो जिनके केस अगरेजोकी गुलामीमे पक गये। जिन्होंने अपने पेटके लिए अगरेजोके हाथको मजबूत किया। पाँच रुपयेकी नौकरी करनेवाले सरकारी चपरासीसे आप कुछ आसा भी रख सकते है, सोहन बाबू, क्योंकि उसको पाँच रुपयेकी नौकरी दूसरी जगह भी मिल सकती है, आधा पेटको तो आधा खाना कही न कही मिलता ही है। लेकिन जिसने दो हजार-पाँच हजारके लिए अँगरेजोकी ताबेदारी कबूल की थी, उसके भीतर उतनी हिम्मत कभी नही हो सकती। नौकरी छूट जानेपर कौन इतनी मोटी तनखाह देगा? फिर घरमे जो इतना बडा-बडा लिफाफा है वह कैसे रहेगा? कहाँ नवाबी ठाट और नवाबी मिजाज और कहाँ अब दर-दरके भिखारी! क्या तुम कभी ऐसे लोगोसे उम्मेद रख सकते, कि यह अँग्रेजोंके खिलाफ जायेंगे?

दुखराम—पिनसिनिहो, भैया और लीचड (डरपोक) होते हैं। पिनसनिहोका क्या कबुरमे पैर लटकाये सभी बूढे लोचड होते हैं। जवानोको तो जल्दबाज कह देते हैं, लेकिन जल्दबाज होनेपर भी जवान अपनी इज्जत-बातपर जान दे देते हैं; लेकिन बूढोकी चली तो बेसरमी की बिद्दा जवानोको भी सिखा दें।

११ • पण्डा, मुल्ला, सेठ

सन्तोषी—पुरोहितों और मौलवियोंके बारेमे बताओ भैया ।

भैया—वे खुद जोक हैं और जोकोके दलाल भी । देखते नही जब कोई राजा कौन्सिलके लिए खड़े होते थे तो पुरोहित लोग चारो ओर चक्कर काटने लगते, भगवान और धरमकी दुहाई देते-देते कान बहरा कर देते । पुरोहितो और मौलवियोंने कभी गरीबोका पच्छ नही लिया ।

सोहनलाल—भैया, तुम भी कबीर साहबकी तरह मौलवियो और पण्डितोके पीछे पड गये ।

भैया—पण्डित सरगका एक रास्ता बताते थे, मोलवी दूसरा रास्ता, मोलवीके मतसे गायका मास खाकर सरग जाता है, पण्डितके मतसे गायका गोबर खाकर । पडित सिरपर चुटिया बाँधकर सरग पहुँचाता है, मौलवी दाढ़ीमे चुटिया बाँधने को कहता है । फिर यह भी नही कि कह दें कि "भारत सोइ जाकहँ जो भावा," वह एक दूसरेका सिर भी फोडनेको तैयार थे । कबीरसाहबको वह बुरा लगता था, वह इस खून-खराबीको पसन्द नही करते थे, चाहते थे हिन्दू-मुसलमान एक होकर रहे । इस-लिये उन्होने कहा "सोई राम सोई रहीम" बेचारे समझाते थे कि है कोई अलख निरजन इस दुनियाकी सुध लेनेवाला, इसलिए नही चाहते थे कि दुनियाकी सुध लेने-वाले (राम-रहीम) पर बिसवास करनेवाले एक-दूसरेका गला काटे । उन्होने सोचा था कि राम-रहीमको एक मान लेनेसे काम बन जायगा लेकिन झगड़ेका दोसी राम-रहीम नही था ।

दुखराम—राम-रहीम दोसी नही था तो कौन था भैया ?

भैया—जो राम-रहीम होता और उसमे उतनी तागत होती जितनी पडितों की पोथियो और मुल्लोकी किताबमे लिखी हुई तो हजारो बरसोसे अपने नाम पर करोडो आदमियोको कटते-मरते देखकर वह चुपचाप बैठा न रहता । असलमे मजहबके पैदा करनेवाले भी जोकें है । भगवानको भी पैदा करनेवाली जोकें है । मैंने पहले कहा था कि एक निठल्ले आदमीको कोई क्यो अपना सरबस देकर भूखे मरनेके लिए तैयार होता ? इसीलिए उन्होंने राम-रहीमको पैदा किया, जिसने उन्हे राजा बनाया । राम-रहीम हैं, कबीर साहब यह बिसवास रखते थे, फिर पडित-मुल्लावे झगड़ेको मिटाना चाहते थे । उनको पता ही नही था कि जब तक दुनियाको नरक बनानेवाली जोकें हैं तब तक राम-रहीम एक कह देनेसे झगडा नही मिटेगा ।

दुखराम—मैं भी एक बात कहूँ भैया ।

भैया—कहो दुक्खू भाई ।

दुखराम—तुमने भैया जो उस दिन कहा था न कि मजहब और भगवान को गाली देनेमे हम लोगोकी अपनी तागत नही लगनी चाहिए, हमें देखना है कि कैसे कमेरोको रोटी-कपडा मिलेगा ? मैंने अपने मुँहमे जाबा लगा लिया लेकिन जानते हो न भैया, मरकस बाबाकी बातने दिलमे ऐसी आग लगा दी है कि जोकोंने जाल-फरेब-

[illegible]

[illegible]

दुखराम—मैं [illegible] भैया ! एक दिन मैं [illegible] [illegible] हरखू [illegible] हरखू पंडित [illegible] दुखराम [illegible] है। हरखू पंडित [illegible] और [illegible] । मैंने भी [illegible] कहा। उन्होंने [illegible] कहा—"जा तेरी [illegible] भगवानको नहीं मानता देवी-देवताको गाली देता है।" मैंने बहुत नरमीसे कहा—"देवता ! [illegible] नाराज हुए हैं मैं किसी देवी-देवताको गाली नहीं देता।' हरखू पण्डितने कहा—"तो तुम भगवानको मानते हो ?" मैंने कहा—"मैं तो बाबा ! भगवानको नहीं मानता लेकिन भगवानके पूजनेवालोंसे मेरा बहुत प्रेम है। इसीलिए भगवानको मैं गाली नहीं देता।" हरखू पण्डितने मुंह फाड़कर कहा—"जो तू खुद नहीं मानता तो जरूर गाली देता होगा। मैंने कहा—'बाबा ? हमारा बच्चा है वह हाथी घोड़ा लेकर खेलता है हम सयाने जानते हैं कि वह असली हाथी घोड़ा नहीं है लकड़ी मट्टीका है। लड़केको जो यही बात हम कहने लगें तो लड़का रोने लगेगा। बच्चेसे हमको प्रेम है, और बच्चेको काठ-मट्टीके घोड़ेसे, इसीलिए बच्चेके प्रेमका ख्याल करके हम उस खिलौनेको भी भला-बुरा नहीं कहते।' मैंने ठीक कहा न भैया ?

भैया—हाँ, ठीक कहा दुखू भाई ?

दुखराम—हरखू पण्डितने कहा—'तू भगवानको नहीं मानता, तो तेरी गति नहीं होगी, लेकिन तू भगवानको गाली नहीं देता तो यह अच्छा है।" हरखू पण्डितकी टेढ़ी भौंहें कुछ सीधी हुईं लेकिन जब वह चलने लगे, तो उनका मुँह उसी तरह उतरा हुआ था। दूसरे दिनकी बात है मैं और रमजान खटियापर बैठे थे, उनके यहाँ गाँवके जुलाहाको नमाज पढ़ानेके लिए एक मोलवी आते हैं। रमजानने किसी दिन यह किया था। मोलवी को देखकर हम दोनो खड़े हो गये और उन्हें चारपाई पर बैठाया। मोलवीको किसीने कह दिया था कि दुखराम रमजानके दरवाजेपर बैठा हुआ है, वह राम रहीमको नहीं मानता। मोलवी साहब ने कहा—"सुना है दुखराम तुम करतारको नहीं मानते। हिन्दू मुसलमान बहुत सी बातें अलग-अलग मानते हैं। लेकिन दुनियाके बनानेवालेको सभी मानते हैं तुम क्यों नहीं मानते, मैंने कहा—दुनिया बड़ी खराब बनी है मोलवी साहब हजारों आदमी जो सड़कपर काम करते उनका पेट नहीं भरता और एक आदमी निठल्ला बैठा रहता है, वह ऐश ऐश करता है जिस करतारने ऐसी नरक दुनिया बनाई है, उसे माननेसे क्या फायदा !' मोलवीने कहा—'करतारसे दुआ माँगोगे, उसके सामने गिड़गिड़ाओगे तो वह तुम्हारी बिगड़ी बना देगा।' मैंने कहा—'मैंने क्या कसूर किया था कि हमें बिगाड़ा, और जो बिना कसूर ही

इतना बिगाड सकता है, उससे मैं किसी चीजकी उम्मेद नही करता।" मोलवीने कहा—"तो करतार, सरग दोजख कुछ नही मानते।" मैंने कहा—"मैं नहीं मानता मोलवी साहब, लेकिन आप या दूसरा जो कोई करतारको, मानता है, उसको मैं बुरा नही कहता। मैं इतना ही चाहता हूँ कि रोटी-कपडेकी दुनियामे किसीको चिन्ता नही रहे, बस इस काममे हम लोग सब एक रहे, क्योंकि भूख सबको एक तरह सताती है, जाडा-गरमी एक तरह लगती हैं।" मोलवी हुरखू पंडित के इतना उजड्डे नही थे। उन्होने मुस्कराते हुए कहा—"तो रोटी-कपडेके लिए काम करनेको कौन रोकता है।" मैंने कहा "न रोके तो इससे मुझे बडी खुसी होगी मोलवी साहब, फिर तो मैं कहूँगा कि रोटी-कपडेका काम लोगोको सौंप दें जो कि जोकोका राज हटा हम कमेरोका राज कायम करना चाहते हैं।"—मोलवीने कहा—"और हम क्या करे।" मैंने कहा—"आपको बहुत बडा काम है, जिनगी तो चार दिनकी है न, सरगमे आदमी वे अन्त समय तक रहता है, बस सरगका काम आप सँभाला।" मोलवीने कहा—"जो हम खाली सरग हीकी बात करें, तो हमे कौन पूछेगा। हमे गडा देना पडता है, तबीज देनी पडती है।" मैंने कहा—"गडा भी आप दीजिये, तबीज भी आप दीजिये, लेकिन सरग जानेके लिए।" मोलवी ने कहा—"और जो किसीको लडका-लडकी चाहिये तो।" मैंने कहा—"गडा-तबीजको मैं नही पसन्द करता। लेकिन मैं जानता हूँ कि जब तक वह नरककी दुनिया रहेगी तब तक गडा-तबीज देने-लेनेवालोको कोई रोक नही सकता।" क्यों भैया मैने ठीक कहा न ?

भैया—ठीक कहा तुमने दुक्खू भाई। बेठीक होनेका तुम्हे कैसे सक हुआ।

दुखराम—सक इसीलिए हुआ भैया। कि इसके बारेमे बात नही की थी। खाली भरवस बाबाने जो आँख खोल दी है, उसीके बलपर मैं बोल गया।

भैया—और तुम्हारा बोलना ठीक रहा दुक्खू भाई।

दुखराम—और जोतिसके बारेमे तुम्हारी क्या राय है ?

भैया—जोतिस दो तरहका है दुक्खू भाई, एक तो वह जोतिस है जो गिनती करके बतला देता है, कि सुरुज-गरहन कब होगा, चदर-गरहन कब होगा। अकासमे मगल, बुध आदि-आदि गरह और हमारी धरती भी सुरुजके किनारे घूमती है। जितने आकासमे तारे छिटके देखते हो, उनमे आँखसे दिखाई देने वाले पाँच ही छ तारे जो सुरुजके किनारे घूमते हैं, नही तो बाकी सभी तारे सुरुज हैं।

दुखराम—तो सब तारे सुरुज हैं भैया ? फिर वह उतने छोटे क्यो मालूम होते हैं ?

भैया—हमसे बहुत दूर हैं, दो आदमी बराबर-बराबरसे हो, एक हमसे पाँच हाथपर खडा हो दूसरा पाँच सौ हाथपर, तो पाँच सौ हाथवाला छोटा मालूम होगा कि नहीं ?

दुखराम—हाँ, छोटा मालूम होगा भैया ?

भैया—यह तारे क्या चीज हैं, वह हमसे कितना दूर हैं, वगैरह बातें पचास-पचहत्तर सालसे ही हमें मालूम हुई हैं।

दुखराम—सुरुज-गरहन, चदर-गरहनकी बात लोग बहुत पहलेसे जानते थे तो तारोंके बारेमे क्यो नहीं जान सके ?

भैया—दूरकी चीज देखनेके लिए आँखको मदद करनेवाली दूरबीन उस वक्त नहीं थी, और बहुत दूर रहनेवाली चीजोंको आँख देख नहीं सकती। अँधेरेमें रोशनी होनेसे कुछ तारे जरूर दिखाई पड़ते थे, लेकिन वह भी बहुत कम दिखाई पड़ते थे। लेकिन मामूली दूरबीन लगाकर देखनेसे भी पचास हजार तारे दिखाई पड़ने लगते हैं। ढ़ाई इंची दूरबीनसे तीन लाख तारे दिखाई पड़ते हैं। आजकल सबसे बड़ी दूरबीन (सौ इंची) विल्सनगिरि अमेरिकामें है, उससे डेढ़ अरब तारे देखे जाते हैं ?

दुखराम—तो दूरबीनसे आँखकी ताकत बहुत बढ़ जाती ?

भैया—हाँ, उसी तरह जैसे रेडियो बाजासे कानकी ताकत बढ़ जाती है। तीन सौ बत्तीस बरस (१६११ई०) से पहिले दुनियामें कोई दूरबीन नहीं जानता था। अकबरके मरनेके सात बरस बाद गलेलियोने पहिली दूरबीन बनाई।

दुखराम—तो जो यह जोतिसी सबका आगा-पीछा बतला देते हैं, किसीको क्या होनेवाला है, सब कह देते हैं, ऐसी बातें तो वह न जाने के हजार बरससे जान गये थे, लेकिन मामूली दूरबीन भी तीन सौ बरससे पहले नहीं बना सके। मुझे तो भैया ? यह बात बतलानेवाला जोतिस भी जोंकों हीका फरेब मालूम होता है। पचास बरस बाद मुझे क्या होनेवाला है, यह पहले हीसे पक्की हो गई, तभी तो जोतिसी मेख बिरिख कहके बता देता है, फिर जब एक-एक दिन क्या बीतनेवाला हैं सभीको पहलेसे ही लिख दिया गया है, तो हाथ-पैर हिलाना बेकार है।

भैया—तुम्हारी जिन्दगी भरकी बात पहलेके नहीं लिख दी गई, तुम्हारा लड़का कब किस नच्छतरमें पैदा होगा, यह भी जोतिसमें लिखा दिया है। और जब नच्छत्तर मालूम हो गई तो उसकी भी कुंडली जोतिस तैयार कर देगा और उसे एक-एक दिन क्या बीतेगा, यह भी जोतिस बतला देगा।

दुखराम—माने हमारी कुंडली तो बनी है। लड़केकी कुंडली भी बापकी कुंडलीसे तैयार हो सकती है, क्योंकि पुत्र जनम जोतिससे मालूम ही हो जायगा, और दो पोत-पर पोते और साठ पीढ़ी आगे तककी कुंडली और एक-एक दिन क्या बीतेगा, सब बतलाया जा सकता है, जोतिसमें सब लिखा ही हुआ है। यह तो भारी चाल है भैया ! जोंकोंकी। बारह सौ बरस आगे तककी जब बातें पहलेसे ही पक्की हैं, तो आदमी हाथ-पैर हिलावे या न हिलावे, बात होकर रहेगी। तब तो आदमी भाग्यका बनानेवाला नहीं रहा। नहीं-नहीं भैया। यह हम कमेरोंके हाथ-पाँवको बाँधकर जोंकोंके सामने पटक देने का जाल फरेब है, जोतिस और कुछ नहीं।

भैया—लेकिन जोंकोंने कैसा ढंग निकाला दुक्खू भाई ? तुमको भी पछाड़ दिया, अपना काम भी बनाया और जोतिसीकी भी पाँचो घीमें है।

दुखराम—मुझे तो भैया ? आदमी की बुद्धिपर अपसोस होता है। अच्छे-अच्छे पढ़े लिखे लोग भी कुंडली और हाथ दिखानेके लिए दौड़ पड़ते हैं, जान पड़ता है काबुलमें भी गधे होते हैं।

भैया—यह कहनेसे कोई फायदा नहीं। दुक्खू भाई ? जब तक आदमीकी जिन्दगी निश्चित नहीं है, आज भी उसको खाने-कपड़े की चिन्ता है, के ब्याहकी भी चिन्ता है, कल उससे भी अधिक चिन्ता है, तब तक

जोतिसियोंके पास आनेसे कोई नहीं रोक सकता। इसलिए भाग बतानेवाले जोतिसी के पीछे लाठी लेकर पड़नेकी जरूरत नहीं। सबकी जड़ जोंकें हैं, उनको काट दो बस सारा काम हो जायगा।

मन्तोखी—भैया महातिमा लोग भी तिरकालकी बात बताते हैं और उनके जालमें भी लोग फँस जाते है।

भैया—एक जाल नहीं है, यहाँ पग-पगपर जाल है दुक्खू भाई! एक भाईने मुझे चिट्ठी लिखी है। इधर कुछ दिनोंसे मुझे यहाँ एक प्रधान मत जैन श्वेताम्बर तेरा पंथी के आचार्य का सत्संग होनेके पश्चात्...आधुनिक समयमें जब कि मनुष्यने सुखकी प्राप्ति भौतिक साधनों-द्वारा सम्भव मान ली है, जब कि विलासिता और ऐश्वर्य का बोलबाला है, जब कि सभ्यताके नामपर हमने मनुष्यको, देवत्वको तिलांजलि दे दी है, इन साधुओंकी तत्परता, इनका त्याग, इनका वैराग्य, इनका संयम इत्यादि देखकर मनुष्योंको चकित रह जाना पड़ता है। मैं दावेके साथ कह सकता हूँ, जितनी सच्चाई और दृढ़ताके साथ इनका पालन ये करते हैं, यह अद्वितीय है, संसारमें रहते हुए जो विरक्ति ये लोग सांसारिकोंसे रखते हैं। यह अद्वितीय है, श्री भूलाभाई देसाई और हिन्दू महासभाके सहायक-मन्त्री चकित रह गये। उन्होंने यहाँ तक कहा कि इनकी अहिंसाके सामने तो गीताकी अहिंसा भी फीकी पड़ जाती है।...हिन्दू-महासभा के सहायक मन्त्री तो यहाँ तक मुग्ध हो गये कि उन्होंने स्पष्ट शब्दोंम कह दिया, कि अगर मैंने कभी धर्म ग्रहण किया तो इसको छोड़कर दूसरा कदापि न करूँगा। इनका त्याग इतना जबर्दस्त है कि गृहस्थ लोगोंके साथ सम्पर्क तो दूर इनको यह पता चल जाय, कि कोई वस्तु हमारे लिए खरीदी या तैयार की गई है, तो भिक्षामें भी उसे कदापि ग्रहण न करेंगे। संयम इतना कि साध्वियाँ पुरुष-मात्र और साधू स्त्रीमात्रके स्पर्शको पाप मानते हैं। पचासों आजन्म ब्रह्मचारी आपको मिलेंगे। जिन-जिन लोगोंने इनकी जाँच की है, उनकी एक मतसे यही राय रही है कि यही पूर्वकी एक आदर्श संस्था है। मेरा भी झुकाव इस तरफ होनेके बावजूद मैं इसको उस वक्त तक नहीं मानना चाहता, जब तक आप इसकी जाँच न कर लें। (२९ जुलाई, १९४४ ई०)

दुखराम—भैया ससकिरतमें किसीने लिखा है क्या, मुझे तो कुछ समझमें नहीं आया?

भैया—नहीं आया यही अच्छा है दुक्खू भाई, समझमें आया होता तो न जाने क्या कह डालते।

दुखराम—आप कहेंगे तो मैं जीभको बाँधकर रखूँगा भैया! लेकिन सुनायें तो क्या बात है?

भैया—एक बात यह है कि खाते-पीते आदमी हैं, उनके पास पक्का मकान है, नौकर-चाकर हैं, देखा तो नहीं शायद उनकी बीबी भी हो, बच्चे भी हों, उनकी बदनपर सोनेका गहना और रेशमी नहीं तो अच्छी बारीक सूत की साड़ी रहती हो, खानेके लिए दूध घी और फल-मेवा भी मिल जाता हो। कलकी चिन्ता उनको उतनी ही है, जितनी किसी करोड़पति सेठको, दूसरे दिन दिवालिया हो जानेकी।

दुखराम—भैया ? जोकें कलकी परवाह नही करती, वह नगद धरम मानती हैं, "आज नगद कल उधार।"

भैया—तो भी दुक्खू भाई, जिसने यह खत लिखा है, वह चाहे जोकोका ही अंडा-बच्चा हो, लेकिन उसका दिल उतना कठोर नही है। बेचारा बडी कोसिस करता रहा है, कि जोकोके जालसे निकले, लेकिन जोकोका जाल कहाँ-कहाँ फैला है, इसको जानना बहुत मुस्किल है, चिडिया हवामे उडना चाहती थी, उसने भी समझा कि निरमल अकासमे कोई डर नही, लेकिन बहेलियाने वहाँ भी जाल टाँग रखा है। और उसी जालमे फडफडा रही है। बेचारा भाई एक साधूको देखता है, जो दुनियाके लोगोसे बिल्कुल वैराग रखते हैं जिनके वैरागको देखकर हिन्दुस्तानके आरामसे जिन्दगी काटने वाले कुछ बडे-बडे लोग...

दुखराम—बडी-बडी जोकें।

भैया—बडे-बडे लोग अचरज करते हैं और एक बडे आदमी तो ऐसे हैं कि हिन्दू धरमका बेडा-पार करते हैं, लेकिन अभी तक वह कोई धरम नही मानते। इन महातिमाको देखकर उन्हें भी धरम माननेकी साध लगी।

दुखराम—वही सावरकरवाली हिन्दू सभा न भैया, जो बडी बडी जोकोकी मुट्ठीमे है।

भैया—अच्छा, ये महातिमा इतने त्यागी हैं कि जो इनके लिए कोई चीज खरीदकर भी दे तो वह भिच्छा मे नही लेते।

दुखराम—तब तो वह महातिमा खाली हवा पीते होंगे। क्योकि दुनियामे जोकोंकी कोई ऐसी चीज ही नही है, जिसे खरीदा-बेंचा न जाय।

भैया—और मैं यह भी समझता हूँ दुक्खू भाई कि वह महातिमा ऐसे गरीबोके घरोंमे नही रहते होंगे, खून-पसीना एक करके धरतीसे अनाज पैदा करते हैं, कपास पैदाकर अपने हाथसे कपडा बनाते हैं, क्योकि महातिमाके पचासो चेलो और चेलियो को बैठे-बैठे खाना-कपडा देना गरीबके बसकी बात नही है।

दुखराम—पचासो चेले-चेलियाँ ! और वह क्या करते हैं भैया ?

भैया—यह तमाम जिनगी भर बरमचारी रहते हैं, न औरत मर्द को छूती है न मर्द औरतको छूता है।

दुखराम—हिजडा-हिजडी होगे भैया ! इसमे कौन बात है ?

भैया—हिजडा-हिजडी होंगे। न भी हो तो भी दुक्खू भाई ! मैं साधू साधुनियों की लीला जानता हूँ। बरमचारी तो क्या होगे, लोगोंकी आँखोमे धूल झोकते हैं। बस यही ध्यान रखते हैं, कि बात खुलने न पाये। एक दो आदमी बात कहते, तो मैं समझता कि पागल होंगे या जैसा तुम कह रहे हो उसी तरहके हिंजडे होगे, लेकिन जब पचास-पचास चेले-चेलियोंके तमाम जिनगी बरहमचारी रहने की बात कहते हैं, तो मुझे इसमे जरा भी सक नही, कि यह खूब जबर्जस्त ढोग है। ऐसे बरहमचारी-बरमचारिनियाँ रिखीकेसमे हजारो हैं, उत्तर कासीमे भी हैं। किन्तु तो गगात्तरीके हाड चीरनेवाले जाडे में बिल्कुल नगे दिगम्बर रहते हैं। उनमे एक है महातिमा किसन

आसरम। आज बीसो बरससे वह हिमालयमें बैठे रहते हैं, उनकी तपस्याके बारेमें क्या पूछते हो, हिन्दूधरमके सबसे बड़े नेता मालवीजीको अपने बीस लाखवाले मन्दिर के नींवरखने के लिए हिन्दुस्तान भरके बड़े-बड़े महात्माओंकी खोज होने लगी। उस वखत मालवीजीको महात्मा किसन आसरम ही ऐसे दिखाई पड़े जो कासीमें आकर दूसरे विस्वनाथ बाबाकी नींव डालने लायक हैं। उन्होंने ही विस्वनाथ की नींव डाली और महात्मा किसन आसरम के बड़े बरहमचारी हैं, उन्होंने सिरिफ राजाराम बरहमचारी हैं, वे दूँगे लड़केकी वहू भानदेको गीता पढ़ाया और और बेचारे पहाड़ी गीत गाते फिरते हैं—

"बरमीको पेरा, तैं क्या बुरा मानो राजारामको डेरा।
लाना दुनी खाट रे। तैं भलेसीबचो गीताको पाठ रे।
चौंणे तू बेंगला भाज दे! चौंणे तू बेंगला तेंने कामो छोड़ी हरसिलको
बेंगला पूंनागीको गोली, तैं ना भालो मान दे! अबोलाके बोली।"

दुखराम—किसन आसरम और भानदे न जाने कितने पड़े हुए हैं भैया!

भैया—एक आदमी और एक औरत साथमें रहें, यह कोई बुरा नहीं है, लेकिन यह बरहमचारी-बरहमचारीका ढिंढोरा क्या पीटा जाता है। मान लो दुक्खू भाई कोई मरद रहते भी हिजड़ा बन जाता है, तो दुनियाको इससे क्या फायदा?

दुखराम—दुनियाको न फायदा हो, जोकोंको तो फायदा है, वह कहती फिरेंगी कि छोड़ो दुनियाके दुख-सुखको, इसी तरह तुम भी महात्मा बन जाओ।

भैया—दुनियामें हजारों बरसोंसे ऐसे बरहमचारी होते आये हैं, इनसे भी बढ़कर त्यागी हुए हैं, लेकिन उससे दुनियाका नरक जौ भर भी कम नहीं हुआ।

दुखराम—और इन हजार बरसोंमें जबसे कि जोंकोंका राज कायम हुआ, लोग बराबर इस तरहके जालमें फँसते रहे?

भैया—मैं तो समझता हूँ दुक्खू भाई! ऐसे साधुओंमें कुछ ईमानदार भी रहे होंगे, वह दिलसे धनिकोंको पसन्द नहीं करते थे, हाँ, वैसी धोखेबाज और पागल ही रहे हैं, लेकिन ईमानदारोंकी ईमानदारी और सच्चाई किस कामकी जो कि गरीबोंके गलेके फन्देको और मजबूत करती है? जो इन महात्माओंमें ईमानदारी है, और इनमें सोचने-समझनेकी ताकत है, तो क्यों नहीं समझ लेते कि जो हजारों बरससे नरककी जिन्दगी बिताते हैं, उन ९९ सैकड़ा लोगोंके दुख को दूर करना है। वह ब्रह्मचर्य किस कामका, जो आदमीको खुदगरजी सिखाये, वह दुनियाको चूल्हे-भाड़में पड़ने दे और, अपने निवारनके पीछे दौड़ता फिरे। मैं तो महात्मा उसे कहूँगा, जो प्रतिज्ञा कर ले, कि जब तक करोड़ो आदमी पीढ़ी-के बाद पीढ़ी नरककी जिनगी बिता रहे हैं, तब तक मेरे लिए निरबान नहीं चाहिए, मुकती नहीं चाहिए, सरग नहीं चाहिए। वैसे तो कितने ही घोड़े-घोड़ियाँ थानपर बँधे जिनगी भर बरहमचारी रह जाती हैं। लेकिन जिस दिन वह महात्मा यह बात तय कर लेंगे, उस दिन उन्हें आटे-चावलका भाव मालुम हो जायगा फिर सेठ-सेठानियाँ उनकी आरती नहीं उतारेंगी, फिर राजा-नवाब उनका चरनामित नहीं लेंगे।

सोहन लाल—तो भैया तुमने क्या जवाब दिया चिट्ठीका, क्या महात्माका दरसन करने जाओगे ?

भैया—अपने एक दोससे कहा कि आप चलें तो मैं भी चलूं उन्होंने जवाब दिया—"मैं ३५ साल तक जगल-जगल की धूल फांकता फिरा, न जाने कितने महात्माओंको देखा है और उनमे दो ही तरहके आदमी मिले हैं, या तो छटे बदमास जादूगर, या पागल। मैं अब जिन्दगीका एक दिन भी ऐसी दौडधूपमे नही लगाना चाहता।

सोहनलाल—लेकिन भैया, तुम्हे जो उन्होंने महात्माकी जाँचके लिए बुलाया है, जो जाँचकरके बतला नही दोगे, तो वह महात्माके चेले बन जायँगे ?

भैया—सोहन भाई, मनमें बुरा मत मानना। मै जोकों और जोकोंके लडकों-पर तनिक भी बिस्वास नही करता और यह भी बतला दूं, कि पढे-लिखे बाबुओंपर भी मेरा बिस्वास नही है।

सोहनलाल—तो पढना-लिखना बुरा है भैया ?

भैया—जो मैं पढने लिखनेको बुरा मानता, तो कहता कि मोटर, हवाई जहाज को छोडकर पत्थरके हथियारोके युगमे चले चलो। मैं चाहता हूँ इससे भी अच्छी हवाई जहाज बने, इससे भी बढिया रेडियो-बाजा और रेडिया दरपन निकले। लेकिन जानते हो न आज हवाई जहाज जोकें दुनियाको गुलाम बनानेके लिए रखती हैं। रेडियो बाजाके बलसे बिना आदमीका हवाई जहाज चलाकर हिटलर बिलायतके सहरो और गाँवोको मार रहा है। अँगरेज जिन जवानोंको अपना कलक्टर और डिप्टी बनाते हैं, वह बहुत पढे-लिखे है, गजबकी जेहनवाले हैं। हजार-हजार पढाकू जवानोंमेसे छाँट-छाँटकर २५ को लेते हैं और जानते हो न, वह क्या करते हैं ? इसीलिए मेरा इनपर बिसवास नही है। बिसवास ही नही, कभी-कभी तो मैं इनके आचरनको देख-कर जल-भुन जाता हूँ। मुझे यह आदमी भी नही मालूम होते।

सोहनलाल—और जो वह भाई कुछ-कुछ रास्ता देखने लगा था, वह फिर भूल जायेगा ?

भैया—ऐसे एक नही हजारो भूलते-भटकते रहे, मुझे उनकी कोई परवाह नही। यह लूले-लँगडे, अपाहिज लोग क्या काम कर सकते हैं, जिनको अपनी मुक्ति, अपना भवन और पेट सबसे पहिले सामने आता है।

दुखराम—जोकोंके लडकोंमें कोई अच्छा भी निकल सकता है भैया, लेकिन लाख-करोडमे बिरला ही कोई लाल निकलेगा, "जाके पैर न फटी बेवाई, सो का जाने पीर पराई।"

भैया—जोकोंके खानदानने, दुक्खू भाई, हमेशा धोखा दिया। रूसमे हजारो जोकोंके लडके थे, जो पहले बहुत मजूरो-किसानोके राजकी बात करते थे, लेकिन जब मजूरों-किसानोका राज कायम हो गया, तो वह दुसमनोसे मिल गये। जो वह दुसमनोंसे न मिले होते, तो पाँच बरस तक लेनिन महात्मा और उनके साथियोको लडना न पडता और न लाखो युद्ध और करोडो भूख-अकालकी भेंट चढते।

सोहनलाल—तो क्या हिन्दुस्तानमे हमे जोंकोंके लड़कोको पासमे नहीं आने देना चाहिये ?

भैया—बापके कसूरके लिए बेटेको सजा जोंक ही दे सकती है। हिटलरने किसी सहरसे अपने एक आदमीके मारे जानेपर सौ-सौ आदमियोंको पकडकर जहाँ-तहाँ फाँसीपर लटका दिया, यह उन्हीका न्याय है। हम मरकस बाबाके चेले, जोंको और फसिहोके आदमी नही हैं, इसीलिए जोंकोके कसूरके लिए उनके बेटे-पोतोको सजा नही देते या कहेगे कि तुम हमारे पास न आओ। लेकिन उनसे यह जरूर कहेंगे कि बाबू ! तुम हैजा पिलेगवाले गाँवसे आ रहे हो, अभी बीमारी नही दिखाई पडती, लेकिन मालूम नही किस अँतरा-कोठरीमे बीमारीका कीड़ा चला आया, इसलिए हमको भी इसका ख्याल करना पड़ेगा और तुमको भी करना पड़ेगा।

दुखराम—भैया ! यह बात भी बाबाने बतलाई है क्या ?

भैया—हाँ, मरकस बाबाने बतलाई है, लेनिन महात्माने बतलाई है, इस्तालिन बीरने बार-बार सजग कराया।

सोहनलाल—जोंकोके लड़कोके लिए तो भैया ! तुमने साफ बतला दिया, लेकिन हिन्दुस्तानके बहुतसे सेठ लोग हैं, जो गाँधीजीका बचन मानते हैं, लाखो का दान देते हैं और मौका पडनेपर जेहल जानेसे भी नही हिचकिचाते, उनके साथ कैसे बरताव करना चाहिये।

भैया—सोहन भाई ! मैंने कहा था, कि पहले पियाजके बाहरका छिलका तोड़ना है, तब भीतरका। सबसे पहले हमे बिलायती जोंकोसे लोहा लेना था, लेकिन इसका मतलब यह नरक नहीं, कि हम देसी जोंकोके जुलुमको आँख मूँदकर सहते जायें।

१२ औरत की जाती

दुखराम—"सन्तोखी भाई ! रजबल भड़वा हम लोगोकी आँख खोल रहा है, आँख। मैं तो मुँह बन्द करके भी रखना चाहता हूँ तो पेट फूलने लगता है। जहाँ भी कोई भाई मिल जाता है, तो जोंकोका जगल उनके सामने कहने लगता है। किसी जाति, किसी धरमका कमेरा हो, बात सुनकर सबका मन हरा हो जाता है। बधू चमार पूछता था भैया, दुक्खू हम लोगोकी झोपडी सूअरकी खोभारसे भी खराब है। कब हम लोगोका दिन लौटेगा ? अबदुल मेहतर कहने लगा—हमने समझा कि हिन्दूसे मुसलमान हो जाने पर आदमी बन जायेंगे, लेकिन यहाँ भी वही बात। सबसे गन्दा काम करते हैं, और जूठी रोटीभी भैया ! महमदाबादमे कोई देने के लिए तैयार नहीं ?"

सन्तोखी—तुमने क्या कहा दुक्खू भाई !

दुखराम—मुझे जो समझमे आया, वह उनसे कहा। लेकिन मैं एक दिन रजबली भैयाको उनके यहाँ ले जाऊँगा, तभी ठीकसे समझाते बनेगा।

सन्तोखी—आज कौन बात सुनना चाहिए दुक्खू भाई ?

दुखराम—सबके कहने लायक बात तो अब कुछ-कुछ मालूम हो गई है सन्तोखी भाई ! लेकिन औरतोको कैसे समझाया जाय, यही बात समझमे नही आती।

सन्तोखी—तो आज रजबली भैयासे यह पूछा जाय कि मरकस बाबाने औरतोंके लिये क्या रास्ता बताया और यह देखो सोहनलालके साथ रजबली भैया आ गये।

भैया—क्या बात हो रही है सन्तोखी भाई ?

सन्तोखी—आज भैया यही बतलाओ कि औरतोके लिये मरकस बाबाने क्या कहा।

भैया—औरतोका उद्धार बहुत जरूरी है, काहेसे कि आधी तो वही है। और उनको सबसे बेसी तकलीफ है।

दुखराम—जोकोकी औरतोको खाने पीनेकी क्या तकलीफ है भैया ?

भैया—खाना-कपडा जब नहीं मिलता, तब आदमीको भूख जाडा तकलीफ देती है। खाना-कपडा मिलता है, लेकिन दूसरा आदमी हाथ उठाकर देता है तब आदमी समझता है कि हमे दूसरेके सामने हाथ पसारना पडता है। और औरतको जिन्दगी भर हाथ पसारना पडता है।

सोहनलाल—मेहरी तो घरकी रानी होती है भैया !

भैया—रानीके साथ महिला कहो सोहन भाई ! महिला सबदसे ही (महिली, मेहिरी) मेहरी सबद भी बना है, लेकिन देखते है न किसी सहरकी पढी लिखी औरतको मेहर कह दिया जाय तो जल भुन जायेगी, और महिला कह दिया जाय, तो फूलके कुप्पा हो जायेगी। लेकिन औरत आज दुनियामे हाथकी खरीदी सादी-लौंडी है। मरद जबतक राजी है, तबतक तो दासी भी जो चाहे कर सकती है लेकिन जैसी ही मरदकी तेउरी बदली, वैसे ही रानी सिंहासनसे धूलमे पटक दी जाती है। देखा न, सीताके साथ रामने क्या किया, मनमे आया, घरसे निकालकर बाघके मुँहमे ढकेल दिया। सीता कभी रामके लिए वैसा कर सकती थी ? या रामकी इच्छा बिना सीता उनसे पाखानेमे भी एक रात बिता सकती थी। साहेब लोगोको साथ-साथ मेम घुमाते देखकर दुक्खू भाई ! तुम समझते होगे कि साहेबकी मेमको बहुत अख्तियार है।

दुखराम—भैया ! पहिले सच ही मैं ऐसा समझता था, लेकिन एक दिन देखा हमारे चटकलका इंजीनियर कोडा लेकर अपनी मेमको पीट रहा था, बेचारी चिल्लाती थी। लेकिन पास-पडोसमे कोई साहेब रहता तब न जाता ? हम कुली मजूर थे, सोचा छुडाने जायेंगे तो हम भी चार बेंत खायेंगे।

भैया—औरत किसी समय परिवार भरकी मुखिया थी, महामाया थी, उस वक्त कोई उसे मार सकता था ?

दुखराम—नहीं भैया ! वह तो जब मरद पसु पालने लगा, खेती करने लगा और कमाऊ बनकर धन जमा करने लगा, तब मेहरका मान हेठा हो गया; आदमियोंमें धनी-गरीब होने लगे, जोकें पैदा हो गई।

भैया—जितना ही जोकोंका जोर बढ़ता गया दुक्खू भाई ! उतना ही मेहरियोंका गला फँसता गया। बेचारियोंको देह बेंचके खानेके सिवा कोई अवलम्ब है ?

सन्तोखी—देह बेंचना क्या कहा भैया ?

भैया—सन्तोखी भाई ! तुम समझते हो कि देह बेंचना बेस्याका काम है। इसलिए मैंने कैसे इस बातको मुँहसे निकाला। मेरी बात कुछ कड़वी लगी होगी, और मेहरिया सुने तो और बुरा मानेगी, लेकिन बताओ बेस्या किसे कहते हैं ?

सन्तोखी—जिसकी देह उस आदमीके लिए है जो पैसा दे।

भैया—रोज-रोज पैसा दे या एक दो बार।

सन्तोखी—कितने लोग भैया पैसा देके एक-दो बार बेस्याके देहके मालिक बनते हैं और हमारे राजाने तो बमनियाको अपने घर ही में बैठा लिया था।

भैया—बेस्या पैसा कहकर लेती है सन्तोखी भाई ?

सन्तोखी—न ले तो खायेगी क्या, पहिनेगी क्या ?

भैया—और वह कुछ बेसी पैसा लेती है सन्तोखी भाई ! काहेसे चालिस-ब्यालिस बरसमें उसकी दूकान उठ जाती है।

सन्तोखी—उसका भी कुछ ठिकाना नहीं है भैया ! दूकान है, किसी गाहकको नकार तो सकती नहीं। बिमार हो जाती है, गरमी सूजाक बढ गई, तो नाक कटकर गिरने लगती है, हाथ पैरकी अँगुलियाँ झड़ जाती हैं।

भैया—जो अँगुलियाँ झड़ी, नाक नहीं कटी, तो आधी जिन्दगी रहते ही वह रोजगारसे बेरोजगार हो जाती है। जो उसने पहलेसे कुछ पैसा नहीं बचाया तो बाकी आधी जिनगीमें क्या खायेगी, क्या पहनेगी ?

दुखराम—ठीक कहा भैया, जोकें न पैदा हुई होतीं तो औरतको क्यों देह बेंचना पड़ता ?

भैया—दुक्खू भाई बेस्या कैसे बनती है, इसके लिये मैं एक कथा सुनाता हूँ। यह किस्सा नहीं है, सच्ची-सच्ची बात है। एक बड़ी जातिके आदमी थे, हिन्दू थे और बाम्हन-छत्रीके बीचकी जाति। उनके घरमें पूरा धन था, जमींदारी थी, खेत थे और दस-बीस हजारका सूद-बेवहार भी करते थे। गाँवमें भी अच्छा घर था और सहरमें एक पक्का घर था। कुछ किताब पढ़ी, कुछ लेक्चर सुना, अरिया समाजकी बात उन्हें मालूम हुई। उसके एक लड़की हुई, पहिली स्त्री मर गई, दूसरा ब्याह किया उससे लड़का पैदा हुआ। भाई-बहिनोंमें बचपन हीसे बहुत प्रेम था, वह जानते ही नहीं थे कि उनकी माँ एक नहीं है। बापने अरिया समाजके लेक्चरमें लड़कियोंके पढ़ानेकी बात सुनी थी, उन्होंने भी अपनी लड़कीको सहकारी कन्या पाठशालामें पढ़ने बैठा दिया। अब वह ज्यादा सहरमें ही रहते थे, पीछे लड़का भी इसकूल जाने लगा। लड़की पढ़नेमें बड़ी तेज थी, अपने दरजेमें हमेशा अव्वल आया करती थी।

बाप भी लड़कीकी पढ़ाईसे बहुत खुस था। मैया (सौतेली) माँ भी अच्छी औरत थी, लड़कीका सुभाव भी मीठा था। लड़की अब अँगरेजी पढ़ रही थी। उसकी उमर बारह-तेरहकी हो गई थी। मैया माँ ब्याह करने को रोज कहती, लेकिन बहुत गरीब घरकी तो लड़की थी नहीं कि बेंच-बोच देते। अपनी बराबरी या बड़े घरमें लड़का ढूँढ़ना था, और सो भी अपनी जाति-बिरादरीके भीतर। कहीं लड़का छोटा मिलता, कहीं बूढ़ा, कहीं अपढ़ मिलता, कहीं गरीब।

भैया—आदमीका बच्चा है जमात से अलग कैसे रहेगा। सरकारी कानूनसे आदमी किसी तरह बच भी जाय, लेकिन बिरादरीके कानूनसे कौन बच सकता है। हाँ बच भी जाता है जो लोगोंसे पकड़ाई न दे। कितने ही टीकाधारी हैं जो छिपकर सराब पीते हैं, कितने ही लोग जानते भी हैं, लेकिन उनके पास पैसा है। न उनका हुक्का-पानी बन्द होता है न ब्याह-सादी। बिधवा-ब्याह बाम्हन, छत्री, बनिया कायथ में बर्जित है। जब साठ बरस के बूढ़ेसे हम उमेद नहीं कर सकते तो बारह बरसकी बिधवासे कैसे आसा करेंगे कि जिन्दगी भर बरमचारिन रहेगी। जानत हो न दुक्खी भाई क्या-क्या होता है?

दुखराम—गुपुत सम्बन्ध हुए बिना नहीं रहेगा भैया! जो गरभ नहीं हुआ, मामला ऐसे ही चलता रहता है। गरभ हुआ तो गिराकर हाड़ीमें कसकर फेंक दिया जाता है और जो बस नहीं चला, तो ले जाकर बनारसमें छोड़ आते हैं। कहीं-कहीं खून भी कर डालते हैं लेकिन, यह बहुत कम होता। जातिवाले बस इतना ही चाहते हैं कि जरा-सा हल्का-सा परदा रखो, सब बात नंगी न हो जाय।

भैया—इसीलिए दुक्खू भाई, हम उस अभागिनके बापको ही सारा दोस नहीं दे सकते। वह हिम्मत करता, उसको तकलीफ होती लेकिन वह दूसरों को रास्ता दिखाता। अब जात-पात ज्यादा दिन तक नहीं रह सकती दुक्खू भाई! भात और पानी अपनी जातमें होना चाहिए, यही जातिका कानून है न, लेकिन आज देख रहे हो न कि भात-रोटीको कोई नहीं मानता। सहरोंमें होटल खुले हुए हैं। जाकर लोग खा लेते हैं। जातिमें जो धनी है, सरकारी दरजा पा गये हैं, तो उनकी तो कुछ पूछो ही नहीं, वह हिन्दूके होटलमें खा सकते हैं, मुसलमानके भी होटलमें खा सकते हैं। बिलायत जा सकते हैं। राजपूतोंके सिरताज जो राजा लोग हैं, उनको अँगरेजोंके साथ खानेमें कोई रोक-टोक नहीं है, न इसके लिए वह जातिसे निकाले जाते हैं, न उनकी ब्याह-सादी रुकती है, जातिका बड़ा आदमी खानेकी छुआछूत छोड़ दे तो कोई नहीं पूछता है, गरीबोंको सब लोग दबाते हैं, लेकिन आजके समाजमें बड़े आदमी रास्ता निकालते हैं। होटल पिछली लड़ाईसे पहिले कहीं था? आटा-चावल बेचनेवाले दूकानदारकी ही उस बखत बहुत चलती थी। यह बीसके भीतर ही भीतरकी बात है जो सब जगह होटल ही होटल दिखाई पड़ते हैं।

भैया—बाँधमें सुई भर जानेका छेद होना चाहिए, फिर तो पानी अपने ही रास्ता निकल लेता है।

दुखराम—सुई जाने भरको नहीं, अब तो कोल्हू जाने भरके एक नहीं हजारों छेद हो गये हैं। खानेकी छुआछूतका तो अब सवाल ही नहीं है।

भैया—ब्याहके बारेमे अभी कड़ाई है दुक्खू भाई ! लेकिन रोटीकी छुआछूत की तरह यह भी टिक न सकेगी। देसके सिरताज लोगोने रास्ता सुरू किया है। बाम्हन राजगोपालाचारी की बेटी गांधी बनियेके लडकेसे ब्याही गई। जवाहरलाल नेहरूकी बड़ी बहनका ब्याह दूसरी जातिवाले पंडितके साथ हुआ। छोटी बहनने तो बाम्हन नही, बनियेके लडकेसे सादी की, और जवाहरलालकी एकलौती बेटी इन्दिराने हिन्दू नही, पारसी लडकेसे सादी की। मुन्सी ईश्वरसरन कायस्थोकी नाक हैं, यू०-पी०, बिहार दोनो मे। वह उनके चौधरी माने जाते हैं, उन्हीके छोटे लडके सेखरने मुसलमान लडकीसे सादी की।

सन्तोखी—हिन्दू बनाके किया होगा न भैया ? जैसे आर्य-समाजी करते हैं ?

भैया—हिन्दू बनाके नही किया है, सन्तोखी भाई ! हिन्दू लडकीको मुसलमान बनाके तो ब्याह बहुत समयसे होता चला आया है, लेकिन ऐसे ब्याहसे हिन्दू मुसलमा तक सम्बन्धमे नही आये, बल्कि और विरोध बढ़ा। मुसलमानोकी देखा-देखी मुसलमा लडकीको सुद्ध करके आरियाने ब्याह करना सुरू किया। इससे भी झगडा ही बढ़ा ब्याह सम्बन्धसे पीढियोके झगड़े मिटाये जाते है, लेकिन यहाँ पीढियोंके लिए झगड़े उठाये गये।

दुखराम—तो भैया ! जिसको हिन्दू मुसलमानमे ब्याह करना हो, उसे नाम या धरम नही बदलना चाहिये यही न ?

भैया—नाम धरम बदलनेसे फिर वह सम्बन्ध नही हुआ, वह तो अँगुली को सडी समझकर काट देना हुआ। अब देसमे पचीसो मुसलमान लडकियोंने हिन्दू के साथ और हिन्दू लडकियोने मुसलमानोके साथ ब्याह किया। मैं उन्हे जानता हूँ। आगा, पीछा करनेवाले नक्कू होते हैं, लेकिन वही रास्ता दिखलाते हैं। पचास बरस बीतते-बीतते देखोगे कि ब्याहके मामलेको न जात-बिरादरी रोक सकेगी, न धरम। यहाँ कहनेका मौका नही है, मैंने सुना है कि हिन्दुओंकी पोथियोमे जाति-धरम तोडके हुए ब्याहोकी बहुत-सी बातें लिखी हैं।

सन्तोखी—मलाहिनकी लडकीके गरभसे ब्यास पैदा हुए, बेस्याके गरभसे बसिष्ठ रिखी पैदा हुए, चडाल कन्यासे परासर पैदा हुए, यह असलोक तो मैं भी जानता हूँ ?* भैया !

भैया—यह सब बंधन टूटेगा सन्तोखी भाई ? दादा-दादीके सामने होटलका भात खानेपर भी यह कुआँ-तालाब देखने लगते, लेकिन यह काम नाती-पोताके जमानेमें सुरू हुआ जब कि दादा-दादी आँख मूँद चुके। हर पीढी एक-एक कदम आगे बढ रही है, कौन रास्तेको रोक सकता है। लेकिन देखा न, वह लडकी जो दरअसल जैसी बातकी पक्की थी, वैसी ही आचरनकी भी पक्की होती, लेकिन उस बिरादरीने कहाँ तक पहुँचाया, उसे बेस्या बनाके छोडा। उसका पति उतना बुरा नही था, नही तो हजारो का गहना न छोडता। भाईके लिए तो तुम्ही सोचो, क्या कहोगे ?

*जातो व्यासस्तु कैवर्त्यां, श्वपाक्या तु परासर ।
वेश्यायां गर्भ संभूतो, वशिष्ठस्तु महामुनि ॥

सन्तोखी—वह देवता हैं भैया देवता। यह तो आप कह रहे हैं कि वह अभी जिन्दा हैं, तभी बिस्वास होता है, नही तो मालूम होता था, कि कोई कथा-पुरान की बात है।

भैया—देवता है, ठीक! बहिन जिन्दा रही तब उसने हिम्मत भी की थी, बिरादरी की परवाह न करके साथ रखनेकी। बहिनने बात मान ली होती, तो वह वैसा ही करता भी। उसके बादकी उसकी जिन्दगी, तपस्या गजब की है। लेकिन उसके दिलमे जो आग जल रही थी, उसको जात-पातके सत्यानासमे लगना चाहिए था। उसने अपनी अभागिन बहिनका बदला नही लिया, इसीलिए मैं समझता हूँ कि उसने भाईके धरमका पूरी तरह पालन नही किया। और लड़कीके बारेमे क्या कहते हो दुक्खू भाई?

दुखराम—औरतोका तो मैं हाथ-पैर इतना बँधा देखता हूँ कि उनके बारेमे कुछ कहते ही नही बनता।

भैया—ठीक कहा दुक्खू भाई! औरतोको सबसे ज्यादा पीसा गया है। पन्द्रह सौ बरसो तक उन्हें आगमे जलाया जाता रहा और एक-दो नही, सालमे दस-दस पन्द्रह-पन्द्रह लाख।

दुखराम—सचमुच भैया! औरतें होलीकी तरह जलाई जाती थी।

भैया—हाँ, दुक्खू भाई! इसीको कहते थे सती होना, पति मर जाता, तो बिधवाको भी उसकी लासके साथ फूँक दिया जाता था।

सन्तोखी—लेकिन भैया! लोग तो कहते हैं कि सती अपने मनसे होती है।

भैया—झूठ बोलते हैं सन्तोखी भाई! कोई एकाध पागलपन भले ही करे लेकिन पन्द्रह सौ बरसके भीतर जो डेढ़ अरब औरतें फूँकी गई हैं, वह सब अपने मनसे जलने गई थी, यह कहना झूठ है। आदमीको अपने परानसे बहुत प्रेम होता है। जो मरनेके लिए तैयार भी हुई होगी, वह सोकसे पागलपनसे ही। जवान औरतके लिए रँडापा एक-दो दिनका सोक नही है, उसके लिए दुनियामे सभी जगह काँटे ही काँटे बिछ जाते हैं। उसकी जिन्दगीको और भी भारी नरक बना दिया जाता है, उसका मुँह देखनेमे असगुन होता है, ब्याह सादी या मगल काममे कोई उसको देखना नही चाहता। सब उसपर सक करते रहते है। हिन्दू हवा, पानी, पत्ता, खाकर रहनेवाले बिसवामित, परासर ऋषिसे जिस बातकी आसा नही कर सकते, उसकी आसा यह जवान विधवासे करते हैं, तो सचमुच ही वह पानीमे बिन्ध्याचलको तैराना चाहते हैं।

दुखराम—सो कैसे हो सकता है भैया?

भैया—यह सब बातें विधवा समझती है, इसलिए जिन्दगी भर जलते रहनेकी जगह कोई बक्त मर जाना चाहती हो तो अचरज नही। लेकिन डेढ़ अरबमे ऐसी कितनी रही होंगी। और जानते हो दुक्खू भाई, राजपूतोमे छ-सात सौ बरससे लड़कियाँ जनमते ही मार डाली जाती थीं।

दुखराम—हमारे सामने ही भैया,बेलहामे लड़कीके पैदा होते ही उसके नाक-मुँहपर माला रख दिया जाता, और कुछ छन हीमे बेचारी मर जाती थी।

भैया—अभी ऐसी जगहें हैं जहाँ लड़कियों को मार दिया जाता है। जो माँ-बाप अपने हाथसे अपनी बच्चों को मारते हैं, उनका दिल कैसा होगा ?

दुखराम—पत्थर और लोहेसे भी कड़ा भैया ! वह तो अपने ही बच्चेको चबा जाता है।

भैया—काहे ऐसा होता ? औरतका दुनियामें कितना मोल है। लड़की पैदा होते ही घर भरपर सोक छा जाता है, जान पड़ता है घरका कोई मर गया।

दुखराम—और भैया लड़का होनेपर सोहर गाया जाता है, खुसी और उछाह मनाया जाता है; लेकिन लड़की होनेपर सोहरका भला कोई नाम ले सकता है ? लेकिन एक बात देखकर मुझे हैरानी होती है भैया !

भैया—कौन बात है दुक्खू भाई ?

दुखराम—सोहर तो औरत ही गाती है, तो औरत जाति पैदा होने पर उनका मुँह बन्द क्यों हो जाता है और मरद जातिके पैदा होने पर बहुत खुस हो जाती हैं।

भैया—औरतका मोल मरदने लगाया है, औरत मरदके हाथकी कठपुतली है। हजारों बरससे औरत मरदकी गुलाम है। मालिक जो सिखाता है, गुलाम उसीको अच्छा मानता है। मरद ठीकसे बोलना नहीं जानता, तभीसे उसके मन में ठोंक-ठोंककर बैठाया जाता है कि वह मरद बच्चा है। उसी वखतसे वह अपने बहिनों-पर रोब जमाने लगता है, औरतको जिन्नगी भर गुलाम रखनेकी सिच्छा यहींसे दी जाती है। पाँच बरसके लड़केको गुड़िया खेलनेको दो तो वह क्या लेगा दुक्खू भाई !

दुखराम—नहीं भैया ! वह उसे फेंक देगा, कहेगा कि क्या मैं लड़की हूँ।

भैया—लड़केको हाथी-घोड़ा खेलने को मिलता है, वह गुल्ली-डंडा खेलता है। पेड़पर चढ़ता है, तैरता है, कंधेपर लाठी लेकर चलता है, तीर-धनुही चलाता है। लेकिन लड़की को वही गुड़िया, वही चूल्हा-चक्की।

दुखराम—माने बचपन हीसे लड़कोंको बतला दिया जाता है कि तुम्हारी जगह कहाँ है ?

भैया—मरद अकेला-दुकेला जाता है, तो क्या कोई छेड़नेकी हिम्मत कर सकता है ? लेकिन जवान औरत चले तो किसी सड़कपर, देखो फिर सभी घूर-घूरकर ताकने लगते हैं। इतना ही होता, तबभी खैरियत थी, लेकिन वह तो मजाक करने लगते हैं और गन्दे-गन्दे। औरतको सिर्फ सिर नवाकर चले जानेके सिवा कोई उपाय नहीं है। अकेले-दुकेले मिले तो भी बात नहीं — औरत की देहमें मरदके इतना बल नहीं होता, बलवान तो अपनी इज्जत बचानेके लिए बदमाससे ही । औरत कायर होती है, यह बात नहीं है। तो हो ही जायगी, उसके मुखपर कालिख खुलकर जोर नहीं लगा सकती। चुप होता है। औरतकी — किसने की

दुखराम

भैया—मरदने ही, लेकिन मरदोमे भी जोकें हैं मूल कारन, काहेसे कि उन्होने-ही धनपर मरदका हक कायम किया है। औरतको पतिकी जायदादमे सिर्फ रोटी-कपडा पाने भरका अधिकार है। एक ही पेटसे भाई-बहिन दोनो पैदा होते है, लडका चाहे कितना ही नालायक हो, उसको जायदाद मिलती है, और लडकीको पतिके घरमे दासी बनकर रहनेके लिये भेज दिया जाता है। औरतको आज निरवलम्ब बना दिया गया है। वह अपने पैरपर खडी नही हो सकती। हजारो बरससे वह यह जुलुम सहती आई है। लेकिन यह जुलुम तभीसे सुरू हुआ जबसे जोकें पैदा हुईं। जोकोकी औरतें और भी बेबस हैं। यह इसलिए कि वह अपने हाथसे कुछ कमाती नही।

दुखराम—उनके मरद भी तो जोक ही हैं, वह भी नही कुछ कमाते ?

भैया—वह दूसरोको लूटते हैं, दूसरोका खून चूसते है, उसीको वह कमाना कहते हैं। कोई बाबू दफ्तर मे जाकर ६ घन्टे काम करता है, महीनेमे ४०) ले आता है, इसे कमाई करना कहेगे। उसकी औरत दो घडी रात उठेगी, चक्की पीसेगी, चावल कूटेगी, चौका बासन करेगी, खाना पकावे परोस देगी, फिर बैठकर पङ्खा करेगी, बाबू दफ्तर जाएँगे। औरत बचा-खुचा जूठ खायेगी। फिर चौका-बासन करेगी', चक्की-ओखल पकडेगी। लडकोको खिलाना, पोसना-पालना सब औरतके ऊपर है। मरदके ऊपर इसका कोई भार नही है। सामको खुद जलपान बनायेगी, फिर रसोई पकायेगी, फिर बेनिया डोलायगी। मरदको दफ्तरसे लौटकर फिर कोई काम नहीं। औरत ६ घडी रात तक बराबर खटती रहेगी। फिर उसे पतिका पैर दबाना पड़ेगा दो घडी रातसे आधी रात तक औरत खटती रहती है. लेकिन उसके काम की कोई गिनती नहीं और मरद ६ घटे कामकर लेता है, तो समझता है कि वही कमाकर घर भरको खिला रहा है। देखो दोनोमे कितना फरक हैं, क्या इसको न्याय कहेगे ?

भैया—मरद औरतको गुलाम बनाके अपने घरमे लाता है और इसको कहते हैं, ब्याह। बाप लडकीके लिए बर ढूंढता है किस लिए ? इसलिए कि लडकी-को रोटी-कपडेका कोई अवलम्ब मिलना चाहिए। मरदको अवम्लबकी जरूरत नही, क्योकि बापकी सब जायदाद उसको मिलती है, वह दूकान खोल सकता है, दफ्तर मे काम कर सकता है, उसके कमानेके सारे रास्ते खुले हुए हैं, लेकिन औरतके लिए सारे रास्ते बन्द हैं, इसलिए उसे खाना-कपडा देनेवाला कोई चाहिये। खाना-कपडा हीको पैसा कहते है न दुक्खू भाई !

भैया—हाँ भैया ! पैसे हीसे न खाना-कपडा मिलता है ?

भैया—तो इसका मतलब हुआ ब्याह भी पैसेके लिए औरतका देह बेचना है। दूसरे देह बेचनेमे और इसमे यही अन्तर हुआ न कि यह बेच-खरीद जिन्दगी भरके लिए है। इसे प्रेमका सौदा नही कह सकते दुक्खू भाई ! यह साफ पैसे का सौदा है।

दुखराम—तो क्या भैया ! ब्याह करना ही बुरा है ?

भैया—मै ब्याह करने को नही बुरा कहता दुक्खू भाई ! लेकिन ब्याह के नाम पर पैसे का सौदा होना औरतकी बेइज्जती समझता हूँ। ब्याहकी नीव प्रेमपर होनी चाहिए, और प्रेम दो बराबर आदमियो मे होता है। खरीदी दासी और मालिक मे प्रेम नहीं होता। औरत तब तक बराबर नहीं हो सकती जब तक कि कमानेमे, माँ-बापकी जायदाद मे उसका कोई बराबर हक नहीं होता।

सन्तोखी—सुनते हैं भैया ! बड़े लाटके यहाँ कानून बननेवाला है जिसमें कि औरत को जायदाद में हक मिले ।

दुखराम—तुमने कहाँ सुना सन्तोखी भाई !

सन्तोखी—परसों हाटमें सभाकी नोटिस बँट रही थी ?

दुखराम—नोटिसमें क्या लिखा था, सन्तोखी भाई ?

सन्तोखी—लिखा क्या था, लो न नोटिस देख लो—

हिन्दू अप्रदत्त उत्तराधिकार बिल विरोध सभा

धार्मिक हिन्दू जनताकी ता०.. ....१९४४ वार...............को स्थान........... में हिन्दू समाज नाशक उत्तराधिकार बिल एवं विवाह विषयक बिलके विरोधमें सभा होगी, जिसमें बाहरके आये हुए विद्वानों एवं स्थानिक सज्जनों के भाषण होंगे । उक्त बिलोंसे हिन्दू समाजपर कितनी बड़ी कठिनाई तथा सामाजिक दुर्व्यवस्था होनेवाली है, इसका पूर्ण परिचय देंगे । अतः धार्मिक सज्जनोंसे निवेदन है कि सभामें अपने इष्ट-मित्रोंके साथ अवश्य पधारें ।

निवेदक—"

प्रबोध प्रेस बनारस

दुखराम—यह तो भैया ! सर्सकिरतमें कुछ लिखा हुआ है, समझमें नहीं आता ।

भैया—यही लिखा है कि सरकार औरतकी जायदादमें हक देनेका कानून पास कर रही है, इसके खिलाफ सभी हिन्दुओंको विरोध करना चाहिए, नहीं तो हिन्दू धरम रसातलको चला जायगा ।

दुखराम—देहमें आग लग गई भैया, यह हिन्दू धरम है कि निसाचर धरम है, जो अपनी माँ-बहिनोंको हक देनेमें धरमके रसातल जानेकी बात करता है। सन्तोखी भाई ! चाहे तुम नराज हो जाओ मैं तो कहूँगा कि ऐसा हिन्दू धरम चार दिनके बाद नहीं इसी छन रसातलमें चला जाय तो मुझे बड़ी खुशी होगी ।

भैया—हिन्दुस्तानमें ३२ करोड़ हिन्दू हैं, उसमें आधी १५ करोड़ औरतें हैं, कभी औरतोंसे भी इन धरमवालोंने पूछा, कि तुम्हें जायदाद मिलनी चाहिए कि नहीं ?

दुखराम—उन बेचारियोंको तो मालूम भी नहीं है । यह पीठमें छुरी भोंकना है जो यह समझ पायें, तो मरदकी सब जायदात और कमाई ताकपर रखी रह जायगी। एक ही दिन १५ करोड़ने चूल्हा जलाना छोड़ दिया, तो सभा करनेवालों को आटा-चावलका भाव मालूम हो जायगा ।

भैया—लेकिन दुक्खू भाई ! औरतें हमेशा भेड़-बकरी नहीं बनी रहेंगी। पढ़ी लिखी औरतें जगह-जगह सभा कर रही हैं और लड़के आदमीके पेटसे निकलते हैं और लड़की क्या इमलीके खोढ़रसे निकलती हैं ।

सन्तोखी—जहाँ-तहाँ भैया ! कसाई सब औरतोंसे अँगूठेका निसान लगवा रहे हैं ।

भैया—काहे वास्ते सन्तोखी भाई ?

सन्तोखी—समझ रहे हैं कि कानून पास हो गया तो सब जायदाद लडकियाँ ले जायेंगी और लडके भीख माँगते फिरेंगे।

भैया—सब जायदाद तो देनेकी बात नही सन्तोखी भाई ! हजारो बरससे हिन्दू मरदोंने जो उनका हक छीन लिया है, बस उतने होके देनेकी बात है। मुसलमानो के यहाँ लडकीके लिए हक मिलता है, इसाईके यहाँ भी लडकीको हक मिलता है, उनका धरम तो रसातल नही गया तो हिन्दू मरद इतना क्यो छटपटा रहे हैं।

दुखराम—यह हिन्दू धरम क्या है भैया ! वह तो जान पडता है कि आदमी के देहका कोढ है। लेकिन यह कितने दिनो तक रोकेंगे ?

भैया—तो मालूम हुआ न, औरतोपर कितना जुलुम हो रहा है। मरकस बाबाकी शिक्षा है कि मरद और औरत गाडीके दो पहिये हैं जब तक दोनो बराबर नही होंगे जब तक गाडी चल नही सकती। दुक्खू भाई ! हम जोकोको खतम करनेके लिए तैयार हैं, इसलिए न कि आदमी आदमी बराबर हो। आदमी-आदमी के बराबर होनेपर औरतोंको गुलाम नहो रखा जा सकता। औरतको आगमे जलाना भी हिन्दू धरम कहलाता था। औरतकी देहको रोटी कपडेके लिए बेचना भी हिन्दू धरम कहला रहा है। बराबर का होगा, तब औरतकी देह बेचना नही होगा, तभी दुनियाका नरक मिटेगा।

१३ अछूत और सोसित

दुखराम—भैया तुमने उस दिन जो औरतोकी गुलामीके बारेमे कहा था, उसपर मैं बहुत सोचता रहा, लेकिन उसी तरहकी और कुछ बातोमे उनसे भी सताइ जमात है उन लोगोकी जिनको बडी जाति अछोप, अछूत कहते हैं।

भैया—और उन्हींको गाँधीजीने नया नाम दिया—'हरिजन।'

दुखराम—मैंने सोचा अब्दुल और सुखारीको साथ लेकर बात करो तो और अच्छा होगा। मैं उनसे मरकस बाबाकी बातें करता हूँ, और अभी तो वह दुनिया कहाँ है, इसका कही पता नही है, तो भी बात सुनके ही दोनो तुमसे भेंट करनेके लिए आना चाहते थे। मैंने उनसे कहा कि रजबली भैयाको मैं तुम्हारे ही घरपर लाता हूँ, वही सामने है अब्दुल भाईकी झोपडी, देखते हो न, क्या यह आदमी का घर है ? हिन्दू भगी होता, तो बगलमे एक सुअरकी खोभार भी होती है और दोनोम कोई फरक नही दिखाई पडता। अच्छा अब हम आ गये, अब्दुल भाइने आमके नीचे पुआल बिछा दिया। सलाम अब्दुल भाई !

अब्दुल—सलाम दुक्खू भाई ! और यह राजबली भैया तो नही हैं ?

दुखराम—हाँ, हमारे रजबली भैया हैं। सलाम सुखारी भाई !

सुखारी—सलाम दुक्खू भैया, सलाम रजबली भैया! आओ इसी पुआल पर बैठें।

अब्दुल—हाँ, भैया! बैठो। जोकोंने हमे और किस कामके लायक छोड़ा है यह तो थोड़ा-सा कोदो का पुआल कहींसे माँग-जाँच कर ले आये है। जाड़ेमे लड़के-वाले इसीमें घुसकर दिन काटेंगे।

सुखारी—पुआल भी मिल जाय भैया! तो जनुक हम लोगोको साल-दुसाला मिल गया।

दुखराम—हमारे ही साथ साल-दुसाला बनाते हैं, लेकिन भकुआ बनाकर दूसरे उसे पहनते हैं। हमने अपने रूपको नहीं पहचना सुक्खू भाई! कोई बाघका बच्चा था। बचपन हीमे किसी गड़रिये ने पकड़ लिया और भेड़-बकरीका दूध पिलाकर पोसा। जब वह बढ़कर पूरा बाघ हो गया, तब भी कोई उसका कान पकड़ता, कोई मारता, जैसे अब भी कुत्ते ही का पिल्ला है। फिर किसी दूसरे बाघने देखा, उसको बड़ा अचरज हुआ और अफसोस भी हुआ। जब वह समझानेके लिए उसके पास गया तो सब भेड़-बकरियाँ भाग गईं, और उन्हींके साथ वह बाघका बच्चा भी भाग निकला। कई दिनके बाद बाघने जवान बाघको पकड़ पाया। बाघ समझाने लगा कि तुम भी हमारी तरह बाघके बच्चे हो, काहे मार खाते हो, काहे बेइज्जत होते हो? बाघ बच्चेने कहा—कि नहीं हमको छोड़ दो नहीं तो गड़रिया मार-मारकर बेदम कर देगा। बाघ उसे पानीके पास ले गया। परछाईं दिखाके कहा कि देखो तुम्हारा भी रूप मेरे ही ऐसा है। अब बच्चेने देखा तो बात उसे सच्ची मालूम हुई लेकिन तब भी उसका डर नहीं जा रहा था। बाघने कहा कि गड़रियोंके सामने मेरी तरह जरा गुर्राना और जब गड़रिया जान लेके भाग जाय तब तो मेरी बात मानोगे न। बाघ बच्चे ने वैसे ही किया, गड़रिया भाग गया। बाघ बच्चा जगलका राजा बन गया। वही बात तो है सुक्खू भाई! हम लोगोंकी। हजार आदमी मर-मरकर कमाते हैं और पाँच जोकें सब खा जाती हैं, कमाने वालोंको उन्होंने छत्तीस खोममें बाँट दिया है, उस परसे हम लोगोंको भेड़ बना दिया। लेकिन जिस दिन हम लोग अपना रूप पहचान लेंगे, उसी दिन जोकोंका अन्त समझो।

सुखारी—दुक्खू भाई, जो तुम कहते हो वह सब हमारे घटके भीतर उतर जाती है। छोटा भइयवा सुआरथ काल्हीं तो वहाँसे आया है। पलटनमे सिपाही है न भैया। वहाँ अच्छा-अच्छा पहनना मिलता है दुक्खू भाई। तुमने जो दो अच्छर बताया है, उसे सुआरथसे भी कहा। उसने कहा कि रूसके पलटन इतनी बीर दुनियामें कहीं नहीं है, लेकिन उसको यह नहीं मालूम था कि रूसमे जोकें नहीं हैं, वहाँ कमेरोंका राज है।

दुखराम—तो तुमने कुछ बताया कि नहीं सुक्खू भाई?

सुखारी—जो कुछ समझमें आता है, वह बतलाया दुक्खू भाई। कह रहा था कि मैं पलटनमे जाकर और पता लगाऊँगा। अच्छा यह बात तो अब रजबली भैया कुछ बतावें?

भैया—दुनिया भरमे सुक्खू भाई जोंकोका राज है, जोकें कारखाना खोलती हैं, सौदा बेंचती है, जिसमें कोई गड़बड़ न करे, इसलिए राज भी अपने हाथमें रखा है।

गरीब सब जातिमें है दुक्खू भाई ? बामनमें भी गरीब हैं, राजपूतमें भी गरीब हैं, मुँहहारमें भी गरीब हैं, जो गरीब है, उसकी जिन्दगी नरक है, धरती पर हमारा देस सबसे बड़ा नरक है। काहे से कि इतनी गरीबी चारों खूँटमें कहीं भी नहीं है और बड़ी जातियोंमें तो दो-चार खुसहाल भी होते हैं, लेकिन अछूत जातिमें तो एक ओरसे सभी गरीब ही गरीब हैं। मदरासमें पढ़ने जायें तो सबकी तिउरी चढ़ जाती। मेहतर-का लड़का हमारे लड़केके साथ बैठा करे। चमारका लड़का हमारे लड़केके साथ पढ़े। रोजगार से लोग पैसा पैदा करते हैं, लेकिन अब्दुल भाई। तुम मिठाई की दुकान खोलो तो कोई आयेगा ?

अब्दुल—वेह तो छुआते ही नहीं हैं भैया! हमारे हाथकी मिठाई कौन खायेगा ? कपड़ाकी दुकान खोलो तो वही बात। नौकरी में तो और मुस्किल! सब बड़ी-बड़ी जातियोंके हाथमें है।

भैया—जोंकोने वैसे तो सारी दुनियामें सब कुछ अपने हाथ मे रखा लेकिन हिन्दुस्तानमें उन्होंने और गजब ढाया है। तीस करोड़ हिन्दुओं को ही ले लो। दस करोड़ अछूत हैं, बड़ी जातिवाले जो उन्हें आदमी कहते तो जनुक बड़ी दया करते हैं। बाकी बीस करोड़में दस करोड़ औरतें हैं जिनको कहनेके लिए तो अरधांगिनी नाम दिया जाता है। लेकिन कहावत है—"बहुरिआका बहुत मान लेकिन हाड़ी-बरतन छूने न पावे।" दुक्खू भाई! उस दिन बात हो रही थी न जायदादमें औरतों का भी हक होना चाहिए ?

दुखराम—हाँ भैया ? सन्तोखी भाई जो सभाकी नोटिस दिखाई थी।

दुखारी—किस बातकी नोटिस थी भैया ?

भैया—आजकल बड़े लाटके यहाँ एक कानून बनानेकी बात हो रही है। औरतोंको न बापकी जायदाद में हक मिलता है न पतिकी। इसीलिए कानून बना देना चाहते हैं कि औरतोंको भी हक मिले। लेकिन हिन्दू कहते हैं कि औरतोंको हक मिलनेसे हिन्दू धरम खतम हो जायगा। हिन्दू धरम बढ़ेगा कैसे ? दस करोड़ आद-मियोंको अछूत रखो, उनको न साथमें पढ़ने दो, न उन्हें कुयें की जगतपर चढ़ने दो, न मन्दिरके भीतर घुसने दो, एक है यह रास्ता। दस करोड़ औरतोंको कोई हक मत दो जिससे वह मरदोंकी दासी बनी रहें। हिन्दू धरमकी बढ़ोतरीका यह दूसरा रास्ता है, बीस करोड़को तो इस तरह जानवर बनाया, फिर दस करोड़ हिन्दू आदमी रह जाते हैं। लेकिन उस दस करोड़में कितने भी बाम्हन हैं, जिनका दिमाग आसमानपर रहता है, वह अपनेको बम्हाँका बेटा कहते हैं, कुछ हैं राजपूत, फिर हैं खत्री, अगरवाल, बरनवाल, रस्तोगी, कायथ और भी पचासों जातियाँ हैं, सबकी अलग-अलग दुनिया है, मरना-जीना, सादी-ब्याह सबका अपनी-अपनी जातिमें। हिन्दू सिरिफ एक नाम है, नहीं तो यह सैकड़ों जातियोंका अपना अलग संसार तो देख रहे हो न दुक्खू भाई! २० करोड़ औरत और अछूत कहकर जानवर बना दिया। फिर १० करोड़ सैकड़ों जातियोंमें तोड़-फोड़कर बिल्कुल कमजोर कर दिया। इससे फायदा किसको हुआ ? बाहरवालोंको। घर फूटे गँवार लुटे, आज बिलायती जोंकें हिन्दुस्तानपर राज कर रही हैं क्यों ? इसीलिए कि हिन्दुस्तान फूटके कारन दुरबल है और दुरबलकी मेहरी गाँव भरकी भौजाई है। और दूसरा नफा उठानेवाले हैं हमारे देसके निकम्मे लोग,

जोंकें जो हाथ-पैर हिलाना नहीं जानती, जो दूसरोंका खून चूसती हैं, किसान उनके लिए अनाज पैदा करता है, मजूर उनके लिये कपडा बुनता है।

दुखराम—इन्हीं जोंकोंने भैया जात-पात बनाई है क्या ?

भैया—एक कहावत है दुक्खू भाई—जब गंगा हहाके समुन्दरके पास पहुँची तो समुन्दरको बडा डर लगा। उसने सोचा जो गंगा इतने जोरसे चलेगी तो मुझे भी लाँघ जायेगी। उसने हाथ जोडके कहा—"गङ्गा महारानी एक बातका बरदान माँगता हूँ। एक धारा से आनेपर मुझे बहुत तकलीफ होगी, आप हजार धारा बनकर आयें तो मुझपर बडी दया होगी। गंगा हजार धारा बन गई, उसका जोर हजार टुकडोंमें बँट गया और कहते हैं, इसलिये समुन्दर गङ्गाको खा गया। हमारा देश भी वैसे ही है। हजारों जातियोंमें बँटा है, इसीलिये हमारे यहाँकी जोंकें हजारों बरससे हमें खा रही है, हमारे लिए ये जोंकें मजबूत हैं लेकिन यह भी हजारों टुकडोंमें बँटी हैं, इसलिये विलायती जोंकें हिन्दुस्तान में पहुँच गई। तुमसे सुक्खू भाई पूछा जाय कि तुम तो इतना काम करते हो। बडे भोरे ही हल नाधते हो, बरसा हो या जाडा हो या गरमी हो, कुछ नहीं गिनते। अढाई पहर तक खेतमें हर जोतते हो, जमीन खोदते हो, खेत काटते हो, और मिलता तुम्हे क्या है ?

सुखारी—चार पैसा, और पाव भर पनपियाव, न कुल। चार पैसाके साँवामें भी आज-कल पेट नहीं भरता, क्या अपने खायें और बाल-बच्चेको खिलायें। सबकी हड्डी-हड्डी निकली हुई है। परसाल १२ बरसका लडका झुक (मर) गया।

भैया—१२ बरसका लडका मरनेके लिए नहीं पैदा हुआ था दुक्खू भाई ! जिसको आध पेट भोजन नहीं मिलेगा, उसको तो बीमारी ढूँढती ही रहती है। खाने का ठिकाना नहीं है तो दवाई कहाँसे लाके पिलाओगे ?

भैया—आज-कल भी भैया आठ सालका गदेला (लडका) महीना भरसे जडैयामें पडा है। बस भागवानपर छोड दिया और क्या करे। पहिले चार पैसेकी कुनैनकी पुडिया मिलती थी तो कहींसे माँग जाँचकर खरीद लाते थे। लेकिन अब तो उसका कहीं पता ही नहीं है।

भैया—यह आदमीकी जिन्दगी नहीं है दुक्खू भाई, दो सौ पीढ़ीसे तो भगवान पर छोडा, लेकिन भगवानने आज तक तुम्हारी ओर झाँका भी नहीं।

सुखारी—सो जानता हूँ भैया ! लेकिन जब आदमी का कुछ भी नहीं चलता तो क्या करे ? सुनते हैं गाँधी महात्मा हम लोगोंकी सुध ले रहे हैं।

भैया—अपनी सुध न लोगे सुक्खू भाई तो कोई तुम्हारी सुध न लेगा। और गाँधीजी भी जो हरिजन-हरिजन कहने लगे तो इसमें भी दूसरा मतलब है।

दुखराम—दूसरा मतलब क्या है भैया और हरिजन क्या ?

भैया—हरि भगवानको कहते हैं और जनका माने है, आदमी, भगवान का आदमी, नाम तो अच्छा है, लेकिन नामसे कुछ नहीं होता।

दुखराम—एक खिस्सा सुना दूँ, किसी लडकेका नाम ठठपाल था अच्छा नाम रखनेमें जम उठा ले जाता था, इसलिए महतारीने खराब नाँव रख दिया। लडका पढ़ने हुसियार हुआ। दूसरे लडके ठठपाल कहके मजाक करते। उसने अपने गुरुसे कहा कि

मेरा नाम बदल दें। गुरुने कहा—नाममें कुछ नहीं है। ठठपालने फिर-फिर जोर देकर कहा तो गुरुने कहा, जाओ तुम्हीं कोई अच्छा-सा नाम ढूँढ लाओ। ठठपाल नाम ढूँढने चला। किसी खेतमें फटे चीथड़े लपेटे कोई औरत पिछुआ (छूटदाना) बीन रही थी। ठठपालके पूछनेपर उसने अपना नाम लछमिनिया बताया। ठठपाल सोचने लगाकि लछमिनिया ऐसा अच्छा नाम है, लेकिन इससे उसे क्या नफा है? ठठपाल और आगे बढ़ा, चैत-बैसाखकी दुपहरियामें कोई आदमी नंगे बदन हल जोत रहा था, पूछनेपर नाम बतलाया धनपाल। ठठपाल फिर सोचने लगा। लेकिन, फिर आगे बढ़ा। कुछ आदमी कन्धेपर मुर्दा उठाये "राम नाम सत्त है" कहते गाँवसे बाहर निकल रहे थे। ठठपालने नाम पूछा तो मालूम हुआ अमर। ठठपाल वहींसे गुरुके पास लौट आया। गुरुने पूछा कोई नाम ढूँढ लाये? ठठपालने कहा—"बिनिया करत लछमिनिया देखा, हल जोतत धनपाल। खटिया चढ़े हम अम्मर देखा सबसे भला ठठपाल।"

दुखराम—हाँ नाम बदलनेसे क्या होता है भैया?

भैया—और नाम भी कैसा बदला है हरिजन, भगवानका आदमी। भगवानने अछूतोंकी ओर फूटी आँख भी कभी देखा? जोकें अपने सारे चूसनेको भगवान हीकी कृपा बतलाती हैं। सुखारी क्यों भूखे मरते हैं। भगवानकी कृपा, सुखारीका १२ सालका लड़का पथ दवाईके बिना क्यों मर गया? भगवान की मर्जी। सालमें १० महीना सुखारीको क्यों भूखा और आधा पेट रहना पड़ता है?—भगवानकी इच्छा। इनके दो करोड़ चमार भाई काहे नंगे-भूखे मरनेके लिए पैदा हुए हैं? भगवान की खुसी। राजा सरेमनपूर काहे २० लाख रुपया हर साल अतिसबाजी, रंडी और मोटर-पर फूँकते हैं?—भगवानकी दया। सेठ तिनकौड़ीमल मोटाईके मारे चारपाईपरसे उठ भी नहीं सकते। उन्होंने चोर बाजारमें अनाज बेंचकर एक करोड़ रुपया काहे मार लिया? भगवानकी दया। सेठ तिनकौड़ीमल के भाई-बन्दोंने अनाज छिपाके उसे मँहगाकर बङ्गालमें २० लाख आदमियोंको भूखा क्यों मार डाला? भगवानकी दया। कोई काम करते-करते मर जाता, लेकिन उसे एक सांझ भी पेटभर अन्न न मिलता, यह भी भगवानकी दया। किसी के कुत्ते हलुवा-मलीदा खाते है और कोई भूखके मारे कुत्तोंका जूठ छीनके खाता है, यह भी भगवानकी दया।

दुखराम—जिनके कुत्ते हलुवा-मलीदा खायें, वह भले ही भगवानकी दयाकी तारीफ करते फिरें, लेकिन जिनके ऊपर भगवानके नामसे हमेशा ही बज्र गिराया गया है, वह काहेको भगवानके आदमी बनने जायें?

भैया—गाँधी जी ने अछूतों को हरिजन—भगवानका आदमी बनाया और एक काम और किया।

सुखारी—सो क्या है भैया?

भैया—हरिजनोंके लिए मन्दिरका दरवाजा खोल देना चाहिए। जब हरिजन हैं तो इनको हरिका दरसन जरूर मिलना चाहिए। लेकिन बाभन पोथी खोल-खोलके दिखाते फिरते हैं कि चमारके मन्दिरके भीतर जानेसे मन्दिर असुद्ध हो जाता है, मैं तो उनसे कहता हूँ दुक्खू भाई कि हिन्दुस्तानमें गायका गोबर और मूत नहीं है, क्यों नहीं खिला-पिलाके भगवानको सुद्ध कर लेते।

दुखराम—चमारके लिए मन्दिरका दरवाजा खोल देनेसे क्या उसका पेटभर जायेगा ?

सुखारी—बड़े होकर नहीं भैया।

भैया—दस करोड़ अछूत भाइयोको जानवरसे आदमी बनाना है। दसो करोड़ आदमी अपने मनसे जानवर नहीं बने, जोकोंने उन्हें जानवर बनाया।

सुखारी—किस तरह हम लोगोको आदमी बनाना चाहते हैं भैया ?

भैया—कहते हैं हिन्दुओमे एक-तिहाई अछूत हैं, उनको भी बड़ी-बड़ी नौकरी मिलनी चाहिए। काहे जज, कलट्टर, मजिट्टर सब बड़ी-बड़ी जातिके ही लोग बनेंगे। हम एक तिहाई है, नौकरी मे एक-तिहाई हमारा हिस्सा होता है।

सुखारी—तो भैया, क्या हमारी जातिमे भी अब कलट्टर-मजिट्टर बन रहे हैं ?

भैया—हाँ, दस-बीस काहे नही बने हैं। लेकिन सुक्खू भाई जो तिहाई नौकरी मिल जाये, तो यह भी ऊँटके मुंहमे जीरा होगा। दस करोड़मे एक हजार को नौकरी मिल जानेसे दसो करोडकी भूख भाग जायेगी ?

सुखारी—कहाँ भागेगी भैया ! राजपूत, बाभन, कायथ मे हजारो नौकरिहा है, लेकिन हर गांवमे तो पेटमे पत्थर बांधके ढेला पीटने वाले भरे पड़े हैं।

भैया—मैं यह नहीं कहता, अछूतोंको नौकरी नही मिलनी चाहिए, लेकिन ओसके चाटेसे प्यास नही बुझेगी सुखारी भाई !

सुखारी—और भी कोई रास्ता बतलाते हैं भैया ?

भैया—राज-काज चलानेके लिए जो छोटे लाट बड़े लाटकी पचायत (एसेम्बली, कौंसिल) है, उसमे भी एक-तिहाई हमारे भाइयोको जाना चाहिए।

सुखारी—तो इससे भैया हम लोगोको रोटी-कपड़ा मिलेगा ?

भैया—बड़ी जातिके लोग पचायतमे गये हैं। देख रहे हो न उनकी जातिके ढेला फोडनेवालोको कितना खाना-कपड़ा मुयस्सर हो रहा है।

सुखारी—तो यह भी बेकार ही हुआ न भैया ?

भैया—बेकार नहीं है सुक्खू भाई, अछूतोको उस पचायतमे जाना चाहिए, तभी न बड़े लोगो को मुँहतोड़ जवाब मिलेगा और छाता-जूता उतरवानेका नाम नहीं लेंगे। लेकिन सींक बोरके पानी देनेसे कठ नही भींजेगा सुक्खू भाई ?

सुखारी—तो भैया, कौन उपाय है, जिससे हम लोगोका दुख-दलिद्दर जाय ?

भैया—बस रोगोकी एक ही दवा है सुक्खू भाई और वह दवा मरक्स बाबा बतला गये हैं।

सुखारी—मरक्स बाबाकी बात दुक्खू भाईने बतलाई है।

भैया—ताल-तलैया, डबरा-गड्ढा चाहे गड़हा-गड़ही, चाहे गाय भैंसके खुरका दाग; एक-एक चीजको लोटासे पानीके भरनेमे जिनगी बीत जायगी लेकिन वह नहीं भरेंगे और एक बेर बाढ़ आ जाय, तो सब भर जायेंगे। मरक्स बाबा कहते हैं कि खून चूसनेवाली सभी जोंकोको निकाल बाहर करो और खेत-बारी, बाग-बगीचा, कार-

कारखाना सब साझेमें करके मिलकर काम करो, बस सबका दुख-दलिद्दर दूर हो जायगा ।

सुखारी—हमारे नेता इसे क्या नही मानते भैया ?

भैया—इनको बाढके आनेपर विसवास नही ।

सुखारी—बाढ़ के आनेपर विश्वास नही है, तो क्या लोटा-लोटा पानीसे भर देनेका विसवास है, यह तो और अनहोनी बात है ।

भैया—यह सोचते हैं कि अबकी साल सौ नौकरी मिलेगी, अगले साल दो सौ आदमी हाकिम हो जायेंगे । इसी तरह कुछ दिनमे हमारी जातिके दस बीस हजार आदमीको नौकरी मिल जायगी । कोई दो हजार महीना पायेगा, कोई हजार कोई पाँच सौ, कोई सौ ।

सुखारी—दो हजार या सौ महीना लेके अपने ही अड़े-बच्चेको पालेगा न भैया ? बहुत हुआ तो दो लाख आदमियोका इससे काम चल जायगा, लेकिन दस करोड़मे दो लाख क्या है ?

भैया—बडी जातिवालोके पास तो भैया जमीन मकान भी है कल कारखाना भी है, हमारे पास तो मँडई डालनेकी भी जमीन नही, तो दस पन्द्रह हजार नौकरियो-के मिल जानेसे हमारा क्या बनेगा ?

भैया—नौकरीवाले जमीन मकान खरीदेंगे कारखानोमे भी हिस्सदार बनगे । हो सकता है, पचास बरसमे अछूतोमे भी कुछ हजार भूमिदार और कारखानेदार बन जायें ।

दुखराम—लेकिन इससे तो भैया ? जोके ही बढेंगी न ? जोकोके बढानेसे हमारा दुख जायगा या खतम करने से ?

भैया—यही तो ये लोग नही समझते । उन्होने खुद सब तकलीफ और अपमान भोगा है । उनके दिलमें अपने भाइयोके लिये बडा दर्द है । वह अछूतोको उठा रहे है, यह सब अच्छा है । वह गांधीजीके हरिजन उद्धार या अछूत उद्धार को बेकार समझते है, यह भी ठीक हैं । और गाधीजी जो मन्दिर मे अछूतोका भेजना चाहते हैं तो यह मायाजाल है । मन्दिर और भगवान सब धोखेकी टट्टी है । चारा देकर बहेलिया मारता है । अछूतोको भगवानको दूर हीसे सलाम करना चाहिये और कह देना चाहिए—'बाबा ? जाओ, बहुत दिनो तुमने छाती पर मूँग दला ।'

सुखारी—मरवस बाबाके रस्तासे चलनेसे हम लोगोका कैसे उद्धार होगा भैया ?

भैया—सुक्खू भाई ? यही अपने दाउदपुरकी बात ले लो । बाभन चमार सब मिलाकर १०० घर हैं । तुम्हारे वहाँ ५०० बीघा खेत हैं और सब रब्बीका । यमी ता १०० घरमें २० घर चमारोके पास कुल मिलाकर ३-४ बीघामे ज्यादा जमीन नही, और उसके लिए भी मालिककी गाली मार सहनी पडती है, और भी कितने ही बाभनो, अहीरो और दूसरी जातिके घर हैं, जिनम किसी-किसीके पास नामके लिए थोडी सी जमीन है । ८-९ घर हैं, जिनके पास जमीन भी बेसी है और

मुंहमे गाली भी। मरकस बाबाके रस्ते का मतलब है कि पाँचो सौ बीघा इकट्ठाकर दिया जाय, कोले-मोलियोकी मेडे तोड दी जायँ, और पाँचो सौ बिगहामे सभी घरकी साझी हो। जितने देहसे काम करने लायक आदमी मर्द-औरत हैं, सब काम करें।

सुखारी—लेकिन भैया, सुखलाल तेवारी के घरकी बुढिया भी चौखटसे बाहर नही निकलती, उनके घरकी औरतें कैसे निकाई-रोपाई करने लगेंगी।

भैया—सात परदेके भीतर रहना, चौखट नही लाँघना, हाथमें मेंहदी लगा के बैठना, यह सब जोकोका धरम है भाई! कमेरोका धरम है, काम करना। सुख-लाल तेवारी और उनके घरकी औरतोको दोमेसे एक बात चुननी पडेगी। जो वह जोंक धरम पालन करना चाहते हैं, तो "काम नही तो रोटी नहीं" वाली बात होगी, और एक हप्तामे सब पटपटाके दाउदपुरको छोड जायेंगे। जोकोके मरनेसे धरतीका भार उतरता है दुक्खू भाई! और जो कमेरा धरमपर चलना चाहेंगे, तो सबके भाई है, सबके साथ मिलके काम करें। खूब धन पैदा करें, और सब बाँट-चोंटकर खायें-पियें।

सुखारी—तो मरकस बाबाके रस्तामे भैया, काम पियारा होता है, चाम नही, यही न भैया!

भैया—जो दाउदपुरमे सभी घर चामसे पियार करने लगे तो धरती माता एकहू अच्छन अनाज देगी?

सुखराम—धरती माताका दिल सब सब नहीं पसीजता, जब तक चोटीका पसीना एडी तक नही पहुँचता।

भैया—दाउदपुरमें सब घर काम करेगा। खेतोमे मोटरका हल चलेगा, सिंचाईके लिए पाइप और बिजली लगेगी। खेत-खेतमे विलायती खाद पडेगी। ७०० बीघा गेहूँ बोनेसे लोगोका साल भरका खाना हो जायगा। ३०० बीघा जो सिगरेट वाला तमाकू बो दो, तो खाली तमाकू बेंच देनेसे सालमे ३ लाख रुपया आ जाय। लेकिन तमाकू काहे बेचोगे सुक्खू भाई! दाउदपुरमे सिगरेटका कारखाना खुल जायगा। खेतीका समय छोडकर मरद-औरत अपने कारखानामे रोज ६ घन्टा काम करेंगे। बीस लाखका सिगरेट सालमे बिक जायगा और गाँववाले जितना सिगरेट पियेंगे, उतना मुफ्त रहेगा।

सुखारी—भैया तो इसी दाउदपुरकी मिट्टीसे २० लाख २५ लाख सालाना निकलेगा न?

भैया—और यह २०-२५ लाख सुक्खू भाई सब घरका धन होगा। फिर दाउदपुरमें कोई सुअरकी खोभार नही दिखाई पडेगी, कोई छान और खपडैल भी नही बच रहेगी। उसकी जगह दाउदपुरमे होगी—एक चौडी जिसके दोनो ओर ईंट, सीमेन्ट और लोहेसे बने पक्के मकान होंगे। हर मकानमे नलसे पानी जायगा और बिजली दीया बारेगी। हर घरके पीछे पक्का पाखाना होगा, और अबदुल भाईको उठाना नही पडेगा; नलसे पानी छोडा जायगा और वह धरतीके भीतर ही भीतर बहा ले जायगा। फिर आजके नंगे-भूखे आदमी दाउदपुरमे नही दिखाई पडेंगे। सब

मुंहमे गाली भी। मरकस बाबाके रस्ते का मतलब है कि पाँचो सौ बीघा इकट्ठाकर दिया जाय, कोले-कोलियोकी मेडे तोड दी जायँ, और पाँचो सौ बिगहामे सभी घरकी साझी हो। जितने देहसे काम करने लायक आदमी मर्द-औरत हैं, सब काम करें।

सुखारी—लेकिन भैया, सुखलाल तेवारी के घरकी बुढिया भी चौखटसे बाहर नही निकलती, उनके घरकी औरतें कैसे निकाई-रोपाई करने लगेंगी।

भैया—सात परदेके भीतर रहना, चौखट नही लाँघना, हाथमे मेहदी लगा के बैठना, यह सब जोकोका धरम है भाई। कमेरोका धरम है, काम करना। सुख-लाल तेवारी और उनके घरकी औरतोको दोमेसे एक बात चुननी पडेगी। जो वह जोक धरम पालन करना चाहते हैं, तो "काम नही तो रोटी नही" वाली बात होगी, और एक हफ्तामे सब पटपटाके दाउदपुरको छोड जायँगे। जोकोके मरनेसे धरतीका भार उतरता है दुक्खू भाई। और जो कमेरा धरमपर चलना चाहेगे, तो सबके भाई हैं, सबके साथ मिलके काम करें। खूब धन पैदा करें, और सब बाँट-चोटकर खायें-पियें।

सुखारी—तो मरकस बाबाके रस्तामे भैया, काम पियारा होता है, चाम नही, यही न भैया!

भैया—जो दाउदपुरमे सभी घर चामसे पियार करने लगे तो धरती माता एकहू अच्छत अनाज देगी?

सुखराम—धरती माताका दिल तब तक नही पसीजता, जब तक चोटीका पसीना एडी तक नही पहुँचता।

भैया—दाउदपुरमे सब घर काम करेगा। खेतोमे मोटरका हल चलगा सिंचाईके लिए पाइप और बिजली लगेगी। खेत-खेतमे बिलायती खाद पडगी। २०० बीघा गेहूँ बोनेमे लोगोका साल भरका खाना हो जायगा। ३०० बीघा जो सिगरेट वाला तमाकू बो दो, तो खाली तमाकू बेंच देनेसे सालमे ३ लाख रुपया आ जाय। लेकिन तमाकू काहे बेचोगे सुक्खू भाई। दाउदपुरमे सिगरेटका कारखाना खुल जायगा। खेतीका समय छोडकर मरद-औरत अपने कारखानामे रोज ६ घन्टा काम करेंगे। बीस लाखका सिगरेट सालमे बिक जायगा और गाँववाले जितना सिगरेट पियेंगे, उतना मुफुत रहेगा।

सुखारी—भैया तो इसी दाउदपुरकी मिट्टीसे २० लाख २५ लाख मालाना निकलेगा न?

भैया—और यह २०-२५ लाख सुक्खू भाई सब घरका धन होगा। फिर दाउदपुरमे कोई सुअरकी खोभार नही दिखाई पडेगी, कोई छान और खपडैल भी नही बच रहेगी। उसकी जगह दाउदपुरमे होगी—एक चौडी जिसके दोनो आर ईट, सीमेन्ट और लोहेसे बने पक्के मकान होंगे। हर मकानमे नलसे पानी जायगा और बिजली दीया बारेगी। हर घरके पीछे पक्का पाखाना होगा, और अबदुल भाईको उठाना नही पडेगा, नलसे पानी छोडा जायगा और वह धरतीके भीतर ही भीतर वहा ले जायगा। फिर आजके नंगे-भूखे आदमी दाउदपुरमे नही दिखाई पडेंगे। सब

साफ कपडा पहिनेंगे। लडके-लडकी सब पढेंगे। सुखलाल तवारीके पोते और सुखारी चमार क पोते एक दूसरेको भाई समझेंगे और एक परिवारके बेक्ति (आदमी)।

अबदुल—लेकिन भैया यह सपना जैसी बात मालूम होती है।

भैया—सपना वह होता है अबदुल भाई जिसे धरतीपर कही न देखा जाय लेकिन जो बात धरतीके किसी कोनेम देखी जाय, उसे भी क्या सपना कहग ?

अबदुल—धरतीपर ऐसी बात कही हुई है भैया ?

भैया—हाँ अबदुल भाई ! और बहुत दूर नही। दो दिन रेल और ३ दिन मोटर से चलनेपर तुम उस देसमे पहुँच जाओगे जहाँ सब कारबार साझेके परिवारका है जहाँ कोई अछूत और बडी जातिका नही है जहाँ कोई जोंक नही है उस देसका नाम है सोवियत भूमि किसानो मजूरोका पचायती राज और उसको पहल रूस भी कहा करते थे।

अबदुल—तब भैया ! सपनाकी बात नही लेकिन अपनी जिनगी मे हम सब देख लेंगे ?

भैया—तमासा देखना चाहोगे तो कभी नही लेकिन वैसा बनानेम लग जाओगे और खूब जिउजानसे लग जाओगे तो जरूर देख लोगे। अडतीस बरस पहिले रूसको भी जोकोने नरक बनाके रखा था लेकिन किसान मजूर भिड गए और अब उन्हें मरके सरगमे जानेकी जरूरत नही अब सरग उनके घरपर उतर आया।

सुखारी—लेकिन भैया हमारे नेता इतना पढ गुनकर काहे मरक्स बाबाके रास्तेको नही मानते ? जो वह भी दस-बीस लाख के जोंक बनना चाहते है तो हम लोगोंका क्या उपकार करेंगे ?

भैया—हिंदुस्तान भरके कमेरे जब जोकोको उखाड फेंकनेके लिए उठ खडे होंगे तब उनके मनमे भी आसा बँधगी अभी तो वह इसे अनहोनी समझते हैं। इसी लिए जडमे पानी न देकर पत्तोको सीचते हैं।

दुखराम—लेकिन सुनते थे भैया ! गांधीजी भी अछूतोके उद्धारके लिए लाखो रुपया जमा कर चुके थे और उन्होंने जगह जगह हरिजन आसरम खोले। वह क्या करना चाहते थ ?

भैया—करना तो चाहते थे हरिजनोका उद्धार लेकिन हो रहा था कडेमे आसू पोछना। बस इतना ही हो रहा था कि कुछ सौ हरिजन लडकोको चरखा कातना सिखाया जाय, जिससे बहुत मेहनत करनेपर भी आदमी दो आना रोजसे बेसी नही कमा सकता जिससे एक आदमीका भी पेट नही भर सकता। दूसरी बात यह हो रही थी कि बडी जातिके सौ दो-सौ आदमियोको नौकरी मिल जाती।

मुंहमे गाली भी। मरकस बाबाके रस्ते का मतलब है कि पाँचो सौ बीघा इकट्ठाकर दिया जाय, कोले-कोलियोकी मेडे तोड दी जायें, और पाँचो सौ बिगहामें सभी घरकी साझी हो। जितने देहसे काम करने लायक आदमी मर्द-औरत हैं, सब काम करें।

सुखारी—लेकिन भैया, सुखलाल तेवारी के घरकी बुढिया भी चौखटसे बाहर नही निकलती, उनके घरकी औरतें कैसे निकाई-रोपाई करने लगेंगी।

भैया—सात परदेके भीतर रहना, चौखट नही लाँघना, हाथमे मेहदी लगा के बैठना, यह सब जोकोका धरम है भाई। कमेरोका धरम है, काम करना। सुखलाल तेवारी और उनके घरकी औरतोको दोमेसे एक बात चुननी पडेगी। जो वह जोंक धरम पालन करना चाहते हैं, तो "काम नही तो रोटी नही" वाली बात होगी, और एक हफ्तामे सब पटपटाके दाउदपुरको छोड जायेंगे। जोंकोके मरनेसे धरतीका भार उतरता है दुक्खू भाई। और जो कमेरा धरमपर चलना चाहेंगे, तो म— भाई है, सबके साथ मिलके काम करें। खूब धन पैदा करें, और सब बाँट-चोंट खायें-पियें।

सुखारी—तो मरकस बाबाके रस्तामे भैया, काम पियारा होता है चा नही, यही न भैया।

भैया—जो दाउदपुरमें सभी घर कामसे पियार करने लगे तो धरती माता एकहू अच्छन अनाज देंगी?

सुखराम—धरती माताका दिल तब तक नही पसीजता, जब तक चोटीका पसीना एडी तक नही पहुँचता।

भैया—दाउदपुरमे सब घर काम करेगा। खेतोमे मोटरका हल चलेगा, सिचाईके लिए पाइप और बिजली लगेगी। खेत-खेतमे बिलायती खाद पडेगी। २०० बीघा गेहूँ बोनेमें लोगोका साल भरका खाना हो जायगा। ३०० बीघा जो सिगरेट वाला तमाकू बो दो, तो खाली तमाकू बेंच देनेसे सालमे ३ लाख रुपया आ जाय। लेकिन तमाकू काहे बेचोगे सुक्खू भाई! दाउदपुरमे सिगरेटका कारखाना खुल जायगा। खेतीका समय छोडकर मरद-औरत अपने कारखानामे रोज ६ घन्टा काम करेंगे। बीस लाखका सिगरेट सालमे बिक जायगा और गाँववाले जितना सिगरेट पियेंगे, उतना मुफुत रहेगा।

सुखारी—भैया तो इसी दाउदपुरकी मिट्टीसे २० लाख २५ लाख मालाना निकलेगा न?

भैया—और यह २०-२५ लाख सुक्खू भाई सब घरका धन होगा। फिर दाउदपुरमें कोई मुअरकी खोभार नही दिखाई पडेगी, कोई छान और खपडैल भी नही बच रहेगी। उसकी जगह दाउदपुरमें होगी—एक चौडी जिसके दोनो ओर ईंट, सीमेन्ट और लोहेके बने पक्के मकान होंगे। हर मकानमे नलसे पानी जायगा और बिजली दीया बारेगी। हर घरके पीछे पक्का पाखाना होगा, और अबदुल भाईको उठाना नही पडेगा; नलने पानी छोडा जायगा और वह धरतीके भीतर ही भीतर बहा ले जायगा। फिर आजके नंगे-भूखे आदमी दाउदपुरमें नहीं दिखाई पडेंगे। सब

साफ कपड़ा पहिनेंगे। लड़के-लड़की सब पढ़ेंगे। सुखलाल तेवारीके पोते और सुखारी चमारके पोते एक दूसरेको भाई समझेंगे और एक परिवारके बेक्ति (आदमी)।

अबदुल—लेकिन भैया, यह सपना जैसी बात मालूम होती है।

भैया—सपना वह होता है अबदुल भाई, जिसे धरतीपर कहो न देखा जाय, लेकिन जो बात धरतीके किसी कोनेमें देखी जाय, उसे भी क्या सपना कहेंगे?

अबदुल—धरतीपर ऐसी बात कहीं हुई है भैया?

भैया—हाँ अबदुल भाई! और बहुत दूर नहीं। दो दिन रेल और २ दिन मोटर से चलनेपर तुम उस देसमें पहुँच जाओगे जहाँ सब कारबार साझेके परिवारका है, जहाँ कोई अछूत और बड़ी जातिका नहीं है, जहाँ कोई जोक नहीं है, उस देसका नाम है सोवियत भूमि, किसानो-मजूरोका पचायती राज, और उसको पहले रूस भी कहा करते थे।

अबदुल—तब भैया! सपनाकी बात नहीं, लेकिन अपनी जिनगी में हम सब देख लेंगे?

भैया—तमासा देखना चाहोगे तो कभी नहीं, लेकिन वैसा बनानेमें लग जाओगे, और खूब जिउजानसे लग जाओगे तो जरूर देख लोगे। अड़तीस बरस पहिले रूसको भी जोकोंने नरक बनाके रखा था, लेकिन किसान-मजूर भिड़ गए और अब उन्हें मरके सरगमें जानेकी जरूरत नहीं, अब सरग उनके घरपर उतर आया।

सुखारी—लेकिन भैया हमारे नेता इतना पढ़-गुनकर काहे मरवस बाबाके रास्तेको नहीं मानते? जो वह भी दस-बीस लाख के जोक बनना चाहते हैं तो हम लोगोंका क्या उपकार करेंगे?

भैया—हिन्दुस्तान भरके कमेरे जब जोकोंको उखाड़ फेंकनेके लिए उठ खड़े होंगे, तब उनके मनमें भी आसा बँधेगी, अभी तो वह इसे अनहोनी समझते हैं। इसी-लिए जड़में पानी न देकर पत्तोंको सींचते हैं।

दुखराम—लेकिन सुनते थे भैया! गाँधीजी भी अछूतोंके उद्धारके लिए लाखों रुपया जमा कर चुके थे और उन्होंने जगह-जगह हरिजन आसरम खोले। वह क्या करना चाहते थे?

भैया—करना तो चाहते थे हरिजनोंका उद्धार, लेकिन हो रहा था कढ़ेमें आँसू पोंछना। बस, इतना ही हो रहा था, कि कुछ सौ हरिजन लड़कोंको चरखा कातना सिखाया जाता, जिससे बहुत मेहनत करनेपर भी आदमी दो आना रोजसे बेसी नहीं कमा सकता, जिससे एक आदमीका भी पेट नहीं भर सकता। दूसरी बात यह हो रही थी कि बड़ी जातिके सौ-दो-सौ आदमियोंको नौकरी मिल जाती।

१४. मरकस बाबा का रास्ता विदेशी है ?

सोहनलाल—लोग कहते हैं भैया, कि मरकस बाबाने जो कुछ कहा है, वह ठीक हो सकता है, लेकिन एक देसके लिए जो बात ठीक है, वह दूसरी जगहके लिए बेठीक भी हो सकती है।

दुखराम—"ठाँव-गुने काजर, ठाँव-गुने कारिख," वही चीज आँखमे लगकर काजल बन जाती है, और सोभा देती है, वही गालमे लग कालिख कही जाती है और लोगोको धोना-पोछना पड़ता है। यही बात है सोहन भैने ?

सोहनलाल—हाँ दुक्खू मामा ? रूसमे जो बात ठीक उतरी, वही बात हिन्दुस्तानमें भी ठीक उतरेगी, इसपर कैसे बिस्वास किया जाय भैया ?

भैया—"ठाँव गुने काजर, ठाँव गुने कारिख" को मैं मानता हूँ, सोहन भाई ? रूसमे इतनी सरदी पड़ती है कि नदी-नाले सब जम जाते हैं, वहाँ जाड़े के मौसिममें हर घरको गरम पानीके मोटे नलोसे गरम किया जाता है। हिन्दुस्तानमे भी मरकस बाबाका कोई चेला मकान गरम करनेके लिए गरम पानीका नल लगवाने लगे, तो उसे मैं पागल कहूँगा, उसकी जगह यहाँपर गर्मियोके दिनो मे बिजली के पखेकी जरूरत पड़ेगी। मासको और लेनिनग्रादमे रूसी भाखा बोली जाती है, जो हिन्दुस्तानके ३५ करोड़ आदमियोको भी अपनी भाखा छुड़वाकर रूसी भाखा सिखलाने की कोसिस करे, तो उसे भी मैं पागल कहूँगा। रूसके कवि वोल्गा माई और दोन बाबा (नदियो) के गीत गाते, हिन्दुस्तानमे जो कोई कवि गंगा माई, सिन्ध और कावेरी माताओ को छोड़कर वोल्गा माई और दोन बाबा का गीत गाये, तो उसे भी मैं पागल कहूँगा, और मरकस बाबा भी उसे अपना चेला नही मानेंगे। ऐसी सैकड़ो चीजें हैं, जो रूसकी अपनी हैं और हिन्दुस्तानमे नही हैं। जो कोई आदमी अंधाधुंध नकल करना चाहेगा, तो उसे मैं बेकूफ कहूँगा। लेकिन मरकस बाबाने जो बातें जोकोके हटाने के लिए बताईं, कमेरोके राज कायम करनेके लिए बताईं, सबको एक परिवारका भाई बननेके लिए कहा, उसमे तो कोई ऐसी बात नही दिखाई देती।

सोहनलाल—सबसे बड़ी बात यही है, कि वह विदेसी चीज है।

भैया—तो हिन्दुस्तानमे कोई विदेसी चीज नही चलनी चाहिये, यह कौन कहता है?

सोहनलाल—गांधीजी कहते है, गाँजीजी के चेले लोग कहते हैं।

भैया—गाँधीजी नहीं कह सकते सोहन भाई ? गाँधीजी रूसके तालस्तायको अपना गुरू मानते हैं, बिलायतके रस्किनका अपनेको रिनिया मानते हैं। उन्होंने कभी नहीं कहा, छापाखाना विलायतसे आया है, इसलिए उसमे छपी गीताको नही पढना चाहिये। घड़ी भी विलायतसे आई है, और गाँधीजी उसको बाँधे-बाँधे फिरते हैं, चसमा विलायत से आया है, लेकिन उसे लगाते हैं। ईसामसी का धरम विदेससे आया है, लेकिन गाँधीजी उसका बहुत आदर करते हैं। हिन्दुस्तान के चार आदमीमे एक आदमी जिस मुसलमान धरमको मानता है और वह भी दूसरे देससे आया, लेकिन उन्होंने नही कहा कि अरबके पैगम्बरको हिन्दुस्तान से निकाल बाहर करना चाहिये।

सोहनलाल—लेकिन वह कहते हैं, कि मरकस बाबाके रस्तेमे हत्याकी बात आती है और हिन्दुस्तानके रिसि-मुनि बेहत्या का रस्ता बताते हैं।

भैया—यह दोनो बात गलत है। मरकस बाबा हत्याका रस्ता नहीं बताते, वह ऐसा रस्ता बताते हैं कि दुनियामें फिर आदमीको आदमीकी हत्या करनेकी कभी जरूरत ही न पड़े। अकाल, महामारीमें करोड़ों आदमी मर जाते हैं। वह चाहते हैं कि दुनियामें अकाल महामारीका नाम ही न रहे। जोकें अपने स्वारथ के लिए बराबर लड़ाई करवाती हैं, हमारे सामने ही दो बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ हुई, जिनमें करोड़ों आदमियों की हत्या हुई, जोक गुण्डोंने लाखों बेकसूर बच्चों और औरतोंको तड़पा-तड़पाकर मार डाला। मरकस बाबाने ऐसा रस्ता बतलाया है कि जोक ही न रह जायँ और दुनिया भरके सारे आदमियोंका एक परिवार बन जाय। गाँधीजी जोकोंको भी रखना चाहते हैं और यही जोकें हत्याकी जड़ हैं। दुक्खू भाई बताओ कौन हत्याका रस्ता बताता है कौन बेहत्याका ?

दुखराम—इससे तो मरकस बाबाका ही रस्ता बेहत्या (अहिंसा) का हुआ और गाँधीजीका रास्ता दुनियासे कभी हत्याको नहीं हटा सकेगा।

सोहनलाल—लेकिन यह तो तब होगा न जब सारी दुनिया मरकस बाबाके रस्ते पर चलने लगेगी। लेकिन यह तो अनहोनी बात मालूम होती है।

भैया—जो दुनियामें जोकें रह जायेंगी तो हत्या भी रह जायगी, सोहन भाई! लेकिन इसका दोष तो जोकोंपे रहेगा, मरकस बाबाके रस्तेको नहीं। फिर सोहन भाई आप मरकस बाबाके रस्तेके ऊपर सारी दुनिया आ जायगी, इसे तो अनहोनी समझते हैं और तब जब कि अपने सामने देख रहे हैं कि ३८ बरस पहले दुनियाका छठवाँ हिस्सा मरकस बाबाके रस्तेको अपना चुका और ६ बरस पहिलेके भी नहीं। जिसे अभी दुनिया अपना चुकी, उसे तो तुम अनहोनी कहते हो। और जोकें बनी रहेंगी, जिनका जीनाही दूसरेके खूनपर होता है लेकिन वे भगत बन जायँगी और सेर-बकरी एक जगह पानी पियेंगे। है यह होनेवाली बात ?

सोहनलाल—जोकोंके हटानेकी बात तो गाँधीजी भी कहते हैं, लेकिन हत्या के रस्तेसे नहीं, बेहत्याके रस्तेसे।

भैया—बुद्ध गाँधीजीसे बहुत बड़े आदमी थे। उन्होंने भी बेहत्याके रस्ते जोकोंको भगत बनाना चाहा लेकिन नहीं हो सका। ईसामसीने भी बेहत्याके रस्तेसे सबको ले जाना चाहा, लेकिन देख रहे हो न, उनके चेले क्या कर रहे हैं ? गाँधीजीके चेलो हीकी ओर नहीं देखते ? मिलवाले सेठ क्या कर रहे हैं ? उनके चेलोने बम्बईमें मजदूरोंपर गोलियाँ चलवाई। उनके चेलोने किसानोंपर घोड़े दौड़वाये। बेहत्याकी बात उसी दिन खतम हो गई जिस दिन लड़ाईके समय गाँधीजीने कहा था कि कांगरेस सरकारमें जायगी तो पलटन, गोला बारूद सभी तरहसे फसिहोंका संहार करेगी। जरमन-जापान फसिहोंके सामने निहत्था या बेहत्याके रस्ते काम नहीं चलेगा, इसीलिए गाँधीजीने भी हथियारके साथ फसिहोंका मुकाबला करनेके लिए कहा। मरकस बाबा भी हथियार लेकर जोकोंका मुकाबला करनेके लिए कहते हैं। बताओ दुक्खू भाई ! है दोनोंमें कोई फरक ?

दुखराम—कोई फरक नहीं मालूम होता भैया ?

भैया—और मरकस बाबा हथियार लेके मुकाबला करनेके लिए क्यों कहते, इसीलिए कि जोकें सिरसे पैर तक हथियारसे लैस हैं, तुम्हे निहत्था देखकर वह भून देंगी। जोकोंमें दया-मया है, इसे वही विस्वास कर सकता है जिसको जोंकोकी करनी मालूम नहीं, उनका स्वभाव नहीं मालूम। फिर हिन्दुस्तानके रिसि-मुनि बेहत्याका रस्ता बताते हैं। यह बिलकुल गलत है। अठारहो अध्याय गीता हत्या करनेके लिए कही गई। अर्जुन बेचारा तो तीर-धनुष छोड़कर बैठ गया था, उस लड़ाई करनेसे इनकार कर दिया था, लेकिन किरसनने उसे तरह-तरह से समझाया और लड़ने को तैयार किया। वह लड़ाई भी गरीबों-कमेरोंकी भलाईके लिए नहीं हुई थी, कुरुक्षेत्रमें दोनो ओर जोकें ही आमने सामने खड़ी थी। जिरजोधन (दुरजोधन) राजमें हिस्सा नहीं देता था, इसीलिए पांडव लड़ रहे थे। जिरजोधन सारे राजके किसानों, कारीगरों, मजदूरोंकी कमाईको छीनके ऐसजैस करना चाहता था। पांडवने उसी ऐसजैसके लिए कौरवोंको मारा, लाखोंका सहार किया। गीताको गांधीजी बहुत मानते हैं। गीताको जो कहे कि वह बेहत्या (अहिंसा) का रस्ता बताती है, इसके लिए हम यही कहेंगे कि वह दिन दोपहर का अंधा है। और दूसरे कौन रिसि-मुनि हैं जो बेहत्याका रस्ता बतलाते हों ?

सोहनलाल—बुद्ध और महावीर।

भैया—बुद्धको तो हिन्दुस्तानने निकाल बाहर किया, इसीलिए उनकी सिच्छा को स्वदेसी कौन मुँह लेकर कहेगे। रहा महावीर, लेकिन उन्होने किसी राजाको युद्धमें हथियार डाल देनेके लिए कहा, इसका तो हमें कोई पता नहीं। हाँ, आदमी अपनी मुकती और निरवान चाहे तो उसे सब जीव-जन्तु पर दया करनी चाहिये। वहाँ एक देसको दूसरे देसकी गुलामीसे छूटने या एक जमातको दूसरी जमातके खूनी हाथोंसे बचनेके लिए, हथियार रखकर बेहत्या मान लेनेकी बात तो कहीं देखनेमें नहीं आती।

सन्तोखी—पोथी-पतरा बहुत है भैया! क्या जाने कहीं रिसि-मुनिके मुँहसे ऐसी बात निकली हो।

भैया—बुद्ध और महावीरसे पहिले किसी रिसी-मुनिने बेहत्याकी बात कही हो, इस पर मुझे बिलकुल बिस्वास नहीं, उस समयके रिसियों-मुनियोंका रसोईखाना पूजापर नहीं, कसाईघर होता था, वहाँ बीचमें बछिया या बकरेको रिसि-मुनि अपने हाथसे मारते थे।

दुखराम—क्या कहा भैया! रिसि-मुनि बछिया मारते थे, राम-राम ऐसी बात कभी हो सकती है ? हिन्दू गौ माताके इतने भगत हैं तो उनके रिसि-मुनि भला कैसे गाय मार सकते हैं ?

भैया—बुद्धसे पहिले और कुछ दो बरस पीछे तक हिन्दू रिसि और सभी लोग गायका मांस खाते थे, उसमें उनको कोई परहेज नहीं था। हिन्दुओंकी एक-दो नहीं,

ब्राह्मणोंने पोथियोंमें लिखा है, रन्तिदेव राजकी कथा महाभारत* में आयी है। उसके घरमें रोज दो-दो हजार गायें मेहमानों, ब्राह्मणोंके खानेके लिए मारी जाती थीं।

दुखराम—लेकिन भैया जो हिन्दुओंकी पोथीमें गऊ मारनेकी बात लिखी है, और पहिलेके जमानेमें नहीं—रन्तिदेव तक गाय खाते थे, तो आज पोथीके लिये क्यों हिन्दू लोग मुसलमानोंका सिर फोड़ते फिरते हैं।

भैया—हिन्दुओंसे पोथीकी बात छिपा दी गई, इसीलिये नहीं तो क्या १० पीढ़ी पहलेके उनके अपने दो-दो लाख पुरखा गिन जायें, तो क्या वह उनका सिर फोड़ते फिरेंगे ? मैं यह नहीं कहता दुखू भाई, कि पहिलेके पुरखा गाय खाते थे, तो हम आज भी खायें। इसकी कोई जरूरत नहीं। लेकिन लाठी लेकर दूसरोंको मारने दौड़ना यह तो जबर्दस्ती है न ?

दुखराम—जबर्दस्ती हो नहीं भैया यह तो भारी लड़नेकी जड़ है।

सोहनलाल—लेकिन भैया ! हम लोगोंको सारी खेती-बारी, दूध-घी गाय हीसे मिलता है, इसलिए गायकी रक्षा करनेको बुरा कैसे कहा जाय।

भैया—गायकी रक्षा करना अच्छा है सोहन भाई। हम लोगोंको अच्छी-अच्छी नसलके गाय-बैल पैदा करना चाहिये, उनको बढ़ाना चाहिये। ३० करोड़ आदमीमेंसे बहुत थोड़े हीको पीनेको दूध मिलता है। जब दूध-घी खानेको मिलता था, तो आदमी खूब तगड़े होते थे। दूध-घीकी इफरात हो इसकी जरूर हमें कोशिश करनी चाहिए। यह हमारे फायदेकी बात है और मुसलमानोंके भी। मुसलमान भाइयोंको समझाइये—हमारे भी पुरखा गायका बलिदान करते थे, गायका मांस खाते थे, लेकिन पीछे समझा कि गायकी रच्छासे हमारा ज्यादा फायदा है, इसीलिए उन्होंने गायका मांस त्याग दिया। देश भरके लोगोंको खूब घी-दूध खानेको मिले, हल-गाड़ीके लिए अच्छे-अच्छे बैल मिलें, इसीलिए हमें गायोंकी रच्छा करनी चाहिए।

सोहनलाल—गाँधीजीकी अहिंसा और दूसरी बातोंके बारेमें तो आपने बतलाया, तो भी बहुत लोग कहते हैं कि रूस और हिन्दुस्तानमें इतना फरक है कि वहाँकी बात यहाँ चलाना उलटी गंगा बहाना है। वह यहाँ चलेगी नहीं, नाहक झगड़ा-झंझट बढ़ेगा।

---

*"राज्ञो महानसे पूर्वं रन्तिदेवस्य वै द्विज।
अहन्यहनि वध्येते द्वे सहस्रे गवां तथा।"
"समांसं ददतो ह्यन्नं रन्तिदेवस्य नित्यशः।
अतुला कीर्तिरभवन्नृपस्य द्विजसत्तम !"—वनपर्व २२८।८-१०
"महानदी चर्मराशेरुत्क्लेदात् संसृजे यतः।
ततश्चर्मण्वतीत्येवं विख्याता सा महानदी।"—शान्ति पर्व २९-३०
सांकृतिं रन्तिदेवं च मृतं संजय ? शुश्रुम।
आसन् द्विशतसाहस्रा तस्य सूदा महात्मनः।
गृहानभ्यागतान् विप्रान् अतिथीन् परिवेषकाः।—द्रोण पर्व ६७। १-२।
तत्रास्म सूदाः क्रोशन्ति सुमृष्ट-मणि-कुण्डलाः।
सूपं भूयिष्ठमश्नीध्वं नाद्य मांसं यथापुरा"—द्रोण पर्व ६७। १७-१८।
शांति पर्व २७-९८।

भैया—नहीं चलेगी, तो अपने ही बेकार हो जायेगी, उसके लिए चिन्ता करने-की जरूरत क्या ? और झगड़ा-झंझटकी बात जो कहते हो, वह तो जोंके करती हैं। गाँधीजी सेठो और जमींदारोको समझा दें कि वह हथियार रख दें और १० बरस किसानो-मजूरोको मरकस बाबाके रस्तेपर चलने दें। जो साझेकी खेती, मोटरके हल, पानीके पाइप और बिलायती खादसे हरा-भरा खेत ऊसर बन जाने लगे, तो किसानोको भूखे मरना पड़ेगा। फिर तुरन्त ही जमींदार आकर काम सँभाल ले।

दुखराम—बस यही भैया ! गाँधीजी जमींदारोंसे मनवा दें तो हम महात्माजी को सबसे बड़ा अवतार मान लेंगे।

भैया—सेठ लोगोको भी गाँधीजी मना लें कि बेसी नही पाँच बरसके लिए अपने द्वारपर लिखे 'लाभ-सुभ' को मिटा दें।

दुखराम—"लाभ-सुभ" क्या है भैया ?

भैया—बनिया लोगोकी गद्दीके ऊपर दीवारमे "लाभ-सुभ" सिन्दूरसे लिखा देखा है कि नही। सेठ लोगोकी जिनगीका सबसे बड़ा मन्तर यही लाभ-सुभ है। मजूर २०) की चीज रोज पैदा करे, उन्हे ७५ पैसे देकर टर्का दें, और बाकी रुपया हुआ लाभ-सुभ, और रखें उसे गोलकमे। सेठ लोग २०) मे ७५ पैसे ही नहीं, कुल रुपया मजूरोके हाथमे दे दें और कह दें कि देखो तुम लोग बड़े जोखिममे हाथ डाल रहे हो। अब हम चीनीकी मिल, कपड़े की मिल, जूटकी मिल, लोहेका कारखाना, किसीका इन्तजाम नही करेंगे, हम 'लाभ-सुभ' छोड़ते हैं और इन्तजाम भी। जो मजूर कारखानेको ठीकसे नही चला सके, तो उनको ही भूखा मरना पड़ेगा। फिर सेठजी आकर कारखानोको सँभाल लेंगे, झगड़ा-झंझट मिटानेका यह रास्ता है।

दुखराम—हाँ भैया ! बेसी नहीं पाँच ही बरसके लिए जमींदार और कार-खानेवाले सेठ राम-नामा ओढ़कर माला फेरें, और हम लोगोको मरकस बाबाके रस्ते-पर चलने दें, इससे तो बिना झगड़ा-झंझटके फैसला हो जायगा। जब हम देखेंगे कि मरकस बाबाका रास्ता हिन्दुस्तानमे नही चल सकता, तो क्या पागल हुए हैं, कि देस-भरका सहार करेंगे।

सोहनलाल—लेकिन जमींदार और सेठ गाँधीजीकी बात मानेंगे थोड़े ही ?

भैया—चार हजार बरससे जोंकोने अपना रस्ता चलाया और उसके कारण पचानवे सैकड़ा कमेरोके लिए नंगे-भूखे मरनेके सिवा कोई चारा नहीं। हम तो सिरिफ पाँच बरस ही चाहते हैं। जो जोंके उतना भी देनेके लिए तैयार नहीं हैं, उनके गुन्डे लाठी-छूरा लेकर घूमते-फिरते रहेंगे, पुलिस-पलटनको उन्होने अलग तैयार कर रखा है, अदालत-कचहरी सब उनके हाथमे है, इतना होनेपर भी महात्मा-जी कहते [redacted] कि किसान-मजूरो ! तुम हमारा रस्ता ले लो, फुफकार भी मत छोड़ो, तो इसके लिए हम लोग तैयार नहीं हैं। यह तो सोलहो आना जोंकोकी मदद करना है।

सोहनलाल—क्या समझते हो भैया, गाँधीजी जोंकोकी मदद करना चाहते थे ?

भैया—इस बातको अब किससे पूछें। मैं तो समझता हूँ, वह इन्कार न करते, हाँ, उसके साथ यह भी कहते कि मैं सबकी भलाई चाहता हूँ। कोई चाहता है,

इसे यही जान सकता है, दूसरा आदमी दिलकी बातको क्या जाने ? लेकिन गांधीजी कहते थे, उससे सबसे ज्यादा नफा सेठो को हुआ। दूसरे नम्बरपर जिमीदारोको, और तुरन्त नफा तो उतना नही, हाँ आगे के लिए किसान-मजूरो को बहुत मदद मिली। तुम समझते होगे सोहन भाई, कि मैं गांधीजीके कामको बहुत बुरा समझता हूँ, और मानता हूँ कि उन्होने हिन्दुस्तानके लिये नही किया। गांधीजीके उपकार को बहुत मानता हूँ। उन्होंने ही चम्पारनके निलहे साहबोके मदको चूर किया और सैकडो बरसोंसे भेड बने सिकारोको सेर बनाया। उन्होने ही हिन्दुस्तानकी भुक्कड जनताको अपने पैरपर खडा होनेमे सबसे अधिक मदद की। जनताने अपने बलको समझा और अब वह सो नही सकती, जब तक कि वह अपने सतानेवालोको हमेसाके लिए खतम नही कर देती।

दुखराम—तो गांधीजीकी कौन बात है जो हिन्दुस्तानके कमेरोको नुकसान पहुँचानेवाली है ?

भैया—सबसे बडी बात तो यह कि जमीदारो, कारखानेदारोको कायम रखना चाहते थे। वह उनसे इतना ही चाहते थे कि किसानो और मजूरोका अपनेको माँ-बाप समझें। सवाल यह है कि माँ बाप महलोमे रहेंगे या झोपडी मे, बीस हजारकी कारमे चलेंगे या पैदल। लडके-लडकियोके ब्याहमे दस-बीस लाख खर्च करेंगे या धरम बिवाह करेंगे। सिमला, नैनीताल, दार्जिलिंग, उटकमंड, बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, बनारसमे बिडला हाउस बनाकर रहेंगे कि (१०) भाडेकी कोठरीमे।

दुखराम—मुटिया धोती पहिरने और जौकी रूखी रोटी खानेके लिए यह जोंकें कभी नही तैयार होगी।

भैया—मैं भी समझता हूँ इसके लिए कोई तैयार न होगा। क्या जाने ख्याल हो कि किसान-मजूर माँ-बाप बनानेकी आसरापर हाथपर हाथ धरकर बैठे रहे। लेकिन यह भी नही हो सकता, क्योंकि यह अपने पेटकी भूखको कैसे भूला सकते हैं। दूसरी बात गांधीजी कहते थे कि कल-कारखाना नही, हमे चरखा चाहिये, लेकिन यह भी होनेवाला नहीं। लोहेके जमानेसे आदमी लौटकर पत्थरके जमानेमे नही जा सकता। खद्दरसे जो मिलोंके बन्द हो जानेका डर होता, तो बिडला-बजाज-साराभाई जैसे करोड़पति कपडामिलवाले लाखो रुपया खद्दर-फंडमे दान न देते। गांधीजी गुड खानेके लिए कहते हैं लेकिन उनके चेला, बिडला और साराभाईकी चीनीकी मिलोंने चीनीको इतना सस्ता कर दिया, कि कोई गुड खाना चाहेगा नही। किसान ऊख बेचकर पैसा कमा लेते, उसकी जगह यह गुड बनाने नही जायँगे। बिडलाने लाखो रुपया लगाकर हिन्द-साइकिल का कारखाना खोला। वह पाँच लाख नफेमेके पाँच हजार गांधीजीको दान में दे सकता था, लेकिन कारखाना नही बन्द कर सकता। बिडलाने करोडो रुपये लगाकर मोटर कारखाना खोला है, उसी नफमे धरमसाला बनवा सकता है, मालवीजीके विस्वविद्यालयको दान दे सकता है, लेकिन कारखाना छोडकर वह सतजुगकी ओर नही लौटेगा। चर्खेकी बात करना हथियारोकी ओर आदमीको ले जानेकी कोसिस करना है।

दुखराम—वह तो नही हो सकता भैया! और लोहा बिना चरखेका तकुवा कहाँसे आएगा।

पहले जनम मे अच्छा करम किया था, इसीलिये वह आज करोडपती बने हैं। जोकोंके अखबारो मे जोतिस की बातें भी छपती हैं, जोतिसी लोग बालकी खाल निकालते हैं, दुनियाका आगम (भविष्य) बतलाते हैं। उनके पत्रमे जोकोके मारनेवाले गरह कभी नहीं मिलेंगे। जोकें उसे इसलिए छापती हैं कि भोली-भाली जनता समझे कि हमारे आगमका बनना-बिगडना अपने हाथमे नहीं गरहोके हाथमे है, इसलिए जोकोंके साथ लडने-झगडनेसे कुछ नहीं मिलेगा। जोकोंके अखबारमे तसवीरके साथ किसी एक नबरके बदमास, लपट, ठगका जीवन-चरित्र छपेगा और उसमे उसे बडा सिद्ध महात्मा बतलाया जायगा। भोली-भाली जनता उसे पढकर समझेगी, अब भी भगवानके दरसन करनेवाले महात्मा दुनियामे मौजूद है। अब भी भगवान हैं। और वह दुनियाकी खोज खबर लेते है, इसलिए छोडो दुनियाका झमट और भगवानकी ओर लौ लगाओ।

दुखराम—दिलमे तो आग ही लग जाती है लेकिन तुम कहते हो दिमाग ठडा रखना चाहिए, इसलिए मनको समझाता हूँ। इससे तो मालूम होता है कि सचमुच ही अखबार बडा जबर्दस्त हथियार है।

भैया—और दुखू भाई जोकें जो किसानोके घरोमे दस पैसा रखवाने और बीस पैसा खानेका इतजाम सोच रही हैं, तो फिर गाँव-गाँवमे नही, घर-घरमे अखबार आने लगेंगे। फिर जोकोके अखबार हजारो नहीं लाखो रोज छपेंगे। अभीसे बिड़ला मनसूबा बांध रहा है कि सारे हिन्दुस्तानमे जगह-जगहसे हिन्दी, अँगरेजी और दूसरी भाखाओमे अपना अखबार निकाले। सिहानियाँ,डालमियाँ और दूसरे करोडपति भी अब अखबारो की ताकतको समझने लगे हैं लेकिन दुखू भाई देखा न ? अखबार बिदेसी चीज है, लेकिन उससे पूँजीपतियो को नफा है, उनसे उनकी ताकत बढती है, इसलिए अब वह स्वदेसी हो गया। अमेरिका और बिलायतके दिमागसे वहाँके कारखानोमे बनी छापेकी मसीन भी स्वदेसी हो गई। बिलायतके लोगोने भाप और बिजलीवाले कारखानेको दिमागसे निकाला और उन्हें कायम करके हजारो मजूरोका खून चूसना शुरू किया। वह लखपतीसे करोडपती और करोडपतीसे अरबपती हो गये। हिन्दुस्तानी सेठ जब उन्ही कारखानोंको हिन्दुस्तानमे खोलकर करोडपती बन गये तब उनको स्वदेसी-बिदेसीका कुछ ख्याल नहीं आया। लेकिन जब बिलायती मजूरोंने अपने मालिकोके खिलाफ मरकस बाबाकी जिस सिच्छाका सहारा लिया, उसीको जब हिन्दुस्तानके मजूर अपनाने लगे तो वह बिदेसी बन गयी।

सोहनलाल—हिन्दुस्तानी जोकें यह भी कहती है कि हिन्दुस्तान धरमात्माओ का देस है, यहाँ मरकसकी सिच्छा नहीं चलेगी।

भैया—यह धरमात्माओका देस है, इसमे क्या सक है। यहाँ १६०० बरस तक डेढ अरब औरतें सती के नामपर आगमे जलाई जाती रहीं। यहाँ सरग जाने के लिए लोग हिमालयमे गलते और अछयबटके बरगदसे तिवेनीमे कूदकर धरम कमाते थे। यहाँ १० करोड आदमियो को अछूत और जानवर बनाना धरमका सबूत है। यहाँ गायका पेसाब पाखाना खाना धरम है। यहाँ औरतोको कोई अधिकार न देना जरूरी समझते हैं, पत्थर, बन्दर, सुअर, कुत्ता, गदहा, उल्लू सबके लिए यहाँ आदमीका सर झुकनेके लिए तैयार है। यहाँ एक ओर बरहमचारीपनका ढोंग है, दूसरी ओर अप्सराओं के साथ क्रीडा करनेमें भी पुन्य माना जाता है। यहाँ एक

और सराबको हराम कह करके भगवतीका जूठ मिलने पर पवित्तर समझा जाता है। यहाँ गाड़ीके गाड़ी पोथे पढ़के भी आदमी गदहा बनता है, भूगोल पढ़के भी हिमालयके पास सरग ढूंढ़ता है। सायंस पढ़के भी राहुके कारण चंदर गरहन, सूरज गरहन मानता है, और गगामे नहाकर उद्धार करता है, मुंहसे "एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ती" बोलते हैं, आदमीसे छू जानेसे, या छुआ रोटी-पानी खा लेने से पतीत हो जाना मानते हैं। सोहन भाई यह देस जरूर धरमात्माओका है, लेकिन १० करोड अछूतो को धरमात्मा मानते हैं कि नही।

दुखराम—मानते तो उन्हे भी न धरम करनेके लिये मंदिरमे जाने देते?

भैया—१० करोड औरतोको धरमात्मा मानते हैं कि नही?

दुखराम—मानते तो उन्हें भी जनेव देते।

भैया—कायथोको धरमात्मा मानते हैं कि नही?

दुखराम—उन्हे सराबी, कबाबी, सूद्दर कहकर हटा देते है।

भैया—राजपूतोका धरमात्मा मानते हैं कि नही?

दुखराम—मानते तो "रजपुत भगत न मूसल धनुही" कहके उन्हे भगत बननेर अंजोग न कहते?

भैया—बगाली बरहमनोको धरमात्मा मानते हैं या नही?

दुखराम—कण्ठी पहनकर जो मछली-मास खाय, वह क्या धरमात्मा होगा भैया!

भैया—पंजाबी बरहमनको धरमात्मा मानते हैं कि नही?

दुखराम—मैं नहीं कह सकता भैया!

भैया—मैं कहता हूँ दुक्खू भाई, वह भी धरमात्मा नही, क्योकि वह चौका-चूल्हा नही मानते और कहा के हाथकी रोटी-दाल खाते है। गौड, कनौजिया, जुझौतिया सनाढ्य बरहमन भी धरमात्मा नही हैं क्योकि वह हल चलाते हैं। दक्खिनवाले बरहमन भी धरमात्मा नही हैं, काहेसे कि वे मामा, बुआ, बहिन तककी लडकीसे ब्याह करते हैं।

दुखराम—तो भैया, हिन्दुस्तानमे धरमात्मा है कौन? यह तो प्याजके छिलके की तरह सब अधरमी ही बन जाते है।

भैया—अच्छा जो मोट मोटी धरमात्मा मान लो तो मानना पडेगा कि यहाँ-के हिन्दुस्तान मे हिन्दू भी धरमात्मा हैं, मुसलमान भी धरमात्मा हैं, ईसाई भी धरमात्मा है, बौद्ध भी धरमात्मा है। फिर तो रूसमे ईसाई धरमात्मा हैं, मुसलमान धरमात्मा है यहूदी धरमात्मा हैं। वहाँ भी उनके बड़े-बडे मठ, गिरजा और मसजिद बनी है। वहाँ मुसलमा। को तो, बल्कि कई बडे-बडे पीर समरकन्द बुखारामे पैदा हुए।

दुखराम—तब उनका यह कहना निलज्जताई ही है न कि मरकस बाबाकी सिच्छा रूसमे इसलिए चली कि वहाँके लोग धरमात्मा नही थे।

१५. ग्यान और भाखा

सोहनलाल—दुक्खू मामा ! अभी तक हमने भैया से बहुत सँभल-सँभल के सवाल पूछा है, अब एकाध अपने मनका भी सवाल पूछ लेने दो।

दुखराम—पूछो भैने ! हम भी सुनेंगे, लेकिन दो-चार आना हम भी समझें, ऐसे पूछना।

सोहनलाल—नहीं समझ पाओगे दुक्खू मामा, तो दो ही चार आना भर, नहीं तो सभी समझोगे। अच्छा तो भैया ! जोंकें जो कहती है, कि जितना ग्यान-विग्यान दुनियामें है, यह सब हमने ही पैदा किया है, हम न रहेंगे तो दिया बुझ जायगा।

भैया—हम कब कहते हैं कि जोंकोंने कभी अच्छा काम किया ही नहीं। लेकिन जो दिया बुझ जानेकी बात कहते हैं, यह गलत है। हम दिया बुझने नहीं देंगे। हमारे कमेरोंके राजमें ग्यान-बिग्यान बहुत चमकेगा। वहाँ ग्यानके बिना कुछ भी हो नहीं सकता। जोंकोंके राजमें आज अपढ़-अबूझ हलवाहेसे भी काम चल सकता है, लेकिन हमारे लिए तो मोटर-हल चलानेवाले हलवाहे चाहिये। राज सँभालते ही पहला काम हमें यह करना पड़ेगा कि देस भरमें कोई बेपढ़ नहीं रहे।

दुखराम—लेकिन भैया ! कितने लोगोंमें तो जेहन ही नहीं होती, यह कैसे पढ़ेंगे ?

भैया—जोंकोंकी जैसी पढ़ाई होगी, तब तो सबको पढ़ नहीं बना सकते। जोंकें बिद्या पढ़ानेके लिए भाखा पढ़ाती हैं। अपनी भाखा पढ़ावें तो उतनी मेहनत नहीं, लेकिन वह पढ़ाती हैं अगरेजी, फारसी, अरबी, सस्कीरत। जो हम देस भरको अगरेजी पढ़ा देनेकी परतिग्या करेंगे तो बस सात जनमका काम है दुक्खू भाई। हम तो बल्कि भाखा पढ़ायेंगे ही नहीं। क्या कोई आदमी गूँगा है, कि भाखा पढ़ायें। लोग कथा-कहानी कहते हैं, हँसी-मजाक करते हैं, देस-बिदेसकी बात बतलाते हैं, सब अपनी ही भाखामें कहते हैं न ? बस हम पहले तो यही कहेंगे कि दो-तीन दिनमें अच्छर सिखला देंगे। अड़तालिस अछर तो कुल हुई हैं। दो-तीन नहीं तो पाँच-छः दिन लग जायेंगे, फिर आदमी जो भाखा बोलता है, उसीमें छपी किताब हाथमें थमा देंगे।

दुखराम—ऐसा हो भैया ! तब पढ़ना काहेका मुस्किल हो।

भैया—लोरा-माल्ह, सारंगा-सदाब्रिच्छ, लोरिकी, सोरठी, नैका, कुअंर बिजयमल, बेहुलाके कितने सुन्दर-सुन्दर खिस्से और गाने हैं। इन्हींको छापके दे दिया जाय, तब कहो दुक्खू भाई !

दुखराम—तो बूढ़े सुग्गे भी राम-राम करने लगेंगे। क्या किसीको पढ़नेमें परिस्रम मालूम होगा।

भैया—बिद्दा अलग चीज है दुक्खू भाई ! भाखा अलग चीज है। लेकिन जोंकें हमको सिखलाती हैं कि भाखा पढ़ लेना ही ग्यान है। यह ठीक है, कि ग्यान

सिखाते बखत उसे किसी भाखामे बोला जाता है लेकिन अँगरेजोमे काहे बोला जाय, अरबी-मतकीरतमें काहे बोला जाय, उसे अपनी बोलीमे काहे न बोला जाय।

सोहनलाल—लेकिन बोली तो पाँच कोसपर बदल जाती है, ऐसा करनेसे तो हजारों भाखा बन जायेंगी, कौन-कौनमे किताब छापने फिरेंगे?

भैया—पाँच कोस नही जो ५ अंगुलपर ही भाखा बदल जाय, तो भी हमको उसीमें किताब छापनी पडेगी। तभी हम दस बरिसके भीतर अपने यहाँ किसीको बेपढ़ नही रहने देंगे।

सोहनलाल—लेकिन हिन्दी तो अपनी भाखा है।

भैया—जिसकी अपनी भाखा हो, उसे हिन्दी हीमे पढ़ाना चाहिए, तुम्हारे बनारसम सब लोग घरमे हिन्दी ही बोलते हैं?

सोहनलाल—किताब वाली भाखा तो नही बोलते भैया? बोलते तो हैं वही बोली जो बनारस जिलाके गाँवमे बोली जाती है।

भैया—जो क ख अच्छी तरह सिखा दिया जाय, तो अपनी बोली मे आदमी कितने दिनोमे सुद्ध-सुद्ध लिखने लगेगा?

सोहनलाल—अपनी बोलीको तो भैया! असुद्ध कोई बोल ही नहीं सकता। अच्छरमे चाहे भले ही एकाध गलती हो जाय, लेकिन ब्याकरनकी गलती कभी नही होगी।

भैया—और हिन्दी कितना दिन पढ़नेपर ब्याकरनकी गलती नही करेगा।

सोहनलाल—कोई-कोई आदमी तो भैया जिन्दगी भर पढ़नेपर भी न सुद्ध बोल सकते हैं, न लिख सकते हैं।

भैया—लेकिन अपनी बोलीको तो आदमी चाहे भी तो असुद्ध नही बोल सकता, यह तो मानते ही हो। अच्छा जिनगी भर हिन्दी न बोलनेवालोकी बात छोडो। मामूली तौरसे सुद्ध हिन्दी लिखने-बोलनेमे कितना समय लगेगा। हमारे गाँवके एक लड़केको ले लो, जिसकी भाखा हिन्दी नही बल्कि भोजपुरी या बनारसी है।

सन्तोखी—मैं कहूँ भैया। हमारे यहाँ लडके आठ बरस पढ़के हिन्दी मिडिल पास करते हैं, लेकिन तो भी न सुद्ध बोल सकते है, न लिख सकते हैं।

भैया—सोहन भाई? तुम इन्ट्रेन्स पासवालोकी बात कहो।

सोहनलाल—जब पूछते ही हो, तो मैं बतलाता हूँ कि कितने तो बी० ए० पास करके भी सुद्ध हिन्दी लिख-बोल नही सकते।

भैया—न मैं आठ साल पढ़े मिडिलवालेको लेता हूँ, न बी०ए० की चौदह सालकी पढाई। मैं इतना समझता हूँ, कि आदमीकी जेहन बहुत खराब न हो और भाखा ही भाखा पढ़ता रहे, तो हिन्दीमे पाँच बरस तो जरूर ही लगेंगे। लेकिन हिसाब और दूसरी चीज साथ ही साथ पढ़नी हो, तब काम नही बनेगा, हमारे मरदरोंमे जो हिसाब, जुगराफिया सब कुछ अपनी ही भाखामे पढ़ना हो, तो पाँच बरस क्या भाखा सीखनेम एक दिन भी नही देना होगा। ग्यान है हिसाब, जुगराफिया, इतिहास, खेतीकी बिद्दा, इंजनकी बिद्दा, सड़क पुल-मकान बनानेकी बिद्दा और पचीसो तरहकी बिद्दा।

पढ़ानेके लिए जब हम यह सख्त रख देते है, कि जब तक तुम पराई भाखा न पढ़ोगे, तब तक ज्ञानमें हाथ नहीं लगा सकते, तब वह बहुत मुश्किल हो जाती है।

सन्तोखी—हम लोगोंकी भाखा तो भैया! लोग गँवारू कहते हैं।

भैया—"आइल-गइल", "आयन-गयन", "आयो गयो", "एल-गेल" बोलनेसे तो गँवारू भाखा हो गई, और "आये-गये" कहनेमें वह बहुत अच्छी भाखा होगी और 'कम्-वेन्ट" कहनेसे वह बहुत अच्छी भाखा हो गई काहेसे वह साहेब लोगोंकी भाखा है। साहेब लोगोंका डंडा सिरपर था, उनका राज था, इसलिए अँगरेजी बोली बहुत अच्छी भाखा थी, वह देवताओंकी भाखासे भी बढ़कर थी जब गँवार किसान मजूर अपना पंचायती राज कायम कर लें तो क्या तब भी उनकी भाखा गँवारू रहेगी? गँवारू कह देने से काम नहीं चलेगा। जिस वखत इसी गँवारू भाखामें विद्दा पढ़ाई जायेगी उसीमें हजारों किताबें छपेंगी, उपन्यास, कविता, कहानी सब कुछ गँवारू भाखामें मिलने लगेगा। रोजाना हफ्तावार, माहवारी, अखबार निकलने लगेंगे, तब इस भाखाको कोई गँवारू नहीं कहेगा।

दुखराम—क्या ऐसा होगा भैया?

भैया—जो तुम लोग हमेसा गँवार बने रहना चाहोगे, तो नहीं होगा, जो तुम हमेस्या गुलाम बने रहोगे, तो भी नहीं होगा, जो हिन्दुस्तान के आधे आदमियोंको बेपढ़ा बनाये रखना है, तो नहीं होगा, नहीं तो इसमें अनहोनी कौन-सी बात है? वल्कि अपनी बोली पकड़नेसे तो छः बरसका रस्ता एक दिनमें पूरा हो जाता है।

सोहनलाल—लेकिन अपनी-अपनी बोली पढ़ाई जाने लगी, तो दरभंगा, बनारस मेरठ और उज्जैनके आदमी एक जगह होनेपर कौन-सी भाखा बोलेंगे?

भैया—आज भी गौहाटी, ढाका, कटक, पूना, सूरत, शिमलाके आदमी एकट्ठा होनेपर क्या बोलते हैं?

सोहनलाल—हिन्दी बोलते हैं, टूटी-फूटी हिन्दी से काम चला लेते हैं।

भैया—लेकिन इकट्ठा होने का ख्याल करके उनसे यह नहीं न कहा जाता कि तुम असामी, बँगला, उड़ीया, मराठी, गुजराती, छोड़के सिरफ हिन्दी पढ़ो, नहीं तो कभी जो इकट्ठे होओगे तो बात करनेमें मुसकिल पड़ेगा। जैसे उन लोगोंको अपनी भाखामें सब कुछ पढ़ाया जाता है, उसी तरह दरभंगावालोंको मैथिली, भागलपुरवालोंको भागलपुरिया (अंगिका), गयावालोंका मगही, छपरावालोंका छपरही (भोजपुरी), लखनऊवालोंको अवधी, बरेलीवालोंको बरेलवी (पंचाली), गढ़वालवालोंको गढ़वाली, मेरठवालोंको मेरठी (खड़ी-बोली या कौरवी), रोहतकवालोंको हरियानवी (यौधेयी), जोधपुरवालोंका मारवाड़ी, मथुरावालोंका ब्रजभाखा, झाँसीवालोंका बुन्देलखंडी, उज्जैनवालोंको मालवी, उदयपुरवालोंको मेवाड़ी, मालवाड़वालोंको बागड़ी, खँडुआवालोंको नीमाड़ी, छत्तीसगढ़वालोंको छत्तीसगढ़ी—सबको अपनी-अपनी भाखामें पढ़ाया जाय।

सोहनलाल—पढ़ानेमें तो सुभीता होगा भैया! हर आदमीका पाँच पाँच साल बच जायगा और डरके मारे जो बीचमें पढ़ाई छोड़ बैठते हैं, वह भी बात नहीं होगी, लेकिन हिन्दी भाखावालोंका एका टूट जायगा।

भैया—एका टूटनेकी बात तो इस बखत नहीं कह सकते सोहन भाई ! इस बखत तो एका सिर्फ दिमागमे है । मध्य देस अलग है,उत्तर प्रदेश और बिहार भी अलग है हरियाना भी पजाबमे है ।

सोहनलाल—लेकिन हम तो चाहते हैं कि सबको मिलाकर हिन्दका एक बडा सूबा बना दिया जाय ।

भैया—सूबा नही पचायती राज, गणराज और हमारा पचायती गणराज रहे, जो एक नही बहुतस पचायती राजोका सघ हो । जो लोग चाहेंगे तो दरभगासे बीकानेर, और गगोत्तरीसे खंडुवा तकका एक बडा प्रजातन्त्र सघ कायम कर ले जिसके भीतर पचीसो प्रजातन्त्र रहे ।

सोहनलाल—तो भैया ! मल्ल प्रजातन्त्रकी वाली मल्लिका रहगी और मालव प्रजातन्त्रकी मालवी, यौधेय (अबाला कमिश्नरी) प्रजातन्त्रकी हरियानवी, फिर जब वह हिन्द प्रजातन्त्र सघकी वडी पचायत (पार्लमिंट) मे बैठेंगे तो किस भाखामे बोलेंगे ?

भैया—हिन्दीमे बोलेंगे और किसमे बोलेंगे ? इन्हीकी बात क्यो पूछ रहे हो, मदरास, कालीकट, बेजवाडा, पूना, सूरत, कटक, कलकत्ता, और गोहाटीके मेम्बर भी जब सारे हिन्दुस्तानके प्रजातन्त्र सघकी बडी पचायतमे इकट्ठा होगे, तो क्या वह अँगरेजीमे लेक्चर देंगे ? अँगरेज जोकोके जुवाके उतार फेंकनेके साथ ही अँगरेजीमे भाखाका राज हिन्दुस्तानमे खतम समझो । तब हिन्दुस्तानमे एक दूसरे के साथ बोलने-चालने और सारे देसकी सरकारके काम-काजके लिए एक भाखा हिन्दी ही होगी ।

सोहनलाल—तो भैया । हिन्दी भाखाको तुम उजाडना नही चाहते हो न ।

भैया—हम उजाडेंगे कि उसे और मजबूती से बसावेगे । सारे हिंद प्रजातन्त्र-सघकी वह सघ भाखा होगी । मदरसोमे जैसे अगरेजीके साथ दूसरी भाखा पढाई जाती है, वैसे ही बारह बरसकी उमरसे ३-४ साल तक लडकोको हर रोज एक घटा हिन्दी पढाने का कायदा बना दें । उस बखत हिन्दीका जोर और बढेगा कि घटेगा ?

सोहनलाल—आज तो हिन्दी ही हिन्दी सब कुछ है, फिर तो ब्रिज, मालवी, मैथली, न अपने घरकी मालकिन बन जायेगी ? फिर बेचारी हिन्दीको जब कोई बुलायेगा, तभी न चौखटके भीतर आयेगी ।

भैया—आजकल यह कहना तो गलत है कि हिन्दी सब कुछ है, काहेसे कि सब कुछ तो अब अँगरेजी है । दूसरे हिन्दीके चौखटके भीतर बैठानेकी बात भी ठीक नही है । मेरठ कमिश्नरीके सवा तीन जिले (मेरठ,मुज्जफरनगर सहारनपुर, बुलदसहर $\frac{1}{4}$) की भी तो जनम भाखा वही है । उसके बाद सारे हिन्दुस्तानमे घर घरमे उसकी आवभगत रहेगी ।

सोहनलाल—तो लोग अपनी-अपनी भाखाका प्रजातन्त्र बना लेंगे, फिर तो हिन्दुस्तान सौ टुकडोमे बँट जायेगा ।

भैया—सोवियतकी आबादी हम लोगोसे आधी है, २० करोड ही है, लेकिन वहाँ तो १८० भाखा मानी जाती है और सबका अपना छोटा बडा पचायती राज है । तुम चाहते न कि पाँचो उँगलियोंको खुला नही रखा जाय बल्कि मिलाकर सी दिया

जाय, लेकिन इससे हाथ मजबूत नहीं होगा सोहन भाई ! सोवियत १८२ प्रजातन्त्र-वाला होनेपर भी एक प्रजातन्त्र है। हिन्दुस्तान भी १०० प्रजातन्त्रोंवाला एक बड़ा प्रजातन्त्र हो तो कौन-सी बुरी बात है।

सोहनलाल—अच्छा तो यही होता कि सारे हिन्दुस्तानका एक ही प्रजातन्त्र होता।

भैया—अच्छा तो होता, कि हिन्दुस्तानके लोग एक ही बोली बोलते होते लेकिन वह तो अब हमारे हाथमे नही है। क्या सारे हिन्दुस्तानको तुम एक सूबा बनाना चाहते हो ?

सोहनलाल—नही सूबा तो हम अलग अलग चाहते हैं। बगाल, उडीसा, सबको मिटाकर एक सूबा तो बनाया नही जा सकता।

भैया—अनेक सूबोको तो तुम मानते ही हो, उसका मतलब ही है कि अनेक प्रजातन्त्र हिन्दुस्तानमे रहे और हिन्दुस्तान प्रजातन्त्रका सघ रहे। अब झगडा यही है न कि १४ प्रजातन्त्र रह या सौ ? मैं कहता हूँ कि उतने ही प्रजातन्त्र हो जितनी भाखा लोग बोलते है और अपने-अपने प्रजातन्त्र में पढाई लिखाई, कचहरी पचायतका सब कारबार अपनी भाखामे हो लेकिन सौ प्रजातन्त्र होनेका मतलब यह तो नही है कि उनका एक दूसरेसे कोई वास्ता नही और कछुएकी तरह मूँडी समेटकर अपनी खोपडी मे घुस जाएँ। हमारे महाप्रजातन्त्रके ये सभी प्रजातन्त्र हाथ-पैर नाक कानकी तरह अग हैं। सब एक दूसरेकी मदद करें। जब रेलकी लाइनें आजसे भी ज्यादा बढ जायेंगी, पक्की सडके गाँव गाँवमे पहुँच जायेंगी। हर प्रजातन्त्रमे हवाई अड्डे होगे। लोगोकी जेबमे पैसा रहेगा। सालमे महीने डेढ महीनकी सबको छुट्टी मिलेगी। तो बताओ लोग कुएँके मेढक बनकर बैठे रहेंगे या अपने महादेसमे घूमने फिरने जायेंगे ?

दुखराम—घूमने फिरने जायेंगे भैया ! देस परदेस देखनेका किसका मन नही करता, नातेदारो रिस्तेदारोसे मिलनेकी किसकी तबियत नहीं होती।

भैया—जनम भाखाको कबूल करनेसे हिन्दीको नुकसान होगा यह ख्याल गलत है सोहन भाई ! उस बखत बनारसवाले कानपुरवालोसे बहुत नगीच रहेंगे, टेलीफून भी नगीच कर देगा, हवाई जहाज भी और जेबका पैसा भी। हिन्दी सीखना लोग बहुत पसन्द करेंगे, क्योकि सारे देसकी साझेकी भाखा यही है, फिर हिन्दीमे पोथियाँ सबसे अधिक निकलेंगी। आजकल देखते हैं न हिन्दी के सिनेमा फिल्म जितने निकलते हैं, उतने बँगला, मराठी, तामिल, तेलगू, सारी भाखाओंके मिलके भी नही निकलते। हिन्दी भाखाकी किताबोकी भी वही हालत होगी, उसके पढनेवाले देस भरमे मिलेंगे मुझे उमेद है, कि जैसे चौपटाध्याय फिल्म हिन्दीमे निकल रहे हैं, वह किताबें वैसी नही होगी।

सोहनलाल—चौपटाध्याय फिल्म क्यो कह रहे हो भैया ? जो चौपटाध्याय होते तो इतने लोग देखने क्यो जाते और फिल्मवालोको लाखो रुपयेका नफा कैसे मिलता ?

भैया—देखनेवाले तो इसलिए जाते हैं कि दूसरा अच्छा फिल्म है कहाँ ? दूसरे नाच गाना और सुन्दर मुँहके देखनेकी आदत लोगोकी पहिले हीसे है बस

वह समझते हैं, कि चलो दो आनेमे तवायफका नाच ही देख आएँ, लेकिन सिरिफ सुन्दर मुंह और सुरीले कठ तकमे ही फिल्मको खतम कर देना अच्छी बात नही है, सोहन भाई ! उसमे बातचीत, हाव भाव और तसबीरोसे दुनिया का असली रूप दिखलाना होता है, साथ ही साथ लोगोको रस्ता भी दिखलाना होता है। लेकिन रस्ता दिखलानेकी बात छोड दो काहेसे कि जोकोंके राजमे वह अनहोनी बात है। लेकिन हिन्दी फिल्मोमे सब चीजोमे बेपरवाही देखी जाती है। फिल्म बनानेवाल तो जानते हैं कि उनके पास रुपया चला ही आयेगा, फिर क्यो परवाह करें ?

सोहनलाल—हिन्दी फिल्मो मे आपको क्या दोस मालूम होता है भैया ?

भैया—पहल गुन बताना हूँ तब दोस बताऊगा। गुन तो यह है कि हमारे फिल्मके खिलाडी अभिनेता और खिलाडिनें (अभिनेत्रियां) अपना करतब दिखलानेमें दुनियाके किसी भी खेलाडी खेलाडिनीसे कम नही है। और अच्छे फिल्म के लिए यह बहुत अच्छी चीज है। वह अपनी बातचीत, हाव-भाव, गीत-नाच सबम अच्छ हैं—मैं सभी खेल खेलाडिनोके बारेमे नही कहता, लेकिन अच्छे खेलाडी-खेलाडिनोम यह सब गुन और इन्ही गुनोका परताप है, कि मदरास, कालीकट और बेजवाडाम भी लोग अपनी भाखाके फिल्माको छोडकर हिन्दी फिल्मोको देखने आते है चाह बचारे फिल्मकी भाखा को नही समझ पायें। मै समझता हूँ कि ये हमारे खल-खेलाडिनोके गुनका ही परताप है। पैसा बनाने वाले फिलम मालिकोकी चले तो शायद उसम भी कुछ खराबी कर दें।

सोहनलाल—और दोस क्या है भैया !

भैया—भाखा तीन कौडीकी होती है न उसमे लचक, न कहावत और न गहराई होती है। यह क्यो होता है ? बहुतसे फिल्म मालिक भाखा जानते ही नही, लेकिन तो भी अपनेको महाविद्वान समझते हैं। एक तो उनक भाखा लिखनेवाले भी बहुतसे उन्हीकी तरह है और जो कोई अच्छा भी लिखता हो तो अच्छेको बुरा और बुरेको अच्छा कहनेका अखतियार फिल्म तैयार करने वाले अपने हाथम रखते हैं। समझ लो पूरी दमद सोधन हो जाती है।

सोहनलाल—दमद-सोधन क्या है भैया ?

भैया—किसी पडितने एक मुरुखस अपनी लडकी व्याह दी। दामाद एक दिन ससुरार आया। छापाखानासे पहिलेकी बात है, उस वक्त किताबाको उतारनेवाले मामूली पढे लिखे लेखक हुआ करते थे। वह मजूरी लेकर किताब उतार दिया करते थे। पडित लोग किताब लेके फिर पढते और जो असुद्ध होता, उस पर पीला हडताल फेरते और जिसको ज्यादा ध्यानमे रखना होता, उसे गेरूसे लाल कर देते। पडितके दामादने पोथी, हडताल और गेरूको देखा। उन्होने पोथीको हाथमे ले लिया। पडिता-इनको अपने दामाद पर बहुत गरब था। उन्होंने समझा कि दामाद भी बडा पंडित है और उससे कहा—"पडित गेरू और हडतालसे किताबको सोध रहे हैं। तुम भी सोधते होगे बाबू !' दामाद कब पीछे रहनेवाले थे। उन्होंने कहा—"हाँ अइआ ! मैं अच्छी तरह जानता हूँ।" फिर जहाँ मन आया हडताल लगाया, जहाँ मन आया गेरू पोथीकी दमद-सोधन हो गई।

सोहनलाल—तो इसमे फिल्म पैदा करनेवालोंका ज्यादा दोस है या भाखा लिखनेवालोंका।

भैया—फिल्म पैदा करनेवालोका बहुत बडा दोष है, उनमें खुद लियाकत नहीं है और न लायक आदमियोको चुन सकते हैं। भाखा लिखनेवालोंमे जो थोडेसे अच्छे भी हैं, उनमे भी एक बडा दोस है। वह हिन्दी या उर्दूकी किताबी भाखा लिखते हैं। किताबसे पढके सीखनेवालेकी भाखामे जीवट नही होता और सहरोमे जो थोडे-बहुत बाबू लोग अपने घरोमे हिन्दी भाखा बोलते हैं, वह भी किताबी भाखा जैसी ही होती है।

सोहनलाल—तो जीवटवाली भाखा कौन बोलते हैं भैया?

भैया—मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुरके जिलोंके गँवार।

सोहनलाल—तब तो फिल्मकी भाखा लिखनेवालोको भाखा सीखनेके लिए इन गँवारोके पास जाना पडेगा?

भैया—उनके चरनमे जाकर बैठना पडेगा। हिन्दी भाखाको किताबवालोने नहीं पैदा किया, बल्कि इन्ही गँवारोने पैदा किया। हिन्दी पढानेवालोने सैकडो बरस पहले उन गँवारोसे भाखा तो ले ली लेकिन भाखामें जीवट लानेके मुहाविरे, कहावतें, सबदोंका तोडना-मरोडना और उन्हे मनमाने तौरसे रखना इत्तादि बातें नही सीखी; इसलिए हिन्दी भाखामे वह चमत्कार नही आ सका। किताब पढने मे तो किसी तरह आदमी बरदास भी कर लेगा, लेकिन नाटककी बातचीत मे इससे काम नही चल सकता।

सोहनलाल—तो भैया! तुमने कोई फिल्म ऐसा नही पाया, जिसमे कुछ जीवट वाली भाखा दिखाई दे।

भैया—मैंने सिर्फ एक फिल्म ऐसी देखा है जिसकी भाखा मुझे पसद आई, वह थी—"जमीन।" मैं समझता हूं जब तक फिल्म पैदा करनेवाले अपनेको सब कुछ जाननेवाला मानना नही छोडेंगे और जब तक भाखा लिखनेवाले मेरठके उन गँवारोके चरनोंमे नहीं बैठेंगे, तब तक यह दोस नही जायेगा।

सोहनलाल—और दूसरे दोस क्या हैं भैया?

भैया—दूसरे दोस फिल्म पैदा करनेवालोका चाहे उन्हे उनका अधापन कह लो, चाहे "कम दाम ज्यादा नफा" का ख्याल समझ लो, चाहे फिल्म मालिकोंका अपने घरके पास ही फिल्म बनानेका हठ समझ लो। हिन्दीके फिल्म बम्बई या कलकत्तामें ही तैयार किये जाते है। वहीके आसपासके गाँवो, पहाडो, नदियोंका फोटो खींचा जाता है। वहाँ न हिन्दी बोलने वाले गाँव है, न हिन्दीवालो के रीति-रिवाज, कपडे-लत्ते। इसका फल यह होता है कि सब चीजें बनावटी दीख पडती हैं। बहुत सी चीजोंको तो यह आने नही देते। "जमीन" की तसवीरोमे भी यह दोष मौजूद है। यह दोस बँगला, मरहठी या तामिल फिल्मोमे नहीं पाया जाता, काहेसे कि उनमे उन्हीं गाँवों, नदियों, पहाडों और लोगोंकी तसवीरें ली जाती हैं, जो उस भाखाको बोलते हैं। हिन्दी फिल्मोका यह दोस तब तक दूर नही होगा, जब तक देहरादून, कालसी जैसी जगहोंमे फिल्मवाले अपने डडा-कडा उठाके नही आ जाते।

सोहनलाल—और कौन दोस है भैया ?

भैया—हिन्दी फिल्मोकी सारी तसवीरें दो एक मीलके छोटेसे घरोमे घूमती रहती है, वह विसाल नही होती। नदियो, पहाडो, खेतो, गाँवोका जो विसाल रूप हमे मिलना चाहिये, उसे नही पाते। क्या जाने यह पैसा बचानेके ख्यालसे होता होगा।

सोहनलाल—और कोई दोस है भैया ?

भैया—हस्तिनापुरके पास गगाका विसाल कछार है, वहाँ सैंकडो गायें, भैसें चरती हैं, चरवाहे मस्त होकर गाना गाते है, गगामे मल्लाह नाव खेता है, और अपनी तानसे सारी मेहनत भूल जाता है। धोबी, कुम्हार सबके अपने-अपने गीत, अपने-अपने बाजे, चित्र-विचित्र नाच हैं। सहरोमे भी औरतोके ब्याह और दूसरे वक्त के अपने खास-खास नाच और नाटक है। इस तरहकी सैंकडो चीजें हैं, जिनका बम्बई और कलकत्ताके फिल्मोमे कहीं पता नही है।

सोहनलाल—और कोई दोस है भैया ?

भैया—मैं अब एक ही दोस और कहूँगा। हिन्दी भाखा हिमालय की गोदमे बोली जाती है। दुनियाके फिलमवाले हिमालयके सुन्दर पहाडो, नदियो, झरनो, देवदारके वनो और बरफीली चोटियोंको पाके निहाल हो जाते हैं; लेकिन हिन्दी फिलमवालोके लिए यह कोई चीज नही। जापानके राजाकी राजधानी तोकियो है, लेकिन फिल्मोको राजधानी क्योतो है, काहेसे कि क्योतोको थोडा-सा हिमालय का रूप मिला है। लेकिन हमारे आजके फिलमवालोको इसका कभी ख्याल आयेगा, इसमे सक है।

सोहनलाल—तो भैया ! जो फिल्म बनानेवाले मेरठ कमिसनरी के हिमालय वाले टुकडेमे आ जायें, तो उनके बहुतसे दोस हट जायेंगे ?

भैया—यह मैं मानता हूँ, लेकिन यह भी समझता हूँ, कि सेठ अपना घर छोड तपोवनमे थोडे आना चाहेगे, वह पचास तरहका बहाना कर सकते हैं। और सबसे बडी बात यह है कि नफा तो इन्हे खूब हो ही रहा है और थोडे ही खर्च मे। लेकिन हम फिलम की बात करते-करते बहुत दूर चले गये सोहन भाई ! मैं कह रहा था हिन्दी भाखा के बारे में।

सोहनलाल—हाँ, तो तुम समझते हो, कि अपनी-अपनी भाखा को पढाई की भाखा मान लेने पर हिन्दी को नुकसान नही होगा ? लेकिन भैया ! दुनिया को हमे और एक दूसरेके नगीच लाना है। मरकसबाबा तो सारी मानुख जाति को एक बिरादरी मे देखना चाहते थे, फिर किसी सयोग से जो हिन्दी के नाते हिन्दुस्तान के आधे लोग एक भाखा मे बंध गये हैं, उनको फिर तोड-फोडके अलग करना, यह तो पैर पकडके पीछे खीचना है।

भैया—पैर पकडकर पीछे खीचना नही है सोहन भाई ! यह हाथ पकडकर आगे बढ़ाना है। जनम-भाखा मे पढाई करने पर दस बरसके भीतर ही हमारे यहाँ कोई अपढ नही रह जायगा। और एक दूसरी जगह जाने, आपसमें मिलनेसे, हिन्दी भाखा सभी लोग थोडी बहुत बोल लेंगे। और समझनेमे तो किसीको मुसकिल नही होगा, काहेसे कि इन सब भाखाओमे बहुत से सबद एक हीसे हैं। कविता, कहानी, उपन्यासका

ढङ्ग भी एक सा रहेगा। हिन्दी पोथियोकी उतनी ही ज्यादा माँग होगी, जितना ही अधिक इन भाखाओके पढने लिखनेवाले बढेंगे। कमी इतनी होगी, कि आज हमारे कितने ही भाई यह समझते हैं कि अवधी, ब्रज, मालवी, बनारसी, मैथिली इत्तादि भाखायें कुछ दिनो मे मर जाएँगी, उनको जरूर निरास होना पडेगा। निरास वैसे भी होना पडेगा, क्योकि जनम भाखाओको किताब की भाखा न भी बनाया जाय, तो भी सौ पचास सालोमे उन भाखाओ के मरते देखने की खुसी हमारे भाइयोको नही मिलेगी। अभी उन्हे करना भी नही चाहिये, क्योकि उन्होने अपने भीतर अपनी जातिकी भाखा समाज, विचार-विकास औरहके इतिहासकी बहुत सी अनमोल सामिग्री रखी है। मैं जानता हूँ जो दुनियासे जोकें उठ जायेंगी, तो मानुख जाति जरूर एक होगी और फिर सबकी एक साझी भाखा भी होगी। हो सकता है, कि एक साझी और एक-एक अपनी जनम-भाखा दो भाखाओका रहना मुसकिल हो जाय। लेकिन वह अभी सैकडो बरसो की बात है। उस बखत तक हरेक भाखाके भीतर जितने रतन छिपे हुए हैं, सब जमा करके अच्छी तरह रख रख लिये गये रहेंगे। इसलिए किसी भाखाके नास होनेसे उतना नुकसान नही होगा।

सोहनलाल—लेकिन भैया! यह बोलियाँ अभी ऐसी नही हैं कि इसमें साइस, विग्यानपर कितायें लिखी जायें। हिन्दीने बडी मुसकिल से यह कर पाया है।

भैया—जो मान लें कि बनारसी बोलीमे साइन्सकी किताब नही लिखी जा सकती, तो उतने ही दिनो तक हिन्दीमे किताबें पढेंगे, जब तक की बोली नाबालिगसे बालिग न हो जायगी। हिन्दी जैसी किसी भाखाकी किताब पढना और उसमें लिखना-बोलना दोनोंमे बहुत फरक है—समझ लेना बहुत सहज है। अपनी बोलीके पढनेका मतलब यह नही है, कि हिन्दीको लोग छुयेंगे नही। दूसरी बात यह कि बनारसी, मालवी किसी भी भाखामे साइस, इञ्जीनियरिङ्गकी किताबोके लिखने मे उतनी ही दिक्कत होगी, जितनी हिन्दी में। आखिर हिन्दीने भी साइन्सके सबदोको ससकीरतसे लिया है, बँगला, गुजराती, मराठी भी ससकीरतसे ही सबदो को लेती हैं, फिर बनारसी, मैथिली, ब्रिज, मालवीने क्या कसूर किया है?

सोहनलाल—हिन्दी-उर्दू के बारे मे तुम्हारी क्या राय है भैया?

भैया—मेरी राय क्या पूछ रहे हो, मैंने तो पहले ही कह दिया है, जिसकी जो जनम-भाखा हो, उसको उसी भाखा मे पढाना चाहिए। बनारसमे बहुतसे बगाली भी रहते हैं उन्ह बगलामें पढना होगा। मराठे भी हैं, उनको मराठीमे पढना होगा। हाँ, कोई दो भाखा बोलनेवाला हो तो चाहे जिस पाठशालामे जाय। इसी तरह बनारस मे जिस लडकेकी जनम भाखा उर्दू है, उसके लिए उर्दू मदरसा कायम करना होगा।

सोहनलाल—तो भैया तुम हिन्दी-उर्दूको मिलाके एक भाखा नहीं करना चाहते।

भैया—मिलाना हमारे बसकी बात नहीं हैं दस-पाँच आदमी बैठकर भाखा नहीं गढा करते। हिन्दी उर्दूके बनानेमें सैकडो बरस न जाने कितनी पीढ़ियोने काम किया है। [redacted] जानता हूँ कि हिन्दी और उर्दू भाखा मूलमे एक ही भाखा हैं। 'का, मे, पर, से, इस, उस, जिस, तिस, ना, ता, आ, गा' दोनों हीमे एकसे हैं, खाली झगडा है उधार लिये सबदोंका। हिन्दीने ससकीरतसे सबदों को उधार लिया है और उर्दूने

अरबी और कुछ-कुछ पारसी से भी; लेकिन दोनोंने इतना अधिक उधार लिया है, कि अकबालकी कविताको समझनेवाला सुमित्रानन्दन पन्त की कविताको बिलकुल नही समझ सकता और सुमित्रानन्दन पन्तकी कविता जाननेवाला अकबालको बिलकुल नही समझ सकता। इसलिए मूलमे दोनो एक हैं, कहनेसे काम नही चलेगा। अकबाल और पन्त दोनोके समझनेके लिए दोनों भाखाको अच्छी तरह पढ़ना होगा।

सोहनलाल—तो हिन्दू-मुसलमानोकी भाखाओंके मिलने का कोई रास्ता है?

भैया—चोटियोपर तो नही मालूम होता, लेकिन जड़मे उसका झगड़ा ही नही है।

सोहनलाल—जड़ क्या है भैया?

भैया—जड़ यही है कि, जिसे जनम-भाखा कहते हैं, अवधी बोलनेवाले गाँवमे चले जाइये, जहाँ चाहे बामन देवता हो, चाहे मोमिन जोलहा, दोनो एक ही बोली बोलते हैं बनारस, छपरा, गुड़गाँव, थानाभवन के पास किसी गाँव मे चले जाइये, किसानो-मजूरो की भाखा एक है, चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान।

दुखराम—वही जोकोसे जिनका बेसी रिसता-नाता नहीं है।

भैया—देखा ना सोहन भाई जड़मे अपनी एक भाखा तैयार है, हिन्दू-मुसलमान दोनो कमेरे उसी भाखाको बोलते हैं और फिर उनका ना ससकीरतके साथ पच्छपात है, न अरबी-फारसीके साथ। यही दुक्खू भाईने जो अभी कहा 'बेसी रिस्ता-नाता" इसमे बेसी और रिस्ता पारसी भाखासे आया है और नाता अरबी भाखा से। रिस्ता-नाता कहनेसे बिल्कुल निपढ, गँवार बुढ़िया भी समझ लेगी, लेकिन "सम्बन्ध" कहनेसे उतना नही समझ पायेगी। हमने भी अपने इतने दिनोके सतसग में पाँच-छ सौ अरबी-फारसी सबदो को लिया है, और हिन्दीमे उसकी जगह अब सिरिफ ससकीरतके सबद ही लिखे जाते हैं। मैं समझता हूँ कि कोई आदमी समरकन्द बुखारा, से सात पीढ़ी पहले आया हो, लेकिन अब उसकी भेख-भाखा सब हिन्दुस्तान की है, तो वह हिन्दुस्तानी है। अपने पुरखा के सहर समरकन्द, बुखारा मे जायगा तो वहाँ भी लोग हिन्दुस्तानी कहेंगे—आजकल समरकन्द, बुखारा, उजबेकिस्तान, सोवियत प्रजातन्त्रके अच्छे सहर है, उसी तरह जिन अरबी, पारसी सबदोको निपढ गँवारोंने अपना लिया है और उनको वह अपने ढगसे तोड-मरोड़के बोलते है, वे सबद अब बिदेशी नही, सुदेशी हैं। जिन सस्कीरत सबदोको हमारे "गँवार" छोड़ चुके हैं, उनको फिरसे लादना ठीक भी नही

सोहनलाल—लेकिन भैया, इन गँवारोने तो हजार-बारह सौ ससकीरतके, सबदो को निकालकर अरबीके सबद लिये है। 'हमेसा', 'दिक्कत', 'मुसकिल' 'मवस्सर,' 'अरज', 'गरज', 'लेकिन', 'बेसी', 'अमहक' (अहमक), 'इफरात', 'जमीन', 'हवा', 'तूफान','सहर', 'नौबत', 'जुलुम', 'परेसानी', मेहरबानगी' वगैरह सबदो को उन्होने लेकर ससकीरतके सबदोको छोड दिया है। जो ससकीरतके सबद रखे हैं, उनके बोलने मे भी लाठीसे पीटके ठीक-ठीक कर डालते है। और आप इसी भाखाको अपनाने को कहते हैं?

भैया—दोनो बातोको एकमे न मिलाओ सोहन भाई! जहाँ तक जनम भाखा की बात है, उसके लिए न रामस्वरूप पडितकी बात मानी जायगी न, कुतुबदीन मोलबी की; उसके लिए तो धनिया भौजी—गाँवकी बेपढ अहिरिन को ही परमान माना

जायगा। दोनो सवदोको उसके सामने रखा जायेगा। जो अरबीवाले सबदोको समझेंगी तो उसे ले लिया जायगा, ससकीरतवालेको समझेंगी तो उसको बोलनेके कठिन सबदोकी धनिया भौजी कपाल-किरिया करे होगी, और उसकी कपाल-किरियाको भी मानना पडेगा। हिन्दी-उर्दू को मिलानेका नाम भी यही जनम भाखाये करेंगी, क्योंकि जनम भाखाओमे हिन्दू-मुसलमानका झगडा नहीं है। जडवालोका रास्ता साफ है, चोटीवालोका झगडा है। उनमे जो अपनी जनम भाखा उरदू मानता है, वह उरदूमे लिखे-पढेगा, जो हिन्दी मानता है, वह हिन्दीमे। मेरठ कमिसनरीके साढे तीन जिलेमे कौन भाखा माननी चाहिए, इसका फैसला वहाँ कोई जाटकी धनिया भाभी के हाथ मे होगा।

सोहनलाल—और हिन्दुस्तानके सबकी भाखा हिन्दी होगी उसमे हिन्दी-उरदूका झगडा कैसे मिटेगा ?

भैया—पहिले तो हिन्दीके अपने साढे तीन जनम जिलोकी भाखाके मुताबिक उसको मानना पडेगा। जिसके कारण बहुतसे ससकीरतके सबद छट जायँगे और बहुतसे अरबी-फारसीके भी ?

१६ सुतन्त भारत

सन्तोखी—दुक्खू भैया! सुना है रजबली भैया आये हैं।

दुखराम—सुना क्या है हम रजबली भैयाके पास ही आ रहे हैं। तीन बरिस पर लौटे हैं। कितना दुनिया जहान देखकर आये हैं तुम भी आओ, चलें, कुछ नई बात सुनें।

सन्तोखी—हाँ दुक्खू भैया! चलो चलें। १० बरिसमे दुनिया बहुत बदल गई १५ अगस्त (१९४७) से तो अब अपना देस गुलामीसे छूट गया।

दोनो दोस्त चले। राजबली महुआके पेडके नीचे खाटपर बैठे थे। दोनों पुराने दोस्तोको देखते ही उठकर दौडे और छाती से लगाकर मिले। फिर तीनो जने खटिया पर बैठे।

भैया—कहो दुक्खू भाई। सन्तोखी भाई! कैसे चल रहा है। बाल-बच्चे सब नीके तो हैं ?

दुखराम—बस किसी तरहसे जिन्दगी बीत रही है। अनाजका दाम बढ़ गया है और कपडे-लत्तेका दाम तो और बढ़ गया है नून-तेलका तो मानो अकाल पड़ गया है।

भैया—अनाजका दाम बढनेसे तो किसानका फायदा है।

दुखराम—उसी किसानको फायदा है, जिसको खाने भरसे ज्यादा अनाज होता है। जिसकी खेतकी फसल जेठ तक भी नहीं पहुँचती, उसके तो जिव पर सकट है।

भैया। हाँ ठीक कहा भैया! और हमारे किसानोमे सौ मे पाँच ही दस ऐसे घर होते हैं, जिनके पास अपने खानेसे अधिक अनाज होता है। मुदा अब देस सुतन्तर है। अब हमे यह दुख दूर करना होगा।

सन्तोखी—हाँ भैया! जब तुम कहते थे कि लडाईके बाद हिन्दुस्तान सुतन्तर हो जायगा, तो मुझको तो बिसवास नही होता था कि अँगरेज हमारे देस को छोडकर चले जायँगे।

दुखराम—तो, सन्तोखी भाई तुम समझ रहे हो कि अँगरेज राजी-खुसीसे भारत छोडके चले गये।

सन्तोखी—कुछ लोग तो ऐसा ही कहते हैं। लेकिन मुझे तो इसपर बिसवास नही पडता। भैयासे पूछते हैं, यही बतावें। मुझे तो सन्देह होता है कि कांत देख-देखकर अँगरेज कलकत्ता-बम्बई या दूसरी जगह जाकर बैठ गये हैं। मौका मिलते ही फिर चढ दौडेंगे।

भैया—राजी-खुसीकी बात तो गलत है और कांत बँठानेकी भी बात नही है। लडाईके बाद ऐसी हालत हुई, कि अँगरेजोका भागना छोड कोई दूसरा रास्ता नही दिखाई पडा।

दुखराम—लेकिन उनके पास पल्टन पुलिस थी। हाकिम हुकुम सब उनके हाथमे थे, फिर काहे बना-बनवा घर छोड कर भाग गये?

भैया—नदीके किनारे सेठ छदामीमलका बहुत पक्का महल था। गंगा काटने लगी और भीतर ही भीतर नेंवके नीचेकी मट्टी बहा ले गई। सेठ छदामीमल रात बाल बच्चे सहित भाग गये।

दुखराम—हाँ भैया। हम एक बेर अजोधाजी गये रहे। उहाँ देखा, मौनी बाबाको रेतमे एक गोल चौडा जैसा दुई पोरसा की चीज खडी है। हमने पूछा—बाबा, यह क्या है? सो हमारे कुटियाके बाबा बालकिसुनदासने कहा—'नहीं जानते? ई पक्का इनारा (कुआँ) रहा। सरजुग महारानी कुछ माटी बहा ले गई। अब ई ढाँचा बेकार खडा है। साँच ही बेकार था भैया! कौन सीढी लगाके पानी भरने जायगा? और थोडा, टेढ़ा भी हो गया था।

भैया—उहाँ ता टेढा मेढा ढाँचा खडा भी रहा, लेकिन अगरेजी राजको उसकी भी उमेद नही। यह लडाई जो न करे। लडाईमे अँगरेज तबाह-तबाह हो गए।

दुखराम—हमसे अधिक तबाह हुए भैया?

भैया—हम लोग तो पहले हीसे इनाराकी पेंदी पर पडे हुए थे। अँगरेज लोग पचमहलाके ऊपर बँठते थे। दुनिया भरका धन माल खीचखीचकर उनका पँचमहल बना था। साढ़े पाँच सालकी लडाईमें पीढियोका बटोरा धन खरच हो गया और ऊपरसे इतना करजाका बोझ हो गया कि सम्हारे के मानका नही।

दुखराम—क्या कहा भैया, करजाका बोझ! अँगरेज तो दुनिया भरको करज देते रहे।

भैया—देते रहे तब देते रहे, अब करजके बोझसे गला दब गया, साँस तर-ऊपर होने लगी। छोटी-बडी जितनी रेलवे लाइन तुम देख रहे हो, सबको बेचकर खा डाला

हिन्दुस्तान पर सौ सालसे झूठ-फुर करजा बनाकर रक्खे थे और जिस पर हर साल करोडो सूद लेते थे, वह भी सूद-मूर सहित बेबाक हो गया।

दुखराम—तो अब हमारा देस करजसे अकटक है भैया ?

भैया—करजसे अकटक ही नही अब तो उलटा हिन्दुस्तानका दसो अरब रुपया अगरेजोपर चढ गया है।

सन्तोखी—कहीं करजवा मार तो नही लेंगे भैया ?

भैया—हाँ, चाल तो चल रहे हैं। कभी लाचारी दिखलाते हैं।

सन्तोखी—टाट तो नही पलट गया भैया ?

भैया—टाट उलटना ही समझो, जब आदमी अपना देना नही चुका सकता, तो उसे दिवालिया छोड और क्या कह सकते हैं ? फिर, खाली हिन्दुस्तानका ही करज नही है, मिसिर, अर्जन्तीन और कहाँ-कहाँसे करज लिये हुए हैं। सबसे बेसी करज तो अमिरिकाका है। करज ही नही, रोजका रोटी-माखन भी अमिरिकाके भरोसे ही चल रहा है।

दुखराम—इतने करजपर भी रोटी-माखन !

भैया—बिलायतमे रोटी-माखनका मतलब है, जो हमारे यहाँ साग-रोटीका। अच्छा, तो यह मालूम हुआ, कि करजके मारे अंगरेज लोग खोखले हो गये हैं और उनका गला पूरी तौरसे अमिरिकाके हाथमे है।

दुखराम—मालूम हो गया। अमिरिका जो कहेगा, वही अगरेजोको मानना पडेगा।

भैया—देखा न, हिन्दुस्तानके बाजारोमे अमिरिकाका माल भरा पडा है।

दुखराम—तब तो अमिरिकाकी मर्जीके खिलाफ अंगरेज नही जा सकते। किरिप (क्रिप्स) के आनेके बखत भी अमिरिकाने बहुत जोर लगाया था।

भैया—करज और अमिरिका ही कारन नही है। अंगरेज यह भी जानते थे, कि अपना राज कायम करनेके लिए हिन्दुस्तानसे फिर लडना होगा। अबके सिर्फ निहत्थी जनता हीसे मुकाबिला नही होगा। हिन्दुस्तानसे २५ लाख पढे-लिखे पल्टनिया अफसर और सिपाही अब अपनी लडाई लडेंगे।

सन्तोखी—हाँ, भैया ! इनमे कौन सका ? उनमेसे बेसी तो पल्टनसे फरक भी हो गये थे ? देसके गुहारमे ऊ कैसे पीछे रहते ?

भैया—जरमनी और जापानके फतिहोकी हारमे सबसे बडा हाथ रूसकी लाल पल्टनका रहा।

दुखराम—हाँ, भैया ! और यह भी देखा कि जितना मजिल दूसरी पल्टन एक महीनेमे मारती, उतना लाल पल्टन एक दिनमे। मुदा सुनते हैं कि हिटलर अभी जिन्दा है।

भैया—जिन्दा भी होता, तो भी मरेसे अच्छा न होता। मुदा वह मर गया है जब लाल पल्टन उसके धुँइघराके पास पहुँची, उसने अपने हाथसे गोली मार ली।

सन्तोखी—भुँइधरामे लुका था ! बड़ा कायर था।

भैया—कायर तो था ही, नहीं तो सामने आकर लड़ता और अपने हाथसे नहीं सत्रुकी गोलीसे मरना चाहिये था।

दुखराम—कहाँ भुँइधरा बनाये था भैया ?

भैया—बर्लिनमे, अपनी राजधानीमे, और कहाँ। माँटीका भुँइधरा नहीं, इतना गहरा और मजबून भुँइधरा बनाये था, कि बड़के बमगोलोंका भी असर नहीं हो सकता था। लेकिन जब लाल पलटन दुआरपर पहुँच गई, तो क्या करता ?

दुखराम—अँगरेज और अमिरिकाकी पलटन वहाँ नहीं पहुँची थी ?

भैया—वह लोग चीटी की चाल से बढ रहे थे। एक चौथाई भी हिटलरकी पलटन उनसे नहीं लड रही थी, मुदा तो भी वह परेशान थे।

सन्तोखी—रूसका तो बहुत नोकसान हुआ होगा भैया ?

भैया—नोकसान ? घर-दुआर, कल-कारखाना, गाँव-नगरका जो नुकसान हुआ, उसका लेखा कौन लगा सकता है ? सबसे अनमोल चीज है आदमीका जीव। हिटलरके गुंडोने सत्तर लाख आदमियोंको मार डाला।

दुखराम—सत्तर लाख सिपाही ?

भैया—सिपाही बीस-पचीस लाखसे बेसी नहीं, बाकी तो गाँव-सहरमे रहनेवाले मरद-मेहर, बूढ़ा-बच्चा जो कोई सामने आया, सबके खून से हाथ रँगा।

सन्तोखी—अतताई !

भैया—अतताई, इसमे कोई सक नहीं। रूसके कमेरोको भारी बलिदान देना पडा।

दुखराम—रूसवाले कमजोर तो नहीं पड गये ?

भैया—कमजोर नहीं पड़े। लेकिन इसकी बात फिर कहेगे। अभी हम लोग क्या बात कर रहे थे ?

दुखराम—यही कि अँगरेज काहे हिन्दुस्तान छोड गये ? हमको तो मालूम हो गया, भैया कि अँगरेज राजी-खुशीसे नहीं भागे।

भैया—हाँ, भागना छोड और रास्ता नहीं था। करजके बोझसे लदे, दाने-दानेके मुहताज अमिरिका का कुरुख, हिन्दुस्तानका हर तरहसे सुतन्तर होने का सकलप, रूसका जनताके राज बनाने पर जोर—सबने मिलकर पासा पलट दिया। मुदा जाते-जाते भी अँगरेज जितना भी अपकार हो सका, करके गए।

सन्तोखी—अपकार तो जरूर कर गये भैया !

भैया—बहुत अपकार ! हिन्दुस्तानको दो टुकडा कर दिया।

दुखराम—लेकिन दो टुकडा तब हुआ, जब कांगरेसने माना। और तुम भी तो, भैया कहते थे, कि जब लोग चाहते हैं, तो बँटवारा कर लेना चाहिए।

भैया—मुदा इसके लिये मजबूर अगरेजो ने किया। अँगरेजोने हिन्दू मुसुलमान-का वोट अलग कर दिया। देसभगत मुसुलमानो के लिए वोट पाना मुसकिल हो गया,

काहेसे कि सरकार के पिट्ठू लोग हिन्दू-मुसुलमनमे झगडा कराके अपने को पक्का मुसुलमान दिखाने लगे। जितने अधिक हिन्दू-मुसुलमान दगे होते रहे, उतनी ही उनकी नेतासाही बढती रही।

दुखराम—मुदा मुसुलमान पउलिक (पब्लिक) का मन भी तो वैसई बन गया ?

भैया—'आग लगा जमालो दूर खडी' की कहावत नही सुनी ? हिन्दू-मुसुलमानका वोट बाँटा या अँगरेजोने इसी खियालसे। जो अन्तमे भी उनके मनमे ईमानदारी होती, तो इकट्ठा करके वोट लेते। लेकिन उन्होने हर तरहसे फूट डालनेवाले मुसुलमानोका पच्छ लिया। उनका मन था कि देसका बंटवारा करके हिन्दुस्तान को निर्बल बना दें।

दुखराम—तो उन्होने जान-बूझके ऐसा किया ?

भैया—जो इसमे कुछ सका हो तो दूसरी बात देखो। जब तक अँगरेज रहे, तब तक उन्होंने राजाओको छूट दे दी थी और वह मनमाना अपनी परजापर जुलुम करते थे। अंगरेज चलने लगे, तो उन्ही राजाओको कर्ता धर्ता बनाकर गये और परजा के हकका कुछ खियाल नही किया।

सन्तोखी—यह बात तो परतच्छ हैदराबाद मे देखी गयी है !

भैया—हाँ, हैदराबादका नवाब बहुत दूरका सपना देख रहा था। कितने दूसरे राजा भी "परम सुतन्न, न सिरपर कोऊ" बनना चाहते थे। कासमीरमे भी राजा दाव देख रहा था मुदा जब प्रान लेकर सिरीनगर से भागना पडा, और कोई रास्ता दिखाई नही पडा तब जेलमे बन्द नेताओको छोडकर मुखिया बनाना और हिन्दुस्तानमे आनेकी बात मानी।

सन्तोखी—भैया, हमको भी एक बात पूछना है। ई करपतरी महतमा कहाँ से ऊपर भये हैं ?

दुखराम—अउर ई डालूमियाँ कबसे गोरच्छाके झडा उठाये हैं ?

सन्तोखी—दू मर्दे ? मियाँ होके गोरच्छा करे तो कोई खराब बात है ?

भैया—आपसमे बहसा-बहसी करनेका काम नही !

दुखराम—बहसा बहसी न सही, लेकिन जब पचखाके जिमदार-सरब-दमन सिंह को करपतरी महाराज का झडा उठाये देखा, तो हमे तुरन्त गोसाईंजी की चारपाई याद आई "जानि न जाय निसाचर माया।" जे सरबदमन परजाका खून चूस-चूस मोटे हुए और साहबनकी खुशामद करते-करते जिनगी बिता दिये, वह भला कबसे गऊभगत और देसभगत हो गये ?

भैया—हाँ, ठीक कह रहे हो। इन लोगो का देसभगतीमे कही पता नही था, जब अगरेज राज करते थे। अब जब कॅंगरेसने राज सम्हाला, देस सुतन्तर हुआ, तब आँख मे धूल झोकनेके लिए गोरच्छाका झडा उठा लिए हैं, और सतियागरह करना चाहते हैं।

दुखराम—सतियागरह नही भैया ! ई हतियागरह है। हम लोगन के बेवूफ गँवार समझिके आँखमे धूल झोकना चाहते हैं। राजा रजुल्लो, सेठ सठुल्ली,

सन-महंत सबका धरमाननापन देख लिया है। हम इनके फेरमें नहीं पड़ेंगे। है न भैया ?

सन्तोखी—मुदा करपतरी महतमाको यह क्या सूझा ? सुनते हैं वह उतरा खंडमें तपसिया करते थे।

दुखराम—तुम भी सन्तोखी रह गये बकलोल ही ! सुना नहीं है 'दुनिया ठगिये मक्करसे रोटी खाइये घी सक्करसे' ?

सन्तोखी—नहीं ऐसा न कहो दुक्खू भाई ! सुनते हैं वह बड़े निरलोभ महतिमा हैं। उनमें बहुत दया माया है।

दुखराम—दया मायाकी बात ना करो सन्तोखी भाई ! कमेरोंके गला रेतने वाले सेठों जिमदारोंका जो पायक बने उसको दया-माया कहाँ ?

भैया—दया मायाका परतोख तो यही समझो जे जब दाना-दानाके बेहाल हो लाखन आदमी बंगालमें मर रहे थे और समूचे भारतमें अन्नके लिए 'त्राहि त्राहि' मची थी तब करपतरी महाराज दिल्लीमें सैकड़ों मन अनाज और कनस्तरका कनस्तर घी स्वाहा कर रहे थे।

दुखराम—हतियारे ? भैया चाहे तुम नाराज हो मुदा हम तो यही कहेंगे।

भैया—अपना मुंह नही खराब करना चाहिये दुक्खू भाई ?

भैया—पाकिस्तानी गोइन्दा मुसुलमानोंको हिन्दुओंके जुलुमका बखान करके भरमाना चाहते हैं। हम लोगोंको अपने यहां मुसुलमानोंके साथ कोई अनियाव नहीं करना चाहिये।

दुखराम—अनियावकी कौन बात है भैया ? अब तो झगड़ा लगानेवाले मुसलमान भी ठंडे पड़ गये हैं। वह समझते हैं कि हमारा जनम-करम हिन्दुस्तानमें है दूसरी जगह कोई ठौर ठिकाना नहीं। उमरपुरके कालूमियाँ बच खोच के लड़का परानीके साथ लाहौर गये थे। वहां गुंडोंने मुंह मलके पैसा-कौड़ी तो ले ही लिया बेकत परानी कहां गई इसका भी पता नहीं रोते कलपते लौट आये हैं। कहते हैं यह माटी अब पुरखोंकी कब्रके पास लगे अच्छा।

भैया—वहाँ कालूमियाँ जैसोंको कौन पूछता है ? वहाँ पुछार है तो खाली बड़ी-बड़ी जाननकी। मुसुलमान जोल ही नहीं हिन्दू सठोंको भी ठेका मिला है।

दुखराम—इहाँ गोरच्छा और वहाँ ठीका बाह कालूमियाँ बाह !

भैया—हम लोगोंको हिन्दुस्तानमें मजहबका झगड़ा न होने देना चाहिये। सा कमेरोंको मिलके रहना चाहिए। जमिन्दारी तलुकदारीका नाश होना चाहिये। नदी से सिंचाईकी नहर निकाली जाय। कारखाना चलाने और [illegible] करनेके लिए बिजुली निकलनी चाहिये। खेतीका काम [illegible] दसगुना बिसगुना बढ़ जाय। ऐसा इंतजाम करना चाहिये।

दुखराम—हां। और सब कमेरोंके हाथ [illegible] चाहिए। जो ऐसा हो तो [illegible] कमेरोंको कौन [illegible]

भैया—[illegible] है दुक्खू भाई

सन्तोखी—तो तुमको भैया विश्वास है ना, कि अँगरेजोंका पवरा फिर लौटके नही आवेगा।

भैया—नही आवेगा, नही आवेगा। देखा न हम लोगोका चक्करवाला तिरङ्गा झडा। अव सब थाना कचहरीके ऊपर फहरा रहा है।

सन्तोखी—हाँ भैया? मुदाई महतमाजीका चरखा क्यो झण्डे परसे अलोप हो गया?

दुखराम—भैयाको तकलीफ मत दो, ई हमसे सुनो सन्तोखी। हम बतावै। हमको भी का मालूम, सोमारूने बताया।

सन्तोखी—कौन सोमारू? वही सदाफलका बेटा, जो रेलवइ ऐंजनमे काम करता है?

दुखराम—हो, उसीने बतलाया कि अब हमरा देस सुतन्तर हो गया। आगे कल-मसीनका काम चलेगा। रेलकी लाइन बहुत बढाई जायगी। खेत जोतनेके लिए भी मोटरका हल आयेगा। जानते हो न? कल मसीनमे सब जगह चक्का-चक्का होता है। वही चक्कर अब हम लोगोकी पताकापर आया है।

सन्तोखी—महतिमाजी को कैसे मालूम हुआ होगा? सब जगह कल मसीन चल जायगी, तो चरखेको कौन पूछेगा?

दुखराम—महतिमाके जिनगीभर चरखा रहा फिर अब वह लौटकर देखने थोडे आवेंगे, कि अपसोस होगा?

भैया—महतिमाके लिए ऐसा मत कहो दुक्खू! उन्होने देशका बहुत बडा काम किया। आँखके देखते ही देस सुतन्तर हो गया, यही उनके लिए सन्तोख की बात थी। ऐसे तो वाल-वुद्धि किसमे नही होती? हमारा देस अब सदाके लिए सुतन्तर है। अँगरेज या कोई दूसरा फिर यहाँ लौटकर नही आ सकता। मुदा अभी दो बडे-बडे काम हमे करने हैं।

दुखराम और सन्तोखी—कौन काम भैया?

भैया—अब यह बात कल कहेंगे। "कथा समापत होतु है, सुनहु बीर हनुमान।"

१७. दुनिया-जहान की वात

भैया—भाई लोग कहाँ भूल गये थे? मैं तो समझता था कि कहीं चुनावके मेलाकी तैयारी तो नही हो गई?

दुखराम—चुनाव के मेलासे भी मुस्किल बात है भैया! दूकानसे नून अलोप हो गया। ई तो सन्तोखी भाई साथे रहे, कितना अगवार-पिछवार चक्कर लगानेपर

पावभर मिला और सो भी पाँच पैसाकी जगह रुपैया सेरके भावसे। ऐसी चोर-बाजारी तो पराजउ मे नही देखी थी ?

भैया—जब तक जोंकोंकी चलती-बनती रहेगी, तब तक सब देखनेको मिलेगा।

दुखराम—फिर गाँधी महतिमा काहे कहते थे, कि जोकोपर से सब अकुस उठा दिया जाय ? चीनपरसे अकुस उठा लिया गया। अनाजपरसे अकुस उठाया गया है। महतिमाजीका रामराज जोकोके लिए ही तो नही है ?

सन्तोखी—जोकन के ऊपर से कुल अकुस उठ गया तो गरीबोकी मौत है।

भैया—ठीक है।

सन्तोखी—मुदा भैया, एक बात सुनके तो हमार मन सिहर गया। मनोरी साहुका लडका कह रहा था, कि जल्दी ही फिर लडाई होनेवाली है। बाबूजी तो दो ही तीन लाख कमाकर रह गये, बाकी मैं अबके चालीस-पचास लाखसे कम कमाये बिना नही रहूँगा। मेरा तो कलेजा काँप रहा था। तुम्हीने कहा था भैया, कि रूसमे ७० लाख आदमीको जान पिछली लडाईमे गई ! आगेकी लडाई तो और भी खराब होगी ?

भैया—भय मत खाओ सन्तोखी भाई ! लडाई इतना ठट्ठा-खेल नही है, कौन किससे लडेगा ?

सन्तोखी—साहुके लडकेने खबरका कागज पढकर कहा कि रूस और अमरीकामे कचवावध लडाई होने जा रही है।

भैया—हाँ, अमरीका की जोकोके मुँहमे खून लग गया।

दुखराम—हिटलरवा की तरह इनकी भी मत तो नही मारी गई ? अब अमरीकाकी जोकें दुनियाकी दिगविजय करना चाहती हैं क्या ?

भैया—गाल तो वैसा ही बजा रही हैं ?

दुखराम—हिटलरवा भी पहले गाल बजाता था, मुदा अन्त मे उसने दुनिया को लडाईमे ढकेल ही दिया और हमारे देस के भी आध करोड आदमियो की जान गई।

भैया—लेकिन अमेरिका की जोकें हिटलर जैसी पागल नही हैं।

दुखराम—मुदा सुनते हैं भैया, अमरीकाके पास अणुआँ बम है। एक बम गिरानेसे कलकत्ता ऐसी नगरीमे चिडिया-चुनमुन कोई नही बच सकता।

भैया—हाँ, वह सबसे खतरेका हथियार है, इसमे सका नही। एक बमसे पचास-साठ हजार आदमीकी जान जाना कम नहीं। मुदा दुक्खू भाई, यह भी बूझे रहो, कि अमरीकाने काहे उस हथियारको जर्मनपर क्यो नही छोडा ?

सन्तोखी—हमारा भैने (भांजा) सोहनलाल कहता, कि जापान काला आदमी था, इसलिए अमेरिकाने उसके हिरोसिमा नगर पर अणुआँ बम फेंका।

भैया—यह भी हो सकता है। लेकिन खाली इसी कारनसे नही। अमिरिका समझता था, कि जो जर्मनीके एक भी सहर पर इस उसको फेंका, तो हिटलरवा

बिख-माहुरका बतास भरके बिलाइत पर उसिल देगा; औ बिलाइतके छोटेसे मुलुकमे 'रहा न कुल कोउ रोवनिहारा।' हो जायगा ?

दुखराम—हिटलरके पास बिख-माहुरका ऐसा बतास था, तो काहे नही उसने चलाया।

सन्तोखी—जानते नही। दुतरफा डर है। दोनो निरवस हो जाते, तो जीत किसकी, हार किसकी ?

भैया—हाँ, यही बात थी। जापान, अमरीका और बिलाइतसे बहुत दूर था, इतना दूर कि—यहाँ तक जापानी उडनखटोले बिखका बतास नही पहुँचा सकते थे, इसीलिए अमरीकाका हिसाब बढा।

सन्तोखी—यह तो अतताईका कम हुआ भैया! अमरीकाने अपने साथी-सगीसे पूछके ऐसा किया कि अपने मनसे ?

भैया—खाली चर्चिलसे पूछा।

दुखराम—अहिरावनसे। हम तो भैया; चरचिलवाको दानो समझते हैं, जो रामजीको औतार लेना था, तो इसी दानवके खातिर औतार लेना चाहिए था। उसकी एक-एक बातमे बिख और उसकी एक-एक चालमे सौ-सौ पातक होता है। इस्तालिन बीरसे नही पूछा इस बारेमे।

भैया—पूछनेकी बात पूछते हो ? उसीके लिए तो अमरीकाने जल्दी जल्दी अणुआ बम गिराया। उसने देखा, जर्मनकी लडाईमे तो दुनिया जहानने देख लिया जे रूसकी पल्टनके सामने अमिरिकाकी पल्टन पसगा भी नही। चीनके मचूरिया सूबामे जापानने छाँट-छाँटकर बीर बका पल्टन रखी थी। अँगरेज और अमिरिकाकी पल्टन जापानकी छठवी पल्टनसे सालों लडती रही और इच-इच भर हटाते रहे। उधर जब रूसने जापानके ऊपर हेगा उठा लिया, तो तीर की तरह घास-मूलीकी तरह काटते-मारते जापानियोंके सारे बीर बकापनको धूल मे मिला दिया।

दुखराम—हूँ ? तो अमिरिकाने समझा, कि यहाँ भी रूसवाले मीर बन जायेंगे और दुनिया जान जायेगी, कि उनमे कितनी बीरता है। इसीलिए यह अततार्इपना किया।

भैया—और नही तो ? जापान तो हथियार डालने ही जा रहा था।

सन्तोखी—कहते हैं, अमिरिकाने ढेरका ढेर अणुआं बम जमा कर रहा है। साहुका लडका कहता था, कि ऐसा बम अमिरिकाके ही पास है। छ घटेमे वह सारे रूसको खतम कर देगा।

भैया—रूस, जानते हो, कितना बड़ा देस है। हिन्दुस्तान ऐसे सात देस उसमे समा जायेंगे। ८ हजार कोस लम्बा, ४ हजार कोस चौडा देस है। इतना बम कहाँ धरा है कि धाप-धापपर उसे गिराया जाय। फिर रूसभी हाथपर हाथ रखकर बैठा नही है। उसके पासभी ऐसे बम और उससे भी भारी-भारी हथियार हैं।

दुखराम—तो यह अँगरेज काहे बीचमे फुदक रहे हैं ?

भैया—ठीक कहते हो, अमिरिका और रूस तो बडे-बडे देस हैं। वहाँ सब

लोग खाली सहर हीमे नही बसते हैं। बिखके बतास और बमसे गाँमके आदमी बच भी सकते हैं, मुदा एक चौथाई अँगरेज तो लदन हीमे बसते हैं। पाँच-सात और बडे सहरोको ले लो, तो सौमे से अस्सी-नब्बे अँगरेज वही बसते हैं। फिर जो ऐसे बमोकी लडाई हुई और बिख-बतास गोला भी चला, तो बिलायतमे तो सचमुच ही 'रहा न कुल कोउ रोवनिहारा' हो जायगा।

दुखराम—यह देखकर तो भैया मुझको बुझाता है कि यह सब और कुछ नही, खाली बनरघुडकी है।

भैया—और रूसमे भी "इहाँ कुम्हड बतिया कोउ नाही" वाली बात है।

दुखराम—तो उहाँ कोई डरता-बरता नही भैया ?

भैया—तनिक भी नही। "हाथी चलें बाजार, कुत्ता भूकें हजार।"

सन्तोखी—भला, सुनते हैं कि अमिरिका रूसका चारो ओर से घेर रहा है।

भैया—हाँ, घेरनेकी कोसिस कर रहा है। जापानके फसिहोको फिर खडा कर रहा है। चीन मे जोकोके पायककारकी चाडको टापूमे भाग जानेपर खिला-पिला रहा है। और करोडन-करोडन रुपया बरसा रहा है। ईरानमे भी रुपया बोले उसने यहाँकी जोकोको हथियाया। यही तुर्की और यूनानमे किया है। इरोप के पूरबवाले देसोंमे दाल नही गली तो खिसियानी बिल्लीकी तरह खम्भ नोचता है। इटली, फ्रास, सब जगह छन्द-बन्द कर रहा है।

दुखराम—सब तो भैया, यह लडनेकी तैयारी है।

भैया—लडनेकी तैयारी नही। वह जानता है, कि जबतक रूस और उसके साथी देसोके ऊपर सीधे चढाई नही होगी, तब तक रूस नहीं लडेगा। उधर दूसरे देसोमे सभी जगह कमेरे जोकोका टाट उलट देना चाहते हैं। जोंकोमे अकेले इतनी तागत नही, कि अपना बचाव करें। अमिरिकासे चीनका जूता उधार ले लेके वह अपने यहाँके देस बेचुआ नेताओको खरीद रही हैं और जोक-राजको बचा रही हैं।

दुखराम—चीनमे भी अमिरिका जोकोकी बडी मदत करता था।

भैया—मदतकर रहा था, मुदा उसका कोई फल नही हुआ है। चीन के देस-भगत लोग और उनकी पलटन चारो ओरसे जोकोपर पडी। जोकें एक जगह बचाव करने जाती, तो दूसरी जगह चढाई हो जाती। नाकमे दम था। चीन इतना बडा दलदल है, वहाँ अरबो रुपयोका पता क्या लगता ? अमिरिका नया-नया हथियार भेजता और पलटनकी पलटन हथियार लिए-दिये भउतोके पास चली जाती। किसान मजदूर चारो-ओर बिगड गये थे।

सन्तोखी—तभी न चीनमे जोकोका दाँव नही लगा।

भैया—चीनके लोग समझ गये, कि पहले जापान हमे गुलाम बनाना चाहता था और अब अमिरिकाकी डालरशाही।

दुखराम—ओ कोरियामे क्या बात हुई भैया ?

भैया—उत्तरमे, आधे कोरियाका इन्तिजाम रूसकी देख-रेखमे होता था। वहाँ किसान-मजदूर लिखे-पढे लोग खूब सुखी थे। नये तरीकेसे खेती की जाती थी ? गाँव-गाँव सहर-सहर इस्कूल-अस्पताल था। पूरा-परजा-राज बन गया था। जिसे

दक्खिनी कोरियाके लोग देख-देख सिहाते थे, और वैसे ही अपने यहाँ भी बनाना चाहते थे, इसपर अमेरिका और उसके कठपुतली कोरियन देस-भगतोको पकड-पकडके जेलमे डाल रहे थे। हम कह चुके हैं, इससे काम न चलता देख लड़ाई छेड दी, सो हम कह चुके हैं।

दुखराम—अमिरिकाको रुपिया बरसानेका ही आसरा था, मुदा समूची दुनियामे कितने दिन तक अमिरिका रुपिया बरसाता रहेगा।

सन्तोखी—जिस दिन रुपियाकी बरसा बन्द होगी, उस दिन जोकोकी क्या दसा होगी ?

भैया—जोकें छटपटाके मरेंगी।

दुखराम—तो इस बखत दुनियाकी सारी जोकें अमिरिकाकी जोकोंका आसरा लगाये बैठी हैं।

भैया—वही दुनियाकी जोकोका सिरताज है, चारो ओर हाथ-पैर मार रहा है। उसने लड़ाईमे खूब रुपिया कमाया है।

दुखराम—का नही कमायेगा ? अमिरिकामे लड़ाई नही हुई। पलटन भ उतनी मरी नही।

भैया—हाँ, लड़ाईमे अमिरिका एकका नौ बनाता रहा, मुदा कुबेरका अखु खजाना उसके पास भी नही है।

दुखराम—तो रूस चुपचाप बैठा रहा है, कि अमिरिका कितना अरब-खरब रुपिया दुनियामे बोता है। उधर देसभगत लोग भी अपना बल-बूता लगा रहे है। दस बरस, बीस बरस कितने समय तक अमिरिका चाँदीके भरोसे दुनियाकी जोकोको पोसता रहेगा ? आखिरमे हाथ खीचना ही पडेगा।

भैया—चीनमे हाथ खीचना ही पडा और सोलह अरब गँवाके।

सन्तोखी—हमको तो यही सन्तोख है भैया, कि रूस अणुआ बमसे नही डरता और उसके पास अणुआ बम और दूसरे बडे-बडे हथियार है। रूसी जोधा तो बीर बका हुई हैं।

दुखराम—इसीलिए लड़ाई नही होगी। यह खाली अगरेज और अमिरिका की बनरघुडकी है।

भैया—अगरेजका काहे नाम लेते हो ? आजकल यह खाली सिखडी रह गया है। ढोलके भीतर खाली पोल है।

दुखराम—तब भी बेहया बनकर हर जगह पच बनना चाहता है।

सन्तोखी—लेकिन सुनते हैं, कि अगरेज पाकिस्तानसे बहुत साँठ-गाँठ कर रहा है। पाकिस्तानको लेके कही फिर तो हिन्दुस्तानपर चढाई नही करेगा ?

भैया—'लडो भतीजो पाछ दो पूतो' कहावत नहीं सुनी ?

सन्तोखी—'आनका मैदा आनका घीव, भोग लगावे बाबाजीव' वाली बात मालूम होती है।

भैया—जो अगरेजोको अपना घीव मैदा लगाना होता, तो हिन्दुस्तान छोडकर काहे जाते ? और पाकिस्तान कौन बिरतेपर हिन्दुस्तानसे लड़ाई करेगा। न उसके

पास—लोहेका कारखाना है, न हथियार का कारखाना है, न कोयला, न तामा, न उतने हुसियार, कल-मसीन जाननेवाले, न इतने इलिम विद्दा सीखे लोग। ऊपर से एक टुकडा पूरब मे लटक रहा है, सो दूसरा टुकडा पच्छिममे। पागल कुत्ता काटे नही है, कि वह सब करे-धरेपर लीपा-पोती कर देगा। अभी सुना है न, हिन्दुस्तानका इतना करजा पाकिस्तानपर हो गया है कि पचास साल की किस्तमे बेबाक करना मुस्किल है।

सन्तोखी—वही भैया, करजा मार तो नही लेगा। सूद तो ठीक-ठेकानेसे लगाया गया है ? अब उनके साथ मोह-मुरौअत काहेकी ?

भैया—महाजन कमजोर होता है, तभी करज मारा जाता है। हिन्दुस्तान जन-धन-बल सबसे पाकिस्तानसे बहुत बडा है।

सन्तोखी—सुनते हैं, कि पाकिस्तानकी आमदमी पलटनके खरचा हीमे चली जा रही है। उसको इतनी पलटनकी क्या जरूरत है, जब हिन्दुस्तानसे लडके पार नही पाना है ?

भैया—पाकिस्तान बडे फेरमे पडा है। पलटनसे लोगोके निकालनेपर बेरोज-गार हो वे काटने दौडेंगे। उधर पठान पखतूनिस्तान बनानेपर तुले हुए हैं। अगरेज हरसाल कई करोड रुपिया सरहदके पठानोको सुँघाते रहे। तब तो हिन्दुस्तानका बडा खजाना था, अब वह पाकिस्तानके माथे है।

सन्तोखी—पाकिस्तानने हिन्दुस्तानसे भी कुछ देनेके लिए कहा था न ?

भैया—कहा था, मुदा हिन्दुस्तान काहेको देगा ? वह इलाका हिन्दुस्तानकी सरहद पर थोडे ही है।

सन्तोखी—तब तो भैया, पेसावरका इलाका पाकिस्तान मे चला गया, वह अच्छा ही हुआ, नही तो हमी लोगोको सारी रुपिया-सुँघाई करनी पडती ?

भैया—इसीसे पहिले तो पठानोको कासमीरमे लूटनेके लिए भेज दिया। अब जब वहाँ खोरिस भागेंगे, तब मालूम होगा।

दुखराम—पठान लोग अपना पठानिस्तान माँग रहे हैं न ? उसे लियाकत अली कब तक रोके रखेंगे।

भैया—तभी तक रोकेगा, जब तक दीन-धरमके नामपर लोगोको पागल कर सकता है।

सन्तोखी—लेकिन सुनते हैं कि पाकिस्तान सारी दुनिया-जहानके मुसलमानो को एक करके लडना चाहता है।

भैया—भूल गये, मैंने कहा न था, कि सबसे बेसी मुसलमान हिन्दुस्तान ही मे रहते है। नाम गिनानेको चाहे आठ मुसलमानी राज गिन लो, लेकिन वह एक-एक, दो-दो जिलेके बराबर हैं और सभी पिछलग्गू। आजकलके जमानेमें लाठी और छूरेकी लडाई नही है। 'समूचे दुनियाके मुसलमान' खाली नाम ही बडा है। इससे घबरानेकी जरूरत नही।

सन्तोखी—मुदा 'घरका भभीखन लका ढाहे,' कही हिन्दुस्तानके मुसलमान तो धोखा नही देंगे ?

भैया—पन्द्रह अगस्तके बाद मुसलमानोंके चाल-व्योहारमे तुम्हें फरक मालूम होता है कि नही ?

सन्तोखी—फरक तो बहुत है भैया। अब न यहॉ मसजिदके सामने बाजार की बात उठाते है, न छुरा-खंजर दिखाते हैं। बलुक भाई-चारा बढ़ाने की पूरी कोसिस करते हैं।

भैया—बिभीखनको तो हमारे यहॉ जगह नही। बिभीखन के लिए सीधे पाकिस्तानका रास्ता बना देना चाहिये। नही बनाने पर भी उन्हें चला ही जाना होगा, बाकी जो मुसल्मान हिन्दुस्तानमे रहनेका निश्चय कर चुके हैं वह भली-भांति जानते हैं, कि जो हमने कुछ भी तीन पांच किया, तो खैरियत नही। पाकिस्तानकी सरहद बहुत दूर है। वहॉ तक जान बचाके भागना भी नहीं हो सकता।

दुखराम—यह तो मैं भी समझता हूँ, मुसलमानोंकी भलाई इसीमें है कि यहाँके लोगोंसे मिलाई करें, अपनी जनम धरतीसे सनेह राखें।

भैया—इतना नही। मुसलमानोंको वही बोली-बानी वही पर-पोसाक, वही खान-पान अपनाना होगा जो कि हिन्दुओंका है। बिलाइतमें इसाई रहते हैं, यहूदी भी रहते है लेकिन उनको देखकर कोई नही कह सकता, कि वह दो तीन धरमको मानते हैं।

दुखराम—दीन धरम अपने मनकी बात है भैया, जिसका जो मन हो वैसा माने। मुदा हर जगह अपनको नकटू बनाना ठीक नही है न भैया ?

भैया—हॉ, धरमकी जगह मन्दिर-महजिद, गिरजा अगियारी मे है। उसका हर जगह साईनबोर्ड टॉगना ठीक नही है।

सन्तोखी—कोई कोई मुसलमान हिन्दुईको राज भाखा बनानेपर चिढ़ते हैं।

भैया—मूरख हैं। मूरख हमारे यहॉ की भाखा हिन्दुई न होगी तो क्या अरबी, फारसी होगी ? अपने चाहे जो भाखा पढ़ते रह, मुदा सरकारी कारबार तो अब अपनी ही भाखा मे होगा।

सन्तोखी—जब अँगरेजी इतना दिन पढ़ते रहे, और कभी उजुर नही किया, तो बिदेसी भाखा छोड़के अपनी हिन्दुई भाखा पढने लिखने मे काहे इतनी नखराबाजी ?

भैया—पॉडेजी पछतायेंगे और वही चनेकी खायेंगे'। नखरा छोड़कर हिन्दुई भाखा सबको पढ़ना होगा। बहुतसे मुसलमान भी अब यह समझने लगे हैं।

सन्तोखी—हॉ, इस बातका तो पता आठ साल पहिले (१९४७) परागराजसे मिला। दिसम्बरमे जब जवाहिरलाल पराग पहुँचे, तो लोगोंने जगह-जगह बन्दरवारसे सजाके दरवाजा बनवाया। मुसलमानो का दरवाजा सुन्दर था, और उसपर हिन्दीके मोटे-मोटे अच्छरोंमें लिखा था उर्दू मे भी लिखा था, लेकिन छोटे-छोटे अच्छरोमे।

भैया—मुसलमानो को उर्दू पढना हो, तो पढ़ें, कौन रोकता है। लेकिन राजभाखा हिन्दी छोड दूसरी नही होगी।

सन्तोखी—कोई-कोई मुसलमान कहते हैं कि जो उर्दू भाखा नही रहेगी, तो मुसलमानी धरम उठ जायेगा।

भैया—जो धरम ऐसा कच्चा है, तो उसको उठ ही जाना चाहिये। मुदा हिन्दुस्तानमे किसीके धरमप्पर रोक-थाम नही है। पारसी लोग गुजराती लिखते-पढते हैं उनका धरम तो नही चला गया। ईसाई बडे उछाहसे अपनी हिन्दी पढते हैं, बगाली, मन्दराज के रहवैया वहाँकी भाखा पढ़ते हैं। वौध हिन्दी पढते हैं, अपनी भाखा से परेम करते हैं। इनमेसे कोई नही कहता कि हिन्दी पढनेसे हमारा धरम चला जायेगा।

दुखराम—तो काहे ऐसी उल्टी-पुल्टी वात मुसुलमानोके मुँहसे निकलती है?

भैया—आखिरी बेर निकल रही है दुक्खू भाई। तुर्कीमे नमाज तक अपनी बोलीमे पढ़ते हैं, अरवीमे नही। अरबी अच्छरोको भी वहाँ ठाँव नही है मुदा वहाँसे तो मुसुलमान धरम नही चला गया। खाली घर या महजिदमे रोजा-नमाज छोडके हिन्दू-मुसलमानोमे बोली-वानी, कपडा-लत्ता किसी वातमे फरक नही होना चाहिए। हम तो समुझते हैं, कि धीरे-धीरे रोटी-बेटी सब एक हो जायगी।

१८. अनाज कैसे बढे?

सन्तोखी—दुक्खू भाई, रजबली भैयाने बहुत बात तो बता दी है। आज उनसे क्या पूछना चाहिए?

दुखराम—अभी तो सन्तोखी भाई, सब दूरे-दूरे की बात रही है। अब तनी नजीककी बात करनी चाहिए।

सन्तोखी—हाँ, दुक्खू भाई, देख न नून तेल सब अलोप होता जा रहा है। जहाँ देखो तहाँ दुइ-दुइ तरहका भाव। सब जगह ईमान-धरम लोगोका उठ गया है। हम सब गरीबोकी दसा और बिगडती जा......

दुखराम—लो भैया भी आ गये। जैहिन्द रजबली भैया।

भैया—जैहिन्द दुक्खू भाई, जैहिन्द सन्तोखी भाई। कहो आज क्या बात बिचार करना है।

दुखराम—आज भैया, तुमको जादा तकलीफ नही देंगे। बस, घर-दुआरकी बातचीत और येही नून-तेल-लकडी की चिन्ता।

भैया—यह छोटी बात है दुक्खू भाई। कबीर साहब कह गये हैं—'न किछु देखा भाव-भजनमे, ना किछु देखा पोथीमे। कहे कबीर सुनो भाई सन्तो, जो देखा सो रोटी मे।' रोटी सब चीजकी मूल है। रोटीके लिए सुराज भैया है।

दुखराम—यह तो हम भी बूझते हैं भैया, खाली हँसी करते रहे। मुदा देखते हो न अनाज दिन-पर-दिन अजुर होता जा रहा है।

भैया—रोटीका इन्तिजाम सबसे पहले करना है। जानते हो न इस साल तोडा पूरा करनेके लिए तीन अरब रुपियाका अनाज दूसरे देससे मँगाना पडा है।

सन्तोखी—तीन अरब रुपिया बहुत होता है भैया। जो ऐसे रुपिया देना हुआ तो घर-दुआर बिक जायगा।

भैया—तीन अरब तो सरकारकी सारी आमदनी है. और अनाज न मँगायँ तो वही बङ्गालकी हालत होगी। लाखो परानी भूखे पटपटा के मर जायँगे।

दुखराम—हमारे यहाँ अनाजका ऐसा टोटा तो कभी नहीं देखा गया। तो अगरेज चले गये और इहाँसे बिलायत भी अनाज नही जाता। फिर काहे अनाजका इतना अकाल ?

भैया—अनाजका अकाल काहे न हो। खानेवाले मुँह पहलेसे बढ गये और धरती एक भी अगुल नही बढी। साले-साल धरतीका सत्त खीचते रहे और खाद नही देते। भैंस बियाती है, तो काहे मांडी (पखेब) देते हो।

दुखराम—बियानेसे भैंस दूबर हो जाती हैं। मांडी (पखेब) न देंगे तो कहाँसे दूध देंगी।

भैया—उसी तरह धरतीको मांडी चाहिये। फसल काटो और मांडी दो।

दुखराम—माने खाद दो। और पानी भी धरतीको बहुत चाहिए भैया।

सन्तोखी—और अच्छी जोताई भी खेतको जोता-हेङ्गाके तोसक, जैसा नरम कर दे जब धरती-माता परसन्न होती है।

भैया—कुल बात तो तुमने बता दी। मांडी (पखेब), पानी, जोताई और इनके साथ अच्छा बीज दे दो, देखो, धनहर भैंस जैसे जितना चाहो उतना दूध दुह लो। लेकिन मांडी कहाँ है हमारे गाँवमे। थोडा बहुत गोबर होता है। उसको भी और उपाय न होनेसे ईंधन बनाके जला देते हैं।

दुखराम—हाँ भैया, यह तो रोज ही देखते हैं, कि जिस खेतमे खाद गोबर पडता है, उसमे कट्ठा-बिस्वामे मनभर गेहूँ उपजता है। पथरकोयला पर भोजन मीठा तो नही होता है, मुदा वह भी मिल जाता, तो सब गोबर बचाके खेतमे डालते।

भैया—खाली मनका भरम है। पथर कोयला पर भोजन फीका नही होता। मुदा पत्थर-कोयला इतना कहाँसे मिलेगा, कि देस भरके चूल्होमे उसे जलाया जाय ? इसकी यह मनसाम नही कि हमारे देसमे पत्थर-कोयला कम है। पत्थर-कोयला बहुत निकाला जा सकता है और गोबरको बचाके खाद बनाना चाहिये। धरतीके पेटमे बहुत खाद है।

दुखराम—क्या कहा कहा भैया, धरतीके पेटमे भी खाद है ?

भैया—हाँ, जैसे कोइलाकी खान हैं, लोहाकी खान हैं, वैसे ही खादकी भी खान हैं—और वह खाद बहुत तेज होती है। जहाँ दूसरी खाद दो मन लगती है, वहाँ उस खादके दो सेरसे ही काम चल जाता है। हमारे देसमें धरतीके पेटमे न जाने क्या-क्या है। हमारी धरतीमे अपार धन है। उसे निकालना चाहिये, और बहुत जल्दी। जानते हो, सत्ताइस लाख खानेवाले मुँह हमारे यहाँ हर साल बढ़ रहे हैं।

सन्तोखी—क्या कहा भैया, सत्ताइस लाख मुँह ? मेरा तो कलेजा सिहर गया।

दुखराम—देख नही रहे हो सन्तोखी भाई, तुम्हारे घरमे तो एक ही लडका-लडकी होके रह गये। मुदा रामदीन बाबाको नही देखते। अभी जिन्दा ही हैं। चार पीढी सामने हैं। और खाली लड़कोंसे आजकल बत्तीस परानी हैं।

भैया—औ लखनऊके बडे लिखवैया सामबिहारी मिसिर अपनी देहसे छत्तीस परानी देखके मरे।

दुखराम—हाँ भैया, ई तो बडे सकटकी बात है। और मेहरियोंकी मुरुखताई-को पूछो ही नही, जो घरमे बहूको आये दो साल हो गया और कोई लडका-फडका नही हुआ, तो फिर देखो, आज सैयदबाबा किहाँ, काल डीहबाबा किहाँ, परसो परजोत-माई किहाँ, चौथा दिन ओझा-सयान किहाँ। जनु गद्दी सूनी होती जा रही है। हमारे लडका-फडका नही हुआ, भाईके हो गया। बस, नाम-निसान क्या उससे नही होगा।

सन्तोखी—भाईके क्या, गाँवभर तो एक ही पुरखा का है। चार घरमे धिया-पूता नही हुआ, तो पुरखाका बस, निरबस थोडे ही होगा। ई तीन अरब रुपया हर साल बाहर भेजनेको समरथाय अपने देसमे नही है। हम तो बूझते हैं भैया, जो परानी आधे हो जायें, तो कुछ चिन्ता मिटे।

दुखराम—दुर मर्दे, क्या मुँहसे कुबचन निकालता है। परानी आधा करनेके लिये हैजा बुलाएगा कि पलेक।

दुखराम—नराज मत हो दुक्खू भाई, हम उस दिनके लिए कह रहे हैं, जब रुपया देना नही सपरेगा, अनाज बाहरसे नही आयेगा, और लडको सयानो को निरधिन मौत मरना होगा। सुने नही हो, बगालमे जब अन्नका अकाल पडा, तो आदमी इज्जत बेंचके भी परान नही बचा सके। वैसी मौतसे हैजा-पलेक अच्छा।

दुक्खू—तो तुम्हारे भगवान क्या करते हैं। खाली हर साल सत्ताईस लाख मुँहई बढानेमे बहादुर है !

सन्तोखी—भगवानको भी तो तुमने कह-कहके भुलवा दिया। अब कहाँ उतनी पूजा-पाठ करते हैं ? हम भी देखते है, कि एक-एक आदमी के बचाने खातिर कहाँ धाय-धायके औतार लेते थे, और लाखो आदमीके मारके अततांई मोछपर ताव देते हैं तो भी उनकी नींद ही नही टूटती।

भैया—अब दुखराम कहेंगे कि रहने दो उनको छीरसागरमे हमेसा खातिर सोते। मुदा भगवानका काम है, न हैजा-पलेकका। अगले पचास साल तक जो इसी तरह बढती हुई, तो हिन्दुस्तानमे एक अरब मुँह हो जायेंगे। उसके लिए भी सन्तोखी भाई ! हैजा-पलेक मत मनाओ। हमारी धरती एक अरब मुँहके भोजन, तन ढाँकनेको अच्छा कपड़ा, रहनेको नीचुर घर और सब चीज दे सकती है। मुदा गाँधी महतिमा के रहतासे नही। उसके वास्ते कल-मशीन का, नये इलिमका काम है। तुम कट्ठा-बिस्वा मन कह रहे हो, रूस मुलुकमे तो बिस्वामे डेढ-डेढ मन गेहूँ होता है और एक खेतमे नही, जिलाके जिलामे।

दुखराम—तो उहाँ खूब खाद देते होगे।

भैया—खूब, हर फसिल बोनेसे पहले नापके बिलायती खाद देते हैं। मोटर-वाले हलसे एक साथ गहरी जुताई करते हैं। ढेला एक भी नही रहने पाता। फिर धुनके बढ़िया बीज बोते हैं। और पानी हर बखत हाजिर। बडी-बडी नदी को बाँध दिये हैं। नर्बदा, सरजू, कोसी, गडक जैसी नदियाँ जो वहाँ होती, तो इतना पानी अकारथ थोडे ही बहने पाता। वहाँ तो बडा-बडा सागर और झील बनाके बरसातका पानी भी जमा कर लेते हैं।

दुखराम—ईतो बहुत बडा काम है भैया !

भैया—बहुत बडा काम है, और वह काम हियाँ भी हो सकता है। गगाजीसे नहर निकाली गई है जानते हो न ? उसी तरह सब नदियोंके पानी को खेतो मे डाला जा सकता है। फिर एक बडी गगा तो धरतीके भीतर हर जगह बह रही है।

दुखराम—वही न जिसका पानी कुएँमे आता है ?

भैया—हाँ, वही और वह पानी नदियोके पानीमे भी ज्यादा है। पहले जमाने-मे उसके निकालनेमे बहुत मेहनत करनी पडती थी। आदमी या बैल लगाकर चिल्लू-चिल्लूभर निकालते, लेकिन आजकल तो पानीकी कल ऐसी बन गई है, कि पाइप बैठा दो, तेल या बिजुलीका अजन लगा दो, और एक-एक दिनमे सौ-सौ बिगहा सीच लो। देखा नहीं बनारस, पटना, कलकत्ता, बम्बई,सब जगह अब डोरा-लोटा चाहे घडासे पानी नही खीचा जाता, बीस-बीस लाख आदमीके लिये और सतमहला पर भी कल-मसीन पानी पहुँचा देती है।

दुखराम—तो वह कल-मसीन अब धरतीमे लगाना चाहिए, नही तो सन्तोखी भाई फिर हैजा-पलेककी मनौती करेंगे।

भैया—हमारा देस दुक्खू भाई, धन-धानसे भरा है, लेकिन अकिल बिना-सब काम चौपट है। रूस या बिलायतके मुलुकको देखो, वहाँ छ महीना धरती पर दो-दो चार-चार हाथ तक बरफ पडी रहती है, और कोई खेती-बारी नही हो सकती। मुदा अपने देसमे हम हर खेतमे तीन-तीन फसल ले सकते हैं। और आलू, तरकारी, प्याज-की तो पाँच-पाँच फसल भी उसी खेतसे निकाल सकते हैं।

सन्तोखी—सहरके पासके कोइरी (मुराव), काछी, कुँजडा लोग चार-चार पाँच-पाँच फसल निकालते ही हैं।

भैया—इसीलिये न कि वहाँ सहरके पास मे खूब खाद है। जोताई, पानी, बीज सबका अच्छा इतिजाम है। और धानके खेत मे भी हमारे यहाँ रब्बी और बादमे पियाज तरकारी लगाके तीन फसल कर सकते हैं।

दुखराम—अगहनी धानके खेतमे कैसे रब्बी होगी ?

भैया—ऐसा इलिम निकला है, कि अगहनी धानको कतिका बनाया जा सकता है, माने उसकी फसल पाख डेढपाख पहिले ही तैयार हो जायेगी।

दुखराम—बतावो भैया, हम अगले ही सालसे वही धान बोयेंगे।

भैया—लेकिन बडे-बडे इलिमकी बात एक-एक घरमे नहीं चलती दुक्खू भाई! जैसे एक घर चाहे कि गङ्गाकी नहर बना दे, पानी निकालनेवाला इजन बैठा दे, तो

नही हो सकता। यह काम तभी हो सकता है, जब गाँव के गाँव मिल जायँ और सरकार तन-मन-धनसे सहायता देनेको तैयार हो जाय। वैसे बीजको भिगाके कुछ देर तक गरमाई मे रखना पड़ता है। उसके लिये मसीन, बड़े घर और हुसियार इलिम जाननेवाले आदमीकी जरूरत पड़ती है।

दुखराम—तो रूसमे यह सब इतिजाम हुआ है ?

भैया—इतिजाम न होता, तो सत्तर सत्तर लाख परानीके मर जानेपर, करोड़न बिगहा खेतके बेकार हो जानेपर भी रूस कैसे इतना अनाज पैदा करता, कि अपने खाके दूसरोको भी करोड़ो मन अनाज देता ?

सन्तोखी—रूस हम लोगोको भैया, अनाज क्यो नही देता ?

भैया—दिया है और भी देना चाहता है। फिर बिना सरतके मुदा कागरेसी सरकार महँगे दामपर देसको बंधक रखकर अमिरिका से लेना चाहती है। चीनने भी २८ करोड़ मन अनाज दिया है, उतना ही देना चाहता था, और सस्तेमे।

दुखराम—तो भैया। जोकें कमेरोके मुलुकका अन्न भी लेनेमे डरती हैं ? रूसके कमेरोंने आखिर सब कुछ अपने जाँगर हीसे किया है न ? क्या हम भी अपने जाँगरके भरोसे वैसा नही कर सकते ?

भैया—जाँगर और इलिम दो ही बात तो चाहिये। फिर हमारे यहाँकी भी धरती सोना उगलने लगेगी। आजकल सड़तर-पड़तर (औसत) हर एकड़मे सात मन धान हो जाय तो बहुत। यह हम एक दो या सुतरे खेतकी बात नही कर रहे हैं, जिलाके जिला और सालो के हिसाब लगानेपर फसिलकी यही उपज है।

सन्तोखी—इसका मतलब यह है कि नये इलिमसे जो खेती की जाय, तो पाँचगुना फसिल बढ़ जायेगी।

दुखराम—और एक फसिल। खेत दो फसिला। माने खेत मे तीन-तीन चार-चार फसिल काटी जा सकती है। यह भी दूना हुआ।

सन्तोखी—माने आजने जितने ही खेतमे दस गुना फसिल पैदा हो सकती है।

भैया—और आज जितना खेत है, उसको सवाया कर सकते हैं, जो खेती-लायक सब परती, बजर जमीनको जोत लिया जाय।

दुखराम—तब तो सन्तोखी भाई तुम भगवानसे हैजा पलेग मत मनाओ। रजबली भाई ठीक कह रहे है, कि खूब जाँगर और इलिम लगाया जाय, तो बाहर से न अन्न मँगवानेकी जरूरत है, न भूखे मरनेकी। और अभी तीन पुस्त तक बराबर मुँह बढ़नेसे भी डर नही है। हाँ, लेकिन मालूम होता है, कि बाढ़का पानी गाँवके गोएँड़ा चला आया है तनिक भी देर करनेसे सारा गाँव डूब जायगा।

भैया—यह ठीक कह रह हो दुक्खू भाई। एक छन भी चुप बैठना बहुत खतरेकी बात है।

दुखराम—तो अब तो भैया, अपनी सरकार है, अपने मतिरी लोग हैं। उन लोगोंकी आँखोमे पट्टी बँधी है क्या ? काहे नही इस बाढ़को देखते ?

भैया—पट्टी ही बँधी है न, तभी न कछुआकी चालसे चल रहे हैं।

दुखराम—ये भी बड़ा औगुन है भैया, घरमे आग लगी हो, और बुझानेवाला कछुआकी चालसे चले तो यह बहुत खराब है।

भैया—कछुआकी चाल बहुत खराब है। जो काम करना ही है, उसमे घिसिर फिसिर करनेकी क्या जरूरत ? जिमदारी उठा देना था मुदा आजकल करते लासको घसीटते रहे। अब हाल-चाल खराब है।

सन्तोखी—खराब क्यो न होगी भैया ? जब हरसाल सत्ताइस लाख मुँह नये बढ रहे है। चटपट जिमदारीको गगालाभ कराके नया इलिम लगा अनाज बेसी उपजानेके काममे लग जाना चाहिये था।

भैया—एक-एक परिवारकी नये ढङ्गकी खेती भी नही हो सकती। साझेकी खेती, पचायती खेतीका रस्ता लेना होगा तब नया इलिम लगेगा।

दुखराम—"साझेकी सुई सेङ्गरापर उठती है।" की कहावत हर खेतिहरके मुँहपर है।

भैया—हमारे ही देसमे नही, दुनिया भरमे यह कहावत किसानोके ठोरपर थी, मुदा इस कहावतपर चलनेसे काम नही चालेगा। कितने ही गाँव हैं, जहाँ परिवार पीछे आधा बीघा भी खेत नही पडता, और वह भी आठ जगह छितराया हुआ है। कितनी जमीन तो मेड हीमे चली जाती है। इलिमदार लोग बताते हैं, जो मेड तोड दी जाय, तो अनाज चोरानेवाले मूसोके भगानेसे ही उपज सवाई हो जायगी।

दुखराम—हम तो तइयार है भैया, मुदा गाँवके आदमी क्या राजी होगे ? किसीके पास बेसी खेत है, किसीके पास कम, और किसीके पास कुछो नही। कैसे राजी होंगे ?

भैया—राजी होना पडेगा दुक्खू भाई ! नावमे पानी भर रहा है, जो दोनो हाथसे न उलीचोगे, तो सब डूब जायँगे।

सन्तोखी—हाँ भैया ! जो सत्ताइस लाख सवैया मुँह हरसाल बढते रहे। और तीन-तीन अरब रुपैया का अनाज बाहर से मँगाना पडा तो यह डूबनेका रस्ता तो है ही। मुदा बेसी-कम खेत वालोको भी कोई रास्ता निकालना होगा।

भैया—रस्ता यही है, कि खेतकी उपज मे से जोताई-बोआई-कटाई-सिंचाई-का खरच निकाल दो, बीजका दाम निकाल दो, मालगुजारी निकाल दो और भी कुछ खरच पडा हो, सब निकाल दो; फिर देखो कि सब खरच काट देनेपर कितना अनाज बच रहा है ?

सन्तोखी—कुल खर्च निकालनेपर सात मनमें दो मन बचेगा।

भैया—हर खेत वाले आदमीको एकड़ पीछे दो मन अनाज दे दो। अच्छा खेत हो तो और बांध दो।

सन्तोखी—कहीं-कहीं उपज बेसी है, वहां दो मन कम होगा।

भैया—हम दो मन ब्रह्माकी रेख थोडई कहते हैं।

दुखराम—माने, जितनी उपज हो, उसमेसे सब खरच निकालकर फरक-फरक जमीनपर फरक-फरक भाव बान्ह दो, तो बेसी खेत वाले लोग काहे न राजी होंगे ?

सन्तोखी—एक आदमी राजी नहीं होगा, तो क्या कुल नावको डुबायेंगे ? और जिसके पास बेसी खेत है, उसका खेत भी तो दो पुहुतमे बाँटकर छोटा-छोटा कोला हो जायगा।

भैया—हम यह नहीं कहते कि पचायती खेती हँसते-खेलते हो जायगी, किसी गाँवमे फुटमत बहुत होती है, वहाँ कोई एक दूसरे को देख नहीं सकता। किसी गाँव मे मुरुखताई बहुत होती है, लोग अपना भला-बुरा नहीं समझते। मुदा सौ गाँवमे एक गाँव ऐसा भी मिल सकता है जहाँ सुलह-सराकत बेसी है। उसी गाँवको ले लो, खेत का मलिकाना बान्ह दो। फिर सरकारसे कहो कि हमारा गाँव पचाइती खेती करेगा। हमको सींचनेके लिये पानीका अजन दो, जोतनेके लिए मोटरका हल दो। मोटर-हल बहुत न मिल सके, तो नये ढगका हल और मजबूत बैल दो। बीज और बिलायतिया खाद दो। पथर-कोइला दो, हमारा गाँव अब गोबर नहीं जलायेगा अब सारे गोबरकी खाद बनेगी।

दुखराम—और गाय-भैंस कैसे रहेंगे भैया ?

भैया—दूध देने वाला जानवर अपना-अपना रहेगा। भेड़-बकरी सूअर, मुर्गी भी अपना-अपना।

दुखराम—माने, खाली जोतने वाले जानवर ही पचाइती रहेंगे। मुदा दुधार जानवरके वास्ते भूसा कहाँसे मिलेगा ?

भैया—जिसके घरमे जितने ही पसु होंगे, उतना ही गोबर और खाद भी होगा। पचायत गोबर और खाद का दाम देगी। उसीके मुताबिक भूसा मिलेगा। फिर बछड़ा जो तैयार होंगे, उनका भी तो दाम मिलेगा।

सन्तोखी—औ भेड़-बकरी-मुर्गा !

दुखराम—दुर मरदे ! मुर्गा भूसा नहीं खाता; न भेड़-बकरी को सानी खिलाई जाती है। मुदा भैया ! अकिल बताने के वास्ते खेती का इलिमदार भी सरकार से माँगना चाहिये।

भैया—जोकोकी नहीं, बल्कि हमारी सरकार जब होगी, तो वह कुल काम करेगी। तीन अरब रुपया जमाकरके विदेस भेजना कैसे होगा ?

दुखराम—जैसे रूसमे, जैसे चीनमे, वैसे ही हियाँ भी पचाइतकी खेती ?

भैया बिलेतिया खाद, सिंचाईका इजन, बढ़िया बीज, मोटरका हल, सब पहले पचाइती खेतीको मिलेगा तब किसी औरको।

सन्तोखी—हमको तो भैया, सब बात साफ-साफ लौकती है। जो नये ढगसे पचाइती खेती हो, तो अनाज, आलू, गोभी, तमाकू, मिर्चाका टाल लग जाये। और ऊख भी।

भैया—ऊख तो पाँच सौ एकड़ बो दो, तो गाँवमे एक छोटीसी चीनीकी कल बैठा देंगे।

सन्तोखी—तब तो भैया, लछिमी पैर तोड़कर गाँवमे बैठ जायँगी।

भैया—गाँवमे छोटा-मोटा बहुत तरहका कारखाना खुलेगा सन्तोखी भाई ? दूसो एकड सिगरेटवाला तमाकू जिस गाँव मे बो दिया जाये, वहाँ छोटा-सा सिगरेटका कारखाना भी खडा कर दिया जायगा।

दुखराम—तब तो सुक्खू भाईकी तस्वीर छापके गाँवके नामपर अपना सिगरेट हम चारो खूंटमे चलायेंगे और चारो ओरसे पैसा बहता चला आवेगा।

दुखराम—हमार फोटो छपैगा, तो उसके साथ सोमरिया भौजीका भी छापना चाहिए।

सुखराम—हमको उजुर नहीं, जाके अपनी भौजीसे पहले पूछ लो।

भैया—पचाइती खेती होने लगेगी तो सोमरिया भौजी भी वही नहीं रहेंगी सुक्खू भाई ! अभी कामकी बात हमने कही नही। उपजके बारे मे इतना ही समझो कि यह सैकड़ो गुना बढ़ जायेगी। गाँवमे अपनी लारी होगी जो ढोकर फल तरकारी सहरमे ले जायगी।

सन्तोखी—तब तो भैया, सहरमे अपनी तरकारीकी दूकान खोल लेंगे गाँवके लोगोका टिकाव भी वही हो जायगा।

भैया—कुल होगा सन्तोखी भाई, मुदा मुख बात है धनके आवनको बढाना। रेंडी भी गाँवमे चकका चक बोयेंगे। तेल अलग निकालेंगे। खली की खाद बनेगी और पत्तोको खिलाकर रेसमका कीडा पोसेंगे। गाँवही मे कताय बिनायके असमिया अंडी तैयार होगी।

दुखराम—तब तो महरियोको भी कताईका काम बहुत मिलेगा और गाँवमें जोलाहा भी जी जायेंगे ?

भैया—औ गाँवमे मधुमक्खी भी पोसेंगे।

दुखराम—यह नही करना चाहिये भैया, एक मरखही गायसे रस्ता रुक जाता है, मधुमक्खी काट-काटके मुँह तुम्बा बना देंगी।

भैया—नही दुक्खू भाई, यह मधुमक्खी नही काटती। दूसरे देसोमे लोग बहुत पोसते है। हमारे गाँवमे मधु निकलेगी और मोम ऊपरसे। खूब पैसा आयेगा। लोगों-को बतला देंगे, अपने घर-घरम मधुमक्खी पोसेंगे। इसे पचाइती करने का काम नही।

सन्तोखी—और साबुन नही बनाया जा सकता भैया ?

भैया—रेंडीके तेलसे चाहे तो साबुन बना लें, चाहे बढिया महकौआ तेल। पचाइती खेतीसे सौ तरहका आमदनीका रस्ता निकल आवेगा।

सन्तोखी—आमदनी कैसे बाँटी जायगी भैया ?

भैया—खेत मालिकका बँधा हुआ अनाज पहले निकाल दिया जायगा। फिर बीज, खाद और हथियारका दाम चुका दिया जायगा। बाकी आमदनी मे जो जितना काम किये है, उसी हिसाबसे बाँट दिया जायगा।

सन्तोखी—काम भी तो कई तरहका भैया ? कोई बेसी काम करता है, कोई कम। कोई बेसी मसक्कतका काम करता है, कोई अकिलका।

भैया—'सब धान बाइस पसेरी' नही होगा, सन्तोखी भाई। एक-एक दिन कामका हिसाब होगा। एकड़का छठाँ हिस्सा एक दिन कोड़नेका हिसाब रखा हो और कोई आदमी तिहाई एकड़ कोड़ देगा, तो हाजिरी बहीमे एक ही दिन मे उसके नामपर दो दिनका काम दरज होगा। जो आधा काम करेगा, उसका आधा दिन दरज होगा।

दुखराम—माने कामकी तौल रहेगी। तब तो लोग बेसी-बेसी काम करेंगे?

भैया—हर फसलमे गाँव के समूचे मरद-मेहरारू मिलके जितने दिन काम किये हैं, सब बही मे दर्ज रहेगा। साल भरमे गाँवभरमे कितना काम हुआ, उसको हाजिरी बही ऐनाकी तरह झलका देगी। आदमी को उसीपर बाँट दिया जायगा।

दुखराम—और जिसका सब बखत इन्तिजाम मे ही लग जायगा उसको?

भैया—उसको भी तनखाह दी जायगी। मिस्त्रीको जास्ती पैसा मिलेगा। गाँव मे अपनी पचाइती दुकान भी होगी।

दुखराम—तब तो भैया, नून तेलकी भी आफत न होगी। कपड़ा-लत्ता सब गाँव हीमे मिलेगा?

भैया—गाँवमे पचाइती खेती हो जानेपर सब ठीक हो जायगा। अपनी सरकार भी जिउ-जानसे मदद करेगी। एक गाँवको नमूना बनाकर दिखा देना चाहिये, फिर सैकड़ो गाँव दौड़-दौड़कर आयेंगे और कहेंगे—दुखराम भैया, चलो, हमारे गाँवमे पचाइती खेती बनवा दो।

दुखराम—और जो दू चार आदमी गाँवके सरकसई करें?

भैया—दू चारके सरकसईसे कुछ नही बनना बिगड़ता। उनका खेत एक छोर-पर फेंका कर देंगे।

दुखराम—और जो न मानें?

भैया—कानूनके सामने मानना न मानना कोई नही चलता। कानून ही मनवाने के लिये तो पुलिस पल्टन रखी जाती है।

सन्तोखी—नावमे पानी भर रहा हो और कोई आदमी टाँग पसारकर कहे कि हम उलीचने नही देंगे, तब बताओ दुक्खू भाई क्या करोगे?

दुखराम—क्या करेंगे? उसको टाँग पकड़कर गंगालाभ करावेंगे।

सन्तोखी—पचाइती खेतीसे बेखेतवाले लोगो का भी बहुत निस्तार होगा।

भैया—बेखेतवाले लोगोकी रोजीका रस्ता जो न निकाला गया, तो जैसे ही कारखाने बढ़ने लगे, वह गाँव छोड़के चले जायेंगे। अब दूसरेको भूखा रखके, बाबू बनके, सूद सवाई करसे धनी बनने का जमाना गया। गाँव भरके सुखमे सुख मनाना पड़ेगा और सुख होगा पचायती खेती हीसे।

सन्तोखी—तो कारखाना बहुत बढ़ेगा भैया?

भैया—कारखानेकी बात अब कल होगी, आज बस यही तक।

१६. कल कारखानों का फैलाव

दुखराम—अच्छा हुआ मँगरू ! तुम भी आ गये। बड़े मौके से आये। आज रजबली भैयासे कल-कारखाने की बात हो रही है। तुम्हें तो गिरीडीह की कोइलरी का हाल मालूम ही है।

मँगरू—कोइलरीकी बात क्या पूछते हो दुक्खू भाई ! हम लोग चाहते हैं, कि खूब जास्ती कोइला निकालें, देसको कोयलेका बहुत काम है, मुदा मालिक बीचमें कोई न कोई ऐसा अड़गा लगा देता है, कि काम होने नहीं पाता।

सन्तोखी—कोयलेकी तो बड़ी जरूरत है। हम लोग अपने गाँवमें भी चाहते हैं, कि गोबर की खाद बनावें और पथर-कोइलेसे भात पके, मुदा ई मालिक काहे बीच में टाँग अड़ाते हैं।

दुखराम—इसीलिए न भैया उनका नाम जोंक रखा है। लो भैया, भी पहुँच गये। जय हिन्द भैया।

भैया—जय हिन्द सब भाई लोगोंके। कहो मँगरू ! कब आये गिरीडीहसे !

मँगरू—रात आये रजबली भैया। तीन बरस हो गया देखे, कहा, रजबली भैयासे भेंट कर आवें।

भैया—अच्छा तो, आज बात भी वही होगी, जो तुम्हारे कामकी है। कल कारखाने का बढ़ाना बहुत जरूरी है और यहाँ काम बहुत जल्दी होना चाहिये।

दुखराम—माने, कछुआकी चालसे नहीं होना चाहिए।

भैया—पेटकी भूख दूर करनेके लिए पचाइती खेती करनी चाहिए। दे हमारा सुतन्तर और मजबूत तभी होगा, कल-कारखाना बढ़ेगा। जानते हो "दुब्बरकी मेहरारू सबकी भौजाई।"

सन्तोखी—और धनकी आमदनी भी भैया कारखाना हीसे ज्यादा होती है

भैया—बल और धनकी दोनो खातिर कल-कारखाना चाहिए। अब हम देश सुतन्तर है। हमारे पास अपनी पल्टन है। पल्टनको कितना हथियार चा और आजकलका हथियार बुद्ध ठाकुर की लोहसारमें नहीं बन सकता।

सन्तोखी—अपने यहाँ भी अणुआ बम बनना चाहिए भैया ? क्या जाने, किसी दुश्मनकी आँख हमारे ऊपर पड़े।

भैया—वह भी चाहिये, लेकिन सबसे पहले अपनी फौज के लिए लड़ने उड़नखटोला (हवाई जहाज) चाहिए, लड़नेवाली मोटर चाहिये, और टं चाहिये।

दुखराम—टंकके बारेमें तो कहा था न भैया ?

भैया—टंक है चलता-फिरता किल्ला। जैसे किले की दीवालपर छोटी तोपका कोई असर नहीं होता, वैसे ही दो-दो, तीन-तीन अगुल मोटी इस

चादरवाले टकपर गोला-गोलीका कोई असर नहीं होत। गोलागोलीकी बरसा होती रहे, तो भी वह चला जाता है। वह सड़कपर ही नहीं, खेत-खाई, भीट-पहाड़ सबपर रेंगता चला जाता है। बड़े-बड़े घरोंको तो वैसे ही उलटते चला जाता है, जैसे सूखे पत्तेके ढेरोंको भैंसा। वह पहिया नहीं, सिक्कड़पर चलता है।

सन्तोखी—अपनी पल्टनमें टक है भैया ?

भैया—है, मुदा सब उधारका। माँगे हथियारसे आज-कल अपना बचाव नही हो सकता। सकट आनेपर अँग्रेज या दूसरे देसका मुँह जोहना पड़ेगा।

दुखराम—नही भैया ! हथियारके बारेमे मुँहजोहाई ठीक नही।

भैया—इसीलिए पिस्तौल, बन्दूक, तोप, टक, उड़नखटोलामे लेकर अणुभाबम तक सब अपने यहाँ तैयार होना चाहिए।

सन्तोखी—हमारे यहाँ कोई हथियार तैयार भी होता है भैया ?

भैया—अँग्रेज हमारा हथियार छीन लिए थे, इसीलिए न कि हम बाछी बन जायें ? वह भला काहे हिन्दुस्तानमे हथियार बनने देते ? पिछली लड़ाईका जब चाँप पड़ा तो कुछ छोटे छोटे हथियार बननेका इन्तिजाम किया। अच्छे किसिमके इस्पात तकको नहीं बनने देते थे। इसी लड़ाईने एक इस्पातका भट्ठा ताताको बनाने दिया। अपने देसम न मोटर बनती, न उड़न खटोला, न टक, न रेडियो बाजा बनता। बताओ जो कभी देसपर लड़ाईका सकट आये तो हमारा गला दूसरोंके ही हाथमे रहेगा न ?

दुखराम—हाँ, भैया ! इसमे क्या सन्देह। छोटेसे बड़े तक सब तरहका हथियार जब तक अपने देसमे नही बनेगा, हम निहत्थेके निहत्थे रहेंगे।

भैया—सब हथियार अपने यहाँ बनना चाहिये। हथियार का कारखाना बनेगा, तो उसीसे सवारीकी मोटर, माल ढोनेकी लारी, मुसाफरका उड़नखटोला भी बनेगा, और देशका करोड़ो रुपया बाहरसे बच जायेगा। यही नही, हम अपना माल दूसरे देसमे भेजेंगे और बाहरसे भी खूब धन आयेगा।

सन्तोखी—है तो भैया ठीक ! मुदा हमारे पास कारखाना खड़ा करने और माल तैयार करनेके लिए सब चीज-वहुत भी है ? फिर वैसी इलिम भी तो चाहिए।

भैया—लोहा, तामा, कोइला, रबड़ सब चीज* अपने इहाँ है। इलिम अकिलका जो अपने यहाँ टोटा है वहाँ भी ऐसा नही है कि पूरा नही किया जा सके। मतारीके पेटसे कोई इलिम-अकिल सीखके नहीं आता। बड़े-बड़े लोग हमारे देशमे आज भी हैं, जिनका लोहा दुनिया मानती है।

मँगरू—हाँ, भैया ! हम अपनी कोइलरीमे देखते हैं कि सब बड़का-बड़का इन्जिनियर और मिस्त्री अपने देस के हैं। भैया सब चीज अपने देसमे है। जल्दी अपने देसको मजबूत करना बहुत जरूरी है। अब एक-दो लोहा इस्पातके कारखानेसे काम नही चलेगा।

दुखराम—कैसे काम चलेगा ! पचाइती खेतीके लिए हमे मोटर हल चाहिये, सिंचाईके लिये अजन चाहिये, चीनी और सिगरेट बनानेकी कल मसीन चाहिये।

*इसके बारेमे देखियें 'आजकी राजनीति।'

सन्तोखी—बाहरसे सब चीज मँगानेमें एकका सौ देना पड़ेगा, फिर इतना पैसा हम कहाँसे लायेंगे ?

भैया—हाँ, सन्तोखी भाई ! छ-छ, सात-सात लाख गाँव हैं। एक-दो गाँवका इन्तिजाम करना हो, तो बेंच-खोचकर कुछ पैसा बटोर भी लें, लेकिन कुल देसका काम इस बेंच-खोचाईसे नहीं होगा। हमारे यहाँ पचासों जगह लोहा भरा पड़ा है। एक-एक जगह एक-एक ताता जैसा कारखाना खड़ा कर सकते हैं। छोटा नागपुरमें और कितनी दूसरी जगह ताँबा है। सब ताँबा निकालना होगा, नहीं तो कल-कारखानोंकी चीज नहीं बन सकेगी। मटिया तेल खाली आसाममें निकला है। अभी बहुत जगह उसके वास्ते खुदैसोधाई करनी है। नदियाँ सब बिजलीसे भरी हुई हैं,यह मुफ्त मीठा पानी बाहरके समुन्दरमें ले जाकर खारा नहीं बनातीं, बलुक टालकी टाल बिजली भी बहा ले जाती हैं। जहाँ नहरका बड़ा-बड़ा बान्ह बँधेगा, वहाँ बिजली पैदा की जा सकती है और गाँव-गाँव मटिया तेलकी डिबरी बालनेका काम नहीं पड़ेगा।

सन्तोखी—गाँव-गाँव बिजली बत्ती लग जायेगी, तो गाँव जगमगा उठेगा और हमारे पंचाइती गाँवमें तो सबसे पहले बिजली आयेगी। है न भैया ?

भैया—जरूर ? मुदा बिजलीसे घर ही नहीं जगमगायेगा, उससे तेल-कोइलाका खरच छूट जायगा। सिचाई के अंजनका खरच कम हो जायेगा; तेल-कोइलाका अंजन न लगाकर हम लोग बिजलीका छोटा अंजन लगा लेंगे। चीनी सिगरेटकी कल बिजलीसे चलेगी। घरकुट्टी मसीनमें भी बिजली लगा देंगे,चारेका टाल लग जायेगा। मोटर हाल भी बिजलीसे चलेगा। फिर जितनी रेल है, सबमें कोयला झोंकनेका काम नहीं पड़ेगा।

मँगरू—पथरकोइलाका काम तो बन्द नहीं हो जायगा, भैया ?

भैया—नहीं मँगरू ? पथर-कोइलाका खरच बहुत बढ़ जायगा, उसीको बचानेके लिये पनबिजलीकी बहुत जरूरत पड़ेगी। लोहा, तामा, अलमुनिया को गलाकर तैयार करनेमें पथर-कोइला बहुत खर्च होगा और गोबर बचानेके लिए घर-घरमें चूल्हेके लिए पथरकोइला देना पड़ेगा। तुम घबड़ाओ मत—मँगरू कोइलरीका काम बन्द नहीं होगा। आज जितना कोइला निकलता है, उससे बीस गुना अधिक कोइलेकी माँग होगी। फिर खाली लोहा-तामाकी सिल्ली बाहर करके ही छोड़ नहीं देना है, उनसे सब कल-मसीन बनाना होगा।

सन्तोखी—हाँ, भैया ! कल-मसीन बाहरसे मँगाकर एक का सौ देना बेबूझका काम है।

भैया—अपने देसमें घड़ी बनेगी, रेडियुबाजा और फोनूगिलाफ बनेगा। मोटर और बाइसिकिल बनेगी। बिड़लाकी तरह नहीं कि पुर्जा बाहरसे मँगा लिया और यहाँ बैठकर जोड़ दिया औ बस ! सब चीज अपने ही यहाँ ढाली जायगी, अपने ही यहाँ जोड़ी जायेगी। जो चीज अपने देसमें नहीं है, उसे अपने यहाँके कारखानेका माल भेजकर बदल मँगाया जायगा।

मँगरू—मुदा जो यह कुल कल-कारखाना सेठोंके जिम्मे लगा दिया, तो सब गुर-गोबर...

भैया—ठीक कहते हो मँगरू ! बिजली, लोहा, तामा, कोइला, कल-मसीन बनाई यही देसका जीव है। जोंकोंको अपने जीवसे खेलवाड करनेका मौका नही देना चाहिये। सेठोंके पास इतना पैसा भी नही है, कि ऐसे बडे-बडे कारखानोंको जल्दीसे देसके चारो खूटपर खोल दें।

मँगरू—हाँ भैया ! सेठ देसकी भलाईका कभी ख्याल नही करते। उनको सबसे पहले अपना 'लाभ-सुभ' चाहिये, देस जाय चूल्हा-भाडमे। हम लोग कोइला-खान वाले मजूर तिलमिलाकर रह जाते हैं। हम चाहते है कि वेसीसे बेसी कोइला निकालें, मुदा सेठ सोचता है—बेसी कोइला निकला, तो सस्ता हो जायगा, नफा कम होगा। फिर सेठ ऐसा तिकडम लगाता है, कि कोइलरीमे हडताल हो जाय !

दुखराम—माने मजूर लोग काम करना छोड दें, और कोइला निकालना बन्द हो जाय। यह भी तो कसाईका काम है।

भैया—कोइला सबकी जड है दुक्खू भाई ! कोइला कम हुआ कि कारखाना को रोकना पडा, रेलको कम करना पडा। सब जगह मजूर बेकार हो जायँगे औ कारखानोंसे कपडा और दूसरी चीजो के न उपजने से देसभरमे हाहाकार मच जायगा।

मँगरू—तो भैया जो काम देसके जीवकी तरह है, उसे कभी सेठोके हाथमे देना नही चाहिये।

भैया—अभी तक जो सेठोंके हाथमे लोहा-कोइला, पनबिजलीका काम है, सबको सरकार हथिया ले, और आगे खूब जोर लगाके नये-नये कारखाने खोले। पनबिजली भी बढाना चाहिये, नही तो सचमुच ही कोइलेसे पूरा नही पडेगा। पनबिजली तो हमारे यहाँ अलमगज मे है। सतलज, बियास, जमुना,गगा, राम-गगा, सरजुग, रापती, गडक (नरइनी), कमला, कोसी, ब्रह्मपुत्र, सोन, दमोदर, महानदी, नरबदा, तापती, गोदावरी, किसुना, कावेरी...देखो न कितनी बडी-बडी नदियाँ अपने देसमे हैं ?

दुखराम—और नदियाँ सब सिचाईका पानी, कामकी बिजली बेकार बहाये लिये जा रही हैं।

भैया—हाँ, सबको जूए मे नाधना होगा। बाँध बाँधके पचासो कोसका समुन्दर एक-एक जगह बनाना होगा।

दुखराम—इसमें तो बहुत आदमियोको काम मिलेगा।

भैया—एक-एक समुन्दर बनाने के लिए चार-चार, पाँच पाँच लाख आद-मियोका काम पडेगा। मुदा अपने यहाँ आदमियोकी क्या कमी है ?

सन्तोखी—कलकत्ता बम्बईकी चटकल-पटकल गाँवके मजूरोको कलकत्ता खीच ले जाती रही। लडाईके बखतमे हवाई जहाजका अड्डा अब जगह-जगह बनने लगा, तो गाँवमें मजूरोका मिलना मुसकिल हो गया। आदमीके बिना कहीं पचइती खेतीमे तो हरज नहीं होगा ?

भैया—मजूरोकी कमी तो जरूर होगी दुक्खू भाई ! पचइती खेतीसे फरक रहने वाले गाँवो के मजूर तो फुरसे उड जायँगे।

दुखराम—अच्छा ! तब देखेंगे, बबुआ तिवारीका हुस कैसे चलता है ? मजूरी देते समय बडा सतजुगका अइन-कानून छाँटते हैं।

सन्तोखी—इसके वास्ते भी पचइतीका रस्ता ही ठीक मालूम होता है। मरद-मेहरारू सबको काम मिल जायेगा।

भैया—कल-कारखाना खूब जोरसे जो बढ़ाया गया, तो पचीस बरसमे अपना देश धनधानसे अटूट हो जायगा, कहीं कोई भूखा-दूखा नहीं रह जायेगा।

मँगरू—जो कोइलाकी खान सेठोंके हाथसे निकालके समूचे देसके हाथमें चली आयगी, तो हम लोग खूब हुमुचके काम करेंगे, और कोइलाका कमी टोटा नहीं पड़ने देंगे।

भैया—हाँ, मँगरू, और लोहा, तामा, पन बिजली सब जगह मजूर हुमुच-हुमुचके काम करेंगे। मजूरको जब मालूम होगा, कि वह सेठकी थैली भरनेके लिए नहीं काम कर रहा है, वह देसकी भलाईके लिए काम कर रहा है, तो न रात गिनेगा न दिन, खूब मन लगाके काम करेगा।

भैया—हाँ, क्या हम आधा पेट भूखा रहके भी देसके लिए काम करेंगे। मुदा सेठोंकी ही सरकारमे भी चलती है। पुलिस भी उनकी ही मदद करती है।

भैया—आज तो सेठोंकी ही सरकार है। मजूर इलिमदार लोग मिलकरके सब चीजका इतिजाम करेंगे, तभी ठीकसे काम चलेगा। जोंकोंका बिदा करना ही होगा।

मँगरू—तब सब जगह साती हो जाएगी भैया ! फिर काहे को हड़ताल करेगा ? आमदमी-खरच हम लोगोंकी आँखोंके सामने रहेगा और हम—उतनी ही मजूरी लेंगे, जिसमे काम भी चलता रहे, और हमारी भी रोजी चले।

भैया—खाली रोजी ही नहीं, मजूरोंके लड़कोंके पढ़ानेका इतिजाम करना होगा। रहनेके लिए सूअरकी खोभार नहीं, पक्का मकान बनाना होगा। अस्पताल, दवा दरपनका पूरा इतिजाम करना होगा। कमासुत पूतका खाली पेट भर देनेसे छुटकारा नहीं लेना होगा।

सन्तोखी—और कपड़ा, चीनी और दूसरे कारखानोंके बारेमे क्या होगा भैया ?

भैया—कल-कारखाना तो सभी देसके हाथमें होने चाहिए, जोंकोंके हाथ मे रहनेमे बहुत गडबड होती है।

मँगरू—हाँ भैया, सेठ खाली अपनी थैली की ओर देखते हैं। चीज कमसे कम पैदा करके महँगा बनाकर सो भी चोर बाजारमे बेचकर थैली भरते हैं।

सन्तोखी—और चीज महँगा होनेसे समूचे देसको तकलीफ होती है।

भैया—आजकल जो देसमे चीज इतनी महँगी है, उसका कारन यही है कि चीज कम पैदा होती है और खरीदने वाले जादा हैं। सरकार जब चीजके भावपर अंकुस रखती है तो जोंकें चोरबाजारी करने लगती हैं और लोगोंकी आँख मे धूल झोंकके एकका नौ लेती हैं। मुदा पहले कुछ साल तब छोटे-मोटे कारखानोंको सेठोंके हाथम रखना होगा।

मँगरू—तब तो मजूरोंका गला रेता गया न भैया ?

भैया—एक ही दिनमे मँगरू, सब कारखानोंको लेने की जरूरत नही । पहले जडको पकड़ना चाहिए । पन-बिजली, लोहा, तामा, कोइला, मसीन और रसायन बनानेका कारखाना देसके हाथमे चला जाना चाहिए, और दूसरे कारखानोपर पूरा अंकुस होना चाहिए, जिसमे मजूर हकसे बेहक न हो, उनको पूरी मजूरी मिलनी चाहिए । रहनेके लिए अच्छा मकान बनाना चाहिए । स्कूल-अस्पताल का पूरा इतिजाम होना चाहिए । मजूर सभासे बिना पूछे किसी मजूर को निकालना नही चाहिए । कारखानेके इंतिजाममे भी मजूरोंके आदमी होने चाहिए । सेठके नफाको भी मनमाना नही होने देना चाहिए । पहले इतना हो जाना चाहिए । पीछे तो फिर जोकों को हटाना ही है ।

मँगरू—मुदा भैया, सेठ इसपर राजी होंगे ? कितने सालो से उनके मुँहमे खून लगा है । बड़े-बड़े भगत सेठ लोगोको देखा है चीटीको चीनी सतुआ खिलाते हैं, मुदा मजूरका गला काटने के लिए सबसे बड़े कसाई हैं ।

भैया—यह तो लोगोके हाथमे है मँगरू ! जानते हो न, अब सरकारमे वो ही लोग जायँगे जिनको २०-२१ सालसे बेसी उमिरवाले सब मरद-मेहरारू बोट देंगे ।

दुखराम—तो भैया अब बोट खाली पैंसेवालेके हाथमे नही है ?

भैया—नही अब बोटमे न गरीब न अमीर देखा जायगा, न मरद-मेहरारू । सब लोग जिसको अपना बोट देके चुनेंगे, वही जाकर राज-काज चलाने के लिये अपनी सरकार बनायेंगे । जो लोग चाहेंगे कि जोकें रहे, तभी जोकें रह पायेंगी ।

सन्तोखी—लोगोमें तो बेसी जोकोको अपना दुस्मन ही समझते हैं, फिर कौन जोकोको बोट देने जायगा भैया ?

भैया—यह न कहो सन्तोखी भाई ! लोगो की आँखोमे धूल झोकनेकी बिद्या जोकें बहुत जानती हैं । वह भेस बदलके बहुरुपिया बननेमे बहुत हुसियार हैं । वह तो तुम्हारे पास आएँगी गोरच्छाका झंडा लेके कहेंगी जो हमको बोट न दोगे तो हिन्दू धरमका छयकार हो जायगा ।

सन्तोखी—बहुत बड़ा खतरा है भैया ! जोकें जातका नाम लेके आएँगी । अपनी मुढताईसे लोग बहक जाते हैं, औ नही जानते कि जोंकोकी कोई जात नही होती, वह सबका खून चूसती हैं ।

भैया—बहुत सजग रहनेकी जरूरत है । जोकोंके फंदेमे जो पडे तो फिर देसके सुतन्तर होने [illegible] कोई फायदा नही । उसी तरह हम भूखे मरेंगे ।

सन्तोखी—हमको तो बराबर मनमे आ रहा है, वही हरसाल सत्ताईस लाख सवैया मुंहके बढने और तीन अरब रुपिया भेजके विदेससे अनाज मँगानेका । हमे किसीके धोखेमे नही पडना चाहिये, और जोकोंके लिए एक भी बोट नही देना चाहिए ।

भैया—हाँ, सब लोगोको यह गाँठें बान्ह लेना चाहिए और हिन्दू-मुसलमानके नामपर मरना नही चाहिए । गरीबो की भलाई होगी, तो हिन्दू-मुसुलमान जोंकोका जाल चला, तो मरना होगा हिन्दू-मुसुलमान दोनोको ।

दुखराम—यह जोको और कमेरोकी लडाई कब तक रहेगी ?

भैया—यह तब तक रहेगी, जब तक जोकोंका टाट नही उलट जाता।

मँगरू—लडाई बहुत सङ्गीन है और चारो ओर घूम रहे हैं बहुतसे रँगे सीयार। देखें कैसे कमेरोका बेडा पार होता है।

भैया—बेडा जरूर पार होगा मँगरू! मुदा कमेरोके हकके लिये लडनेवाले जो आपसकी लडाई छोड दें तब।

मँगरू—हाँ भया, इससे बडा नुकसान होता है। कमेरोके लिये सोसलिस्ट भी लडते हैं, कमुनिस्ट भी लडते हैं, फरवरवलाकी भी लडते हैं, करान्तिवाले सोसलिस्ट भी लडते हैं, मुदा फिर आपसमें लडने वखत कमेरोकी वात भूल जाते हैं। हम लोग तो बडी दुविधामें पड जाते है।

भैया—हाँ ठीक कहा मँगरू। असल मुद्दा है कमेरोका राज बनाना, लेकिन अपनी मुढताईसे अपने-अपने दल औ पाटीको ही वह असल मुद्दा समझ लेते हैं। चाहे, जो जिस पाटीमें हो, उसमे रहे। अपना देस इतना बडा है, कि सब पाटीके लिए जगह है, मुदा कमेरोकी भलाई मनमे रखते और मरकस बाबाके चेला होते जो आपसके मनमुटावको फरका रखके जोकोसे लडनेमे आगे नही रहता, वह बहुत नालायक है। देस सुतन्तर हो गया, लेकिन किसान-मजूर और कलम-घिसवैया मजूरोकी दसा पहलेसे बुरी है। अब सबको एक साथ उठके विजय पताका गाडनी है।

२० कमेरों का राज

चौपालमे कोयला-मजूर मँगरू, गाँवकी छोटी दुकानवाले सन्तोखी, और किसान दुखराम बैठे किसीकी बाट जोह रहे थे। इसी बेरा रजबली आते दिखाई पडे। तीनोंका मन हरा हो गया और पास आते ही 'भैया, जय हिन्द' कह कर उन्होंने स्वागत किया। आज भैया हीने बात सुरू की—सब भाई जानते हैं, कि लडाईके समय मे कितनी तकलीफ हमारे देसके गरीबोको भोगनी पडी, पिछले [redacted] बरसमे तो हद हो गई। हर साल नेता लोग कहते रहे अब अच्छा दिन लौटेगा, मुदा अच्छा दिनका कही पता नही।

मँगरू—पता कहते हैं भैया, औ अच्छे दिनका। आज तो नोन-तेल-लकडी जुटाना भारी मुस्किल है।

दुखराम—मँगरू भाई, सहरके लोग समझते होगे, कि नून-तेल-लकडीका चाहे कुछ भी दुख हो, मुदा किसानोको अन्नका कोई काल नही है।

मंगरू—हाँ दुक्खू भाई, झरिया वैसे तो कोइलरीके लिए मसहूर है, हजारो मजूर धरतीके पेटमे से कोयला निकालते हैं, मुदा हम लोगोकी कमाईमें हिस्सा लेनेके

लिए बनिया-महाजन भी बहुत बस गये हैं। ऊ लोग कहते हैं, कि आजकल जब सेर-सवा-सेरका चाउर बिक रहा है, तो सबसे मौजमे गाँवके किसान हैं।

दुखराम—आनके मुँहकी बहुरी (भुना हुआ जौ) बहुत मीठी लगती है। सहरके सेठ या बाबू लोगोंको क्या पता, कि हमारे गाँवमे आधे लोगोंके पास खेत ही नही हैं। वह मजूरी-बनिहारी करके जीते हैं।

मँगरू—सो भी सालमे कुछ ही दिन। जो सूखी रोटी भी मँडुआ-बजराकी मिल जाती, तो दुक्खू भाई हम लोग काहे झरियामे जाकर दिन-रात खटते, गाली-मार सहते और घरके बेकस-परानीको दुख सहने के लिए छोड़ आते? भैया, तुम तो गाँवके हो और सहर, देस परदेस भी देखे हो, हमारे लोगोंकी तकलीफ तुमसे छिपी नही है।

भैया—मँगरू भाई, हमारे देसमे मुट्ठीभर लोग हैं जिनको अँगुरी पर गिना जा सकता है, वही मौजमे हैं और उन्हीके लिए ई सुराज भैया है।

सन्तोखी—भैया, हमको तो दिखाई पड़ता है कि खाली सेठ लोग ही मौजमे हैं।

भैया—हाँ सन्तोखी भाई, चोर बजरिहा लोग बड़ी मौजम है। एक लगावे चार पावेकी कहावत उनके लिए ही ठीक है। मुदा, ई मत समझो कि सहर-बाजारमे जितने लोग कपड़ा अनाज या दूसरी चीज चोरी चोरी बेच रहे हैं सब सुख और निचिन्ताईमे हैं। ठीक से देखो, तो पता लगता है कि लखपती चोर-बजरिया भी तुमसे अच्छी दसामे नही है। जो कभी पकड धकड होती है, तो वही पकडे जाते हैं बड़े बड़े चोर बजरिहाको कोई नही पूछता। सबसे बडे दस-बारह चोर-बजरिहा हैं उनका ही तो ई राज है। सुराज भया है तो उन्हीके लिए। यह देसका गला रेत रहे हैं मुदा कोई पुछवैया नहीं।

सन्तोखी—तो भैया, लखपती चोर-बजरिहाका भी कोई ठौर ठिकाना नाहीं है।

भैया—नहीं सन्तोखी भाई, ऊ तो वही धाम चोर-बजरिहोके दलाल हैं। थोडी-सी दलाली इनको मिल जाती है और जोखिम भी इन्हीको उठाना पड़ता है, बाकी समूचा धन तो बहकर वहीं बड़े चोर-बजरिहोके घरमे चला जाता है। जिस बखत देसके ऊपर आखिरी संकट आयेगा, उनका टाट उलटनेमे देर नही होगी।

दुखराम—कहो भैया, ई लोग तो दुनिया भरका धन जमा करके घरमे रख रहे हैं।

सन्तोखी—दुक्खू भाई हम तो न लखपती हैं, न हजारपती। कुछ सौ रुपयाका सौदा-सुलुफ खरीदके ले आते हैं और उसीसे चार पैसा कमाके लडका परानीको जिलाते हैं। मुदा हमे मालूम है कि कितनी बेईमानी सैतानी करनी पड़ती है, और हम कितना जोखिम उठाते हैं। कहनेको तो कहते हैं कि कंठरोल लोगोंके फायदेके लिये किया है, मुदा नही समझो कि पहले खाली पुलिस और कचहरीके अमलाकी लूटके मारे लोग परेसान थे, और अब कंठरोलकी आडमे जो कुछ हो रहा है, उसकी कुछ न पूछो।

मँगरू—तो भैया, कठरोलवा उठाया काहे नहीं दिया जाता ?

भैया—मँगरू भाई, यही तो वड़ी-बडी जोकें, बडे-बडे चोर-बजरिहा रात-दिन रट लगाये हैं, एक बार उन्होंने गाँधीजीको भी भरमा दिया और जैसे ही कपडासे और-और चीजसे कन्ठरोल हटा, कि इन अतताइयोने दाम दूना-चौगुना बढाके अरबो रुपया लूटके घर दिया। देखा नहीं कपडा कितना मंहगा हो गया।

दुखराम—तो भैया कन्ठरोल रखने पर सिपाही चपरासीसे लेके हाकिम-हुकुम, सरकारी मन्तरी तक सब जगह घूँस-रिस्वत की बाढ आ जाती है। क्या किया जाय ? हमारी तो सीधी-सीधी अहिरकी जात है। जहाँ कोई रस्ता नही दिखाई पडता, वहाँ लाठीसे रस्ता निकालते है।

भैया—दुक्खू भाई, आजकलके अणुवाँ बम, तोप, टक, बन्दूक, मसीनगनके जमानेमे लाठी बेचारी क्या करेगी ?

दुखराम—भैया तो क्या करे, गाँवमे आधे लोगो के पास खेत नही हैं। जिनके पास खेत नही हैं उनमे हमहूँ हैं। खाली नाँव रखनेके लिये दस परानी खातिर चार बीघा खेत है। चैतमे पेट भरता है, बैसाखमे सुमरिया हाथ खीच लेती है और बडे मुस्किलसे आधे असाढ तक आधा पेट देके लडके-बालकोको जिलाती है। यही दसा गाँवके सौमे दस घर छोडकर सबकी है। अनाज मँहगा हो गया है, तो इससे लाभ है खाली ओही सौमे दस घरवालोको जिनके पास खानेसे फाजिल अनाज है। कपडा खरीदने जाते हैं, तो दाम सुनके टाँग थहराने लगती है। लौट आते हैं, लेकिन लडिकनको जैसे लगोटी पहनाके वैसे मेहरियन को तो नही रख सकते। अब तो नाकमे दम आ गई है।

भैया—दुक्खू भाई, तुम समझते होगे कि गाँवके गरीब किसानोको ही नरक भोगना पड रहा है। यही दसा बजारके हजारपती नही कितने लखपती हो बनियोकी भी है। भले तिनके आसरा पर मुनाफा नही मूल खा-खाके उनमेसे कितने ही आज बडे सकटमे फँसे हैं। कलम घिसवइया बाबू लोगनकी तो दसा हमसे-तुमसे भी खराब है। लडका-लडकीके पढानेके लिए पैसा कहाँसे लावे, जब तनखाहमे से रुपयामे बारह आना नून-लकडीमे ही चला जाता है। लडकी सयानी हो जाती है, पैसा नही कि बियाहका इतिजाम करें।

सन्तोखी—हम तो समझते थे भैया, कि बाबू लोग बड़े मौजमे होंगे, चोर-बजरिहा जैसे मुनाफा कमा कमाके घरमे रुपया गाँज रहे हैं, वैसे बाबू लोग घूस-रिस्वत ले-लेकर।

दुखराम—हाँ भैया, जब अँगरेज लोग भाग गये और अपने देसके नेता लोगके हातमे राज आया, तो बडी उमेद भई थी और घूस-रिस्वत लेनेवाले बाबू-भैया डर भी गये थे, मुदा अब कुछ ना पूछो। दरोगाजी नम्बर दसमे नाँव लिखनेकी धमकी देके घरका थाली-लोटा सब बिकवा रहे हैं। केतेक दिनवाँ, हो केतेक दिनवाँ, कब तक ई कुल सहना पड़ेगा। आगम तो अँधियारा मालूम होता है। भैया, अब तक हमारे जैसे लोगो को आखिरमे लाठीका सहारा रहा, सोई तुम मना करते हो।

भैया—देसमे जो लोगोको इतनी साँसत सहनी पड रही है और अगरेजोंके जानेके बाद दिन पर दिन दसा और खराव होती गई, इसे देखके तुम कहोगे कि अपने भाई लोगोंके हातमे अव तो सरकार है, अव काहे ई सब होता है।

मँगरू—भैया, हम कहें। हमे तो बूझ पडता है, कि जोकें किसीके भाई-वहन नही होती। जिसका भी खून उन्हे मिले, उसके देहमे मुंह लगा देती हैं, औ पेट भर जाने पर भी खून खीचती ही जाती हैं। वही जोकें न हमारी सारी सारी विपदाका कारन हैं ?

भैया—ठीक का मँगरू भाई, ई सरकार भी जोकोकी है, जोकोके लिये है। काजल की कोठरी है न ? ईमानदार कागरेसी भी सरकारमें गये थे। कुछने छ महीना अपनेको रोका, कुछने एक बरिस और किसी-किसीने कुछ और दिन, मुदा देखा की उनकी तपस्यासे कुछ नही होनेवाला है। सब जगह 'राम नामकी लूट है, लूट सकै सो लूट। जोको ने उनके सामने भेंट-सौगात, बेटा-बेटी के वियाह-सादीमे, पूजा-पतिस्ठाके नामसे सोना-असरफी फैला दिया, हजार नही लाख-लाखके नोट हातमे थमा दिया।

सन्तोखी—हाँ भैया, देखते तो हैं, कल तक जिनको फटा लतरा नही मोवस्सर रहा, आज ऊ अपनी मोटर चढे घूमते हैं।

भैया—कितनोंने तो सन्तोखी भाई मोटर लेनेको भी रोजगार बना लिया। कन्ठरोलमे छ हजारकी मोटर ली, औ चोर-बजरियोमे चौदह हजारमे बेंच दी।

दुखराम—हमारी बूझमे आता है भैया, कि घूस-रिसवत लेनेवाले और चोर-बजरिहा लोगोंके मुंहम खून लग गया है, मुंह लगा खून नही छूटता ? फिर बताओ लाठी छोड इसकी कौन दवा है ?

भैया—दुक्खू भाई, हत्याका रस्ता ठीक है कि वेहत्याका, इसके बारेमे हम यहाँ कुछ नही कहते। अततार्डको जानसे मारने मे दोस नही है। इहै बात ठीक है। मुदाई बात भी मनमे गठियाय लो, जैसे अगरेज हमारे देसकी जनतासे डरते रहे, वैसे ई उनकी गद्दी सभालनेवाले हमारे नेता लोग भी डरते हैं। इसीलिए इन्होने अङ्गरेजो-के समयके सभी बडे-कडे आईन-कानूनोको बनाये रखा। काँगरेस एक बेरा चिल्लायके अगरेजो से कहती थी, कि हथियारका कानून रद्द करो, उसे बनाके तुमने देसको निहत्या कर दिया। मुदा काँगरेसिया लाग जब गद्दी पर बैठे, तो ऊ कानून जैसाका तैसा आजहू काल चल रहा है। जो जगली जानवरके भैया चोर-डाकूसे बचनेके लिए बन्दूकका लैसन माँगो, तो पूछा जाता है तुम कै सो एकम-टिक्कस देते हो, तुम खान्दानी हो के वेखान्दानी।

दुखराम—तो इसका मतलब तो यही हुआ न, कि दुक्खूके हाथमे लाठी छोड बन्दूक न आने पावे।

भैया—मुदा, बन्दूक क्या तोप और टकसे भी बढकर हथियार जनताके हाथमें आ गया है।

मँगरू—सो क्या भैया ?

भैया—ऊ है इक्कइस बरससे बेसी उमिरके, सब मरद-मेहुरियोंको सरकार चलाने खातिर मेम्बर-पंच चुनने का हक मिला है।

दुखराम—पचाइत के चुनावमें तो हम सब नान्ह जातके लोग इकवट गये रहे, औ कितना गाँवनमें बाभन-छत्री-लाला लोग हमारी गोड़धरिया करते रहे, दाढ़ी मुहराते थे, कि भैया हमको भी वोट दे दो, जे हम भी पंचाइतमे चले आएँ। मुदा रँगुवा सियारनको हम भली-भाँति पहिचानते हैं। हमने जो बाभन-छत्री-लालामें किसी को पंच बनने भी दिया, तो उन्हीं जवानको, जो जोंकों को नहीं पसंद करते।

भैया—बड़ी जातके गरीबोंकी ई मुढताई है दुक्खू भाई, जो अपनी जातका होनेसे जोंकोंको अपना समझते है। फिर जिनको नान्ह जात औ अछोप (अछूत) कहते है, उनको तो सदा चूसते रहते, पनपने नहीं देते, देहपर माँस नहीं चढ़ने देते। अपमान और बेइज्जती तो पग-पगपर करते ई है। इसीलिए पंचायतके चुनावमें छोप-अछोप हिन्दू-मुसुलमान सब नान्ह जातके लोग एक हो गये। जानते हो ना सौमें बीस ही बड़ी जात के लोग हैं। चाहे बाभन-छत्री-लाला हो, चाहे सेख सैय्यद, मुगल-पठान हो। बाकी अस्सी नान्ह जात के लोग हैं। जो नान्ह जातके लोग एक हो जायँ, तो अपने बलबूतापर वह कमेरोंका राज बना सकते हैं। समझानेपर बड़ी जातके कमेरे भी समझ जायँगे कि जोंकोंके साथ रहनेमें उनकी भलाई नहीं है। जोंकोंने उन्हें अपनी जातका कहके बड़ा जो बनाया, वह खाली ठगनेके लिये।

मँगरू—लेकिन भैया, बड़ी जातके कमेरोंकी आँखमें पट्टी बँधी है, हम कमुनिस्तो की बात नहीं करते, वो तो तन-मन-धन से कमेरोंका राज चाहते हैं। झरियामें हम रोज देखते है। वह जात-पाँत कुछ नहीं मानते। जो भी कमेरे हैं, उन सबको अपना भाई समझते है औ हम भी उनके खातिर परान देते हैं।

दुखराम—भैया तुमने जो ओक पुरान सुनाया था औ कहा कि मरकस बाबा ने जोंकोंसे बचानेके लिये कमेरोंको रस्ता दिखाया। उनका रस्ता तो हमें बहुत ठीक जँचता है। कमेरे खाली मरकस बाबाके चेलोंपर ही भरोसा कर सकते हैं।

भैया—औ उनके हाथ-पैर तुम्ही लोग हो, दुक्खू भाई, खूँटके बल पर बछड़ कूदता है।

दुखराम—तो भैया, काहे नहीं हम सब लोग कमुनिस्तोंको ही अपना वोट देके सरकारमें भेजें ?

भैया—दुक्खू भाई हमारा देश बहुत बड़ा है। पैंतिस करोड़ आदमी रहते है। कमुनिस्त इतने अधिक नहीं हैं, कि हर जगह पहुँच सकें, मुदा ई बात ठीक है कि हम उनपर ही विश्वास कर सकते हैं, वह जोंकोंके फंदे में नहीं पड़ सकते।

मँगरू—भैया ऊ तो तपे हुए सोना हैं। हमने कोयलरीमें देखा है, कैसे पुलिस उनके पीछे हाथ धोके पड़ी रहती है, हाथमें आते ही जेलमें बन्द करके साँसत करती है। साँसत ही काहे जेहलमें उनके ऊपर गोली भी चलाई और कितनों को मारा। हमारे कोयला मजूरोंके भीतर काम करने वाले एक जनेका भाई तो उसी गोलीसे जेलमें मरा।

सन्तोखी—काहे भैया हाथ-पैर बाँधके जेलमे डाल देनेपर भी उनको गोली से मारा जाता है ?

भैया—सन्तोखी भाई, जो काम अँग्रेजोने नही किया था, वो काम इस सरकारने किया है। कमुनिस्तोका यही दोस है, कि वह जोकोका पछ नही करते औ जोकोका टाट उलट कर कमेरोका राज बनानेके लिये काम करते हैं।

दुखराम—तो भैया हम तो कमुनिस्तोको ही बोट देना अच्छा समझते हैं।

भैया—बताया नही कि कमुनिस्त सब जगहके लिये नही मिल सकते, औ सब जगह वह खडा भी नही होना चाहते।

दुखराम—सो क्यो भैया ?

भैया—वह चाहते हैं कि कमेरा-राज चाहने वाले जितने लोग हैं, सबका एक-एक गोल बन जाये औ इसी गोलके-गोल सब जगह खडे हो।

दुखराम—जो हम लोग समझ-बूझके वोट दें, तो कमेरा राज बन जायेगा भैया ?

भैया—पहले ई विश्वास है तुम्हे कि कमेरा राज बननेसे ही हम लोगोका दुख दूर होगा, रोटी-कपडा मिलेगा।

दुखराम—हाँ भैया, जब तक जोकोका राज रहेगा तब तक उन्हीके बेटा-बेटी मौज करेंगे।

भैया—तो कमेरा-राज बनानेका एक ही रास्ता है कि कमुनिस्तोके गोलका जो भी आदमी पच (मेम्बर) होनेके लिए खडा किया जाय, उसीको बोट दिया जाय। ई समझ रक्खो कि सौमे अस्सी बोट देने वाले नान्ह जात के ही हैं, जो जुग-जुगसे पीसे औ सताये जा रहे हैं।

दुखराम—गाँव-पचायतके चुनावमे तो भैया कमुनिस्त नही दिखाई पडे थे, अबहूँ कहाँ दिखाई पडे हैं ?

भैया—आजकल देशमे दो गोल है। दोनो गोल चाहेगी कि जाके सरकारको अपने हाथमे ले लें।

सन्तोखी—एक गोल तो जानते हैं भैया, जोकोकी है, चाहे ऊ काग्रेसका नाम ले, गाँधी बाबाका नाम ले, राम-राजका नाम लें, हिन्दू सभाका नाम लें। मुदा दूसरा गोल कौन है ?

भैया—दूसरा गोल कमुनिस्त और उनके साथी-समाजियोका।

दुखराम—तब तो भैया हमारे पास जो भी आवेगा वोट माँगने, उससे पूछेंगे कि तुम कौन गोलके हो। अपनी नान्ह जातिके आदमी पर हमको भरोसा है, मुदा सेठ लोग सबको चाँदीके टुकडा से खरीद लेना चाहते हैं। हम कहेगे कि तुम जो उस गोलमे हो, जिसमें मरकस बाबाके चेला और जोकनके दुस्मन कमुनिस्त लोग हैं तब ठीक है। नहीं तो हम जात-भाईके फेरमे नही पडते।

मंगरू—हाँ भैया, काग्रेस और गाँधी बाबाके नामके धोखामे अब हम लोग नहीं पडेंगे। झरियामे मजूरनकी गलीमे तो गाँधी टोपी देके जो निकल जाये, तो

लडके थू-थू करने लगते हैं। हमारी चमारकी जात देखते हो न मान्ह जातमें भी कितनी छोटी है, औ हमसे दुखिया दुनियामें कोई नहीं है। अपनी जातके एक जनेको बोट देके हमने मेम्बर बनाया, अँगरेजके जानेके बाद जब उनको मतरी बनाया गया, तो खुशीके मारे हम लोगोंकी छाती फूल गयी। मुदाका देखते हैं। ऊ सोरहो आना जोकोंके हाथमें हैं। सेठ लोग वैसे तो चमार को अपने ओसारेके पास भी नहीं आने देत, मुदा हमारी जातके इस मतरीको सेठ-सेठानी लोग आरती उतारते हैं। ऊ भला कमेरा राज कभी होने देंगे ? दुखराम भाई, अपनी जातके या मान्ह जातके आदमीको बोट देनेमें भी समझ लेना होगा, कि वह जोकोंके हाथमें तो नहीं चले जायँगे ! सेठ लोग दस-बीस लाख रुपया देके मालामाल करेंगे। मान्ह जातके मतरीकी कोठा-अटारी खडी हो जायगी। उनकी मेहरियोंके गलेमें खाली सोना चमकने लगेगा, मुदा दस-पाँच लखपती बना देनेसे हम लोगोंका दुख दूर नहीं होगा।

दुखराम—तो भैया, हमे बहुत ठोक-ठाकके आदमीको परखना होगा।

सन्तोखी—दमडीकी हँडिया खरीदते हैं, तब भी ठोक-ठाकके देखे बिना नहीं लेते।

मँगरू—औ 'दमडीकी हँडिया गई कुत्तेकी जात पँचानी गई' का ख्याल करके हम रह नहीं जाना चाहिए।

भैया—रह जानेके माने है, अपनी गरदन फिर उन्हीं खून चूसनेवालोंके हात-मे थमा देना। औ यह भी ख्याल रक्खो, कि अबकी बडा राम-नामा तैयार हो रहा है। पाँच बरस तक लूटके घर भरनेवाले औ देसको रसातल पहुँचाने वाले लोग फिर रामनामा ओढके बोट माँगने आये।

दुखराम—हम राम-नामा के फेरमें नहीं पडेंगे भैया ! हम राम-नामाके भितर-के मुँहको पहचानेंगे नहीं क्या, कि यह वही भगत है जो छप्पन चूहा खा चुके हैं, और अभी तक इनकी भूख नहीं गई है।

मँगरू —सुनते हैं भैया, अब कांग्रेसवाले भी कहने लगे है कि हम भी कमेरोंका राज चाहते हैं।

भैया—कमेरोंका राज कैसा चाहते हैं, यह तो उनके छ बरसके राजसे खूब मालूम हो गया। जमींदारी उठा देनेकी बडी बडी बात करते थे, मुदा उसमें भी इतने छन्द-बन्द लगाये, कि पहले तो उनका कानून ही गैर-कानून हो गया और अब जमी-दारी उठाना नहीं बलुक जमीदारोंका तोंद भरना चाहते है और हम लोगो का हाड-मास कूट-पीस रहे है। कहते है कि राजा लोग अपनेसे अपना राज राजी-खुशी छोड दिये, और साधू-सन्यासी बन गये। मुदा, सन्तोखी भाई राजा लोग राजी-खुशीसे—राज छोडके चले गये, यह सोरहो आना झूठ है। परजा राजाको खानेको तैयार थी, सैंकडो बरसोंके उनके जुलुम और पापको देखते-देखते वह अकुला गई थी। कांग्रेस-वालोंने जो किया, वह यही की राजाओंको परजाके क्रोधसे बचा लिया औ साथ ही बीस-बीस, तीस-तीस लाख सालियाना उनके लिये पिन्सन दे दी, जमीन-महल-बँगला धन-जेवर जो दिया सो अलग।

के सभी मरद मेहरियोको अपना बोट देके पच और मेम्बर चुनने का अख्तियार है फिर तो कमेरो की जीत निश्चय है ।

भैया—सत्तोखी भाई, नान्ह जात वालोंको बडी जात वालोने बहुत सताया है । लेकिन बडी जातके सभी लोगोको इसका फल नही मिला । सब मजा जोकोंने लिया । इसी वास्ते जात के कमेरे कलमघिसाई करने वाले औ दौरी-दुकान रखनेवाले भूखे दूखे लोग अब एकवट कर जोकोका राज खतम करना चाहत हैं । अखबार म छपा है कि कलकत्ता के पास चन्दरनगर शहर म बोट देकर चुनाव हुआ था जिसमे चौबीस पचोमे एक भी कांग्रेस नही चुना गया ।

मँगरू—वही चन्दरनगर न भैया, जहाँ पहले अंग्रेजोका राज नही था ?

भैया—हाँ, वहाँ फ्रासीसियो का राज था और अभी थोडे ही दिन हुआ, उन्हें छोडके जाना पडा । सहरका इतिजाम करनेके लिये पचीस पचोको चुनना था । कांग्रेस वालोंने अपने पचीस आदमी खडे किये । 'उपरे अन्त न होहि निबाहू' जानते हो न, कांग्रेस वालो का परदा उघड गया है । इसीलिए उनका एक भी आदमी चुनावमे नही जीता और सभी जगह कमेरोकी गोलके आदमी चुन लिये गए ।

दुखराम—हमको भैया वही करना है जो चन्दरनगरमे हुआ । हम सोसित सघके लोगो से कहगे कि जो अपने भाइयोकी भलाई चाहते हो, तो मरकस बाबाके चेलोकी गोलमे मिल जाओ ।

मँगरू—और हम अछोप(अछूत) भाइयोंसे कहेगे कि अपनी जातके धनीखनो पर भरोसा मत करो । जो तुम्हारा ईमान धर्म ठीक है तो उसी गोलमे चले जाओ, जिसमे कमुनिस्त हैं ।

भैया—हाँ, दुक्खू भाई, मरकस बाबा कह गये हैं कि कमेरोंके पास अपने पैर की बेडियोको छोड हारनेके लिए और है ही क्या ? और जीतने पर सारी दुनिया का राज उन्हींके लिए है ।